हमारा संघर्ष

सरल एवं सुबोध शैली में लिखा हुआ
अगस्त क्रान्ति का ओजस्वी इतिहास

★

लेखक
श्री क्षेमचन्द्र 'सुमन'

★

दो शब्द
बा० श्रीप्रकाश एम०एल०ए० (केन्द्रीय)

★

वक्तव्य
श्री जवाहरलाल नेहरू

★ ★ ★

भास्कर प्रेस, देहरादून

मुद्रक—
सुखदेव कुमार
भास्कर प्रेस, देहरादून।

प्रथम बार :: १९५३

मूल्य:
चार रुपये

मुख्य विक्रेता—
साहित्य-सदन,
पुरानी [illegible], देहरादून।

दो शब्द

गोस्वामी तुलसीदास जी ने ठीक ही कहा है—

जाकी रही भावना जैसी।
प्रभु मूरत देखी तिन तैसी॥

एक ही घटना को भिन्न भिन्न लोग अपनी प्रकृति, अपनी वासना, अपने विचारों के अनुसार भिन्न-भिन्न रूप से देखते हैं, और इसी कारण उनसे भिन्न भिन्न परिणाम भी निकालते हैं। चाहे कोई अपने को कितना ही पक्षपातहीन क्यों न समझे, इसमें कोई सन्देह नही कि वह इतिहास के प्रति भी विशेष दृष्टिकोण रखता ही है और ऐतिहासिक घटनाओं से निष्कर्ष भी ऐसा निकालता है जिससे उन्ही घटनाओं की समीक्षा-परीक्षा करते हुए दूसरे लोग दूसरा निकालते है। इसमे किसी का कोई दोष नही है। मनुष्य की प्रकृति ही ऐसी है इस कारण ऐसा होना अनिवार्य है।

इन घटनाओं के सम्बन्ध मे गवर्नमेंट की क्या राय है, वह तो उस समय के कृत्यो से मालूम ही होगया था और सर रिचर्ड टाटेनहम ने उसे सदा के लिए "कॉग्रेस की जिम्मेदारी" नामक अंगरेजी पुस्तक मे लिपिबद्ध भी कर दिया है। मेरी भी उस सम्बन्ध मे कुछ राय है। उस समय के प्रधान पात्रो के सम्बन्ध मे भी मेरी राय है। पर उस राय को विस्तार मे प्रकट करने का

यह अवसर नहीं है। यह तो मानना ही पड़ेगा कि १९४२ हमारे लिए विशेष स्मरणीय रहेगा। अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से भी वह समय विशेष महत्व रखता है। विश्व व्यापी युद्ध चोटी पर पहुच चुका था। यूरोप मे आन्तरिक युद्ध तो था ही, यूरोप और एशिया का भी भीषण संघर्ष हो रहा था। जापान की शक्ति पराकाष्ठा को पहुच रही थी, स्वतन्त्रता की लहर देश देशान्तरों मे बह रही थी। भारत इससे पृथक नहीं रह सकता था। भारत के भाव उसकी परिमित शक्ति के अनुसार एक विशेष प्रकार से प्रकट हो ही गये।

भारत के वर्तमान इतिहास मे सन् १९४२ की घटनाओ का विशेष स्थान है। ये घटनाएं ऐसी एकाएक घटीं, उनका प्रभाव इस रूप से चारो तरफ फैला कि कितने ही लोग स्तंभित हो गये, कितने ही किंकर्तव्य विमूढ़ हो गये। क्या हुआ, कैसे हुआ, क्यो हुआ, इनकी अभी विवेचना करनी बाकी है। अभी तक तो घटनाओं का ही संग्रह पूरी तरह नहीं हो पाया है। ऐसी अवस्था मे चाहे किसी दृष्टि-कोण से इस विषय को देखा जाय, जो कोई उस समय की घटनाओं का क्रमबद्ध संग्रह करने का प्रयत्न करता है, वह

में भविष्य के ऐतिहासिकों को इससे सहायता मिलनी चाहिये।

मेरे मित्र श्री सुमन जी ने उन घटनाओं का संग्रह और विवेचन किया है। उसके पात्रों का भी वर्णन किया है। इनके सम्बन्ध में अपना मत भी प्रकट किया है। अवश्य ही उन्होंने एक विशेष दृष्टिकोण से अपनी पुस्तक लिखी है। अपने भावों को उन्होंने सफाई से व्यक्त किया है। देश ने क्या-क्या सहा, उस क्रान्ति के वास्तविक नेताओं ने क्या-क्या संकट उठाये—यह सब जानने और समझने में उनकी पुस्तक बहुत सहायक हो सकती है। मुझे आशा है कि लोग इससे पर्याप्त लाभ उठावेंगे और जिस उद्देश्य से लेखक ने इतना परिश्रम कर इसे हमें दिया है वह सिद्ध होगा। हमें अपना आगे का कार्य-क्रम निश्चित करने में भी इससे सहायता मिलनी चाहिये जिससे उस समय की अपनी भूलों से हम शिक्षा ले सकें और अपनी त्रुटियों को दूर कर सच्चे और पूर्ण स्वराज्य के योग्य अपने को बना सकें।

सेवाश्रम, बनारस
(प्रवास) दिल्ली
ता० ४ नवम्बर १९४६

—श्री प्रकाश

पुस्तक के विषय में

'हमारा संघर्ष' आपके हाथों में है। इसमें अगस्त की जन-क्रान्ति का विशद विवेचन करने का हमने पूर्ण प्रयत्न किया है। सन् १८५७ के विद्रोह से लेकर आज तक के स्वतन्त्रता के लिए किए गए प्रयत्नों का उल्लेख करके अगस्त आन्दोलन के संबन्ध में भारत के प्रमुख राष्ट्रीय नेताओं के संस्मरण व वक्तव्य भी दे दिये गये हैं। इससे पाठकों को अपने नेताओं का दृष्टिकोण व उद्देश्य समझने में पर्याप्त सहायता मिलेगी। अगस्त की क्रान्ति का प्रभाव भारत के अतिरिक्त विदेशों में भी जिस वेग से पड़ा उसका उज्ज्वल प्रमाण 'टैंगेनिका' का आन्दोलन है। हमने इसमें इसका वर्णन भी बड़ी ही रोचक भाषा में उपस्थित किया है। जिस समय भारत में अगस्त-आन्दोलन जोरों पर था उस समय आज़ाद हिन्द सरकार के सूत्रधार नेताजी सुभाष विदेश में भारत की मुक्ति के लिए आज़ाद हिन्द फौज को संगठित करने में प्रयत्नशील थे। अस्तु पुस्तक में 'आज़ाद हिन्द सरकार' व उसकी फौज की रूपरेखा भी संक्षेप में दे दी है। इससे पाठक नेता जी द्वारा किए गये इस उत्कट प्रयत्न से भी भली प्रकार अवगत हो सकेंगे।

लेखक
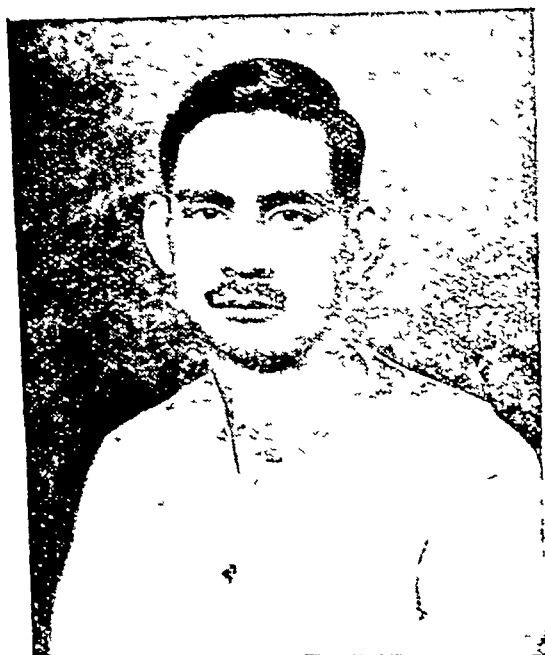
श्री क्षेमचन्द्र "सुमन"

BA.BTMA

पाठकों को कोई अप्रमाणित व निर्मूल बात न मिले।

हम भी अगस्त-क्रान्ति की लपटों के शिकार लगभग २॥ वर्ष तक रहे हैं और इसी बीच में हमें अनेक राजनैतिक नेताओं, कार्यकर्त्ताओं तथा भूमिगत व्यक्तियों से भी मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। अपने जेल-जीवन से ही हमारी 'अगस्त-आन्दोलन' के सम्बन्ध में एक विश्वस्त तथा विवेचना पूर्ण पुस्तक लिखने की प्रबल इच्छा थी। और यह सुयोग हमें बिल्कुल भी न प्राप्त होता, यदि भास्कर प्रेस देहरादून के सुयोग्य व्यवस्थापक श्री सुमेध कुमार से हमारी भेंट न हुई होती। अतएव उन्हें ही इसका उचित श्रेय दिया जाना चाहिए। प्रस्तुत पुस्तक की अधिकांश सामग्री एकत्रित करने में हमें बन्धुवर श्री केदार-नाथ शर्मा सहकारी सम्पादक—'दैनिक हिन्दुस्तान' नई दिल्ली से पर्याप्त सहायता मिली है। एतदर्थ हम उनके हार्दिक कृतज्ञ हैं।

यह पुस्तक उन दिनों लिखी गई है, जबकि हमारी धर्म-पत्नी लगभग तीन मास से निरन्तर रुग्ण चली आरही थीं। ऐसी स्थिति में इच्छा होते हुए भी हम इसे यथाभिलाषित रूप नहीं दे सके। हम अब भी इस प्रयत्न में हैं कि अगस्त-क्रांति में सक्रिय भाग लेने वाले व्यक्तियों के संस्करण हमें उपलब्ध हो जायें। यदि हम इसमें सफल हो सके तो यथासम्भव शीघ्र ही उन्हें भी पाठकों की सेवा में उपस्थित करेंगे।

सरस्वती-मंदिर
पावगढ़ (मेरठ)

—क्षेमचन्द्र 'सुमन'

वक्तव्य

"हमें अगस्त की घटनाओं के लिए गर्व है। अगस्त-आन्दोलन भारत की स्वतंत्रता का युद्ध का प्रतीक बन गया है। ९ अगस्त के दिन भारत के सभी नेता गिरफ्तार हो गए थे. फिर भी जनता ने ब्रिटिश सरकार की चुनौती को स्वीकार कर बड़ी वीरता से उसका सामना किया। नेताओं की गिरफ्तारी के कारण जनता क्रोधान्ध बन गई थी और उसने सरकारी मशीनगनों, बमों और लाठी का प्रहार सहन किया। मुझे इस आन्दोलन को विद्रोह कह कर पुकारने में थोड़ा भी भय नहीं लगता। १८५७ से लेकर अब तक भारत में इतना बड़ा विद्रोह कभी नहीं हुआ था। आपने आगे चलकर कहा कि निस्सन्देह आंदोलन में अच्छाइयाँ और बुराइयाँ दोनों ही सम्मिलित हैं पर इस बात को हम सदा कहेंगे कि जनता ने असीम बलिदान किया और हम उसकी हृदय से प्रशंसा करते हैं। अगर जनता कायरता से आत्मसमर्पण कर देती तो भारत को जो सम्मान प्राप्त हुआ है वह नष्ट होगया होता। हम १९४२ की घटनाओं से और अधिक सबल हो गए हैं।"

"सरकारी वक्तव्य में प्रकाशित किया गया है कि इस अवसर पर ५३५ बार गोलियाँ चलीं और १ हजार आदमी मारे गए। पर जनता का कहना है कि यह वक्तव्य बिल्कुल गलत है। जनता का अनुमान है कि इस अवसर पर सरकारी वक्तव्य से १५ या २० गुना अधिक व्यक्ति काम आए हैं।"

'भारत छोड़ो' प्रस्ताव तो महात्मा गांधी और कांग्रेस कार्यसमिति के सदस्यों को पकड़ने का बहाना मात्र था। वास्तव में गिरफ्तारी का वारन्ट ४ अगस्त को ही जारी कर दिया गया था। जब हम जेल में थे तो हम से अनेकों बार कहा गया कि अगर आप लोग अगस्त प्रस्ताव को वापस ले लें तो हम स्थिति की फिर जाँच करेंगे।"

—जवाहरलाल नेहरू

झांकी

प्रथम भाग

सन् ५७ से ४२ तक

दूसरा भाग

ज्वालामुखी विस्फोट और दमन

तीसरा भाग

विदेश में भी चिनगारी पहुंची

चौथा भाग

अगस्त क्रांति के सेनानी

पांचवां भाग

अगस्त-क्रान्ति पर नेताओं के उद्गार

छठा भाग

अगस्त क्रान्ति के शहीद

सातवां भाग

करो या मरो

पहला भाग

सन् ५७ से ४२ तक

सन् सत्तावन की छाया में

जीवन संघर्षमय है। प्रत्येक बार हमे अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिये विरोधी शक्तियो से संघर्ष करना ही पड़ता है और इसी लिये जीवन को संग्राम कहा गया है। जीवन को अधिक से अधिक सरल और सुखमय बनाने के लिये चिरकाल से संसार के विचारको का यह प्रयत्न रहा है कि जीवन मे संघर्ष की मात्रा कम से कम हो। इसके लिये भिन्न भिन्न प्रदेशो और समाजों मे भिन्न-भिन्न प्रकार के नियम व उपनियम बनाये गये, विभिन्न संस्थाये स्थापित की गई और यह सब संस्थाये किसी समय जीवन मे सुख और समृद्धि लाने मे सफल हुई यह निश्चित है। किन्तु यह नही कहा जा सकता कि ऐसा भी कोई प्रान्त या काल था, जहां 'संघर्ष' नाम की वस्तु न हो। सृष्टि की व्यवस्था होते ही विभिन्न राज्यो और संस्थाओ मे 'संघर्ष' प्रारम्भ होगया।

धीरे-धीरे संस्थाये और नियम बदलते गए। कुछ संस्थाये मिट चलीं और कुछ संस्थाओ का रूप व्यापक होता गया। धर्म बनते और लुप्त होते गये। भिन्न-भिन्न जातियां या तो

राख के नीचे दबी पड़ी थी और धीरे धीरे सुलग रही थी। उसके विस्फोट के लिये हवा का एक हल्का झोंका ही पर्याप्त था। बारूद इकट्ठी हो चुकी थी। एक दिन अन्त मे वह भी आया जब चिनगारी उड़ी और समस्त मेरठ मे १० मई सन् १८५७ को गोधूलि के समय विद्रोह की आग भड़क उठी और फिर ? देखते-देखते यह आग समस्त भारत मे फैल गई।

स्वतन्त्रता के लिये किया गया भारतीय सिपाहियों का यह प्रयत्न स्मरणीय है। थोड़ी सी ही देर मे विद्रोहियोंने एक लाख वर्ग मील के भूभाग पर अधिकार जमा लिया और तीन करोड़ ८० लाख भारतियो ने कुछ समय केलिए अपने आपको विदेशी शासकों के बन्धन से मुक्त कर लिया। लगभग तीन वर्ष तक क्रान्ति की लपटे उठती रहीं और लगभग दो लाख वीरों ने अपने अधिकारों की इस लड़ाई मे लड़ते लड़ते अपने प्राणों की बलि दे दी। इस क्रान्ति को दबाने के लिए उस समय भारत सरकार को ४ करोड़ साठ लाख पौंड व्यय करना पड़ा था। ऐसी वीरता से भरी महान घटना हमारी उदासीनता और अहिंसा के प्रति रहने वाले हमारे भ्रमपूर्ण विश्वास के कारण अन्धकार के गहर-गर्त्त मे पड़ी हुई है।

दिल्ली की ओर

पहला भाग

सन् ५७ से ४२ तक

सन् सत्तावन की छाया में

जीवन संघर्षमय है। प्रत्येक बार हमे अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिये विरोधी शक्तियो से संघर्ष करना ही पड़ता है और इसी लिये जीवन को संग्राम कहा गया है। जीवन को अधिक से अधिक सरल और सुखमय बनाने के लिये चिरकाल से संसार के विचारको का यह प्रयत्न रहा है कि जीवन मे संघर्ष की मात्रा कम से कम हो। इसके लिये भिन्न भिन्न प्रदेशों और समाजों मे भिन्न-भिन्न प्रकार के नियम व उपनियम बनाये गये, विभिन्न संस्थाये स्थापित की गई और यह सब संस्थाये किसी समय जीवन मे सुख और समृद्धि लाने मे सफल हुई, यह निश्चित है। किन्तु यह नही कहा जा सकता कि ऐसा भी कोई प्रान्त या काल था, जहां 'संघर्ष' नाम की वस्तु न हो। सृष्टि की व्यवस्था होते ही विभिन्न राज्यों और संस्थाओं में 'संघर्ष' प्रारम्भ होगया।

धीरे-धीरे संस्थाये और नियम बदलने गए। कुछ संस्थायें मिट चलीं और कुछ संस्थाओ का रूप व्यापक होता गया। धर्म बनते और लुप्त होते गये। भिन्न-भिन्न जातियां या तो

आपस में मिलती गईं या छिन्न-भिन्न होती गईं—बाद में उनमें से ही अनेक छोटी २ उपजातियां उत्पन्न हुईं। कई उन्नत समझे जाने वाले देशों से जाति की सारी व्यवस्थायें संस्थायें मिट गईं और उनमें एक व्यापकता आगई।

यही हाल धर्म का हुआ। वास्तव में किसी भी धर्म की उत्पत्ति जीवन में आध्यात्मिकता और बन्धुत्व की भावना लाने के लिये ही हुई, किन्तु जहाँ विभिन्न धर्मों की छोटी-छोटी धारणाओं या सिद्धान्तों में मतभेद हुआ वहां विचारों की अव्यापकता के कारण संघर्ष की ही नींव पड़ी। शास्त्रार्थ भी इसी मतभेद का एक रूप था और अपनी-अपनी धार्मिक भावनाओं व रूढ़ियों को न छोड़ने की हठ हमेशा विनाश ही करती रही। जिन धर्मों ने धर्म के मतभेदों का बुरा परिणाम देखा उन्होंने धर्म को अधिक व्यापक रूप दिया और लोगों में राष्ट्रीयता के भाव उत्पन्न किए।

भी पदार्थ का उत्थान और पतन अवश्यम्भावी है। जो भारत सुदीर्घ काल तक समस्त संसार का शिरोमणी बन कर रहा, जिसकी महानता की छाप विश्व के सभी भू-भागों पर पड़ी हुई थी, जिससे शिक्षा प्राप्त कर. जिसका अनुसरण करके कोई भी राष्ट्र अपने को गौरवान्वित समझता था, एक समय आया जब कि उसेभी अवनति के अतल मे गिरना पड़ा। जहाँ मिथ्या अनाचार तथा सद्भाव नाम के लिये भी नही था, वहां पर इस मध्यकाल मे अनीति. अशिक्षा, विद्वेष, भेदभाव तथा दासता का अविर्भाव आखिर किस प्रकार हुआ? इतिहास अपने को बार बार दुहराता है। जब दो समान शक्तियो का स्वार्थ परस्पर टकराता है तो 'संघर्ष' होना स्वाभाविक है। भारतवर्ष में भी अंगरेज आये व्यापार करने। बाद में वे अपनी कूटनीतिज्ञता के कारण व्यापारी से शासक बन गये। भारत ने इसे सहन करना उचित नहीं समझा और उनकी कूटनीतिक चालों से उन्मुक्त होने के लिये भारत पिंजरबद्ध शेर की तरह छटपटा उठा।

जब भारतीयों को पराधीनता का अनुभव होने लगा तो सब अपने आदर्श पर ध्यान रखते हुए तत्कालीन कठिनाइयो का निराकरण करने के लिए तुरन्त कटिबद्ध हो गये। कम्पनी के काले कारनामों ने प्रत्येक भारतीय के मन मे विद्रोह और असन्तोष की एक आग जगादी थी। परन्तु सभी भारतीय साधन हीन होने के कारण युद्ध करने मे विवश थे।

आग भड़क उठी

असन्तोष की जो आग विवशता और साधनहीनता की

रोकने को कहा, उसे उतारना चाहा। उसने कहा—'कुछ परवाह नहीं साहब।' मैंने जबरदस्ती हाथ पकड़ कर उसे घोड़े से नीचे उतारा और डोली में बैठाकर अस्पताल भेजा। जो मैं न उतारता तो वह घोड़े पर ही रहता। हमारे साथी भारतीय ऐसे योद्धा, तेजस्वी और वीर थे। थोड़े से वेतन के बदले में उन्होंने इस प्रकार अपने प्राण दे दिए। उन्होंने किसी भी नृशंस भाव का परिचय न दिया।

करना पड़ता था। अंगरेजों को उनके इस त्याग पर किसी तरह की संवेदना नथी। वे उन्हें फटकारते, मारते और धिक्कारते थे।

अंगरेज ऐतिहासिकों का मत

सुप्रसिद्ध अंगरेज ऐतिहासिक 'के' साहब ने उनकी इस मनोवृत्ति का वर्णन इस प्रकार किया है:—

'निरंत्तर युद्ध और हत्याओं के कारण हमारे आदमी ऐसे निर्दय होगये थे कि वे भारतीयो का जीवन कुत्ते, बिल्लीं की तरह भी नही समझते थे। सेनापति और अफसर लोग न उन्हें उपदेश देते और न उनके दोष दूर करते। उनके काम आदमी को चौका देने वाले होते थे। उस समय भारतवासियो पर अगरेज जैसा क्रोध दिखाते थे, उसे यूरोपियन कदाचित् ही स्वीकार करें। बड़ी ही कठोरता होती थी, उनके इस व्यवहार मे। हमारे आदमी उनको मारते और उनकी दुर्दशा करते थे। तोपों पर तैनात गोरे लड़ाई के मौके पर पानी पिलाने के लिये भिश्तियों को अपने पास पकड़ कर रखते। गोलियो की मार से उस समय बहुत स भिश्ती मारे गये थे। इन पर सबसे अधिक दया होनी चाहिये थी। सईस घसियारे, डोली उठाने वाले आदि हमारा काम करते हुए घायल हो जाते थे। ये लोग महीनो तक गर्मी, तथा बरसात मे खुले मैदान मे हमारे साथ रहते थे। जो घायल हो जाते थे उन्हें भी छाया नसीब न होती थी, फौजी डाक्टर उन्हे दो गज 'केनविस' भी न देते थे। दिल्ली के अधिकाश निवासी हमारा भला चाहते थे; परन्तु सब को मारने की घोषणा की गई थी। हमारे बच्चे तक भारतीयों

करना पड़ता था। अंगरेजों को उनके इस त्याग पर किसी तरह की संवेदना नथी। वे उन्हें फटकारते, मारते और धिक्कारते थे।

अंगरेज ऐतिहासिकों का मत

सुप्रसिद्ध अंगरेज ऐतिहासिक 'के' साहब ने उनकी इस मनोवृत्ति का वर्णन इस प्रकार किया है:—

"निरंतर युद्ध और हत्याओं के कारण हमारे आदमी ऐसे निर्दय होगये थे कि वे भारतीयो का जीवन कुत्ते, बिल्ली की तरह भी नही समझते थे। सेनापति और अफसर लोग न उन्हे उपदेश देते और न उनके दोष दूर करते। उनके काम आदमी को चौंका देने वाले होते थे। उस समय भारतवासियो पर अंगरेज जैसा क्रोध दिखाते थे, उसे यूरोपियन कदाचित् ही स्वीकार करें। बड़ी ही कठोरता होती थी, उनके उस व्यवहार मे। हमारे आदमी उनको मारते और उनकी दुर्दशा करते थे। तोपों पर तैनात गोरे लड़ाई के मौके पर पानी पिलाने के लिये भिश्तियों को अपने पास पकड़ कर रखते। गोलियों की मार से उस समय बहुत से भिश्ती मारे गये थे। इन पर सबसे अधिक दया होनी चाहिये थी। सईस घसियारे, डोली उठाने वाले आदि हमारा काम करते हुए घायल हो जाते थे। ये लोग महीनों तक गर्मी, तथा बरसात मे खुले मैदान मे हमारे साथ रहते थे। जो घायल हो जाते थे उन्हे भी छाया नसीब न होती थी. फौजी डाक्टर उन्हें दो गज 'केनविस' भी न देते थे। दिल्ली के अधिकांश निवासी हमारा भला चाहते थे; परन्तु सब को मारने की घोषणा की गई थी। हमारे बच्चे तक भारतीयों

के खून के प्यासे होगये थे। वे प्रायः कहा करते थे कि तमाम अर्दलियों और नौकरों को गोली का निशाना बनादिया जाय।"

एक इतिहास-लेखक ने लिखा था—"वह शान्ति का समय न था, परन्तु हम समय के साथ न बदले। हमारी प्रगति लोहे के समान कठोर थी कि कड़ी आँच खाकर भी वह मुलायम न हुई। हम ऐसे उद्यत, असहिष्णु, और अविवेकी थे कि हमने यह भी न देखा कि जिन्हें हम घृणा की दृष्टि से देखते थे, वे ही हमारी रक्षा कर रहे थे। जिस विपत्ती और संकट में दूसरे निस्तेज होजाते हैं, उसी में हमारी जाति कठोर और दृढ़ता सम्पन्न थी। मनुष्य की विचार-शक्ति जितना काम करती है, उससे यह मालूम होता है कि कठोरता और असहिष्णुता के कारण उस समय हमारा नाश हो सकता था, परन्तु इसी कारण हम नष्ट होने से बचे। इसी कारण हमारे विपक्षी झुके। उनको यह विश्वास होगया था कि जब तक एक भी अंगरेज जीवित रहेगा तब तक वह भारत में अपना राज्य स्थापित न कर सकेंगे। हमारी कमजोरी की हालत में भी हमें उनकी इसी भावना ने खड़ा रक्खा।"

एक और अफसर ने मेरठ में लिखा था कि 'गोरी सेना जब कानपुर होकर गई तब जिसको भी उसने देखा, उसी को मारा था।' एक अफसर ने और भी लिखा था—"हमारी सेना जब दिल्ली में घुसेगी तब सब दिल्ली वाले मारे जावेंगे। कोई भी अफसर इस हत्या को न रोकेगा।" सर जॉन लारेन्स ने कहा था—"भारतवासियों से सहायता न पाने के कारण अर्थात् प्रबल गर्मी में नौकरों के अभाव के कारण यूरोपियन रोग मर रहे हैं।" सेवा करने वाले भारतीय नौकरों से गोरे इसी समान

से और कभी गोलियों से मार डालते थे। उस समय सेनापति विलसन ने आज्ञा प्रचारित की थी—"सेना में बहुत से नौकर गोरों की गोली और संगीनों से मारे गये। ऐसी बेरहमी से सेना के सारे नियम टूट जायेंगे। नौकरों में भय फैलेगा, वे काम छोड़ कर भाग जायेंगे। बहुत से भागने का इरादा भी कर रहे हैं।" क्रोध और उत्तेजना के कारण उस समय अंग्रेजों में भले-बुरे का सोचने की शक्ति न थी। एक अधीन जाति को अपने विरुद्ध उठते हुए देखकर वे ऐसे क्रोधित हुए थे कि अपनी सेवा करने वाले नौकरों की ही जान ले लेते थे। परन्तु अंग्रेजों की ऐसी उत्तेजना और ऐसे निर्दयतापूर्ण व्यवहार के अवसर पर भी भारतवासी अपने कर्त्तव्य से न हटे। इन्होंने अपने दया-धर्म का त्याग न किया। मनुष्य-घातक कठोर प्रवृति के पास सदय कोमल प्रवृति का उदय हुआ था। अंग्रेज जिन भारतीयों को नष्ट करना चाहते थे, उन भारतीयों की दया का ऐसे विषम समय में भी कोई ठिकाना न था।

दिल्ली पर कब्जा और क़त्ले आम

अपने ही 'विभिषणों' की कृपा से दिल्ली पर अङ्गरेजी राज्य फिर प्रतिष्ठित हुआ। सिपाही अपनी मूर्खता के कारण हार कर उत्साह हीन हुए। अब अङ्गरेजी सैनिकों को अपनी हिंसा पूरी करने का पूर्ण अवसर मिल गया। जहाँ एक दिन अङ्गरेज मारे गए थे, जहां अनेकों असहाय स्त्रियों और बच्चों का खून बहा था, वहीं के शासक फिर अंग्रेज बने। लड़ाई तो समाप्त हुई अब बदला प्रारम्भ हुआ। अंग्रेज सैनिकों ने दिल्ली में फिर क़त्ले-

आम' का दृश्य दिखाया। जो सामने पड़ता वही उनकी खून का निशाना बनता। दिल्ली निवासियो की सम्पत्ति लूटना और उन्हें संगीने भोंक कर मारना इनका काम होगया। जिन्होंने अंग्रेजों का खून किया था या उन्हें हानि पहुचाई थी, उनके साथ तो इस व्यवहार को वदला कहा जा सकता है, किन्तु जो शान्त रहे थे, जिन्हें सिपाहियों ने भी सताया था, उन निरीह निवासियो को मारना तो निःसन्देह नीचता-पूर्ण कृत्य था। इसमे वहुत से नगरवासी मारे गए। शहर के व्यापारी और शान्त व्यवसायी तक गोरों की तलवारों और सगीनों तथा वन्दूको के शिकार हुए ? इस समय दिल्ली की चहार दिवारी के भीतर जो भी थे वे सव अंग्रेजो के दुशमन माने गए और इस कारण उन पर किसी भी प्रकार की दया दिखाना अन्याय होगया। शान्त-अशान्त, भले-बुरे, छोटे-बड़े सबको एक-सी ही सजा दी जारही थी। दिल्ली पर कब्जा होने के कुछ दिन तक इसी प्रकार लोग अन्धाधुन्ध मारे गए। वीर अंग्रेज सेनापतियों ने भी इसका अनुमोदन किया। लड़ाई मे जो घायल होगए थे या जिनके हाथ पैर कट गए, उन पर भी दया न की गई। भारतीय सिपाही लगभग एक सो बीमारो और घायलों को एक स्थान पर छोड़ गए थे, गोरो ने उन पर दया न की और संगीनों से मार डाला। एक अंग्रेज इंजीनियर ने इस समय की घटना का इस प्रकार वर्णन किया है—

"एक सिपाही के दोनो हाथ तलवार से कट गए थे। शरीर मे गोली लगी थी, पेट में दो जगह संगीन घुसी थी। फिर भी वह जीवित था। इस प्रकार के असहाय और दुर्दशाग्रस्त प्राणी

पर भी गोरे सैनिकों को दया न आई और उन्होंने उस सिपाही के सिर में गोली मार दी। यह देखकर मुझे बहुत दुःख हुआ और लज्जा भी अनुभव हुई।"

बहादुर शाह की गिरफ्तारी

दिल्ली के वृद्ध और नेत्रहीन बादशाह को गिरफ्तार करते और उससे हथियार छीनते समय कप्तान हडसन ने उनके साथ जो अपमानजनक बर्ताव किया था, उसकी कई अंग्रेज-लेखको ने निन्दा की है। परन्तु उनके तीन शाहजादो की हडसन ने जिस निर्दयता से हत्या की थी, उसका वर्णन पढ़कर तो कठोर से कठोर हृदय को धक्का लगता है।

सम्राट को दिल्ली के एक महल में नजरबन्द कर दिया गया। हडसन उस समय पैशाचिक प्रतिहिंसा से पागल होरहा था और अन्त में उसने उसके तीन निर्दोश शाहजादो– मिर्जा मुगल, मिर्जा ख्वाजा सुलतान और अब्दुल बकर को ढूंढकर दिल्ली की खास सड़क पर, दिल्ली वालो की निगाहो के सामने, उनकी नाक के नीचे, गोली का निशाना बनाया। मुट्ठी भर सैनिकों की छाया में खड़े हुए हडसन के इस दानवीय नृत्य को देखकर भी हजारों की संख्या मे उपस्थित दिल्ली के निवासियों ने चूं तक नहीं की। नृशंसता वहीं पर समाप्त नहीं हुई: निरीह शाहजादों की लाशों को प्रतिहिंसा से पागल हुए अंग्रेज अफसरों ने कोत-वाली के सामने ले जाकर लटका दिया। जो आता, देखकर चला जाता, चुप-चाप आँसू बहाता हुआ।

आम' का दृश्य दिखाया। जो सामने पड़ता वही उनकी खून का निशाना बनता। दिल्ली निवासियों की सम्पत्ति लूटना और उन्हें संगीनें भोंक कर मारना इनका काम होगया। जिन्होंने अंग्रेजों का खून किया था या उन्हें हानि पहुंचाई थी, उनके साथ तो इस व्यवहार को बदला कहा जा सकता है, किन्तु जो शान्त रहे थे, जिन्हें सिपाहियों ने भी सताया था, उन निरीह निवासियों को मारना तो निःसन्देह नीचता-पूर्ण कृत्य था। इसमें बहुत से नगरवासी मारे गए। शहर के व्यापारी और शान्त व्यवसायी तक गोरों की तलवारों और संगीनों तथा बन्दूकों के शिकार हुए ? इस समय दिल्ली की चहार दिवारी के भीतर जो भी थे वे सब अंग्रेजों के दुशमन माने गए और इस कारण उन पर किसी भी प्रकार की दया दिखाना अन्याय होगया। शान्त-अशान्त, भले-बुरे, छोटे-बड़े सबको एक-सी ही सजा दी जारही थी। दिल्ली पर कब्जा होने के कुछ दिन तक इसी प्रकार लोग अन्धाधुन्ध मारे गए। वीर अंग्रेज सेनापतियों ने भी इसका अनुमोदन किया। लड़ाई में जो घायल होगए थे या जिनके हाथ पैर कट गए, उन पर भी दया न की गई। भारतीय सिपाही लगभग एक सौ बीमारों और घायलों को एक स्थान पर छोड़ गए थे, गोरों ने उन पर दया न की और संगीनों से मार डाला। एक अंग्रेज इंजीनियर ने इस समय की घटना का इस प्रकार वर्णन किया है—

"एक सिपाही के दोनों हाथ तलवार से कट गए थे। शरीर में गोली लगी थी, पेट में दो जगह संगीन घुसी थी। फिर भी वह जीवित था। इस प्रकार के असहाय और दुर्दशापन्न प्राणी

दूसरा भाग

राष्ट्रीय जागरण

सन सत्तावन के विद्रोह से जब भारतीयों को पराधीनता का कटु अनुभव हुआ तो वे अपने आदर्श पर ध्यान रखते हुए तत्कालिक कठिनाइयो के निराकरण के लिए कटिबद्ध होगए; परन्तु शासको के प्रति अशिष्ट व्यवहार उनका कभी भी नहीं रहा। जो स्वतन्त्रता की अखण्ड लौ सन सत्तावन मे प्रज्वलित हुई थी, उसका प्रकाश देश मे फैलना स्वाभाविक था। परिणाम स्वरूप विशुद्ध अहिंसात्मक ढग से अपने अधिकारो की सुरक्षा के लिए भारत के हितैषी नेताओ ने प्रयत्न भी प्रारम्भ कर दिए।

कांग्रेस की स्थापना

२८ दिसम्बर सन १८८५ ई० को दिन के बारह बजे ७२ व्यक्तियो की एक टोली बम्बई मे भारत की आजादी के प्रश्न पर

हुआ है और देश ने अंगड़ाई ली है। जब तक हम इस क्रान्ति का पाठ अखंड रूप से न करने लगेंगे तब तक स्वतन्त्रता का स्वप्न केवल स्वप्न ही रहेगा। हमें तो सर्वदा बहादुरशाह के इस शैर को क्रियात्मक रूप देना है—

"गाजियों में बू रहेगी जब तलक ईमान की।
तख्ते लन्दन तक चलेगी तेग हिन्दुस्तान की॥"

दूसरा भाग

राष्ट्रीय जागरण

सन सत्तावन के विद्रोह से जब भारतीयों को पराधीनता का कटु अनुभव हुआ तो वे अपने आदर्श पर ध्यान रखते हुए तत्कालिक कठिनाइयों के निराकरण के लिए कटिबद्ध होगए; परन्तु शासकों के प्रति अशिष्ट व्यवहार उनका कभी भी नहीं रहा। जो स्वतन्त्रता की अखण्ड लौ सन सत्तावन में प्रज्वलित हुई थी, उसका प्रकाश देश में फैलना स्वाभाविक था। परिणाम स्वरूप विशुद्ध अहिंसात्मक ढंग से अपने अधिकारों की सुरक्षा के लिए भारत के हितैषी नेताओं ने प्रयत्न भी प्रारम्भ कर दिए।

कांग्रेस की स्थापना

२८ दिसम्बर सन १८८५ ई० को दिन के बारह बजे ७२ व्यक्तियों की एक टोली बम्बई में भारत की आजादी के प्रश्न पर

विचार विनिमय करने के लिए बैठी। यही भारतीय कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन था. इससे पूर्व १८८४ ई० में कांग्रेस की स्थापना हो चुकी थी। यह ७२ व्यक्ति समस्त भारत के गिने चुने प्रतिनिधि थे। इनके साथ ३० व्यक्ति और थे, जो सरकारी नौकर होने के कारण नियमित रूप से इस कार्यवाही में भाग नहीं ले सकते थे, किन्तु सहानुभूति उनकी पूरी इनके साथ थी। अधिवेशन प्रारम्भ हुआ, कुल ९ प्रस्ताव इस सभा में विचारार्थ प्रस्तुत किए गए। पहले प्रस्ताव में तत्कालीन भारतीय शासन के लिए एक कमीशन की मांग की गई थी, दूसरे में भारत-सचिव की कौंसिल को उठा देने की मांग थी, तीसरे में लेजिस्लेटिव कौंसिलों के सुधार, चौथे में अन्यान्य विषयों की जांच और पांचवें में सैनिक-खर्च में वृद्धि होने की कैफियत मांगी गई थी। छठे में वर्मा के मिलाने का विरोध, सातवें में इन प्रस्तावों की प्रतिलिपियों को राजनैतिक संस्थाओं के पास भेजने और आठवें में इस संस्था का प्रचार तथा नवें में कलकत्ता में आगामी कांग्रेस का अधिवेशन होने की बात थी। इस बैठक के विषय में श्री उमेशचन्द्र बनर्जी ने कहा था—"भारतवर्ष के इतिहास में समस्त वर्गों के प्रतिनिधि भारतीयों की ऐसी महत्त्वपूर्ण बैठक कभी नहीं हुई।"

दूसरा अधिवेशन

कांग्रेस का दूसरा अधिवेशन नियत समय पर कलकत्ता में हुआ। दादा भाई नौरोजी इस अधिवेशन के सभापति थे। इस अधिवेशन में पहले पहल तमाम भारत में प्रतिनिधिक संस्थाओं की स्थापना की मांग की गई थी। इस दल को अंग्रेज भारत सरकार की चिन्ता कुछ बढ़ने लगी। कुछ अंग्रेजों

खुल्लमखुल्ला इसकी शिकायत करने लगे और धमकियां देने लगे। १८१८ में लार्ड डफरिन ने ब्रिटिश सरकार से गुप्त मन्त्रणा की कि यद्यपि बाहर से इस संस्था का विरोध किया जारहा है तथापि इसकी कुल मांगों को शीघ्र स्वीकार कर लेना चाहिए। फलस्वरूप कौंसिलों के सुधार की मांगे मजूर करली गई और इसका परिणाम यह हुआ कि इस संस्था के सदस्यगण कुछ ठोस रचनात्मक कार्य करने के बजाय कौंसिलों का चुनाव लड़ने लगे। लार्ड डफरिन की नीति काम कर गई। बढ़ता हुआ आन्दोलन कुछ दिन के लिए शान्त होगया और लार्ड लैंसडान और एलगिन के शासनकाल में यह सस्था सोडावाटर की बोतल बन गई।

किन्तु यह संस्था मरने के लिए पेदा नही हुई थी। लार्ड कर्ज़न आए और उन्होने इस निर्दयता से शासन करना प्रारम्भ किया कि भारतीयो मे विद्रोह की भावना जागृत ह.गई। सारे देश में एक सनसनी पैदा होगई और लोगो का ध्यान फिर इस संस्था को बलवान बनाने की ओर गया। लोग समझने लगे कि केवल प्रस्ताव पास कर देने मे ही काम न चलेगा। अतः सभी देश ने मिलकर यह निश्चित किया कि ब्रिटिश माल का बहिष्कार किया जाय। प्रस्ताव तो पास होगया. किन्तु इसे क्रियात्मक रूप देने मे नरमी दिखाई जाने लगी। अन्त मे १६०८ की कांग्रेस ने काशी मे यह प्रस्ताव पास किया कि बंग-भंग के सिलसिले मे विदेशी वस्तुओ का बहिष्कार अवश्य किया जाय; किन्तु उसे अखिल भारतीय कांग्रेस की ओर से कोई सहायता न मिलेगी।

दूसरे वर्ष अर्थात सन् १६०६ मे कांग्रेस का अधिवेशन होने वाला था। बंगाल की तरुणाई उग्र-नीति को क्रियात्मक

रूप देने के लिए छटपटा रही थी। उसने प्रस्ताव पास किया कि लोकमान्य तिलक इस अधिवेशन के सभापति बनाये जावें। बस, फिर क्या था? तात्कालिक दक्षिण पक्षियों के कान खड़े होगए और उन्होंने षड्यन्त्र करना प्रारम्भ किया कि लोकमान्य तिलक इस अधिवेशन के सभापति न होने पावें। उस समय ऐसा कोई दूसरा व्यक्ति नहीं था जो लोकमान्य के मुकाबले में डट सकता। अतः दक्षिण पक्षियों ने दादा भाई नौरोजी को येन केन प्रकारेण उस अधिवेशन का सभापतित्व करने के लिए राजी कर लिया। उनकी इस चाल से उनकी तात्कालिक विजय तो अवश्य होगई, किन्तु इसका परिणाम उलटा निकला। उन लोगों ने सोचा था कि दादा भाई नौरोजी नरम दल की नीति की तरफदारी करेंगे; किन्तु उनकी यह धारणा सर्वथा निर्मूल सिद्ध हुई और उन्होंने 'गरम दल' की ही नीति का समर्थन किया। यहीं से कांग्रेस में 'नरम दल' और 'गरम दल' नामक दो दल होगए।

इस घटना के उपरान्त नरम और गरम दल में अन्तर दिन प्रतिदिन बढ़ता गया और धीरे-धीरे यह खाई चौड़ी होती गई। परिणाम यह हुआ कि सूरत कांग्रेस के अवसर पर भयंकर फूट की आशंका उत्पन्न होगई। इस सूरत के अधिवेशन के सभापति सर फिरोजशाह मेहता थे। खुले अधिवेशन में उन पर जूता फेंका गया। इस अवांछनीय परिस्थिति में विवश होकर सभापति ने अधिवेशन बन्द कर दिया। उस समय ऐसा मालूम होगया था कि इस अधिवेशन में कोई नीति निश्चित न हो सकेगी; किन्तु दूसरे ही दिन नरम दल वालों ने एक कार्यक्रम तैयार किया, जिसमें भारत या इंडियन कौंसिलों का [illegible]

और वह भी वैधानिक तरीकों से घोषित किया गया। यह प्रस्ताव तो पास होगया; किन्तु गरम दल वाले कांग्रेस से पृथक होगए। उनका सहयोग क़रीब-करीब बन्द होगया। किन्तु फिर सन् १९१६ में लखनऊ की कांग्रेस में सब दल एक होगए और एक नीति पर चलने लगी।

सत्याग्रह की शुरूआत

महायुद्ध के शुरू होने पर भारतवर्ष ने सब बातों को भूलकर दिल खोलकर बृटिश सरकार की सहायता की। गांधी जी ने स्वयं चंदा उगाहने और सैनिक भर्ती करने का काम प्रारम्भ कर दिया। तत्कालीन प्रधान मन्त्री लायड जार्ज ने खुले तौर पर घोषणा की कि भारत ने जो अमूल्य सेवायें की हैं, उन्हें बृटिश सरकार भूल नहीं सकती और जिस समय शान्ति सम्मेलन सफलता पूर्वक समाप्त हो जायगा, उस समय ही भारत की पूर्ण वैधानिक उन्नति के लिए प्रयत्न प्रारम्भ कर दिए जायेंगे। इधर तो यह आश्वासन दिया गया और उधर लड़ाई की समाप्ति पर भी रौलट एक्ट को चालू करने की योजना कौंसिल में पेश हुई। सारे भारत ने एक स्वर में इसका घोर विरोध किया; किन्तु सरकार ने एक न सुनी। यहां तक कि कांग्रेस के तत्कालीन सभापति सर सुरेन्द्रनाथ बनर्जी तक ने प्रार्थना भी की, परन्तु वह भी ठुकरा दी गई। इससे सारा जनमत क्षुब्ध होगया। गांधी जी लड़ाई के लिए तैयार ही थे। सत्याग्रह शुरू हुआ। सत्याग्रह प्रारम्भ करने का पहला दिन आत्म-शुद्धि-दिवस मनाया गया। गान्धी जी तथा उनके अनुयायियों और करोड़ों जनता ने २४ घन्टे का उपवास किया और उपवास का समय प्रार्थना में व्यतीत हुआ।

इस समय देश में जो जागृति दिखाई देती थी वह अभूतपूर्व थी। जिस वेग से आन्दोलन चला उसे देखकर मालूम होता था कि इसमें अप्रत्याशित सफलता मिलेगी; किंतु गांधी जी की गिरफ्तारी और डा० किचलू तथा डा० सत्यपाल के देश-निर्वासन की बात से स्थिति और भी नाजुक होगई। जनता का उत्साह तो कम हो ही गया, साथ ही अहमदाबाद और अमृतसर में जनसमूह ने हिंसा वाद कर दिया। गान्धी जी की आत्मा को इससे बहुत ठेस पहुची और उन्होंने बिना तैयारी आन्दोलन प्रारम्भ करने की अपनी गलती को महसूस किया और सत्याग्रह तुरन्त बन्द कर दिया।

जलियाँ वाला काण्ड

डाक्टर सत्यपाल और डाक्टर किचलू की गिरफ्तारी के कारण पंजाब में आन्दोलन का श्री गणेश हुआ और वहीं से दमन-चक्र चलना प्रारम्भ होगया। इसी समय महात्मा गान्धी को भी जो पंजाब की ओर जारहे थे दिल्ली के समीपवर्ती पलवल स्टेशन पर गिरफ्तार करके बम्बई भेज दिया गया। आपकी गिरफ्तारी के समाचार से तो देश में और भी विद्रोह की भीषण लहर दौड़ गई और कलकत्ता तथा बम्बई आदि कई स्थानों में आन्दोलन होगया। १३ अप्रैल सन् १९१९ को बैसाखी का दिन था। उस दिन अमृतसर के जलियांवाला बाग में एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया था। उस दिन अमृतसर में [illegible] का प्रबन्ध होगया। जलियांवाला बाग में जुटी हुई निरीह जनता को तितर-बितर होने की आज्ञा दिये बिना ही, उस पर जनरल डायर ने गोली चलाने की आज्ञा देदी। दस मिनट के अन्दर ही १६५० गोलियाँ

दागी गई। कमीशन के सामने अपना बयान देते हुए जनरल डायर ने कहा था कि यदि उसके पास और गोलियां होती तो तो वह बिना किसी हिचक के और भी गोलियां चलाता। इतना ही नही उसने यहां तक कहने की हिम्मत की थी कि यदि उसे यह सुविधा होती कि जलियाँवाला बाग मे मशीनगने लाई जा सकें तो वह लाता और उन्हे प्रयुक्त भी करता।

असभ्य देशों की बात तो हम नही कह सकते, किन्तु सबसे प्राचीन देश, इस भारतवर्ष मे, ऐसा भीषण अत्याचार निरीह जनता पर कभी नहीं हुआ था, जैसा सन् १६१६ के अप्रैल मास की १३ तारीख को पंजाब की जनता पर सभ्य बनने वाली अंग्रेज जाति के कुछ अफसरो ने किया। ऐसा घोर अत्याचार तो कभी 'नादिरशाह' से भी नहीं होसका था। पंजाब के अत्याचार राक्षसी अत्याचार थे और कई प्रमाणों तथा कई अत्याचारियो के ही मुख से यह बात सिद्ध होगई है कि वे जनता मे आतंक फैलाने के लिए और जातीय पक्षपात के वशीभूत होकर किए गए थे। १६१६ के अप्रैल मे हमारे पंजाबी भाइयो पर क्या-क्या अत्याचार नही किए गए? उस समय हमारे प्रतिष्ठित से प्रतिष्ठित नेता भी अपमानित किए जाने के लिए पकड़ लिए गए, जिन्होने यथाशक्ति देश को उपद्रव करने से रोका था। अनेक प्रतिष्ठित पुरुषों को अकारण पकड़कर हथकड़ियाँ पहनाकर बीच बाजार से पैदल निकाला गया, लोग लोहे के बने पिंजरो के भीतर बन्द किए गए। खुले आम सड़कों पर कितने ही व्यक्तियो को नंगा करके, उनके चूतड़ों पर बड़ी निर्दयतापूर्वक बेंत लगाये गए। बेत की मार से बेहोश होने पर लोगो को पानी पिला पिलाकर पीटा गया। [illegible] के

जबरदस्ती गोरों को सलाम कराया गया। सलाम न करने पर उन्हें बेंत लगाये गए, लोगों से जमीन में माथा टिकवाया गया। हमारी बहनों, बेटियों और माताओं का घोर अपमान किया गया। उनके घूँघट हटाकर उनकी लज्जा हरी गई। उनके मुँह पर थूका गया, और उन्हें भद्दी भद्दी गालियाँ सुनाई गई; निरीह जनता पर हवाई जहाजों ने बम बरसाये गए। लोगों से पेट के बल रेंगने को लाचार किया गया। और यहाँ तक कि कितनों ही से नाक से लकीरें खिंचवाई गई। इनके अतिरिक्त और भी कितने ही प्रकार के रोंगटे खड़े करने वाले अत्याचार निरीह जनता पर किए गए और आश्चर्य तो यह है कि ये अत्याचार बीसवीं शताब्दी के स्वतन्त्रता और स्वभाग्य निर्णय के काल में तथा संसार से दासत्व की प्रथा का मूलोच्छेद कर देने का दावा करने वाली अङ्गरेज जाति के शासन-काल में किए गए।

.. ज़ुल्म की कहानी, ज़ालिम की ज़बानी

प्रश्न–जैसे ही तुमने फायर प्रारम्भ किए थे, वैसे ही भीड़ तितर बितर होने लगी थी क्या ?

उत्तर–तुरन्त ही।

प्रश्न–तुमने फायर जारी ही रक्खे ?

उत्तर–हाँ।

प्रश्न–जब भीड़ तितर बितर होने लगी थी, तुमने फायर क्यों नहीं बन्द किए ?

उत्तर–मैंने अपना कर्तव्य समझा कि जब तक भीड़ तितर-बितर न होजाय, तब तक मैं फायर जारी रखूँ। यदि मैंने थोडी ही देर फायर की होती तो मेरी भूल होती।

इसके अनन्तर अनेक प्रश्नो के उत्तर मे जनरल डायर ने कहा कि मैंने कोई दस मिनट तक फायर जारी रखे। "मुझे इसी प्रकार के सैनिक उपाय से काम ले भीड़ को तितर बितर करने का कुछ भी अनुभव न था।" और "शायद बिना फायर किए ही मैं लोगो को तितर बितर कर सकता था।" परन्तु मैंने फायर किए; क्योकि यदि मै ऐसा न करता तो भीड़ के पुनः लौट आने की आशंका थी।

फायर करने के कारण बताते हुए उसने एक दूसरे प्रश्न के उत्तर में कहा, "मैंने सोचा कि भीड़ मुझ पर और मेरे सैनिकों पर आक्रमण करने का प्रयत्न कर रही है। इस सबसे पता चलता था कि यह बहुत दूर तक फैली हुई लहर है, जो अमृतसर तक ही सीमाबद्ध नहीं है और स्थिति नाजुक है।"

जनरल डायर ने १६५० गोलियाँ चलाई थीं। उसने यह भी स्वीकार किया कि यदि मशीनगन और तोपें मैं बाग के भीतर ले जा सकता तो ले जाकर उन्हीं से अग्निवर्षा प्रारम्भ कर देता और मैंने तब गोलियाँ चलानी बन्द कीं, जब सब गोलियाँ ख़त्म होगईं। भीड़ बहुत थी, मैंने घायलों को सहायता देने या उठाने का कोई प्रयत्न नहीं किया। उस समय सहायता करना मेरा कर्तव्य नहीं था। यह डाक्टरी प्रश्न था। फायर बन्द करते ही मैं वापिस लौट गया। बीच में मैं अपने फायर बन्द कर देता और ऐसे स्थानों पर फायर करता जहाँ भीड़ सबसे अधिक होती। ऐसा मैंने इसलिए किया कि भीड़ जल्दी नहीं छट रही थी, बल्कि इसीलिए मैंने यह दृढ़ निश्चय कर लिया था कि इकट्ठा होने की सजा भीड़ को दी जाय।

शाबास ऊधमसिंह

बाद में पंजाब के इसी अत्याचारी, जलियाँवाला बाग के राक्षस को भारत के एक मोहम्मदसिंह 'आजाद' नामक नवयुवक ने सन १९४१ के किसी मास में इंगलैंड के कैक्सटन हाल में मौत के घाट उतार दिया। उनके साथ ही भारत-मंत्री जेटलैंड भी घायल होगए। जनरल डायर की मृत्यु पर 'जर्मन-रेडियो' ने टिप्पणी की थी "क्रुद्ध राष्ट्र गोलियों से बात करता है।"

जनरल डायर को मौत के घाट उतारने वाले वह मुहम्मदसिंह 'आजाद' नामक व्यक्ति 'ऊधमसिंह' नाम के सिख नौजवान थे, जो करीब पन्द्रह वर्ष से इंगलैंड में डायर से बदला लेने के ख्याल से घूम रहे थे। उन्हें फाँसी पर चढ़ा दिया गया परन्तु इससे क्या ? भारत [illegible] इतिहास [illegible] अमर [illegible]

यह तो नहीं लिखा जायग कि जलियाँवाला बाग का बदला भारतीय नहीं ले सके।

नया कदम

जलियांवाला बाग की घटना के सम्बन्ध में जांच करने से जिन बातों का पता चला, उनसे चारों ओर खलबली मच गई थी। उस पर शासन-सुधारों की घोषणा ने जले पर नमक छिड़कने का कार्य किया। भारत को अपार धन और जन के बलिदान के उपरान्त जो तथ्यहीन शासन-सुधार मिले, वे बहुतही अपमान जनक प्रतीत हुए; किन्तु गांधी जी तथा अन्य उदार-दलीय नेताओं के आग्रह से कांग्रेस ने इन शासन-सुधारों को क्रियात्मक रूप देने का प्रस्ताव स्वीकार किया। किन्तु, गोरी नौकरशाही की तबियत तो बदली नहीं थी; अतः दूसरे वर्ष यानी १६२० मे राष्ट्र को नया कदम उठाना पड़ा। पंजाब-कांड के अपराधियों के साथ कोई सख्त कार्यवाही नहीं की गई। खून के हज्म न होने पर भी खूनी बेदाग छोड़ दिए गए। इससे चारो ओर असन्तोष बढ़ गया। मुसलमानों के क्षुब्ध होने का एक और कारण पैदा होगया। तुर्की और इसलाम के बादशाहो के सम्बन्ध में प्रधान मन्त्री ने जो वायदे किए थे, वे पूरे होने न दीख पड़े। इस अवसर गांधी जी ने राष्ट्र की नब्ज पहचान ली और असहयोग का शंखनाद कर दिया।

असहयोग की घोषणा

गांधी जी ने असहयोग की घोषणा करदी। जनता ने अपूर्व उत्साह और उमंग के साथ गान्धी जी की इस घोषणा का

स्वागत किया। असहयोग के कारणों का उल्लेख करते हुए उस समय गांधी जी ने कहा था—मुसलमानों के साथ वृटिश सरकार ने तुर्की और खिलाफत के मामले में विश्वासघात किया है। इसने पंजाब का अपमान किया है। सरकार जनता की इच्छा के विरुद्ध उस पर जबरदस्ती हकूमत स्थापित करना चाहती है और पंजाब मे अपने किए गए कुकर्मों पर पश्चात्ताप का नाम भी नहीं लेना चाहती।" असहयोग के बाद लोग सत्याग्रह तथा लगानबन्दी के लिए आन्दोलन करनें लगे। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने प्रान्तीय कांग्रेस-कमेटियों को अधिकार दिया कि वे सामूहिक या वैयक्तिक सत्याग्रह छेड़ सकती है, बशर्ते कि उनके यहां इसके लिए उचित तैयारी हो। गुजरात प्रान्त ने इसमे आगे कदम उठाया। बारडोली मे गान्धी जी के नेतृत्व मे सत्याग्रह प्रारम्भ करने की बात निश्चित हुई। २३ नवम्बर सन् १९२० को सत्याग्रह छिड़ने वाला था। किन्तु १७ नवम्बर को प्रिंस आफ वेल्स के भारत-आगमन पर सारे देश मे जो हड़ताल मनाई जानी थी, उस सम्बन्ध मे बम्बई मे एक दुर्घटना हो गई। गान्धी जी ने इसके लिए हार्दिक दुःख प्रकट किया और उपवास तथा प्रार्थनायें की।

इस परिस्थिति से सरकार कुछ घबरा गई थी। सबसे अधिक उसको घबराहट हुई। राजकुमार के आगमन के समय हड़ताल की सफलता देखकर। बस, उसने दमन करने की ठानी। खिलाफत और कांग्रेस कार्य के लिए की जाने वाली सभायें गैर कानूनी घोषित कर दी गईं। इस घोषणा के कारण बहुत सी गिरफ्तारियां हुईं। देशबन्धु चितरंजनदास भी गिरफ्तार कर लिए गए। वे ही कांग्रेस-अधिवेशन के सभापति

होने वाले थे। सरकार के इस रुख से हतोत्साह न होकर कांग्रेस कमेटी ने सारे देश में स्वयं सेवकों की भर्ती प्रारम्भ करदी और वृटिश सरकार की चुनौती का जवाब देने की तैयारियां होने लगी अ० भा० कांग्रेस महासमिति ने गान्धीजी को अपना सर्वाधिकारी चुनने के साथ कांग्रेस की बागडोर उनके हाथों में ही सौप दी।

फरवरी १९२२ मे महात्मा गांधी जी ने वायसराय को इस आशय का पत्र लिखा कि यदि सात दिन के अन्दर अन्दर सरकार ने अपनी नीति में कोई परिवर्तन की घोषणा न की तो बारदौली में सामूहिक सत्याग्रह प्रारम्भ किया जायगा। यह पत्र वायसराय के पास पहुचने भी न पाया था कि चौरी चौरा की ऐतिहासिक घटना घटित हुई। शीघ्र ही कार्यसमिति की एक असाधारण बैठक बुलाई गइ और सत्याग्रह को अनिश्चित समय के लिये स्थगित करने का निश्चय किया गया। साथ ही यह भी तय हुआ कि कांग्रेस विशेषतः रचनात्मक कार्य मे ही अपना समय लगावे। कम से कम एक करोड़ कांग्रेस के सदस्य बनाये जाये और चर्खा तथा स्वदेशी वस्तुओ का प्रचार किया जाय। अस्पृश्यता-निवारण, साम्प्रदायिक-एकता, राष्ट्रीय पाठशालाओ का संगठन तथा झगड़ो के निपटाने के लिए ग्राम एवं नगर-पंचायतों के निर्माण की योजना तैयार की गई। रचनात्मक-योजना के प्रारम्भ करते समय लोगों के जोश ठंडे पड गए थे। इसके अतिरिक्त सरकार ने गांधी जी को इसी समय एक लम्बी अवधि के लिए गिरफ्तार करके हवालात मे डाल दिया। इनने कार्य की गति और भी मन्द पड़ गई।

शासन-विधान की योजना बनाने की बात निश्चित की गई। उसी में एक उपसमिति का भी निर्माण किया गया, जिसके अध्यक्ष श्री मोतीलाल नेहरू बनाये गए। इस कमेटी ने १९२८ के अगस्त मास मे अपनी रिपोर्ट प्रकाशित की, जो भारतीय राजनीति के इतिहास में 'नेहरू रिपोर्ट' के नाम से विख्यात है। मद्रास-कांग्रेस में स्वीकृत पूर्ण स्वाधीनता के विरुद्ध भी 'नेहरू कमेटी' ने औपनिवेषिक स्वराज्य के आधार पर शासन-योजना तैयार की थी। इसके उपरान्त कलकत्ता मे जब श्री मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता मे कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन हुआ; तब इस आधार पर कि 'नेहरू कमेटी' की रिपोर्ट मद्रास-अधिवेशन मे स्वीकृत पूर्ण स्वाधीनता के सिद्धान्त के प्रतिकूल तैयार की गई है, उसका विरोध किया गया। अपने पूज्य पिता की अध्यक्षता मे तैयार की गई इस योजना के विरोधी नेता श्री जवाहरलाल नेहरू ही थे। बाप-बेटे की यह सैद्धान्तिक लड़ाई देखने ही योग्य थी। बहुमत पं० मोतीलाल नेहरू के ही पक्ष मे था और कांग्रेस ने 'नेहरू रिपोर्ट' को मंजूर भी कर लिया. साथ मे यह शर्त अवश्य रक्खी कि यह योजना ३१ दिसम्बर सन १९२९ तक अवश्य मंजूर करली जाय। साथ ही यह भी घोषणा की गई कि इस योजना के मंजूर न होने पर कांग्रेस असहयोग और सत्याग्रह की नीति अंगीकार करेगी।

ऐतिहासिक अधिवेशन

सन १९२९ के दिसम्बर मास मे लाहौर में रावी के पुनीत तट पर कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन हुआ। भारतीय तरुणाई के [illegible] श्री जवाहरलाल नेहरू इस अधिवेशन के

सभापति थे। देश ने कांटों का ताज बाप के सिर से उतार कर बेटे के सिर पर रखना ही उचित समझा। क्योंकि बृटिश सरकार ने अधिवेशन के समय तक 'नेहरू रिपोर्ट' की योजना को स्वीकार नहीं किया था, अतः लाहौर काँग्रेस ने पूर्ण स्वाधीनता के प्रस्ताव को दुहराया। इधर बृटिश सरकार की ओर से भारतीय समस्याओं को हल करने के लिए एक गोल-मेज परिषद की तैयारी भी होरही थी। वायसराय लार्ड इरविन कॉंग्रेस को इसमे भाग लेने के लिए फुसला रहे थे, कांग्रेस ने इसके बहिष्कार का प्रस्ताव पास किया और अपने दल के सभी केन्द्रीय तथा धारा सभाओ के सदस्यों को त्याग पत्र देने का आदेश दिया। अ० भा० कांग्रेस की महासमिति को इसने अधिकार दिया कि जब आवश्यक समझे यह समिति असहयोग तथा सत्याग्रह का आदेश दे सकती है। सन् १९३० की २६ जनवरी को सारे देश मे 'स्वाधीनता दिवस' मनाने की अपील की गई और देश ने इस अपील का जो स्वागत किया, वह भारतीय स्वाधीनता के इतिहास में स्वर्णाक्षरों मे अंकित रहेगा।

१७ फरवरी को कार्यसमिति की बैठक हुई और उसने यह निश्चय किया कि अब सत्याग्रह करना ही होगा। साथ ही उसमें इस सत्याग्रह का सम्पूर्ण नेतृत्व करने का अधिकार महात्मा गान्धी जी को दे दिया। ६ मार्च को गान्धी जी ने एक पत्र अंग्रेज दूतवास वायसराय के पास भेजा जिसमे इन्होंने अपनी ११ शर्तें प्रस्तुत करके उनकी पूरी होने की मांग की थी। नमक क़ानून तोड़ने की अभिलाषा प्रकट करते हुए इन्होंने अपने पत्र मे लिखा था—'भद्र अवज्ञा शुरू करने और उन आपत्तियों का सामना करने, जिनसे मैं अभी तक डर रहा था के पहले मैं

चाहता हूँ कि आपके साथ कोई इस समस्या के सुलझाने का मार्ग निकल आये। इस आन्दोलन के प्रारम्भ करते समय मेरे हृदय में जितना प्रेम, एक भारतीय के लिए है, उतना ही किसी अंग्रेज के लिए है। मैं आत्म-पीड़न से अंग्रेजों का हृदय परिवर्तित करना चाहता हूँ, न कि उनका विनाश। आपको मालूम होना चाहिए कि मैं आप लोगों का कोई भी नुकसान करना नहीं चाहता, बल्कि मैं तो आप लोगों की सेवा करना चाहता हूँ।'

जब नौकरशाही ने महात्मा गांधी जी के उक्त पत्र पर कोई भी विचार नहीं किया और तत्कालीन वायसराय लार्ड इरविन ने साधारण-सा उत्तर भेज दिया कि 'भारत सरकार को गान्धी जी के इस निर्णय से सख्त अफसोस है, क्योंकि इस नीति के अनुसरण से भारत में सार्वजनिक अशान्ति और असन्तोष ही फैलेगा।' तो महात्मा गान्धी जी ने रोटी की मांग के बदले पत्थर ही पाया और वे नमक कानून तोड़ने के लिए तैयार होगए।

डांडी यात्रा

पत्र का उत्तर पाने के बाद गान्धी जी ने अपने ७८ साथियों सहित नमक-कानून तोड़ने के लिए १२ मार्च को डांडी के लिए प्रयाण किया। मार्ग में भी [illegible] दोनों ओर के लोगों को विदेशी वस्त्र छोड़ने, नशा निषेध करने और भारत सरकार से असहयोग करने का उपदेश देते रहे। सबसे अधिक वे इस बात पर जोर देते कि सत्याग्रहियों को प्रत्येक अवस्था में अहिंसात्मक रहना आवश्यक है। देश की जनता पर गान्धी जी

की इस अपील का समुचित असर भी पड़ा और गांवों की पटेल तथा सरकारी कर्मचारी धड़ाधड़ स्तीफा देते गए। २४ दिन की लगातार यात्रा के बाद मुट्ठी भर अहिंसक सेना रण-स्थल पर पहुची। ५ अप्रैल की रात को उपवास और प्रार्थना के बाद दूसरे दिन प्रातःकाल गान्धी जी समुद्र के किनारे गए। ठीक आठ बजे उन्होने स्नान किया और समुद्र से मुट्ठी भर नमक छान लिया। इतने बड़े साम्राज्य के साथ मुट्ठी भर नमक बनाकर लड़ने की तैयारी का बहुत जगह उपहास किया गया। गांधी जी के नमक-कानून तोड़ते-तोड़ते सारे देश में नमक-कानून भंग करने की लहर दौड़ गई, और हजारों व्यक्ति गिरफ्तार कर लिए गए। गांधी जी तथा राष्ट्रपति नेहरू भी साथ-साथ गिरफ्तार कर लिए गए।

धरसना पर हमला

गान्धी जी की गिरफ्तारी के बाद बड़ौदा के चीफ कोर्ट के भूतपूर्व प्रधान न्यायधीश मौलाना अब्बास सैयद जी उनके उत्तराधिकारी हुए। वे भी गिरफ्तार कर लिए गए। उनके बाद श्रीमती सरोजनी नायडू की बारी आई और वे भी गिरफ्तार कर ली गई। इस प्रकार सब नेता क्रमशः गिरफ्तार होते गए और सत्याग्रह जोर पकड़ता गया। अन्त में इमाम साहब के नेतृत्व मे १५००० स्वयं सेवको ने धरसना नाम के नमक के डिपो पर हमला किया। केवल गिरफ्तारियो से काम चलता न देख सरकार ने उस समय लाठियां और गोलियां चलवाईं। धरसना के धावे से नमक तो न मिल सका, किन्तु लोगों में इससे नमक-कानून तोड़ने की अपार-शक्ति पैदा होगई।

ब्रिटेन की ऐतिहासिक यात्रा

इसके उपरान्त ब्रिटेन के तत्कालीन प्रधान मंत्री रैम्जे मैकडानल्ड की घोषणा के आधार पर कार्य-समिति के सब सदस्यों की रिहाई होगई। जेल से मुक्त होनेपर गान्धीजी ने फिर वायसराय को पत्र लिखा, पीछे दोनों आदमियों के बीच वार्तालाप भी हुआ। अन्त मे ५ मार्च सन १९३१ को समझौता होने के कारण कांग्रेस फिर वैधानिक संस्था घोषित कर दी गई तथा सभी राजबन्दी मुक्त कर दिए गए। इस वर्ष लन्दन मे गोलमेज कानफ्रेन्स हुई। कांग्रेस की ओर से महात्मा गान्धी, महामना मालवीय और सरोजनी नायडू ब्रिटिश सरकार के निमन्त्रण पर कान्फ्रेन्स में सम्मिलित होने के लिए लन्दन गए। आप लोगों ने अपने विचारों से सदस्यों को आगाह कराया; परन्तु साम्प्रदायिक वातावरण का बड़ा ही बुरा प्रभाव पड़ा और यह वार्ता असफल होगई। अभी ये लोग भारत में लौटे भी न थे कि भारत का राजनैतिक वातावरण फिर क्षुब्ध होगया। इधर भारत के लिए गान्धी जी के प्रस्थान करते ही तत्कालीन वायसराय लार्ड विलिंगडन ने नादिरशाही प्रारम्भ करदी। गान्धी जी अभी जहाज पर ही थे कि सीमान्त गान्धी खान अब्दुलगफ्फारखां हवालात में ठूंस दिए गए और उनके हजारों स्वयं सेवकों को जेल में भेज दिया गया। यू० पी० सीमान्त और बंगाल में एक साथ काले कानूनों की झड़ी लग गई। पं० जवाहरलाल नेहरू को बम्बई में उस समय गिरफ्तार कर लिया गया, जब वे गान्धी जी की अगवानी करने वहाँ गए हुए थे। गान्धी जी इस स्थिति को देखकर अत्यन्त दुखित तथा चिन्तित हुए। उन्होंने तुरन्त

वायसराय को एक पत्र लिखा जिसमें समझौतों की शर्तों को सरकार द्वारा भग किए जाने का उल्लेख था।

फिर संघर्ष

गान्धी जी के इस पत्र का कोई सन्तोष-जनक उत्तर न मिला। गान्धी जी जनता और सरकार की नब्ज पहचानने में देर नहीं करते। वे ताड़ गए कि विलिंगडन की सरकार स्वाधीनता आन्दोलन को कुचलने पर तुली हुई है। शीघ्र ही कार्य-समिति की बैठक बुलाई गई और उसमें सीमान्त तथा बंगाल में फैले हुए अत्याचार के प्रति असन्तोष प्रकट किया गया। साथ ही यह भी निश्चय किया गया कि यदि भारत सरकार इस अस्वाभाविक अवस्था का अन्त नही करती, तो विवश होकर कांग्रेस को सन १९३० के स्थगित सत्याग्रह को पुनः जारी करना पड़ेगा और इस प्रस्ताव की एक प्रति लार्ड विलिंगडन के पास भेज दी गई। विलिंगडन साहब तो पहले से ही तैयार बैठे थे। प्रस्तावों की पहुच मात्रकी सूचना कार्य-समितिको भेजदी गई और इधर कार्य समिति के सदस्य अपने-अपने मकानों को चले और उधर वायसराय भवन से सारे वारन्ट निकले। ४ जनवरी सन १९३२ को गान्धी जी तथा कांग्रेस के सभापति सरदार पटेल गिरफ्तार कर लिए गए और सदस्य भी ऐसे ही जहाँ पाये गए वहीं पकड़ लिए गए। सारे देश की कांग्रेस कमेटियां गैर कानूनी संस्थायें घोषित कर दी गई। आन्दोलन दबने की बजाय दिन प्रतिदिन बढ़ता ही गया और नौकरशाही अपनी इस असफलता से खीझकर पाशविकता की नीति का आचरण करने लगी। देहातो में स्वयं सेवको पर लाठी-प्रहार होने लगा और लोगों की

जायदादें नीलाम की जाने लगी सारांशतः दमनका कोई भी तरीका उठा न रखा गया और चारों ओर जुल्म का ताण्डव होने लगा।

आमरण उपवास

गोलमेज परिषद के समय महात्मा गान्धी जी ने हरिजनों के लिए पृथक निर्वाचन की मांग की घोर विरोध करने की चुनौती दे दी थी। इसी कारण इसके विरोध मे गान्धी जी ने २० सितम्बर सन १९३२ को आमरण अनशन करने की घोषणा करदी। पीछे दलित जातियों में समझौता होने पर उसके निर्णयानुसार संयुक्त निर्वाचन को स्वीकार कर लिया गया और महात्मा गान्धीजी की अवस्था को देखकर सरकार ने उन्हें जेल से तुरन्त रिहा कर दिया। इसके उपरान्त महात्मा जी ने हरिजन सेवा की ओर विशेष ध्यान दिया।

नीति परिवर्तन

जेल से निकलकर गान्धी जी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह भी स्थगित कर दिया और केवल अपने ही जिम्मे इस असीम अस्त्र का प्रयोग रक्खा। इधर कांग्रेस में कुछ सुस्ती आगई थी। इन सब परिस्थितियों पर विचार करने के लिए १९३४ के मई मास में कांग्रेस महासमिति की बैठक बुलाई गई और यह निश्चय किया गया कि स्वराज्य पार्टी का पुनः संगठन किया जाय और इसी के संचालन में कौंसिल प्रवेश की नीति क्रियात्मक रूप में प्रयुक्त की जाय। बहुत विरोध होने पर भी कौंसिल-प्रवेश की नीति कांग्रेस महासमिति ने स्वीकार कर ली गई और बाद को बम्बई के ४८ वें अधिवेशन ने इस पर अपनी मुहर भी लगादी।

पटना में कांग्रेस-महासमिति की बैठक के समय आचार्य श्री नरेन्द्रदेव की अध्यक्षता से प्रथम समाजवादी सम्मेलन की नींव पड़ी। इसके बाद अधिकांश कांग्रेसियों में वैधानिक प्रवृत्ति घर कर गई और चुनाव संग्राम की तैयारियां होने लगीं। पहले केन्द्रीय धारा सभा के सदस्यों का निर्वाचन हुआ, उसके बाद प्रान्तीयधारा सभाओं का। फिर १९३७ में बिहार, बम्बई, यू०पी०, सी०पी०, उड़ीसा, मद्रास और आसाम में कांग्रेस मन्त्रि-मंडल संगठित किये गए। सन् १९३९ में यूरोप में युद्ध छिड़ गया। कांग्रेस की ओर से बृटिश सरकार से प्रश्न किया गया कि इस युद्ध का उद्देश्य क्या है? इसका उद्देश्य यदि लोकतन्त्र की रक्षा करना है तो भारत के सम्बन्ध में स्पष्ट नीति की घोषणा होनी चाहिए। जब सरकार की ओर से इसका कोई उचित उत्तर प्राप्त न हुआ तो सभी प्रान्तों के कांग्रेसी मन्त्रियों ने अपने पदों से त्याग-पत्र दे दिये। लोगों में पूर्ण उत्साह था। यूरोपीय युद्ध से किसी न किसी रूप में भारत का भी सम्बन्ध बढ़ने लगा। अपने उद्देश्य में असफल होते देख जनता सत्याग्रह की मांग करने लगी। अन्त में सरकार के सामने प्रस्ताव रखा गया कि यदि भारत को स्वतन्त्र राष्ट्र घोषित कर दिया जाय और केन्द्र में राष्ट्रीय सरकार की स्थापना करदी जाय तो भारत अपनी रक्षा के लिए पूरी ताकत लगा देगा। इस पर भी सरकार ने कुछ ध्यान नहीं दिया।

बोस का राष्ट्रपतित्व

सन १९३८ में कांग्रेस का अधिवेशन हरिपुरा में हुआ। देश में वैधानिक मनोवृत्ति जोर पकड़ती जाती थी। हरिपुराद

इस प्रयत्न में थे कि किसी प्रकार संघ-शासन की समस्या को सुलझाया जाय और कांग्रेस को माया-जाल में फँसाया जाय। बहुतों को तो ऐसी आशा होगई थी कि प्रान्तीय मन्त्रिमंडलों का स्वाद चख लेने के बाद कांग्रेसी अवश्य ही संघ शासन को कुछ सुधारों के साथ स्वीकार कर लेंगे; किन्तु हरिपुरा अधिवेशन ने यह भ्रम दूर कर दिया और नियम पूर्वक यह प्रस्ताव स्वीकार किया गया कि कांग्रेस संघ-योजना को इसके वर्तमान रूप में कदापि स्वीकार नहीं कर सकती। कांग्रेस-अधिवेशन में यह प्रस्ताव पास कर देने पर भी बहुतों की यह धारणा बनी रही कि कांग्रेस संघ-योजना अवश्य स्वीकार करेगी। कारण यह था कि कार्य-समिति में, जिसके हाथों में ही कांग्रेस की बागडोर है, दक्षिण पन्थियों का बहुमत रहा। श्री सुभाषचन्द्र बोस इस स्थिति से सावधान रहे और इस बात का प्रचार करते रहे कि कांग्रेस किसी भी स्थिति में संघ-शासन को स्वीकार नहीं करेगी।

त्रिपुरी अधिवेशन

ऐसे संघर्ष की अवस्था में १९३९ में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। कांग्रेस के इतिहास में कार्य समिति द्वारा नामजद सदस्य के विरुद्ध चुनाव लड़ने की आज तक किसी ने भी हिम्मत नहीं की थी, किन्तु श्री सुभाष बाबू ने यह उदाहरण पहले-पहल पेश किया। वास्तव में [illegible] तथा वाम पंथियों को इस बात का सन्देह होगया था कि किसी दक्षिण पन्थी के बहुमति होने पर संघ-योजना [illegible] स्वीकार कर ली जायगी। इसी कारण पर त्रिपुरी-अधिवेशन के सभापतित्व के प्रश्न पर झगड़ा हुआ और लोगों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब सुभाष [illegible]

डाक्टर पट्टाभि को हराकर राष्ट्रपति होगए। किन्तु; यह सुभाष बाबू और डाक्टर पट्टाभि की विजय और पराजय का प्रश्न नही, यह तो नीति का प्रश्न था। फलस्वरूप इस समय गान्धी जी ने मौन-भंग किया और इस चुनाव से अपनी असहमति प्रकट की। डाक्टर पट्टाभि की पराजय मे महात्मा जी ने अपनी नीति की पराजय देखी और इस आधार पर देश के नेतृत्व को बोस द्वारा वहन करने से सर्वथा इन्कार कर दिया। देश को यह स्थिति मान्य नही थी, किन्तु सुभाष बाबू को अन्ततः राष्ट्रपतित्व से त्याग-पत्र देना पड़ा और उनके स्थान मे देशरत्न बा० राजेन्द्र प्रसाद राष्ट्रपति बनाये गए।

व्यक्तिगत सत्याग्रह

युद्ध को सिर पर आया हुआ देखकर हिन्दुस्तान में बेचैनी बढ़ने लगी। लोग यह सोचने लगे कि गुलामी के तौक को तोड़ फेंकने के लिए इससे अच्छा अवसर और नहीं मिल सकता। देश की इस मनोवृत्ति को गान्धी जी ने भी समझा और वायसराय ने भी। अतएव फिर परस्पर आदान-प्रदान और समझौते की बाते होने लगी। वायसराय ने कई वक्तव्य प्रकाशित कराये, किन्तु किसी वक्तव्य मे भी उन्होंने यह नहीं कहा कि सरकार सम्पूर्ण या उचित अधिकार भी भारतवर्ष को दे देगी। ऐसा लगा कि अब कोई समझौता नहीं हो सकेगा। इतना ही नही, उन्होने सत्याग्रह करने की भी धमकी दी। सत्याग्रह आरम्भ हुआ। नेताओ की गिरफ्तारियाँ शुरू हुई,

परन्तु प्रशान्त में जापानियों ने युद्ध छेड़ दिया और इसी से प्रभावित होकर सरकार ने सभी कांग्रेसियों को जेल-मुक्त कर दिया।

क्रिप्स-योजना

इधर समर-क्षेत्र का कुछ और ही हाल था। फ्रांस के पतन के बाद इंगलैण्ड में दिन गिने जारहे थे। अमेरिका प्रायः तटस्थ था और रूस से हिटलर की सन्धि थी। अंगरेज बड़े ही असमंजस मे पड़े थे, किन्तु शीघ्र ही अमेरिका युद्ध मे आगया और जर्मनी से उसकी ठन गई। इसी बीच सिंगापुर मे अंगरेज जापानियो से हार गए और उसके बाद तो ऐसा प्रतीत हुआ कि अंगरेजी सरकार भारत मे भी चार दिन की मेहमान है। ऐसी अवस्था मे भारत को अप्रसन्न रखने के काम को खतरनाक जानकर चर्चिल सरकार ने सर स्टैफोर्ड क्रिप्स को हिन्दुस्तान की आजादी की एक आयोजना लेकर भारत मे भेजा। गान्धी जी के शब्दो मे 'क्रिप्स-योजना' उस बैंक की हुंडी थी, जिसका दिवाला निकलने जारहा था। अंगरेज आसानी से भारत को आजाद करने को तैयार नहीं थे। केवल वायदो के बल पर अपनी नाव को खेकर किसी प्रकार पार लगाना चाहते थे। कहा जाता है कि तब भी कांग्रेस के नेता उस योजना को कुछ हेर फेर के बाद स्वीकार कर लेना चाहते थे; किन्तु इसी बीच चर्चिल ने क्रिप्स को वापिस बुला लिया और समझौते की चिड़िया हिन्दुस्तान के हाथ से आते-आते 'फुर' से उड़ गई।

क्रिप्स योजना की विफलता

क्रिप्स-योजना की विफलता का कारण यह था कि देश के अधिकांश नेता इसमें निर्दिष्ट सुविधाओं से असन्तुष्ट थे। इस

योजना का सारांश संक्षेप में यह था कि युद्धोपरान्त विधान-निर्मात्री परिषद् में भारत के निर्वाचित सदस्यों को विधान तैयार करने का अधिकार होगा। समस्त भारत का एक संघ कायम होगा जिसमें देशी रजवाड़े भी सम्मिलित रहेंगे। परन्तु संघ में सम्मिलित होने के लिए किसी भी प्रान्त या देशी राज्य को विवश नहीं किया जायगा। संघ से अलग रहने पर भी उस प्रान्त या देशी राज्य को अपना विधान बनाने का अधिकार प्राप्त होगा। वायसराय-कौंसिल को मन्त्रिमंडल के स्वरूप में परिवर्तित नहीं किया जायगा। तात्पर्य यह है कि वर्तमान व्यवस्था पूर्ववत् रहेगी। इन सब बातों पर विचार करने से देखा गया कि इस योजना में देश के विभाजन और पाकिस्तानी मांग के समर्थन की काफी गुंजाइश थी। यह सब कुछ होते हुए भी युद्धकालीन व्यवस्था के सम्बन्ध में यदि सन्तोष जनक सुझाव होते, तो उसे स्वीकार करने में किसी को कुछ भी आपत्ति न होती, परन्तु कांग्रेस ने इस पर शुरू से आखिर तक विचार कर देखा तो इसे बिल्कुल अनुपयुक्त, अयोग्य एवं अमान्य बतला दिया और संघर्ष की नींव पड़ गई।

३

अगस्त-क्रांति

क्रिप्स योजना के असफल होते ही समस्त देश में विद्रोह एवं असन्तोष की एक भीषण लहर दौड़ गई। परिणाम स्वरूप गान्धी जी ने इस विषय में गंभीरता पूर्वक सोचा और अपने विचार २६ अप्रैल सन १९४२ के 'हरिजन' में व्यक्त किए। उनके इसी लेख में सर्व प्रथम 'भारत छोड़ो' का नारा लगाया गया था। उन्होंने इस लेख में भारत की रक्षा के लिए भारत में विदेशी सैनिकों के आगमन की घटना पर खेद प्रकट करते हुए लिखा था—"यदि अंगरेज भारत को उसके भाग्य के भरोसे सिंगापुर की भांति छोड़ दें तो अहिंसक भारत की इससे कुछ हानि न होगी और संभवतः जापान उसे कुछ भी न कहेगा। भारत के लिए चाहे इसका कुछ भी परिणाम क्यों न हो, अब तो भारत और ब्रिटेन का वास्तविक हित इसी में है कि अंगरेज सुरक्षा पूर्वक भारत को छोड़ जावें।"

गान्धी जी के 'भारत छोड़ो' नारे की महत्ता सभी देश ने एक स्वर से स्वीकार की। इस सम्बन्ध में विस्तृत रूप से विचार करने के लिए अप्रैल के अन्तिम सप्ताह में इलाहाबाद में कांग्रेस कार्य समिति की बैठक बुलाई गई। इसमें बृटिश-सत्ता के अविलम्ब भारत छोड़कर चले जाने और गान्धी जी तथा समस्त देश की मांग के वास्तविक अभिप्राय पर अत्यंत गम्भीरता पूर्वक विचार किया गया। इसके उपरान्त १४ जुलाई ४२ को वर्धा में फिर सब कांग्रेसी नेता एकत्रित हुए और सबने भारत छोड़ो' का प्रस्ताव एक स्वर से स्वीकार कर लिया। साथ ही यह भी निश्चय किया गया कि बृटिश सरकार हमारी इस मांग को यदि स्वीकार न करे तो समस्त देश में सविनय अवज्ञा आन्दोलन किया जाय।

कांग्रेस कार्य-समिति की प्रयाग और वर्धा मे होने वाली बैठकों से पूर्व ५ जून, ४२ के 'हरिजन' मे गांधी जी का जो लेख प्रकाशित हुआ था, उससे तो और भी आशा देश को एक नया संग्राम छेड़ने की हो चली थी। उन्होंने लिखा था—"यह एक ऐसा आन्दोलन होगा, जिसको सारा संसार अनुभव करेगा। सम्भव है कि यह बृटिश सेना की हलचलो मे बाधा न पहुंचा सके, परन्तु यह तो सर्वथा निश्चित है कि इसकी ओर अंग्रेजों का ध्यान आकृष्ट होकर रहेगा।"

उन्होने आगे लिखा था-"मैंने प्रतीक्षा की और तब तक प्रतीक्षा क , जब तक कि देश मे विदेशी दासता के जुए को उतार फेकने के लिए आवश्यक अहिंसात्मक शक्ति न पनप जाये। किन्तु मेरे दृष्टिकोण मे परिवर्तन होगया है। मैं अनुभव करता हूं कि अब मै प्रतीक्षा नहीं कर सकता. यदि मैंने प्रतीक्षा जारी

रखी तो मुझे प्रलय के दिन तक प्रतीक्षा करनी होगी। जिस तैयारी के लिए मैं प्रार्थना तथा प्रयत्न करता रहा हूँ, उसका अवसर शायद कभी न आवे और इसी बीच मुझे वे ज्वालायें घेर लें और निगल जायें जो हम सबको भयभीत कर रही हैं। इसी कारण मैंने निश्चय किया है कि कुछ खतरे सिर पर उठाकर भी, जो कि अनिवार्यतः आयेंगे ही, मुझे जनता को दासत्व का प्रतिरोध करने के लिए अवश्य कहना चाहिए।"

प्रयाग का प्रस्ताव

गान्धी जी के 'भारत छोड़ो' नारे के सम्बन्ध में १ मई १९४२ को प्रयाग में हुई अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने जो प्रस्ताव पास किया वह निम्न प्रकार है—

"भारत के सन्मुख आक्रमण का जो तात्कालिक खतरा है और सर स्टैफर्ड क्रिप्स द्वारा उपस्थित किए गये हाल के प्रस्तावों में वृटिश सरकार का जो रुख प्रकट हुआ है, उसे देखते हुए अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के लिये भारत की नीति को पुनः घोषित करना आवश्यक है तथा जनता को यह परामर्श देना आवश्यक है कि निकट भविष्य में उत्पन्न होने वाले आपत्कालों में वह क्या करे।

वृटिश सरकार के प्रस्ताव और बाद में सर स्टैफर्ड क्रिप्स द्वारा किये गये उनके स्पष्टीकरण से उस सरकार के विरुद्ध अधिक कटु भावना और अविश्वास उत्पन्न होगया है और वृटेन के साथ असहयोग करने का भाव बढ़ गया है। उन्होंने सिद्ध किया है कि उस समय भी जब केवल भारत के लिए ही नहीं वरन् मित्र राष्ट्रों के लक्ष्य के लिये भी संकटकाल है, वृटिश सरकार [illegible]

साम्राज्यवादी सरकार के तौर पर कार्य कर रही है और उसने भारत की स्वतन्त्रता को स्वीकार करने अथवा कोई भी सच्चा अधिकार देने से इन्कार कर दिया है।

युद्ध में भारत का सम्मिलित होना एक बिलकुल अंगरेजों का कार्य है जिसे भारतीय जनता के ऊपर उसके प्रतिनिधियों की स्वीकृति लिये बिना ही लाद दिया गया है। भारत का किसी भी देश के लोगों से कोई झगड़ा नहीं है, फिर भी उसने साम्राज्यवाद के समान ही नाजीवाद और फासिस्टवाद के प्रति अपना विरोध बारम्बार प्रकट किया है। यदि भारत स्वतन्त्र होता तो वह अपनी नीति स्वयं निर्धारित करता और शायद युद्ध से अलग रहता, यद्यपि उसकी सहानुभूति प्रत्येक दशा में आक्रमण के शिकार हुए राष्ट्रों के साथ होती। यदि परिस्थितियों से विवश होकर उसे युद्ध में सम्मिलित होना ही पड़ता तो वह स्वतन्त्रता के लिए लड़ने वाले एक स्वतन्त्र देश के रूप में सम्मिलित होता और उसकी रक्षा-व्यवस्था का संगठन राष्ट्रीय नियन्त्रण और नेतृत्व में राष्ट्रीय सेना द्वारा तथा जनता से घनिष्ठ सम्पर्क रखते हुए एक लोकप्रिय आधार पर किया जाता। किसी आक्रमणकारी का आक्रमण होने की दशा में स्वतन्त्र भारत अपनी रक्षा स्वयं कर सकेगा। वर्तमान भारतीय सेना बृटिश सेना की एक शाखामात्र है और अभी तक उसका प्रयोग भारत को पराधीन बनाए रखने के लिए ही किया गया है। साधारण जनता से उसे बिल्कुल अलग रखा गया है। इसलिए जनता उसे अपनी सेना नहीं मान सकती।

रक्षा के विषय में साम्राज्यवादी और लोकप्रिय दृष्टिकोणों में जो महत्वपूर्ण अन्तर है वह इसी बात से प्रकट हो जाता है

कि जहां विदेशी सेनाओं को रक्षा के लिए भारत में बुलाया जा रहा है वहां भारत की विशाल जनशक्ति का इस कार्य के लिए उपयोग नहीं किया जाता। भारत पिछले अनुभवों से सीख चुका है कि विदेशी सेनाओं का लाया जाना उसके हित के लिए हानिकारक और उसकी स्वतन्त्रता के लिए भयावह है। यह बात अत्यन्त उल्लेखनीय और असाधारण है कि जब भारत अपनी भूमि अथवा सीमा पर लड़ने वाली विदेशी सेनाओं की रणस्थली बन रहा हो तो भी उसकी अनन्त जनशक्ति का उपयोग न किया जाय और उसकी रक्षा का प्रश्न जनता द्वारा नियन्त्रण के योग्य विषय न माना जाय। विदेशी सत्ता द्वारा निपटा दी जाने वाली जड़ वस्तुओं के समान अपने निवासियों के साथ व्यवहार किए जाने पर भारत रोष प्रकट करता है।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी को दृढ़ विश्वास है कि भारत अपने बलबूते पर ही स्वतन्त्रता प्राप्त करेगा और इसी प्रकार रक्षा कर सकेगा। वर्तमान संकट और सर स्टैफर्ड क्रिप्स से की गई वार्ता के अनुभव से कांग्रेस के लिए किसी भी ऐसी योजना अथवा प्रस्ताव पर विचार करना असम्भव हो गया है, जिसमें चाहे आंशिक रूप से ही क्यों न हो, भारत में ब्रिटिश नियन्त्रण और सत्ता बनी रह जाय। केवल भारत के हित की ही नहीं वरन् ब्रिटेन की सुरक्षा और विश्वशान्ति एवं स्वतन्त्रता की भी यह मांग है कि ब्रिटेन को भारत से अपना अधिकार अवश्य हटा लेना चाहिए। केवल स्वतन्त्रता के आधार पर ही भारत ब्रिटेन अथवा अन्य राष्ट्रों के साथ व्यवहार कर सकता है।

किसी भी विदेशी राष्ट्र के हस्तक्षेप अथवा आक्रमण द्वारा भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त होने की [illegible]

वर्धा का निश्चय

प्रयाग की कांग्रेस-कार्यसमिति क अधिवेशन के उपरान्त १४ जुलाई को फिर वर्धा मे इसी सम्बन्ध में विचार करने के लिए सभी नेता एकत्रित हुए। वर्धा की कांग्रेस कार्यसमिति द्वारा पास किया गया प्रस्ताव निम्न प्रकार है:—

"जो घटनाएँ प्रतिदिन घट रही है और भारतवासियों को जो-जो अनुभव होरहे हैं उनसे कांग्रेसी कार्यकर्त्ताओं की यह धारणा पुष्ट होती जा रही है कि भारत मे बृटिश शासन का अन्त अतिशीघ्र होना चाहिए। यह केवल इसलिए नहीं कि विदेशी सत्ता अच्छी से अच्छी होते हुए भी स्वयं एक बुराई है और परतन्त्र जनता केलिए अनिष्ट का अबाध स्रोत है, बल्कि इसलिए कि दासत्व शृंखला मे जकड़ा हुआ भारत अपनी ही रक्षा के काम मे और मानवता का विध्वंस करने वाले युद्ध के भाग्य-चक्र को प्रभावित करने मे पूरा पूरा भाग नहीं ले सकता। इस प्रकार भारत की स्वतन्त्रता न केवल भारत के हित के लिए आवश्यक है बल्कि संसार की सुरक्षा के लिए और नाजीवाद, फासिस्टवाद, सैनिकवाद और अन्य प्रकार के साम्राज्यवादों एवं एक राष्ट्र पर दूसरे राष्ट्र के आक्रमण का अन्त करने के लिये भी। संसारव्यापी युद्ध के छिड़ने के बाद से कांग्रेस ने यत्नपूर्वक परेशान न करने वाली नीति को ग्रहण किया है। सत्याग्रह के प्रभावहीन हो जाने का खतरा उठाते हुए भी कांग्रेस ने इसे जान बूझकर सांकेतिक स्वरूप दिया और यह इस आशा से कि परेशान न करने वाली इस नीति के यौक्तिक पराकाष्ठा तक पहुंचने पर इसका समुचित समादर किया जायगा और वास्तविक सत्ता लोकप्रिय प्रतिनिधियों को सौंप दी जायगी जिससे कि राष्ट्र विश्व भर में मानव स्वा[illegible]

जिसके कुचल दिये जाने का खतरा उपस्थित है, प्राप्त करने के कार्य में अपना पूरा सहयोग देने में समर्थ हो सके। इसने यह आशा भी कर रखी थी कि ऐसा कोई भी कार्य नहीं किया जायगा जिससे भारत पर बृटेन के आधिपत्य के और भी दृढ़ होने की सम्भावना हो।

किन्तु इन आशाओं को चकनाचूर कर डाला गया है। क्रिप्स की निष्फल योजना ने स्पष्ट रूप से दिखला दिया है कि भारत के प्रति बृटिश सरकार की मनोवृत्ति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है और भारत पर अंग्रेजों का प्रभुत्व किसी प्रकार शिथिल न होने दिया जायगा। सर स्टैफर्ड क्रिप्स के साथ वार्ता करने में कांग्रेस प्रतिनिधियों ने राष्ट्रीय मांग के अनुरूप कम से कम अधिकार प्राप्त करने का जी तोड़ प्रयत्न किया किन्तु सफलता न मिली। इस असफलता के परिणाम स्वरूप बृटेन के विरुद्ध विद्वेष-भावना में शीघ्रता के साथ और व्यापक रूप से वृद्धि हुई है और जापानियों की सैनिक सफलता से विशेष सन्तोष प्राप्त हुआ है।

कार्यसमिति इस स्थिति को घोर आशंका की दृष्टि से देखती है क्योंकि, यदि इसका प्रतिरोध न किया गया तो अनिवार्य रूप से इसका परिणाम आक्रमण को निष्क्रिय भाव से सहन करना होगा। समिति की धारणा है कि सब प्रकार के आक्रमणों का प्रतिरोध होना ही चाहिए, क्योंकि इनके आगे झुक जाने का अर्थ अवश्य ही भारतीयों का पतन और उनकी परतन्त्रता का जारी रहना होगा। कांग्रेस नहीं चाहती कि मलाया, सिंगापुर और बर्मा पर जो बीती है वही भारत पर भी बीते,

इसलिए वह चाहती है कि भारत पर जापान या किसी अन्य विदेशी सत्ता की चढ़ाई या आक्रमण के विरुद्ध प्रतिरोध शक्ति का संगठन करे। बृटेन के विरुद्ध जो विद्वेष-भावना वर्तमान है उसे कांग्रेस सद्भावना के रूप में परिणत कर देगी और भारत को, संसार भर के राष्ट्रों और अधिवासियों के लिए स्वतन्त्रता प्राप्त करने के संयुक्त उद्योग और इसके फलस्वरूप उत्पन्न होने वाले कष्ट और क्लेशों मे स्वेच्छा पूर्वक भाग लेने को प्रेरित करेगी। यह केवल उसी अवस्था मे सम्भव है जब भारत स्वतन्त्रता के आलोक का अनुभव करे।

कांग्रेस प्रतिनिधियों ने साम्प्रदायिक समस्या को सुलझाने का शक्ति भर प्रयत्न किया है। किन्तु विदेशी सत्ता की उपस्थिति मे यह काम असम्भव होगया है और वर्तमान अवास्तविकता के स्थान पर वास्तविकता की स्थापना तभी हो सकती है जब विदेशी प्रभुता और हस्तक्षेप का अन्त कर दिया जाय और भारतीय जन, जिनमे सब दलो और समुदायो के व्यक्ति होंगे भारतीय समस्याओ का सामना करें और पारस्परिक समझौते के आधार पर उनका हल ढूंढ़ निकालें।

तब सम्भवतः वर्तमान राजनीतिक दल जो प्रधानतः ब्रिटिश सत्ता को अपनी ओर आकृष्ट करने और उसे प्रभावित करने के उद्देश्य से संगठित हुए है, अपनी कार्रवाई बन्द कर देंगे। भारत के इतिहास में, फिर यह बात पहले-पहल अनुभव की जायगी कि भारतीय नरेश, जागीरदार, जमींदार और सम्पत्तिशाली तथा धनिक वर्ग उन श्रमजीवियों से अपना धन और सम्पत्ति प्राप्त करते है, जो खेत-खलिहान, कारखानों और दूसरे स्थानों पर

काम करते हैं और जो वास्तव में शक्ति एवं सत्ता के अधिकारी है। भारत से बृटिश शासन के हटा लिये जाने पर देश के जिम्मेदार स्त्रीपुरुष एक साथ मिलकर एक अस्थायी सरकार का निर्माण करेंगे जो भारत के समस्त महत्वपूर्ण वर्गों का प्रतिनिधित्व करेगी और बाद मे ऐसी योजना को जन्म देगी जिससे विधान निर्मातृ-परिषद की रचना हो सकेगी, जो राष्ट्र के सब वर्गों के स्वीकार करने योग्य भारतीय शासन विधान का निर्माण करेगी। स्वतन्त्र भारत के प्रतिनिधि और बृटेन के प्रतिनिधि दोनो देशो के सहयोग और भावी सम्बन्ध को स्थिर करने के लिए, आक्रमण का सामना करने के सामूहिक कार्य मे सहयोगियो के रूप मे, परस्पर वार्तालाप करेंगे।

कांग्रेस की हार्दिक इच्छा है कि वह, जनता की सम्मिलित इच्छा और शक्ति के बल पर, भारत को आक्रमण का सफल प्रतिरोध करने के योग्य बनावे। भारत से बृटिश सत्ता के उठा लिये जाने का प्रस्ताव पेश करने मे कांग्रेस की यह इच्छा नहीं है कि इससे बृटेन अथवा मित्र राष्ट्रों के युद्ध कार्यों मे बाधा पहुचे या इस से जापान या धुरी समूह के किसी अन्य राष्ट्र को भारत पर आक्रमण करने या चीन पर दबाव बढ़ाने को प्रोत्साहन मिले। और न कांग्रेस मित्रराष्ट्रो की रक्षा-शक्ति को हानि पहुचाने का इरादा रखती है।

इसलिए जापानियो के या किसी और के आक्रमण को दूर रखने या उसका प्रतिरोध करने के लिये, तथा चीन की रक्षा और सहायता के लिये कांग्रेस भारत मे मित्रराष्ट्रों की सशस्त्र [illegible] ओ को टिकाने के लिए, यदि उनकी ऐसी इच्छा हो,

राजी है। भारत से बृटिश सत्ता के हटा लिये जाने के प्रस्ताव का उद्देश्य यह कभी नहीं था कि भारत में सारे अंगरेज और निश्चय ही वे अंगरेज विदा हो जायें जो भारत को अपना घर बना कर वहां दूसरों के साथ नागरिक और समानाधिकारी बन कर रहना चाहते हैं। यदि इस प्रकार का हटना सद्भावना पूर्वक सम्पन्न हो तो इसके परिणाम स्वरूप भारत में स्थायी शासन की स्थापना और आक्रमण का प्रतिरोध करने तथा चीन को सहायता देने में इस सरकार तथा संयुक्त राष्ट्रों के मध्य सहयोग हो सकता है। कांग्रेस इस बात को समझती है कि ऐसा मार्ग ग्रहण करने में खतरे भी उपस्थित हो सकते हैं। किन्तु स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए और खास कर वर्तमान संकटापन्न स्थिति में देश एवं संसार भर में कहीं अधिक खतरों और विपदाओं से घिरे हुए स्वतंत्रता के विशालतर आदर्श को बचाने के लिए किसी भी देश को ऐसे खतरों का सामना करना ही पड़ता है। अस्तु, जबकि कांग्रेस राष्ट्रीय उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अधीर है, वह जल्दबाजी में कोई काम करना नहीं चाहती और न ऐसा मार्ग ग्रहण करना चाहती है जिससे मित्रराष्ट्रों को परेशानी हो। इसलिए यदि बृटिश सरकार इस अत्यन्त यथोचित और उचित प्रस्ताव को स्वीकार कर लेगी, जो न केवल भारत के वरन् बृटेन के और उस स्वतंत्रता के हित में है जिसके मित्रराष्ट्र अपने को संरक्षक घोषित करते हैं, तो कांग्रेस को बृटिश सरकार के इस कार्य से प्रसन्नता होगी। अगर, यदि यह अपील व्यर्थ गई तो कांग्रेस वर्तमान स्थिति के चालू रहने को, जिससे परिस्थिति का धीरे-धीरे बिगड़ना और भारत की आक्रमण-विरोधी शक्ति और इच्छा [illegible] दुर्बल होना स्वाभाविक है और [illegible] से देखेगी। इस स्थिति में कांग्रेस को अपनी सकल अहिंसात्मक

शक्ति का, जो सन् १९२०, जबकि इसने राजनीतिक अधिकारों और स्वाधीनता के समर्थन के लिए अहिंसा को अपनी नीति एक अंग के रूप मे स्वीकार किया था, के बाद संचित की गई है, अनिच्छा पूवक उपयोग करने को बाध्य होना पड़ेगा। इस प्रकार के व्यापक संघर्ष का नेतृत्व अनिवार्य रूप से महात्मा गांधी करेंगे। चूंकि, जो प्रश्न यहां उठाये गये है वे भारतीय जनता एवं मित्रराष्ट्रों की जनता के लिए सुदूरव्यापी तथा अत्यन्त महत्व के है इसलिए कार्यसमिति अन्तिम निर्णय के लिए इन्हें अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सिपुर्द करती है। इस कार्य के लिए ७ अगस्त १९४२ को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक होगी।"

वर्धा से बम्बई

वर्धा की कांग्रेस कार्य-कारिणी की बैठक के बाद सभी राष्ट्रीय नेता यथाशीघ्र स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए उद्विग्न हो गए। और उन्होंने 'भारत छोड़ो' का नारा बुलन्द किया। इस सम्बन्ध के प्रस्ताव को पास करने के लिए अखिल भारतीय कांग्रेस महासमिति की एक विशेष बैठक बम्बई मे बुलाई गई और आठ अगस्त सन १९४२ की रात मे यह प्रस्ताव उत्साह पूर्वक पास किया गया कि यदि अगरेज भारत को शीघ्र ही स्वतन्त्र नही कर देते तो भारत को अपनी आजादी का अन्तिम सघर्ष अभी ही प्रारम्भ कर देना चाहिए। प्रस्ताव मे यह गुंजाइश रखी गई थी कि गांधी जी मित्र-राष्ट्रों के नायकों से पत्र व्यवहार करके उचित शर्तों पर समझौता कर सकें तो संघर्ष प्रारम्भ न किया जाय। मगर ब्रिटिश नौकरशाही पिछले चार मास की जागृति से काफी घबरा गई थी और वह कांग्रेस को इतना

अवसर नहीं देना चाहती थी कि उसे इस संघर्ष की तैयारी के लिए पूर्ण अवसर मिल जाय।

अगस्त प्रस्ताव

जिस महत्वपूर्ण प्रस्ताव के कारण देश में विद्रोह की भीषण अग्नि भड़क उठी थी, वह स्वतन्त्रता के युद्ध का महत्वपूर्ण अंग है। उसकी ऐतिहासिकता का परिचय भली प्रकार नीचे की पंक्तियों से मिलेगा। वह इस प्रकार है:—

"अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने कार्यसमिति के जुलाई १९४२ के प्रस्ताव के विषयों पर जो कार्यसमिति द्वारा प्रस्तुत किये गये थे और बाद की घटनाओं पर, जिनमें युद्ध

"अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने रूसी और चीनी मोर्चों पर स्थिति के बिगडने को निराशा के साथ देखा है और वह रूसियों और चीनियों की उस वीरता की भूरि भूरि प्रशंसा करती है जो उन्होंने अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा करने मे प्रदर्शित की है। जो लोग स्वतन्त्रता के लिये प्रयत्न कर रहे हैं और आक्रमण के शिकार हुए व्यक्तियों से सहानुभूति रखते हैं उन सबको नित्य बढ़ता जाने वाला खतरा उस नीति की परीक्षा करने के लिये बाध्य करता है जिसका मित्रराष्ट्रों ने अभी तक अवलम्बन किया है और जिसके कारण बारम्बार भीषण असफलताएं हुई हैं। ऐसे उद्देश्यो नीतियों और प्रणालियो पर आरूढ़ बने रहने से असफलता सफलता मे परिणत नहीं की जा सकती, क्योंकि पिछले अनुभव से प्रकट होचुका है कि असफलता इन नीतियों मे निहित है। ये नीतियां स्वतन्त्रता पर इतनी आधारित नही की गई हैं जितनी कि अधीन और औपनिवेशिक देशों पर आधिपत्य बनाये रखने और साम्राज्यवादी परम्पराओ तथा प्रणालियो को अक्षुण्ण बनाये रखने के प्रयत्नो पर। साम्राज्य को अधिकार में रखना शासन-सत्ता की शक्ति बढ़ाने के बजाय एक भार और शाप बन गया है, आधुनिक साम्राज्यवाद की सर्वोत्कृष्ट क्रीड़ा भूमि; भारत इस प्रश्न की कसौटी बन गया है, क्योंकि भारत की स्वतन्त्रता से ही बृटेन और मित्रराष्ट्रों की परीक्षा होगी और एशिया तथा अफ्रीका की जातियो में आशा और उत्साह भर जायगा।"

"इस प्रकार इस देश मे बृटिश शासन के अन्त होने की अतीव और तत्काल ही आवश्यकता है। इसी के ऊपर युद्ध का भविष्य और स्वतन्त्रता तथा प्रजातन्त्र की सफलता निर्भर है।

स्वतन्त्र भारत अपने समस्त विशाल साधनों को स्वतन्त्रता के पक्ष में और नाजीवाद, फासिस्टवाद और साम्राज्यवाद के विरुद्ध लगाकर इस सफलता को सुनिश्चित कर देगा। इससे केवल युद्ध की स्थिति पर ही पर्याप्त प्रभाव नहीं पड़ेगा, वरन समस्त पराधीन और पीड़ित मानव-समाज भी मित्रराष्ट्रों के पक्ष में हो जायगा और भारत जिन राष्ट्रों का मित्र होगा उनके हाथों में विश्व का नैतिक और आत्मिक नेतृत्व भी आ जायगा। बन्धनों में जकड़ा हुआ भारत ब्रिटिश साम्राज्यवाद का मूर्तिमान स्वरूप बना रहेगा और उस साम्राज्यवाद का कलंक समस्त मित्रराष्ट्रों के सौभाग्य को दूषित करता रहेगा।"

"इसलिये आज के खतरे को देखते हुए भारत को स्वतन्त्र कर देने और ब्रिटिश आधिपत्य को समाप्त कर देने की आवश्यकता है। भविष्य के लिए किसी भी प्रकार की प्रतिज्ञाओं और गारंटियों से वर्तमान परिस्थिति में सुधार नहीं हो सकता और न उसका मुकाबला किया जा सकता है। उनसे जन-समुदाय के मस्तिष्क पर वह मनोवैज्ञानिक प्रभाव नहीं पड़ सकता जिसकी आज आवश्यकता है। केवल स्वतन्त्रता की दीप्ति से ही करोड़ों व्यक्तियों का वह बल और उत्साह प्राप्त किया जा सकता है जो तत्काल ही युद्ध के रूप को बदल देगा।

"इसलिये अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी पूरे जोर के साथ भारत से ब्रिटिश-सत्ता के हटा लेने की मांग को दुहराती है। भारत की स्वतन्त्रता की घोषणा हो जाने पर एक अस्थायी सरकार स्थापित कर दी जायगी और स्वतन्त्र भारत मित्रराष्ट्रों का मित्र बन जायगा और स्वतन्त्रता संग्राम के संकटों [illegible]

की परीक्षाओं और दुःख सुख में हाथ बटायेगा। अस्थायी सरकार देश के मुख्य दलों और वर्गों के सहयोग से ही बनाई जा सकती है। इस प्रकार यह एक मिली जुली सरकार होगी जिसमे भारतीयों के समस्त महत्वपूर्ण वर्गों का प्रतिनिधित्व होगा। उसका प्रथम कर्तव्य अपनी समस्त सशस्त्र तथा अहिंसात्मक शक्तियों द्वारा मित्रराष्ट्रों से मिल कर भारत की रक्षा करना, आक्रमण का विरोध करना, और खेतों, कारखानो तथा अन्य स्थानों मे काम करने वाले उन श्रमजीवियों का कल्याण और उन्नति करना होगा जो निश्चय ही समस्त शक्ति और अधिकार के वास्तविक पात्र हैं। अस्थायी सरकार एक विधान निर्मातृ परिषद की योजना बनायेगी और यह परिषद भारत सरकार के लिए एक ऐसा विधान तैयार करेगी जो जनता के समस्त वर्गों को स्वीकार होगा। कांग्रेस के मत से यह विधान संघ विषयक होना चाहिए जिसके अन्तर्गत संघ मे सम्मिलित होने वाले प्रान्तों को शासन के अधिकतम अधिकार प्राप्त होंगे। अवशिष्ट अधिकार भी इन प्रान्तो को प्राप्त होंगे। भारत और मित्रराष्ट्रोंके भावी सम्बन्ध इन समस्त स्वतंत्रदेशोंके प्रतिनिधियों द्वारा निश्चित कर दिये जायेंगे जो अपने पारस्परिक लाभ तथा आक्रमण का प्रतिरोध करने के सामान्य कार्य मे सहयोग देने के लिये परस्पर वार्तालाप करेंगे। स्वतन्त्रता भारत को अपनी जनता की सम्मिलित इच्छा और शक्ति के बल पर आक्रमण का कारगर ढंग से विरोध करने मे समर्थ बना देगी।

"भारत की स्वतन्त्रता विदेशी आधिपत्य से अन्य एशियाई राष्ट्रों की मुक्ति का प्रतीक और प्रारम्भ होगी। बर्मा, मलाया हिन्द चीन, डच द्वीप समूह, ईरान और ईराक को भी

पूर्ण स्वतन्त्रता मिलनी चाहिए। यह स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए कि इस समय जापानी नियन्त्रण में जो देश हैं उन्हें बाद को किसी औपनिवेशिक सत्ता के अधीन नहीं रखा जायगा।"

"इस संकट काल में यद्यपि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी को प्रधानतः भारत की स्वाधीनता और रक्षा से सम्बन्ध रखना चाहिए तथापि कमेटी का मत है कि संसार की भावी शांति, सुरक्षा और व्यवस्थित उन्नति के लिये स्वतन्त्र राष्ट्रों का एक विश्वसंघ बनाने की आवश्यकता है। अन्य किसी बात को आधार बना कर आधुनिक संसार की समस्याएं नहीं सुलझाई जा सकतीं। इस प्रकार के विश्वसंघ से उसमें सम्मिलित होने वाले राष्ट्रों की स्वतन्त्रता, एक राष्ट्र द्वारा दूसरे राष्ट्र पर आक्रमण और शोषण का रोकना, राष्ट्रीय अल्प-संख्यकों का संरक्षण, पिछड़े हुए समस्त क्षेत्रों और लोगों की उन्नति और सब के सामान्य हित के लिये विश्वसाधनों का एकत्रीकरण किया जाना निश्चित हो जायगा। इस प्रकार का विश्वसंघ स्थापित हो जाने पर समस्त देशों में निःशस्त्रीकरण हो सकेगा, राष्ट्रीय सेनाओं, नौसेनाओं और वायुसेनाओं की कोई आवश्यकता नहीं रहेगी और विश्वसंघ-रक्षक सेना विश्व में शान्ति रखेगी और आक्रमण को रोकेगी।"

"स्वतन्त्र भारत ऐसे विश्वसंघ में प्रसन्नता पूर्वक सम्मिलित होगा और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याएं सुलझाने में अन्य देशों के साथ समान आधार पर सहयोग देगा।"

"ऐसे संघ का [illegible] आधारभूत [illegible]

पालन करने वाले समस्त राष्ट्रों के लिये खुला रहना चाहिए। युद्ध के कारण यह संघ आरम्भ में केवल मित्रराष्ट्रों तक ही सीमित रहेगा। यदि यह कार्य अभी प्रारम्भ कर दिया जाय तो युद्ध पर, धुरीराष्ट्रों की जनता पर, और आगामी शान्ति पर इसका बहुत ज़ोरदार प्रभाव पड़ेगा।"

"परन्तु कमेटी खेद पूर्वक अनुभव करती है कि युद्ध की दुःखद और व्याकुल कर देने वाली शिक्षाएं प्राप्त कर लेने के पश्चात् और विश्व पर संकट के बादलों के घिरे होने पर भी कुछ ही देशों की सरकारें विश्वसंघ बनाने की ओर कदम उठाने को तैयार हैं। बृटिश सरकार की प्रतिक्रिया और विदेशी पत्रोंकी भ्रमपूर्ण आलोचनाओं से स्पष्ट होगया है कि भारतीय स्वतन्त्रता की स्पष्ट माग का भी विरोध किया जा रहा है यद्यपि यह वर्तमान खतरे का सामना करने और अपनी रक्षा तथा इस आवश्यक घड़ी मे चीन और रूस की सहायता कर सकने के लिये की गई है। चीन और रूस की स्वतन्त्रता बड़ी मूल्यवान है और उनकी रक्षा होनी चाहिए, इसलिये कमेटी इस बात के लिये बड़ी उत्सुक है कि उसमे किसी प्रकार की बाधा न पड़े और मित्रराष्ट्रों की रक्षा करने की शक्ति मे कोई विघ्न न होने पावे। परन्तु भारत और इन राष्ट्रों के लिये खतरा नित्य बढ़ता ही जा रहा है। और इस समय विदेशी शासन प्रणाली के आगे सिर झुकाने मे भारत का पतन होता जा रहा है और स्वयं आत्मरक्षा करने तथा आक्रमण का विरोध करने की उसकी शक्ति घटती जा रही है। इस दशा मे न तो नित्य बढ़ते जाने वाले खतरे का कोई प्रतिकार ही किया जा सकता है और न मित्रराष्ट्रों की जनता की कोई

सेवा ही की जा सकती है। कार्यसमिति ने ब्रिटेन और मित्रराष्ट्रों ने जो सच्ची अपील की थी उसका अभी तक कोई उत्तर नहीं मिला है। बहुत से विदेशी क्षेत्रों में की गई आलोचनाओं से प्रकट हो गया है कि भारत और विश्व की आवश्यकताओं के विषय में अज्ञानता फैली हुई है। कभी कभी तो आधिपत्य बनाये रखने की भावना और जातिगत ऊंच नीच का प्रतीक वह विरोध भी दिखाया गया है जिसे अपनी शक्ति और अपने उद्देश्य के औचित्य का ज्ञान रखने वाली कोई भी अभिमानी जाति सहन नहीं कर सकती।"

"कमेटी भारतीयों से उन खतरों और कठिनाइयों का, जो उनके ऊपर आयेंगे, साहस और दृढ़तापूर्वक सामना करने तथा गांधी जी के नेतृत्व में एक बने रह कर भारतीय स्वतन्त्रता के अनुशासित सैनिकों के समान उनके निर्देशों का पालन करने की अपील करती है। उन्हें यह अवश्य याद रखना चाहिए कि अहिंसा इस आन्दोलन का आधार है। ऐसा समय आ सकता है जब निर्देश देना अथवा निर्देशों का हमारी जनता तक पहुचना सम्भव न होगा और जब कोई भी कांग्रेस समितियां कार्य नही कर सकेगी। ऐसा होने पर इस आन्दोलन मे भाग लेने वाले प्रत्येक नरनारी को सामान्य निर्देशों की सीमा में रहते हुए अपने आप काम करना चाहिए। स्वतन्त्रता की कामना और उसके लिये प्रयत्न करने वाले प्रत्येक भारतीय को स्वयं अपना पथप्रदर्शक बन कर उस कठिन मार्ग पर अग्रसर होते जाना चाहिए जहां विश्राम का कोई स्थान नही है और जो अन्त मे भारत की स्वतन्त्रता और मुक्ति पर जाकर समाप्त होता है।"

"अन्त मे यह बताना है कि यद्यपि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने स्वतन्त्र भारत की भावी सरकार के विषय में अपना विचार प्रकट कर दिया है, तथापि कमेटी समस्त सम्बद्ध लोगों के लिये यह बिल्कुल स्पष्ट कर देना चाहती है कि विशाल संग्राम आरम्भ करके वह कांग्रेस के लिये कोई सत्ता प्राप्त करने की इच्छुक नही है। सत्ता जब मिलेगी तो उस पर समस्त भारतीयो का अधिकार होगा।"

प्रस्ताव की महत्ता

अगस्त-प्रस्ताव बड़ा विस्तृत था: यह हमने ऊपर दी है

प्रतिलिपि से भली प्रकार विदित होता है। इसमें भारत की राष्ट्रीय आत्मा स्पष्ट रूप से बोल रही थी। यह प्रस्ताव देश की अभिलाषा और मनःस्थिति का स्पष्ट प्रतीक था। हमने विश्व महायुद्ध को, जिसका हाल ही में अन्त हुआ है, साम्राज्यवादी युद्ध समझ लिया था, क्योंकि यह युद्ध साम्राज्यवाद के लिए हो रहा था। हमारा यह सदा से विश्वास रहा है कि दुनिया में साम्राज्यवाद का अन्त हुए बिना शान्ति स्थापित नहीं हो सकती। हम तो ऐसी व्यवस्था के पक्षपाती रहे हैं कि जिसमें भविष्य में युद्ध की आशंका बिल्कुल भी न हो। इसीलिए कांग्रेस ने 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव के रूप में अपना मार्ग निश्चित किया था। आज भी यह 'अगस्त प्रस्ताव' भारत छोड़ो प्रस्ताव का सन्देश-वाहक है और हमारा मार्ग आज भी वही निश्चित है। और यह मार्ग हमारा तब तक रहेगा, जब तक कि अंगरेज हमारे देश में हमारे शासक के रूप में मौजूद हैं।

उक्त प्रस्ताव ने सदैव की भाँति हमारा मार्ग स्पष्ट कर दिया। उसमें ब्रिटेन को धमकी नहीं, प्रत्युत यह निवेदन किया गया था कि अंगरेज साम्राज्यवादी भारत को छोड़कर भारत को बन्धन-मुक्त करके [illegible] विश्व-स्वाधीनता और विश्व शांति के साधन बनें। अगस्त-प्रस्ताव से भारतीयों की इसी स्थिति का स्पष्टीकरण था और अपने मार्ग पर दृढ़ रहने की चुनौती भी [illegible] पर अपनी [illegible] [illegible] [illegible]।

गिरफ्तारियाँ और दमन

[illegible]

हिल गया और उसने उस प्रस्ताव को ठुकराकर ८ अगस्त १६४२ के १२ बजे रात के बाद और ६ अगस्त के सूर्योदय से पूर्व कुछ ही घड़ियों में जो कुछ किया, उसके सामने 'पर्ल हार्बर' के जापानी कृत्य भी फीके पड़ जाते हैं। बात की बात में गांधी जी और कार्य समिति के सभी सदस्य गिरफ्तार करके किसी अज्ञात स्थान को भेज दिए गए और साथ ही सारे देश में गिरफ्तारियां शुरू होगई। ऐसा करके सरकार ने जान बूझकर जनता के रोष को उभारा ८ अगस्त सन् १६४२ को गांधी जी ने 'करो या मरो' को सन्देश दिया था और ६ अगस्त के प्रातःकाल वे देशवासियों के बीच में न रहे। उनका यह सन्देश बृटिश नौकरशाही के इस कृत्य के कारण भीषण दावानल की तरह देश के कोने-कोने में फैल गया। हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक विद्रोह की आग भड़क उठी। नेताओं की अनुपस्थिति मे जनता ने नेतृत्व की बागडोर अपने हाथ मे ले ली और सारे देश में तोड़ फोड़ के कार्य प्रारम्भ होगए। 'करो या मरो' की लहर देश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक व्याप्त होगई। जगह जगह रेल की पटरियां उखाड़ दी गई, टेलीफोन के तार काट डाले गए, थाने और पुलिस की चोकिया जला दी गईं। इस प्रकार जनता ने अहिंसात्मक ढंग से पंगु एवं निष्क्रय बनाने का जोरदार प्रयत्न किया।

सरकार ने जनता के रोष को उभार कर दमन की शरण ली। सारे देश में घोर दमन का दौर-दौरा हुआ। पुलिस और फौज को दमन और ज्यादती के मनमाने असीम अधिकार दे दिए गए। देश मे सैकड़ो जगह पर जलियांवाला बाग ने भी

४

संघर्ष के कारण

पाठक उन परिस्थितियों से भली प्रकार परिचित हैं, जिन मे कि कांग्रेस ने महात्मा गांधी के नेतृत्व मे व्यक्तिगत, सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ किया और एक वर्ष बाद उसे स्थगित कर दिया। आन्दोलन को अनिवार्य बनाने के कारण उपस्थित थे; परन्तु जापानी आक्रमण की आशंका और आसाम तथा विजिगापट्टम पर हवाई हमलो के रूप मे उसके आशिक श्री गणेश के कारण स्थिति बहुत कुछ बदल गई। कांग्रेस और गांधी जी ने आन्दोलन को स्थगित करना ठीक समझा और जो नई स्थिति उत्पन्न होगई थी, उसमे देश को नागरिक रक्षा के लिए लगाने का उन्होंने निश्चय किया। कपड़े और अन्न के लिए स्वावलम्बी तथा आत्म-रक्षा का कार्य-क्रम बनाया गया और समस्त कांग्रेस-कार्यकर्त्ताओ एवं कांग्रेस कमेटियों से उसको क्रियात्मक रूप देने के लिए कहा गया। यद्यपि सरकार ने कोई

प्रत्यक्ष सहयोग नहीं हो सकता था तथापि उससे संघर्ष भी मोल लेना उचित न था। कांग्रेस का झुकाव इस देश की सरकार से संघर्ष करने की अपेक्षा बाहर के आक्रमण का प्रतिरोध करने और उसे भगाने की ओर अधिक था। हमने सरकार का सहयोग चाहा; परन्तु उसने इससे इन्कार किया। उसने केवल एक शर्त रखी कि हम गुलामी में ही बने रहें। कांग्रेस इसे कदापि स्वीकार नहीं कर सकती थी।

जापानियों का आक्रमण

जब हम लोग आत्म-रक्षण एवं स्वावलम्बन के कार्य में व्यस्त थे तब भारत में और उसके बाहर कुछ ऐसी घटनाएँ घटीं जिन्होंने कांग्रेस कार्य-समिति को इस परिस्थिति पर नये

अनुभव किया कि निकट भविष्य में कदाचित उसे भी ऐसी ही विषम यातनाओं का शिकार होना पड़े। हमे यह मालूम था कि बृटिश सरकार बहुत जालिम है, परन्तु हमें यह मालूम नहीं था कि वह इतनी निकम्मी और डरपोक भी है।

भारत की घटनाओ पर भी हमने बहुत गंभीरता के साथ विचार किया। भारतीय शासन-व्यवस्था अधिकाधिक स्वेच्छाचारी बन रही थी। युद्ध-प्रयास के लिए भारत के साधनों और जनता का बुरी तरह से शोषण किया जारहा था। युद्ध-प्रयास का तात्पर्य लोगों का शोषण, गांव वालों को, १२ या २४ घंटे के नोटिस पर गांव खाली करने के लिए विवश करना, नौकाओं, साइकिलों, गाड़ियों और ऊंटों आदि पर अधिकार करना तथा नागरिक रक्षा के नाम पर पानी की तरह पैसा बहाना था। युद्ध-प्रयास और रिश्वत खोरी एक ही तात्पर्य मे लिए जाते थे।

यद्यपि वायसराय, भारत-मंत्री और बृटिश प्रधान मंत्री भारतीय स्थिति के विषय मे बहुत लम्बे चौड़े वक्तव्य दे रहे थे; परन्तु अमेरिका और चीन जैसे देशो मे भारतीय समस्या को लेकर एक तीव्र असन्तोष फैल रहा था। अमेरिका और चीन युद्ध मे ब्रिटेन के साथी थे। अतः ब्रिटेन के लिए भारत जैसे महत्त्वपूर्ण मामले मे उनकी इच्छाओ और भावनाओ की अपेक्षा करना सरल नहीं था। इन देशो को यह मालूम था कि भारत युद्ध मे एक महत्त्वपूर्ण और निर्णायक सहायता दे सकता है।

सकें। इस एक और आपत्ति पर कि साम्प्रदायिक समझौता न होने की दशा में कोई स्थायी राष्ट्रीय सरकार स्थापित नहीं हो सकती, गांधी जी और तात्कालिक राष्ट्रपति मौ० आज़ाद ने उत्तर दिया कि 'वे सारी सत्ता मुस्लिम लीग या अन्य किसी उत्तरदायी संस्था को या जिसे वे उचित समझें, सौंपकर चले जायें। कांग्रेस उस दल से पूर्ण सहयोग करेगी। यदि इससे भी बुरा हो और देश में अराजकता फैले तो भी वे इसे वर्तमान राष्ट्रीय अपमान और 'प्रस्तुत व्यवस्थित और वैधानिक' अराजकता से अधिक पसन्द करेंगे। वह अराजकता केवल अल्पकालिक होगी। घटनाओं के दबाव से भारत की जनता को अपना राज-काज संभालने में अधिक विलम्ब न लगेगा। परन्तु ब्रिटिश सरकार ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। ब्रिटिश-सत्ता के हटाने की कांग्रेस की मांग का उत्तर ब्रिटिश-समाचार-पत्रों ने गाली-गलौज और गलतफहमी पैदा करके दिया और गांधी जी को 'फासिस्ट' और ऐसा धूर्त राजनीतिज्ञ बतलाया जो 'ग्रेट ब्रिटेन' के सर्वनाश के लिए तुला हुआ हो।

५

संघर्ष की तैयारी

यह स्पष्ट था कि चाहे जो कुछ हो बृटिश सरकार की सत्ता छोड़ने और भारत को अपने कब्जे से सर्वथा मुक्त करने की कोई इच्छा नही थी। गांधी जी जहां 'हरिजन' में अपने आलोचको से विवाद कर रहे थे, वहां दूसरी ओर लोगो को आने वाली कठिन विपत्तियो का सामना करने के लिए तैयार कर रहे थे। स्वभाव से आशावादी होने के कारण उन्हें अब भी यही आशा थी कि बृटिश सरकार कांग्रेस की माग का औचित्य समझकर या ब्रिटेन का अपना हित जानकर इसे दिल से मंजूर कर लेगी। ऐसा न होने की अवस्था मे उन्होंने जनता को एक अग्नि परीक्षा के लिए तैयार रहने और अपने अहिंसात्मक दल को काम मे लाकर बृटिश सरकार को सत्ता छोड़ने के लिए विवश करने का आह्वान किया। लड़ाई का प्रश्न बिल्कुल सीधा और स्पष्ट था, उसका सार इन दो शब्दो 'भारत छोडो' में था। इस प्रश्न पर कोई समझौता नहीं हो सकता था और स्वतंत्रता के मार्ग पर कहीं बीच में पड़ाव नहीं था।

कार्य समिति की बैठक देश की राजनीतिक परिस्थि
पर विचार करने के लिये जुलाई १६४२ में वर्धा में हुई। इसमें
गान्धी जी की 'भारत छोड़ो' मांग पर, और उससे उत्पन्न देश
एवं संसार की प्रतिक्रियाओं पर गम्भीरता पूर्वक विचार कि
गया। समिति की सेवाग्राम में एक के बाद एक कई दि
तक बैठकें हुईं और गान्धी जी के साथ उनके 'भारत छोड़ो'
प्रस्ताव के फलितार्थों पर विस्तार से विचार-विनिमय किया गया।
कार्य समिति ने जो प्रस्ताव पास किया वह एक सर्व सम्मत
निर्णय था, उसको गान्धी जी का भी समर्थन प्राप्त था। 'हरिजन'
में गान्धी जी के लेख, यह प्रस्ताव, और इस प्रस्ताव के
स्पष्टीकरण के लिए कार्य समिति के सदस्यों के भाषण
ही संघर्ष की तैयारियां थीं, यदि इन्हें ही तैयारियां कहा

संघर्ष का स्वरूप समझाया, परन्तु उनके पास भी लोगो के सामने रखने के लिए कोई निश्चित योजना नही थी। पंजाब, आसाम, सिन्ध, सीमाप्रान्त और बंगाल जैसे प्रान्तो मे इन योजनाओं की चर्चा तक नही हुई। जो लोग यह बताने का प्रयत्न कर रहे है कि कांग्रेस एक गैरकानूनी या हिंसात्मक कार्यवाहियों की तैयारी में लगी हुई थी वे नितान्त भ्रम में है।

बम्बई की बैठक

सेवाग्राम की कार्यसमिति की बैठक के बाद शीघ्र ही बम्बई में कांग्रेस महासमिति की बैठक हुई, जिसमे सेवाग्राम के प्रस्ताव की पुष्टि की और राष्ट्र से कांग्रेस-सेनापति के आह्वान पर तैयार रहने की अपील की। बम्बई वाली बैठक मे जो प्रस्ताव पास किया गया उसमे तत्काल आजादी की माग की गई। उसमें बृटिश सरकार से कहा गया कि वह इस अन्तिम घडी मे भी सही मार्ग अपनाये तथा आगामी जन-संहार को बचाये। प्रस्ताव में भारत की स्वतन्त्रता के आधार पर चर्चा चलाने का द्वार खुला रखा गया।

गान्धी जी, राष्ट्रपति और पं० जवाहरलाल नेहरू ने इस बात पर बहुत जोर दिया कि इस अन्तिम घडी पर भी ब्रिटेन भारत को गुलामी के पंजे से मुक्त करके अपनी उदारता का परिचय दे और उसे इस महान् उद्देश्य के लिए, जिसको वह अपने जीवन-मरण का चरम उद्देश्य समझता है, भारत को अपना मित्र बनाये। परन्तु यह सब अनुनय-विनय बेकार गया और कांग्रेस महासमिति की बैठक होने के बारह घंटे बाद ही गांधी जी

का भाषण सुनने के बाद, जो कि पिछले कई वर्षों के भाषणों में बहुत लम्बा था, उठ गई। उस भाषण में गान्धी जी ने य[illegible] घोषणा की कि, 'संघर्ष प्रारम्भ करने से पूर्व मैं वायसराय को एक पत्र लिखूंगा तथा उनके उत्तर की प्रतीक्षा करूंगा।

नेताओं की गिरफ्तारी

यह पत्र लिखने का अवसर ही नहीं आया और सूर्योदय से पूर्व ही बम्बई की पुलिस उन मकानों के दरवाजे खटखटाती दिखाई दी, जिनमें कि गान्धी जी और कार्यसमिति के सदस्य ठहरे हुए थे। उन्हें गिरफ्तारी के वारंट दिखाये गए और उन से कम समय में तैयार होने के लिए कहा गया, जिससे कि वहाँ भीड़ जमा न हो और कोई अवांछनीय घटना न घटे। गान्धी जी ने विदाई पर जो सन्देश दिया उसमें उस महान संघर्ष के स्वरूप का आभास था जो कि देश को प्रारम्भ करना था। उस सन्देश में केवल तीन शब्द थे 'करो या मरो'। इस सन्देश में [illegible] प्रेरणा मौजूद थी जो कि उस भारी बलिदान के पीछे [illegible] थी, जिसको लोगों ने स्वेच्छा से इस लड़ाई में किया।

६

संघर्ष का प्रारम्भ

गांधी जी और समस्त कार्यसमिति की गिरफ्तारी ने देश को खुली बगावत करने का आमन्त्रण दिया। देहातो मे यह समाचार पहुचने मे कुछ समय लगा। परन्तु केवल इतना सा सन्देश कि महात्मा जी जेल की सीखचो मे बन्द कर दिए गए हैं और उनके साथ सारी कार्यसमिति के सदस्य भी पकड़ लिए गए है, रेडियो द्वारा भारत के समस्त कस्बो और शहरों मे पहुच गया। केवल यही सन्देश लोगो को यह बतलाने के लिये पर्याप्त था कि वे क्या करे? उनके पास कोई निश्चित आदेश अभी तक नही पहुच पाये थे। परन्तु विद्रोह का स्वर समस्त वातावरण में व्याप्त होगया था। लोगो के मन तथा मस्तिष्क मे भी यह चीज समा गई थी।

शहरों और कस्बों मे अपने आप हड़तालें होगईं और जहां यह समाचार पहुच सका वहां गांवो मे भी। यह हड़ताल कोई साधारण एक दिन मे समाप्त होने वाली नहीं थी। हड़तालें

अगले पृष्ठों में इस उत्साह और वीरता का विस्तृत उल्लेख करेंगे।

आन्दोलन के प्रारम्भिक दिनों में हताहत होने वाले व्यक्तियों की सही संख्या बताना सर्वथा कठिन है। संघर्ष प्रारम्भ होने के लगभग एक पखवाड़े बाद ब्रिटिश पार्लियामेंट में श्री चर्चिल ने भारतीय स्थिति का विवेचन करते हुए यह बताया था कि आन्दोलन में ५०० आदमी मरे हैं। श्री चर्चिल को यह भली भांति मालूम था कि यह संख्या कोरी झूठ है। केवल बम्बई, कलकत्ता तथा दिल्ली में ही ६०० से लेकर ८०० तक जानें संघर्ष के प्रारम्भिक दिनों में ही नष्ट की गई थीं।

७

देहातों में भी बगावत

जैसा कि हम पिछले पृष्ठों मे लिख चुके हैं कि गान्धी जी एवं कांग्रेस-नेताओं की गिरफ्तारी तथा संघर्ष के प्रारम्भ होने का समाचार देहातों मे देर से पहुचा था। पहले सप्ताह में आन्दोलन केवल शहरी क्षेत्रों तक ही सीमित था। बाद मे वह बहुत तेजी से गांवों मे भी फैल गया। गावों मे यह आन्दोलन हड़तालो या प्रदर्शनों का रूप नही ले सकता था और न ही यह लगान की अदायगी बन्द करने के रूप मे था। उसके लिए भी अभी समय अनुकूल नही था। गाव के लोगो ने भारत के अन्य कस्बों एवं शहरो में घटित घटनाओ से प्रेरणा ली। गान्धी जी तथा कांग्रेस-नेताओ की गिरफ्तारी की खबर मिलने के बाद ही शान्तिपूर्ण मजमो पर भयानक लाठी-प्रहार और गोलीकांडो के समाचार ने उनके दिलो मे तीव्र क्षोभ और असन्तोप उत्पन्न कर दिया तथा प्रान्तो के विशाल क्षेत्रों में

लिए अनेक विपत्तियों का सामना किया है। ग्रामीण भारत पर कांग्रेस के प्रभाव का प्रमाण लगभग सारे प्रान्तों में एक साथ हुए सामूहिक प्रदर्शनों से मिल जाता है। भारत के किसानों ने सबसे अधिक त्याग और बलिदान किया है। वे अनेक भारी बोझों के नीचे पिस रहे है, वे एक असन्तोष के ज्वालामुखी हैं, परन्तु बिखरे हुए होने के कारण वे कोई सामूहिक कार्यवाही कर सकने मे असमर्थ है। गान्धी जी और कांग्रेस मे इनकी सामान्य श्रद्धा ही एक मात्र ऐसी शृंखला है, जो लाखो करोड़ों ग्रामीणों को एक सूत्र में बाँधती है। इन करोड़ों व्यक्तियो ने एक व्यक्ति की भाँति आगे कदम उठाया। जो भी चीज बृटिश राज्य की समझी जा सकती थी, वही उनकी तीव्र घृणा और अविलम्ब विनाश का लक्ष्य बन गई। किसान लोग अनपढ़ अवश्य है; परन्तु उनमें भी काफी समझ होती है। अपने कठोर और कटु अनुभव से वे यह जानते है कि विदेशी आततायी शासक किन-किन मोर्चो, नाको पर काम करता है। वह चाहे पुलिस का थाना हो, अदालत हो, इन्कम टैक्स आफिस, डाक बंगला, पोस्ट-आफिस या रेलवे स्टेशन हो, यह सब बृटिश सरकार के हथियार एवं साधन है, अतः इनको नष्ट भ्रष्ट किया जाय। अतः वे बृटिश राज्य के इन चिन्हों को नष्ट करने के लिए आगे बढ़े, परन्तु जन-क्षति कम हो, इसका उन्होंने विशेष ध्यान रखा। फिर भी कुछ पुलिस के आदमी, फौजी सैनिक तथा कुछ सरकारी अफसर (सरकारी आँकड़ो के अनुसार ४० से ५० तक) लोगों के हाथो से मौत के मुह मे गए। इन मौतों को सरकारी हल्कों मे बहुत बढ़ा-चढ़ा कर दिखाया गया। हमें स्वयं इस बात का खेद है कि हमारी अहिंसात्मक क्रान्ति मे इन लोगों की जाने गई है। परन्तु हमें इन सब की [illegible] पर इसी दृष्टिकोण

और उसी विचार-धारा से देखना एवं सोचना चाहिए कि चालीस कोटि भारतीयों का यह देश उस समय एक विदेशी सत्ता के विरुद्ध खुली बगावत कर रहा था। इस खुली बगावत को दबाने के लिए प्रत्येक प्रकार के अत्याचार और अमानुषिक ढंग काम में लाये गए, जो कि अंग्रेजों की राय में नाजियों और जापानियों की ही बपौती हो सकते हैं। यदि एक जंगली पुलिस अफसर को एक शान्तिप्रिय निहत्थे समूह में एक के बाद दूसरे निर्दोष व्यक्ति का खून करते देखकर कभी जनता उत्तेजित हो उठे और वह उसका बदला ले तो केवल चर्चिल, एमरी, लिनलिथगो और मैक्सवेल जैसे शरीफ तथा ईसा जैसी आत्मा रखने वाले उदार इस पर आश्चर्य कर सकते हैं, हमारे जैसे साधारण मानव नहीं। जहाँ-तहाँ होने वाली इन आकस्मिक हिंसात्मक घटनाओं के बावजूद भी हमारा यह संघर्ष पूर्णतः अहिंसात्मक ही बना रहा।

. यातायात के सम्बन्ध टूट जाने के कारण फौजी हलचलें कुछ समय के लिए रुक गई। कई स्थानों पर तो रेलवे तक पर जनता का अधिकार होगया। इंजिनों पर तिरंगे झंडे लगाये गये और रेलों के गार्ड एवं ड्राइवर विद्रोहियों की इच्छा पर ही चलते थे। गाड़ियों में उन दिनों जो यूरोपियन यात्रा करते थे, उनके साथ अत्यन्त शिष्टता का व्यवहार किया गया और उनको कोई हानि नहीं पहुचाई गई। बहुत सी जगह रेलें पटरियों से उतारी गई, किन्तु उनसे किसी भी व्यक्ति की जान नही गई। लोगों ने इस बात का विशेष ध्यान रखा कि केवल मालगाड़ियो को ही पटरियों से उतारा जाय, क्योंकि उस माल से उन फौजों का पोषण होता था, जो कि केवल जनता का दमन करने के काम मे ही आती थीं।

देश के अनेक भागों मे किसानो पर आतंक जमाया गया और उन्हे झुकने के लिए विवश किया गया।

८

छात्रों का कार्य

किसी भी बुद्धिजीवी वर्ग ने इस आन्दोलन में इतना सक्रिय एवं महत्त्वपूर्ण भाग नहीं लिया जितना कि विद्यार्थी वर्ग ने। इस संघर्ष के आवाहन ने विद्यार्थियों पर बहुत प्रभाव किया। सन १९३० और ३२ के आन्दोलनों में विद्यार्थियों का भाग बहुत कम था। सन १९४० के व्यक्तिगत सत्याग्रह में उनको बिल्कुल ही अलग छोड़ दिया गया था; परन्तु हमारे इस वर्तमान संघर्ष ने उनको इतना उकसाया कि जितना पहले कभी नहीं हुआ था। गान्धी जी की दार्शनिकता और उनकी उलझी हुई राजनीति कभी कभी छात्रों की समझ में बाहर होती है। वे अधिकांशतः पश्चिमी विचारों एवं सिद्धान्तों के बहाव में ही बहते रहते हैं; परन्तु प्रगतिशील और क्रांतिकारी गांधी जी उनके लिए विशेष आकर्षण की वस्तु हैं। एक सामूहिक और अन्तिम संग्राम के लिए गांधी जी की पुकार पर उनके दिलों में जोश उमड़ आया। संघर्ष शुरू होने से पूर्व भी छात्रों में पर्याप्त उत्साह था और जब वास्तविक संघर्ष प्रारम्भ होगया; उन्होंने तुरन्त

कदम उठाया और अपने स्कूल एवं कालिजों से निकल कर लड़खड़ाती जनता का नेतृत्व किया। बम्बई, मद्रास, कलकत्ता, बनारस, दिल्ली, प्रयाग, लखनऊ, आगरा, पटना, करांची, अहमदाबाद, नागपुर, मैसूर और इन्दौर के समाचारों से यह साफ प्रकट था कि विद्यार्थियो ने संघर्ष के प्रथम पखवाड़े में जो प्रदर्शनात्मक कार्य किए वे लगभग एक जैसे ही थे। सरकार ने इन प्रदर्शनों का लाठी प्रहारों एवं गोली कांडों के रूप में जो उत्तर दिया उसमें बहुत से छात्र मारे गए और बहुत से जख्मी हुए। पुलिस और फौजों की बर्बरता का विस्तृत विवरण पाठक अगले पृष्ठों में पढ़ेगें। यहां केवल इतना ही कह देना पर्याप्त है कि इन निर्दयता पूर्ण लाठी-प्रहारों तथा गोली कांडों ने विद्यार्थियो को दबाने की अपेक्षा उनको 'करो या मरो' के अपने दृढ़ विश्वास मे और भी उग्र बना दिया।

अनेक प्रतिबन्ध लगाये

सरकार ने यह देखा कि विद्यार्थी वर्ग समस्त शहरी क्षेत्रों में क्रांति का केन्द्र बिन्दु था. इसलिए उनको बहुत दृढ़ता के साथ दबाना चाहा। कई प्रान्तो मे सरकारी विज्ञप्तियां जारी करके कालिज के अधिकारियो से विद्यार्थी वर्ग को संघर्ष मे भाग न लेने की चेतावनी देने को कहा गया। इस चेतावनी की उपेक्षा करने वाले विद्यार्थियों पर अनेक प्रतिबन्ध लगाने का सुझाव भी रखा गया। इस चेतावनी की सामान्यतया छात्रों द्वारा उपेक्षा ही की गई। यदि सजा पर जोर दिया जाता तो सारे ही छात्रो को इस प्रतिबन्ध का शिकार होना पड़ता। केवल प्रिंसीपल और प्रोफेसर ही खाली बैंचो और दीवारों को लैक्चर

देने के लिए बचे रह जाते। अतः सरकार ने इसका केवल एक ही इलाज सोचा; वह यह कि उसने सब कालिजों के अधिकारियों को अपने-अपने कालिज बन्द कर देने की आज्ञा दे दी। विद्यार्थियों के संगठन को विघटित करने के लिए ही यह कार्यवाही सोची गई थी। विद्यार्थियों को उनकी किलेबन्दी से निकालने के लिए अनेक उपाय किए गए। अनेक स्थानों पर होस्टलों को खाद्य-सामग्री देनी बन्द करदी गई। कई जगह तो कालिज-होस्टलों पर फौजों ने कब्जा कर लिया, छात्रों को वहां से निकाल कर उनके सामान को भी बाहर फेंक दिया गया और कालिजों के चारों ओर सशस्त्र पुलिस का पहरा बिठा दिया गया। कोचीन जैसे स्थानों पर सरकुलर जारी करके लड़कों के माता-पिताओं को नौकरी से बर्खास्त करने या ठेके रद करने की धमकी दी गई। उन्हें कहा गया कि वे अपने बच्चों को संघर्ष में भाग न लेने दें।

काशी विश्वविद्यालय का कार्य

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का कार्य इस सम्बन्ध में विशेष उल्लेखनीय है। विश्वविद्यालय के वीर छात्र एवं छात्राओं ने इन प्रदर्शनों और बनारस में हुई अन्य कार्यवाहियों में प्रमुख भाग लिया। सत्ता का कोई भी उपाय उनका दमन न कर सका। इस दमन का प्रभाव बिल्कुल उलटा हुआ। वायस चांसलर ने स्थानीय अधिकारियों के कहने पर लड़कों को विश्वविद्यालय खाली कर देने को कहा। उन दिनों रेल में यात्रा करना खतरे से खाली नहीं था; क्योंकि बनारस के इर्द गिर्द यातायात के सम्बन्ध बिल्कुल अस्तव्यस्त थे। इतने पर भी छात्रों से जबरदस्ती उनके छात्रावास खाली

कराये गए। लगभग १०० विद्यार्थियों का एक जत्था अपने होस्टलो में ही डटा रहा। शीघ्र ही फौज आई और लड़कों को पकड़-पकड़ कर बाहर सड़कों पर फैंक दिया। विश्वविद्यालय के द्वार पर जो तिरंगा झंडा फहरा रहा था, उसे फौज ने उतारकर फैंक दिया और फाड़ कर पैरो तले रौंद दिया। इसके बाद वह ब्रिटिश फौज विश्वविद्यालय की इमारत पर कब्जा करने के लिए आगे बढ़ी। दरवाजो के ताले 'गैस' से तोड़ दिये। इसके बाद ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा के लिए २०० गोरे तथा ३०० भारतीय सिपाही विश्वविद्यालय मे नियुक्त कर दिए गए और इंजीनियरिंग कालिज की सारी मैशीनरी तथा सम्पत्ति तोड़ फोड़ दी।

सरकार ने शहरों और कस्बो मे विद्यार्थियों के आन्दोलन को भंग करने के लिए इसी प्रकार की हरकते कीं; परन्तु शहरो की अशान्ति गांवों में जा पहुची। विद्यार्थियो का कार्य-क्षेत्र गांव बन गए और अधिकांश विद्यार्थियो ने घूम घूम कर कांग्रेस का सन्देशा घर-घर पहुचाया। जो छात्र शहरों मे रह गए, वे भी हाथ पर हाथ रखकर नही बैठे। उन्होंने अपना संगठन तथा कार्य जारी रखा और बीच-बीच मे सरकारी इमारतों के सामने धरना देकर प्रदर्शन करते रहे। समाचार-पत्रो को आन्दोलन के समाचार छापने से रोक दिया गया, केवल सेंसर द्वारा प्राप्त खबरें ही छापने की अनुमति उन्हे दी गई।

६

औद्योगिक हड़तालें

वर्तमान संघर्ष के सामूहिक होने के कारण जनता के प्रत्येक वर्ग से इसमे सहयोग देने की आशा की गई और औद्योगिक मजदूरों से तो सबसे अधिक। मजदूरो से हड़ताल करने की अपील की गई, अपनी वेतन-वृद्धि या अन्य आर्थिक मांगो के आधार पर नहीं, प्रत्युत ब्रिटेन के साम्राज्यवादी पंजे से अपने देश को मुक्त कराने वाली शक्तियो से कन्धे से कन्धा मिलाकर बगावत में हिस्सा लेने की। दूसरे शब्दो मे उनसे राजनैतिक कारणों पर हड़ताल करने को कहा गया और निःसन्देह सारी मिलो और फैक्टरियो के मजदूरो ने मिलकर इस अपील का पालन किया। पिछली सत्याग्रह की लड़ाइयो में मजदूरो का भाग बहुत ही कम था। उन आन्दोलनों का भार मध्यम वर्ग एवं किसानो के कन्धो पर था; परन्तु वर्तमान संघर्ष मे औद्योगिक मजदूरो को एक महत्वपूर्ण भाग अदा करना था। आज कल सारे उद्योग और व्यवसायका उपयोग भारत के तथाकथित युद्ध-प्रयास की उन्नति के लिए किया जाता है तथा इस यु-

प्रयास का उपयोग इस देश में विदेशी शासन लादे रखना है। उद्योग एवं व्यवसाय के ठप होने से युद्ध-प्रयास को गहन क्षति पहुंची। यदि हमारा संघर्ष अत्यन्त तीव्र और अल्पकालिक होता तो यह औद्योगिक हड़तालें एक निर्णयात्मक कार्य करती। परन्तु ज्यों ही हड़तालें हुईं हमारा आन्दोलन भी लम्बा खिंच गया मजदूर लोग अनिश्चित काल तक अपना सहयोग जारी न रख सके, यदि वे सहयोग जारी रखते तो उन्हें महान् त्याग एवं बलिदान करना पड़ता।

सारे प्रयत्न निष्फल

यद्यपि अनिश्चित काल तक के लिए मजदूरों को सहयोग न मिला तथापि जितने काल तक वह रहा और जिस रूप में वह रहा, क्रान्ति की सफलता के लिए वह पर्याप्त था। अहमदाबाद तथा गुजरात के विभिन्न भागों में १०० से अधिक कपड़े की मिलों का तीन मास से भी अधिक काल तक बन्द रहना राज-नैतिक संघर्षों और ट्रेडयूनियन आन्दोलनों के इतिहास में एक अभूतपूर्व घटना थीं। सरकार द्वारा मिलों को चालू करने के लिए किए गए सारे प्रयत्न निष्फल गए। मजदूरों को फोड़ने और मिल मालिकों को गिरफ्तार करने तक के हथकंडे काम में लाये गए। टाटा के कारखानों की हड़ताल भी विशेष उल्लेखनीय है। वायसराय द्वारा मि० एमरी को लिखे गए एक पत्र में निम्न-लिखित महत्त्वपूर्ण शब्द थे—"सबसे प्रमुख घटना टाटा के कारखानों में खुले आम राजनैतिक हड़ताल की घोषणा और महत्त्वपूर्ण युद्ध के उद्योग-धन्धों का रुक जाना है जिसे कि हम जान बूझकर प्रकाशित नहीं करना चाहते।" सरकार ने भी

उन दिनों इस हड़ताल को भंग करने का पूर्ण प्रयत्न किया। "जब तक भारत में राष्ट्रीय सरकार की स्थापना नहीं होगी या हमें गांधी जी, राष्ट्रपति या पण्डित जवाहरलाल नेहरू से आदेश प्राप्त नहीं होजाते तब तक हम अपने काम पर नहीं लौटेंगे।" इस घोषणा के साथ टाटा आयरन एण्ड स्टील वर्क्स के मजदूरों ने अनिश्चित काल के लिए हड़ताल करदी। परन्तु टाटा के कर्मचारियो का यह दृढ़ विश्वास बृटिश साम्राज्य के लिए अपमान की वस्तु थी और उसका उचित बदला लिया जाना था। मजदूरों को उनके घरों से निकालकर लाने तथा उन्हें संगीन के आगे खड़ा करके काम कराने के उपाय काम मे लाए गए। अनिच्छुक मजदूरों ने कुछ समय के लिए धीमी गति से कार्य करने की नीति अपनाई। संगीनें और बन्दूकें फिर चमकीं तथा प्रत्येक मजदूर के कार्य का परिमाण (कोटा) निश्चित किया गया। उसको वह पूरा करना पडता था, अन्यथा वह गोली का शिकार बना दिया जाता।

सरकारी रिपोर्ट

इन औद्योगिक हड़तालो से युद्ध-सहयोग को बहुत हानि पहुंची। इसका ज्वलन्त प्रमाण गृह विभाग से जारी की गई सरकारी रिपोर्ट का निम्न लिखित उद्धरण है:—

(१) "कांग्रेस आन्दोलन का कपड़े की मिलों पर और विशेषतः अहमदाबाद में, जहां से कि ९० प्रतिशत कातने वाले अपने घर चले गए हैं, बहुत बुरा प्रभाव पड़ा है। मद्रास में बकिंघम तथा कर्नाटक मिलों की हड़ताल जो कि २४ अगस्त को प्रारम्भ हुई थी और अभी तक जारी है, अत्यन्त महत्त्व पूर्ण है

क्योंकि एक करोड़ गज खाकी कपड़े में से ४५ लाख गज कपड़ा इन्हीं दोनों मिलों में तैयार होता था। बड़ौदा, इन्दौर नागपुर तथा दिल्ली में भी भिन्न-भिन्न अरसों के लिए हड़तालें रही। हड़ताल के पहिले महीने में लगभग २॥ करोड गज कपड़े की क्षति का अनुमान लगाया गया है। ऊनी माल में भी लगभग इतनी ही क्षति हुई है। सरकारी क्लोदिंग फैक्टरी (सिलाई के कारखानो) पर इस हड़ताल का कोई प्रभाव नही हुआ, क्योंकि सिलाई का कार्य लगभग होचुका था और सबके पास दो मास का रिजर्व स्टाक था। परन्तु सूती माल का स्टाक कठिनाई से दो सप्ताह का है और यह भी इस अव्यवस्थित रूप से बंटा हुआ है कि लाहौर जैसे महत्त्वपूर्ण केन्द्रों मे बिल्कुल भी स्टाक नही है। इसलिए इस आन्दोलन की सबसे गम्भीर वस्तु अहमदाबाद कैलिको मिल्स और मेसर्स हथीसिंह एण्ड कम्पनी का बन्द होजाना है, जोकि हमारे मिले हुए सूती माल के सबसे बड़े उत्पादक हैं।

(२) सिगरट बनाने वाली सबसे बड़ी फर्म इम्पीरियल टैबोकू कम्पनी के कलकत्ता, बम्बई, बंगलोर और सहारनपुर के सब कारखानों से माल की डिलीवरी होने में काफी विलम्ब होने की सम्भावना है। उनकी मुंगेर फैक्टरी को, जहां से कि उनका सारा सिगरेट का कागज तथा अन्य सारा सामान आता है, भारी क्षति पहुंची है। फैक्टरी से अभी तक भी कोई सम्पर्क नही स्थापित होसका है।

(३) जयपुर रियासत मे, जहां पर कि स्थिति इतनी भयानक हो चुकी है कि जिससे जंगलाती थानों को छोड़ना पड़ा,

लगभग एक लाख रेलवे स्लीपर तथा एक लाख बीस हजार बल्लू जलाए दिए गए हैं।

(४) कानपुर तथा अन्य चमड़ा उत्पादन करने वाले केन्द्रों में उपद्रव होने से ५० प्रतिशत उत्पादन कम होगया।

(५) गेहूँ और गेहूँ से तैयार होने वाली चीजों पर भी इस आन्दोलन का बहुत प्रभाव पड़ा है. गणेश फ्लोर मिल दिल्ली पर भी इसका विशेष प्रभाव पड़ा है, जहां पर कि उनकी सारी वर्कशापों के औजार उपद्रवकारी उठा ले गए बताये जाते हैं और कारखानेको भी काफी क्षति पहुंची है। उनकी 'बी' मिल अभी तक बन्द है। स्टोरों में लूट खसोट होनेसे १५० टन की क्षति और उत्पादन में ४००० टन की कमी का अनुमान लगाया गया है।"

कार्य सराहनीय

इस लम्बी हड़ताल में हमारे मजदूरों को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। जनता उनको जो भी सहायता दे सकती थी दी गई। अहमदाबाद में सहायता-कार्य बहुत ही सराहनीय था। सारांश यह है कि हमें यह कहते हुए कोई संकोच नहीं होता कि हमारे औद्योगिक मजदूरों ने बहुत अधिक कार्य किया और आगामी समय में, जबकि दुबारा एक मनोवैज्ञानिक आन्दोलन होगा, मजदूर लोग पहले से भी अधिक सहयोग प्रदान करेंगे; इसमें हमें तनिक भी सन्देह नहीं।

१०

एक नजर में

अगस्त-क्रान्ति के दिनों में समस्त भारत वर्बरता का केन्द्रस्थल बना हुआ था। जगह-जगह पर जो-जो भीषण अत्याचार निरीह भारतीयों पर किये गए, उनका वर्णन करना लेखनी से परे है। फिर भी उस समस्त विद्रोह पर प्रारम्भ मे एक नजर डालकर हम आगे विस्तार से उन लोमहर्षक भीषण अनाचारो का वर्णन करेगे।

यू० पी० मे तो साधारण कानूनी शासन की जगह हैलटशाही की, जिसे दूसरे शब्दो में नादिरशाही शासन कह सकते हैं, स्थापना होगई थी। सर मारिस हैलेट (यू० पी० के तत्कालीन गवर्नर) ने सन् १९४२ के आन्दोलन को दबाने और कुचलने के लिये जो कुछ किया वह धीरे-धीरे प्रकाश मे आता जारहा है। इलाहाबाद, बनारस, बलिया गाजीपुर, आजमगढ़, गोरखपुर मे उन्होंने दमन-चक्र चलाया, जिस प्रकार लोगों से युद्ध का चन्दा जबरदस्ती वसूल किया और निरपराध लोग जिस

प्रकार सताये गये, वह घोर हृदय हीनता और बर्बरता का द्योतक है। सर मारिस हैलेट तो कांग्रेस और राष्ट्रीय आन्दोलन को कुचलकर उसका गला दबाने के लिए दृढ़प्रतिज्ञ थे। उन्होंने खुले आम घोषणा की थी कि वे कांग्रेस-संगठन को नष्ट करके सदा के लिए उसे कुचल देंगे। कांग्रेस के अस्तित्व को मिटाने और लोगों की स्वातन्त्र्य-भावना को कुचलनेमें अपनी शक्ति भर उन्होंने कोई कसर उठा नहीं रखी थी। परन्तु वे कांग्रेस की कठोर शिला से अपना सिर टकराकर रह गए और अन्त में भारत से विदा होगए। कांग्रेस आज भी दृढ़ खडी है, पर्वतराज हिमालय की भांति अडिग-अटल। जनता की स्वातन्त्र्य-भावना पूर्व की अपेक्षा आज कहीं अधिक उत्कट और प्रबल है। आज सर मारिस यह अनुभव करते होंगे कि उनकी दृढ़ प्रतिज्ञा असफल होगई और कांग्रेस उनके दमन की कठोर अग्नि-परीक्षा से अधिकाधिक शक्तिशाली, प्राणवान और लोकप्रिय होकर निकली है।

हैलट शाही

सर मारिस का शासन-काल दमन और ज्यादती का काल था। उनके शासन-काल को, और विशेषत: पिछले तीन वर्षों के शासन-काल को, कभी भुलाया नहीं जा सकता। इन तीन वर्षों के भीतर प्रान्त में पूर्णतया सैनिक राज्य रहा, लोग सब प्रकार से आतंकित किए गए। तनिक सी ही उत्तेजना पर लोग गोलियों के शिकार बनाये गए। अनेक स्थानों पर महिलाओं को अप- मानित किया गया। विद्यार्थी निर्दयता के साथ सताये गए। स्थान स्थान पर कांग्रेस-भवनों पर [illegible] गए। [illegible] में [illegible]

लगाई गई और गांव के गांव जला दिये गए तथा लूट लिये गए। हैलेटशाही के जमाने के दमन का इतिहास बहुत लम्बा है और यह दमन प्रान्त में सभी जगह हुए हैं। नीचे की पंक्तियो में उन सभी अत्याचारो पर संक्षेप मे प्रकाश डाला जायगा।

बलिया की वीरता

बलिया में वहां के आन्दोलन और जन स्वातन्त्र्य को दबाने के लिए हैलेटशाही सरकार ने दमन और अत्याचार के अपने समस्त हथियारो का खुलकर प्रयोग किया। बलिया जिले के अनेक गांव जला दिए गए। आदमी पकड़-पकड़ कर पेड़ो पर उलटे लटका दिए गए, हाथियो के पैरो से वहां के ग्रामीणो को कुचलवाया गया, उनकी पूंछ मे बांधकर उन्हे बुरी तरह घसीटा गया। बलिया की पुलिस चौकी पर झण्डा लगाने के प्रयत्न मे १४ व्यक्ति पुलिस की गोली के शिकार हुए। बारनडीह मे महीनो निरन्तर सार्वजनिक रूप से लोगो पर कोड़ेबाजी होती रही। नवापुरा गांव को ५ घंटे तक जलाया गया। इतने दमन के बाद भी बलिया के लोगो ने दमन की सरकारी चक्की को बिल्कुल बेकार करके अपने क्षेत्र मे अपनी सुसंगठित और व्यवस्थित सरकार कायम करली थी। यह शासन इतना सुन्दर था कि उसके कार्य-काल में कहीं भी किसी प्रकार का अपराध नही हुआ। घनघोर दमन के मुकाबले मे अनुपम बलिदान और अदम्य साहस का परिचय देकर बलिया के लोग स्वातन्त्र्य-भावना से अभी तक भरपूर है। इसी प्रकार हैलेटशाही के घोर दमन आजमगढ़, गाजीपुर, इलाहाबाद, बनारस आदि मे भी हुए। इतना होने पर भी जनता की स्वातन्त्र्य-भावना अक्षुण्ण बनी रही।

बिहार का वैभव

अगस्त क्रान्ति में बिहार का स्थान प्रायः सबसे आगे है। इस आन्दोलन में दूसरे आन्दोलन से भी बढ़कर बिहार ने अनुपम त्याग, कष्ट सहिष्णुता और स्वातन्त्र्य-प्रियता का परिचय दिया है। इस बार २४ दिसम्बर सन् १९४५ ई० के बिहार प्रान्तीय छात्र-सम्मेलन का उद्घाटन करने श्री नेहरू जी पटना गए थे, तो सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष श्री जगत नारायण लाल ने उनका स्वागत करते हुए कहा कि "बलिया और यू० पी० के पूर्वी जिलों में जो अत्याचार हुए उनके कारण आपकी आंखों में आँसुओं का बरबस बह निकलना स्वाभाविक है। परन्तु इस प्रान्त के नवयुवकों और जनता ने जिस साहस के साथ इस क्रान्ति में भाग लिया और विदेशी शासन को देश से जड़मूल उखाड़ फेंकने के लिए तैयार रहने के कारण जो अत्याचार सहे, उनका परिचय प्राप्त करना आपके लिए आवश्यक है।" इसका उत्तर देते हुए श्री जवाहरलाल नेहरू ने कहा था—"किसी प्रान्त में तो कोई स्थान चुना जा सकता है परन्तु बिहार तो सारा का सारा ही क्रान्ति-भावना और विद्रोह से ओत-प्रोत था। यदि मैं बिहार का उल्लेख न करूँ तो इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि मैं बिहार के वैभव से अनभिज्ञ हूँ।" वास्तव में बिहार ने सक्रिय रूप से अगस्त-आन्दोलन में भाग लिया और अनुपम साहस, त्याग और कष्ट-सहन का परिचय दिया। बिहार में जो दमन और अत्याचार हुए वह रोमांचकारी हैं। अगस्त ४२ की क्रान्ति के प्रारम्भ में नौकरशाही ने पटना सेक्रेटेरियट के सामने छात्रों को गोलियों का शिकार बनाया था।

पटना के अन्दर आने जाने सभी मार्गों पर गो[illegible] ली

गई थी। विहार के देहातों में जो अत्याचार किए गए, उनका वर्णन करना सर्वथा कठिन है। वहां के समस्त देहातों मे निहत्थे क्रांतिकारियों को कुचलने और आतंक फैलाने के लिए फौज फैल गई थी। किसी भी प्रकार का दमन या अत्याचार उन्हें कुचलने के लिए कम नहीं समझा गया। बहादुर देशभक्तों के गांव तोप का निशाना बना दिये गए। बड़े-बड़े अफसरों के सामने मकान तोड़े गए, लूटे गये और उनमें आग लगाई गई। पटना के निकटवर्ती स्थान विक्रमपुर, वाड़, मुकामा और वलियारपुर के देशभक्त देशभक्ति का परिचय देने के अपराध में गोलियों के निशाने बनाये गए। सारे विहार में एक छोर से दूसरे छोर तक दमन और अत्याचारों का भयंकर ताण्डव हुआ। पुलिस और फौज भूखे भेड़ियों की भांति निरीह जनता पर टूट पड़ी और उसे निर्दयता के साथ लूटा, सताया और भयभीत किया गया। समस्त भारत में विहार ही मे केवल हवाई जहाज से गोले बरसाये गए। विहार मे कितने लोग शहीद हुए, कितने गोलियो के शिकार बने, इसकी तालिका अन्यत्र दी जाती है। विहार नें इस क्रान्ति में केवल गौरवपूर्ण भाग ही नहीं लिया, अपितु अनेक स्थानो मे बलिया की भाँति अपना एक सुसंगठित लोकतन्त्र स्थापित भी कर लिया था, सो कई सप्ताह तक निर्बाध रूप से चलता रहा। इतने दमन और अत्याचार के बावजूद भी विहार 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव को कार्यान्वित करने के लिए अब भी तैयार है। जयप्रकाश बाबू ने विहार की 'हजारीबाग' जेल से भागकर ही देश के कोने-कोने मे विद्रोह भैरव राग फूंका था।

मेदनीपुर में खूंरेजी

बिहार और यू० पी० की ही भांति भारत के अन्य स्थानों में भीषण अत्याचार और दमन किये गए। बंगाल का मेदिनीपुर जिला तो खूंखारों का राज्य ही बन गया था। अगस्त क्रान्ति के समय वहां पर लूट, बलात्कार, खूंरेजी और पैशाचिकता का बोल बाला था। मेदिनीपुर जिले के तामलुक सब डिवीजन में अगस्त १६४२ से अगस्त १६४४ के बीच पुलिस और फौज के आदमियों ने २२ स्थानों पर गोलियां चलाईं जिसके परिणाम स्वरूप ४४ व्यक्ति मरे, १६४ सख्त और १४० थोड़े घायल हुए। इन्हीं दिनों ६३ स्त्रियों पर बलात्कार किया गया और ३३ स्त्रियो पर बलात्कार करने का प्रयत्न किया गया तथा १५० स्त्रियो पर आक्रमण किया गया। १८६८ व्यक्ति गिरफ्तार किये गए और ५०७६ व्यक्ति गैर कानूनी तौर से नजर बन्द किये गए। इस समय के बीच १२४ स्थान जलाये गए, ४६ मकान जब्त किये गए और १०४४ मकानो से २१२७६५ रु० की सम्पत्ति लूटी गई। ५६ परिवारो की २४३६५ रु० की सम्पत्ति जब्त कर ली गई। ५ यूनियनों पर १६००००) का जुरमाना किया गया। १६ संस्थायें गैरकानूनी घोषित की गई। यहां के एक 'सुतावाग' नामक थाने पर अधिकार कर लेने पर जनता पर वायुयान से बम गिराये गये। ३० पुल तोड़े गए थे और अनेक सरकारी अफसर गिरफ्तार किए गए थे। १७ दिसम्बर सन १६४२ को लोगों ने डिवीजन में राष्ट्रीय सरकार की स्थापना करली थी, जिसका संचालन बहुत ही सुन्दर रीति से होता था। मेदिनीपुर जिले के कोन्ताई सब डिवीजन में भी अगस्त क्रान्ति के समय इसी प्रकार का दमन हुआ था; जिसका वर्णन विस्तार से किया जायगा।

भारत के राष्ट्रीय जीवन के विगत चार वर्षों का इतिहास उसके त्याग, बलिदान और साहस की रोमांचकारी घटनाओं से परिपूर्ण है। यू० पी० के तत्कालीन प्रान्तपति श्रीकृष्णदत्त पालीवाल ने मथुरा की एक विराट सभा में भाषण करते हुए कहा था—"कांग्रेस किसी की दुशमन नहीं है, वह अंग्रजो की भी दुशमन नहीं है। सन् १९४२ का आन्दोलन नेताओं की आकस्मिक गिरफ्तारी पर जनता के रोष का परिणाम था। यदि वह एक संगठित आन्दोलन होता तो १४ दिन मे हम बृटिश सरकार का एक बार तो अन्त कर ही देते, फिर चाहे फौज और बमों से हम पर काबू कर लिया जाता। ४२ की क्रान्ति को गान्धी जी तो अहिंसात्मक कह सकते हैं परन्तु जिनकी हुकूमत हिंसा पर निर्भर है, वे ऐसा नहीं कह सकते। सन् १९०५ में रूस में क्रान्ति हुई थी, वह सन् ४२ की क्रान्ति के मुकाबले में बच्चों का खेल जैसी थी। अतएव हमें इस संघर्ष पर गौरव है।" आगे चलकर पालीवाल जी ने अपने भाषण मे कहा 'मि० चर्चिल, एमरी और लार्ड वेवल कहते थे कि ८ अगस्त का प्रस्ताव वापिस ले लेने पर ही कांग्रेस से समझौता हो सकेगा, लेकिन उसी सरकार को हार मानकर समझौते की बातें चलानी पड़ीं। प्रस्ताव वापिस नही लिया गया और 'भारत छोड़ो' का स्थान 'एशिया छोड़ो' नारे ने ले लिया। यदि एक वर्ष में एशिया नहीं छोड़ा गया तो हमें 'दुनिया छोड़ो' का नारा बुलन्द करना होगा।"

देशी राज्य भी लपटों में

अगस्त की क्रान्ति बृटिश भारत में ही नहीं हुई, अपितु देशी राज्यो मे भी इसकी लपटे पहुची। उड़ीसा प्रान्तीय लोक परिषद के मन्त्री श्री सारंगधरदास ने एक वक्तव्य में बतलाया

है कि १९४२ का संघर्ष देशी रियासतों में भी फैला और उस आन्दोलन को राजाओं ने अंग्रेजों की सहायता से तुरन्त कुचल दिया। धन. कंगाल, नीलगिरि और तालचर में गोलियां चलाई गई। नीलगिरि और तालचर राज्यों में तो आकाश से गोलियां बरसाकर आन्दोलन को कुचला गया। सैकड़ों व्यक्ति बिना अभियोग चलाये ही जेलों में ठूंस दिए गए। अनेकों कार्य-कर्त्ताओं को लम्बी-लम्बी अवधि की सजायें दी गई; ५५ गांवों के आदमी इतने आतंकित हुए कि वे एक समीपवर्ती 'मयूरभंज' नामक रियासत में पड़े दिन काटते रहे। इन लोगों पर ७५ हजार रुपये से अधिक जुरमाना किया गया, जिसकी वसूलयाबी सामूहिक रूप से हुई। तालचर मे घायलों की संख्या ५०० से अधिक थी। बहुत से घरों को जला दिया गया और जमीनें जब्त कर ली गई। विगत २७ सितम्बर १९४५ को श्री बा० सम्पूर्णानन्द की अध्यक्षता मे बनारस जिला कांग्रेस-कमेटी की बैठक मे यह रिपोर्ट पेश की गई थी कि जिले मे १५ स्थानों मे गोली चलाई गई जिसमे २७ मरे और ८० घायल हुए। ७ आदमियों के पैर और एक आदमी के हाथ गोली लग जाने से कट गए। गोली से आहतों और मृतों मे बालक ही अधिक थे। लगभग ५००० व्यक्ति नजरबन्द किये गए और १२० पर मुकदमा चला, जिनमें से ३ को फांसी, १६ को आजीवन काराबास और ३५ को विविध सजायें मिलीं। १८ व्यक्तियों को पेड़ से बांधकर बेंत लगाये गए।

सितारा की सरकार

सितारा (बम्बई) में तो १९४२ से लेकर अभी तक इसका

चक्र चलता रहा। वहाँ की जनता ने एक समानान्तर सरकार की स्थापना करली थी। इस सरकार का एक गुप्तचर विभाग भी था, इसकी अपनी अदालत थी। सरकार ने वहां जो दमन किया, वह रोमांचकारी है। १९४५ तक वहां दमन होते रहे, परन्तु सरकार अपने उन पैशाचिक कार्यों को छिपाये रही।

४२ की अगस्त-क्रान्ति देश व्यापी थी, इसलिए कम और अधिक सभी जगह अत्याचार हुए। परन्तु इस दमन की अग्नि-परीक्षा मे तपकर हमारा राष्ट्र बहुत ही सबल और शक्ति-शाली होकर निकला है। १९२०, १९३०, १९३२, १९४१ और १९४२ के संघर्षों से गुज़रते और मोर्चे पर मोर्चे फतह करते हुए आज हम आज़ादी की अन्तिम मंजिल पर खड़े हैं। स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, न्याय और सत्य हमारे साथ हैं, अहिंसा हमारा साधन एवं पथ है, महात्मा गान्धी से युग-पुरुष हमारे पथ-प्रदर्शक हैं, जयप्रकाश, अरुणा, लोहिया और अच्युत-पटवर्धन जैसे सेनानी हमारे सारथी हैं; फिर क्यों न हमारी विजय होगी।

कोल्हापुर की काशीबाई

वैसे तो सभी जगह अगस्त की अशान्ति के दिनों में पुलिस द्वारा अत्याचार किये गए थे. किन्तु रियासत कोल्हापुर का एक ऐसा राक्षसी कारनामा हमारे सामने आया है. जिसे पढ़ एवं सुनकर आंखें शर्म से नीची झुक जाती हैं खून खौलने लगता है। १४ अक्तूबर १९४४ को पुलिस के एक दरोगा कुछ

सिपाहियों के साथ चिरवानल नामक गांव में जाकर वहां की काशीबाई हणवर नामक एक हिंदू महिलाको पकड़ लाया। पुलिस उसके पुत्र श्री मल्ला हणवर को अगस्त-क्रान्ति के सिलसिले में पकड़ना चाहती थी मगर वह तभी से फरार था। दारोगा ने काशीबाई से उसका पता पूछा और जब उसने बताने से सर्वथा इन्कार कर दिया तो उसे उसके पति और दो पुत्रों के सामने नंगा करके पीटा। यहां तक भी कहा जाता है कि उसके गुह्यांगों में मिर्च भर दी गई जिससे काशीबाई को असह्य कष्ट हुआ। काशीबाई ने जब इस घटना की रिपोर्ट राज्य के प्रधानमन्त्री के यहां की तो इसकी कोई जांच नहीं की गई. प्रत्युत यह कहकर टाल दिया गया कि यह कोई गम्भीर बात नहीं है। बाद में बम्बई सरकार के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्री जी० जी० खेर की अध्यक्षता में जांच करने के लिए एक कमेटी नियुक्त हुई। जिसने जांच की और वहां के तत्कालीन पुलिस अधिकारियों ने भी इस घटना की सचाई को स्वीकार किया: किन्तु साथ में इस मामले को दबा देने की सिफारिश भी की। मालूम हुआ है कि राज्य ने उन अत्याचार करने वाले अफसरोंको कोई भी दण्ड नहीं दिया।

दूसरा भाग

ज्वालामुखी विस्फोट और दमन

बम्बई से प्रारम्भ

६ अगस्त को बम्बई के ग्वालिया मैदान का दृश्य अभूतपूर्व था। अगस्त-क्रान्ति के इतिहासमें इस स्थान का नाम अत्यन्त महत्त्व प्राप्त कर गया है। ६ अगस्त के प्रातः काल यह चर्चा सारे शहर में फैल गई थी कि जो नेता नेशनल वालन्टियर कोर का प्रदर्शन देखने आने वाले थे, वे सब प्रातः काल ही गिरफ्तार करके किसी अज्ञात स्थान को भेज दिये गये हैं। इस से जनता में एक दम जोश का ज्वालामुखी जग गया। सारे स्वयंसेवक एवं स्वयंसेविकायें नारंगी रंग की पोशाक पहन कर परेड के लिये उस मैदान मे जमा होगए। पुलिस तो पहले से ही वहां पर तैनात थी। भूलाभाई देसाई के सुपुत्र ने तिरंगा झण्डा अपने हाथ में ले लिया और वह उसे लेकर लहराने के लिये उद्यत

हुए ही थे कि झपटकर एक यूरोपियन सार्जेन्ट ने उनसे कहा- "इस मैदान पर अब पुलिस और फौज का अधिकार होगया है, इसलिये आप अपने सब स्वयंसेवकों को यहां से शीघ्र ही हटालें, अन्यथा हम अश्रु गैस का प्रयोग करेंगे।

अरुणा का भाषण

जब कोचीन रियासत प्रजामंडल के प्रधान मि० नीलकण्ठ ऐयर को इस घटना का पता लगा तो उन्होंने गोरे सार्जेन्ट के पास जाकर कहा कि इस स्वयंसेवक दल का जिम्मेदार व्यक्ति मैं हूँ। आप मुझसे इस विषय में जो कहना हो, कहें। परन्तु सार्जेन्ट ने इस पर ध्यान नहीं दिया और एक दम पुलिस को अश्रु-गैस प्रयुक्त करने का आदेश दे दिया। मि० ऐयर ने श्रीमती अरुणा आसफअली के पास जाकर सारी बातें समझाईं और स्वयंसेवकों को न हटाने पर भीषण रक्तपात होने की आशंका प्रकट की। सब स्वयंसेवक वहां से हटा दिये गए और अरुणा का ओजस्वी भाषण प्रारम्भ हुआ।

शीघ्र ही पुलिस और फौज ने उस विशाल मैदान पर कब्जा कर लिया। सभी सैनिक अश्रु-गैस की सामग्री से पूर्णतया लैस थे। सभी सिपाहियों ने गैस के छोटे थैले अपने हाथों में ले लिये और सार्जेन्ट के हुक्म देने पर तुरन्त अश्रु-गैस प्रयोग में लाई गई। जनता टस से मस नहीं हुई। श्रीमती अरुणा आसफअली ने भाषण समाप्त करके झण्डा फहरा दिया।

लाठी चार्ज और गिरफ्तारियाँ

जब भीड़ पर कोई प्रभाव नही हुआ तो गोरे सार्जेन्ट ने पुलिस को फिर धुआंधार अश्रु गैस छोड़ने का आदेश दिया। अश्रु गैस के प्रारम्भ होते ही भीड़ के नेता ने वही पर सबको लेट जाने की आज्ञा दी। दो मिनट तक लेटे रहने के बाद सारी भीड़ फिर खड़ी होगई। पुलिस ने फिर अश्रु-गैस का प्रयोग किया। इसका भी जब भीड़ पर कोई प्रभाव नही हुआ तो पुलिस ने लाठियां संभाली और भीड़ के कुछ नेता गिरफ्तार भी कर लिए। लाठी चार्ज शुरू हुआ और भीड़ भी छटनी शुरू होगई। श्री ऐयर अश्रु गैस का प्रहार होने के बाद अपनी आंखों को मल ही रहे थे कि उनके दोनो हाथों पर लाठियां आकर पड़ीं। सरदार पटेल की सुपुत्री कुमारी मृदुला बेन पटेल को भी कई लाठियां लगीं। इतना होते हुए भी उनका गिरफ्तार न होने का ही निश्चय था। उनकी यह निश्चित धारणा थी कि गिरफ्तारी से बचकर समस्त देश मे आन्दोलन को सगठित करना ही अधिक श्रेयस्कर है।

पूर्ण हड़ताल

बम्बई की इस घटना का समाचार रेडियो द्वारा दो ही घंटे मे समस्त देश मे फैल गया। बम्बई मे लगभग १५ दिन पूर्व से ही नर-शार्दूल सरदार पटेल के ओजस्वी भाषणों मे अपूर्व जागृति उत्पन्न होगई थी। इसीलिए बम्बई की जनता ने इन सब आक्रमणों का बड़ी वीरता से मुकाबला किया और वह हारी नही। सरदार ने अपने अन्तिम सन्देश मे कहा था कि

"बीस वर्ष तक जो तालीम प्राप्त की है, उसका इस समय सदुपयोग करना होगा।" अपने सरदार का यही सन्देश बम्बई की जनता के कानों में गूंज रहा था। ऐसा सुयोग मिलने की प्रतीक्षा उस समय जनता को थी। अतएव नेताओं की गिरफ्तारी की प्रथम प्रतिक्रिया सारे नगर में पूर्ण हड़ताल के रूप में प्रारम्भ हुई।

तूफान बरपा होगया

बम्बई की यह हड़ताल केवल बाजार तक ही सीमित न रहकर, समस्त नगर के छोटे बड़े कारखानो में भी फैल गई। जब ट्राम और बस सर्विस के कर्मचारियो ने इस हड़ताल में योग न दिया तो जनता में एक तूफान बरपा होगया। फलस्वरूप अनेक बसें तथा ट्रामें जला दी गईं, यातायात बन्द कर दिया गया। तार और टेलीफोन के खम्भे उखाड़ दिये गए। सभी सरकारी इमारतों को हानि पहुचाने का प्रयत्न किया गया। इस प्रकार नेताओ की गिरफ्तारी पर थोडी ही देर मे बम्बई में विक्षोभ की अग्नि प्रज्वलित हो उठी।

गोली का शिकार

उक्त घटनाओं से ब्रिटिश नौकरशाही का तख्ता हिल गया और वह उनको दबाने के लिए सब तरह के साधन प्रयुक्त करने को तुल गई। परिणाम स्वरूप दोपहर के समय प्रार्थना समाज के पास गोली चली, एक नवयुवक इस गोली का शिकार हुआ। इससे जनता और भी क्षुभित हो गई और जनता तथा पुलिस के बीच खुलकर संग्राम हुआ, जिसमें ३४ व्यक्ति और गोलियों से

शिकार हुए। इसके बाद निशस्त्र और असहाय जनता का पुलिस और फौज ने पूर्ण बर्बरता के साथ दमन किया। उस पर अनेक अत्याचार किये गए। बन्दूक के दबाव से जनता से कुत्सित से कुत्सित कार्य कराये गए। इन अत्याचारों से बच्चे और स्त्रियां तक भी नहीं बचीं। कई जगह पर तो महिलाओ से बहुत दुर्व्यवहार भी किये गए।

अत्याचारों की आँच

बम्बई की सिविल लिबर्टीज यूनियन के आन्दोलन के बाद इन अत्याचारों की जांच करने के लिए एक कमेटी नियुक्त की थी। उक्त कमेटी ने अपनी रिपोर्ट मे कहा है—"हमे ऐसे अनेक उदाहरण मिले है, जहाँ अनुचित रूप से गोलिया चलाई गईं। भीड़ ही नही, प्रत्युत ऐसे व्यक्तियो पर भी गोलिया चलाई गईं, जो भीड़ से सर्वथा दूर थे या एक दम नही थे। बम्बई के बड़े हस्पताल और मैडीकल-कालिज के प्रधान डाक्टर जीवराज मेहता ने अखबारो मे छपवाया था कि किस प्रकार एक मासूम बच्चे को गोली का निशाना बनाया गया? बच्चा भीड़ मे नही था, उसका तो केवल यही अपराध था कि वह 'महात्मा गान्धी की जय' बोल रहा था।" लोगो को घसीट-पीट कर उनके घरों से बाहर निकाला गया ऐसे लोगो पर भी गोलियां बरसाई गई, जो अपने घरो से बाहर निकले ही नही उन पर अनेक प्रकार के अत्याचार किये गए।

छात्रों पर गोलियां चलाई गईं

कैरा जिले मे कुछ विद्यार्थी जनता को [illegible]

उपदेश देकर गांव से वापिस लौट रहे थे। वे समीपवर्ती ज़ि
स्टेशन से गाड़ी में बैठना चाहते थे उसी ट्रेन से इन छात्रों
पीछा करने वाला एक पुलिस का दस्ता उतरा और उनकी त
बढ़ा। छात्रों के मुखियाने पुलिस पार्टी के प्रमुख व्यक्ति से कहा
वे सत्याग्रही हैं और यदि पुलिस उन्हें गिरफ्तार करना चाहे
गिरफ्तार कर सकती है; गिरफ्तारी का वे किसी भी प्रकार
विरोध न करेंगे। शान्ति पूर्वक गिरफ्तार होने को इच्छा प्र
करने पर भी पुलिस ने उन सत्याग्रही छात्रों पर गोलियां चला
इस घटना में ३ छात्र उसी समय मर गए और अनेक घा
हुए। इतना ही नहीं गोली चलाने के उपरान्त घायलों को कि
प्रकार की सहायता नहीं मिलने दी। जब घायलों को प्यास ल
तो गांव के लोगों ने उन्हें पानी देना चाहा; लेकिन पुलिस
उन्हें रोक दिया। रेलवे स्टाफ को भी उनकी इस अवस्था
दया आई; किन्तु वे भी पुलिस के आतंक के कारण प
घायलों को पानी न पिला सके।

१४ वर्ष का बालक शहीद

बम्बई के धूलिया जिले में नन्दरबार नामक एक छोटा
सा शहर है। ९ अगस्त को जब विद्यार्थियों ने यह सुना कि देश
के गण्य-मान्य नेता बम्बई में गिरफ्तार कर लिये गए हैं, तो
उन्होंने एक छोटा-सा जुलूस निकाला। जुलूस में ५ वर्ष से लेकर
१५ वर्ष तक के छात्र थे। साथ में कुछ लड़कियां भी थीं। जिस
समय उनका यह जुलूस बाजार में से जा रहा था तो पुलि
इन्सपेक्टर को वहीं से एक ढेला आकर लगा। यह काम किसी
इन्सपेक्टर के दुश्मन का था। परन्तु तब इन्सपेक्टर ने इ
मासूम बच्चों पर गोली चलाने की आज्ञा दे दी। उनमें आगे

लगे। एक चौदह वर्ष का बच्चा उस जगह जाकर खड़ा होगया, जहां पर कांग्रेस का झण्डा फहरा रहा था। पुलिस ने उसको गिरफ्तार करने के स्थान में उस पर गोली चला दी। गोली उसके पैरों में लगी; लेकिन पुलिस ने तब तक गोली बन्द नहीं की, जब तक कि उसके प्राण नहीं निकल गए। गोली चलने से जुलूस भंग होगया था—बच्चे अपनी अपनी रक्षा के लिए इधर उधर भागने लगे थे; लेकिन उन भागते हुए बच्चों की पीठ में भी गोलियां लगीं और गोलियों के निशाने से जुलूस के ५ छात्र और शहीद हुए। इनके अतिरिक्त १२ घायल हुए, जिनमें एक लड़की भी थी।

इस प्रकार बम्बई के अनेक स्थानों में पुलिस ने जुल्म किए। पूना में बेकसूर स्त्रियों को गोली से भूना गया। यह घटना तब हुई जबकि वे न तो जुलूस में सम्मिलित हुई थीं और न किसी सभा में उन्होंने भाग लिया था। उनके घरों में घुस-घुस कर पुलिस ने यह अत्याचार किए।

आग फैलती ही गई

बम्बई से जो ज्वाला सुलगी थी, वह धीरे धीरे समस्त देश में फैल गई और दूसरे प्रान्तों के कांग्रेसी नेताओं तथा कार्यकर्त्ताओं को भी गिरफ्तार कर लिया गया। इससे जनता विद्रोही हो उठी; उससे जो कुछ हुआ वह जग जाहिर है। बम्बई का महात्मा गांधी का 'भारत छोड़ो' नारा समस्त देश का नारा होगया और देश उनके मूल मन्त्र 'करो या मरो' को सार्थक करने में जी-जान से जुट गया।

गुजरात भी पीछे न रहा

जो भीषण दमन बम्बई में हुए उसी प्रकार के और उससे भी बढ़कर गुजरात में हमारे इस भीषण आन्दोलन को रोकने के लिए किये गए। परिणाम स्वरूप गुजरात में भी आन्दोलन दबने के स्थान में उल्टा जोर से चलने लगा। वहाँ के छात्रों और महिलाओं, किसानों, मजदूरों एवं सभी काँग्रेस-कार्य-कर्त्ताओं ने जी जान की बाजी लगाकर आन्दोलन को आगे बढ़ाया। बम्बई की भांति गुजरात में भी वहाँ के कार्य-कर्त्ताओं को सरकार ने गिरफ्तार करना प्रारम्भ किया। इन गिरफ्तारियों के साथ ही सब प्रकार की सभाओं तथा जुलूस निकालने पर रोक लगा दी गई। गुजरात के छोटे बड़े अनेक शहरों में इन आज्ञाओं तथा प्रतिबन्धों को तोड़कर कार्य किया गया।

अत्याचारों की पराकाष्ठा

जनता के उत्साह को दबाने के लिए खेड़ा, सूरत और अहमदाबाद में पुलिस ने खुलकर अत्याचार किए। किन्तु इससे जनता का उत्साह दबने की बजाय बढ़ता ही गया। गांवों की जनता को डराने के लिए [illegible] जुर्माने किये गए; जिससे वह किसी भी ऐसे कार्य में सहायता न पहुंचावे। जुर्माने न देने पर संगीनों की नोक के बल पर वे वसूल किये गए। एक दिन सवेरे सशस्त्र पुलिस ने एक गांव को घेर लिया और गांव के किसी भी व्यक्ति को बाहर न जाने दिया गया। [illegible]

बाद सशस्त्र पुलिसके दल ने घर-घर जाकर लगान वसूल किया।

आम हड़ताल

गुजरात के आन्दोलन में प्रमुख घटना अहमदाबाद की मिलों का सर्वथा बन्द हो जाना है। वहां की मिलों की हड़ताल सर्वथा निराली थी। वृटिश सरकार के एजेंटों के लाख प्रयत्न करने पर भी यह हड़ताल न टूटी। इस हड़ताल को सर्वथा सफल बनाने का एक मात्र श्रेय वहां के मजदूरों को है। उन्होंने मजदूरी की चिन्ता न करके देश के जीवन-मरण के क्षणों में उसके आन्दोलन को आगे बढ़ाया। हड़ताल के दिनो मे जनता ने अभूतपूर्व अनुशासन का परिचय दिया।

छात्र सबसे आगे

अगस्त-क्रान्ति को सफल बनाने में छात्रो का महत्वपूर्ण भाग है। उन्होंने इस आन्दोलन मे इतने शौर्य, साहस तथा धैर्य का परिचय दिया कि जिसका उदाहरण देखने मे नहीं मिलता। उन्होने कालिजों एवं स्कूलो मे जाना बन्द कर दिया।

शहादत के मार्ग पर

अपने कार्यमे छात्रोने प्राणपणकी बाजी लगादी और कई छात्र देश की स्वतन्त्रता के लिए आयोजित इस महा क्रान्ति यज्ञ मे शहीद होगए। श्री विनोद किनारीवाला राष्ट्रीय झंडे की रक्षा करते हुए पुलिस की गोलियो का शिकार होगया। श्री रसिक जानी, श्री पुष्पवदन, श्री गोवर्धन शाह और श्री [illegible]

लाल केडिया विदेशी सरकार के अत्याचारों का सामना करते हुए राष्ट्रीय स्वतन्त्रता की ज्योति अमर बनाये रखने के लिए शहीद होगए। इनके अतिरिक्त अनेक बालक और बालिकायें देश की स्वतन्त्रता के लिए शहादत के मार्ग के पथिक बने।

दो घटनायें

भड़ौंच जिले के खेड़ा और आडास की घटनायें बहुत महत्वपूर्ण हैं। इन दोनों गांवोंमें छात्रो पर पुलिसने जो अत्याचार किये, वह विस्मरणीय नहीं। घटना इस प्रकार है—लगभग १०० छात्रो का एक दल बड़ौदा से बम्बई जाने वाली रेल पर सवार हुआ। उसका कार्य प्रचार करना था। उस दल का इरादा था कि रेल के सभी डिब्बा पर नारे लिखे हुए पोस्टर चिपकाये जायें या नारे खड़िया से लिख दिए जायें। उन्हें अपनी गिरफ्तारी से पूर्व दिया हुआ म० गान्धी जी का सन्देश बाटना था। पुलिस ने जबरदस्ती उस दल को भड़ौंच स्टेशन पर उतार लिया। उन लोगों को ट्रेन से उतारने के लिए लगभग १०० कॉन्स्टेबलों का एक दल तैयार था। उन्हें वहीं पर २४ घंटे तक रोककर बाद में अपने अपने घरो को लौटा दिया गया।

आडामा में १८ अगस्त

भड़ौंच की घटना के दो दिन बाद ३४ छात्रों का एक दल बड़ौदा से उसी कार्य को करने के लिए आनन्द के लिए रवाना हुआ और अपना काम पूरा करके शाम को बड़ौदा वापिस आने के लिए शाम की गाड़ी पकड़ने के लिए आडामा स्टेशन की ओर

तेजी से जारहा था। स्टेशन के लिए यह दल एक तंग गली से जारहा था, इतने में उन्ही की खोज के लिए आए हुए रायफलों से लैस ६ पुलिस के कांस्टेबिलों ने उन्हें रोका। पुलिस ने खुल-कर गोली चलाई। गोली से ५ छात्र तो वही शहीद होगए और १२ बुरी तरह घायल हुए।

विद्रोह भयंकर हो उठा

ऐसी एक नहीं अनेक घटनायें वहां घटीं। विद्यार्थियों पर अनेक प्रकार के अत्याचार किए गए, इससे जनतामे विद्रोह और भी भंयकर हो उठा। जगह जगह पर थाने, डाक बंगले, स्टेशन, तहसील की इमारतें जला दी गई, खजाने लूट लिए गए, कई स्थानों पर भीड़ ने हमला किया। किन्तु यह स्मरणीय घटना है कि इन सब आक्रमणों मे किसी भी व्यक्तिगत सम्पत्ति की हानि नहीं हुई।

सतारा की पत्री सरकार

सितारा की पत्री सरकार की स्थापना अगस्त-क्रान्ति में एक महत्वपूर्ण घटना है। उसके सम्बन्ध में भारत के ए[illegible] प्रतिष्ठित नेता ने, जो काफी दिन तक फरार रहे थे, [illegible] प्रकट होने पर निम्न विचार प्रकट किए हैं:—

ग्राम राज्य की स्थापना से पूर्व सतारा की क्या अवस्था थी यह हम पहले लिख चुके हैं। कांग्रेस सरकार आई है प[illegible] नीचे के अधिकारी पुराने ही चले आरहे हैं और वे बदले नहीं गए हैं, अतः क्रान्तिकारियों का काम अभी समाप्त नहीं हुआ है।

इन सब लोगों को लूट-पाट करने वालों ने आश्रय दिया। वे जंगलों, गुफाओं और खोहों में चले गए और वहां रहने ल[illegible] पुंडपोलगार उनके आश्रयदाता बने। जगह का प्रश्न जरूर मिट गया, मगर दूसरे हजारों प्रश्न उत्पन्न होगए। भूमिगतों की बुद्धि कसौटी पर परखी गई।

अब वे लूट-पाट मचाने लगे और डाके डालने लगे। इस प्रकार उन्होंने भूमिगतों को जनता से मिलने वाले मान में शिथिलता उत्पन्न करदी। भूमिगतों के सामर्थ्य का आधार उनमें निहित जनता का विश्वास था। जनता का विश्वास उनमें कम होगया है, यह अधिकारियों ने तुरन्त देख लिया। सरकारी अधिकारियों ने कुछ डाका डालने वालों को अपनी ओर किया, उनका विश्वास सम्पादन किया, और उनको कांग्रेस पर अत्याचार करने के लिये उत्तेजन दिया। डाकुओं की सहायता से उसने भूमिगतो को पकड़ने का प्रयत्न भी किया, मगर सतर्क और सावधान लोगों ने इसको सफल न होने दिया। एक बार ऐसा प्रसंग आया कि औंध रियासतकी सीमापर कुंडलके आस पास भूमिगतों को भेंट करने के बहाने बुला कर बृटिश पुलिस के हवाले करने का एक डाकू ने यत्न किया। भूमिगतों ने औंध रियासत की पुलिस को यह कह कर बुलाया कि डाकू तुम पर हमला करने के लिए चले आ रहे हैं। रियासती पुलिस और ब्रिटिश-पुलिस ने अन्धकार में एक दूसरे पर गोली चलाई और भूमिगत आराम से बैठे रहे। सरकार ने इस घटना का वर्णन कहीं नहीं छपने दिया. मगर भूमिगतों के नाम से डाकुओं द्वारा किए गए अत्याचारों का वर्णन तड़क-भड़क के साथ छपवाया। इसके फोटो भी छापे गए, और आवाज आने लगी, 'ओह ये अत्याचार यह हिंसा शिव शिव।' जिस सत्ता का आधार लाठियां और बंदूकों पर है, जिसके अधिकारी कड़ा बन्दोबस्त करने के लिये प्रजा से दूर रहते हैं उनका यह आक्रोश किसको सच्चा मालूम होगा ? मगर हममें से अनेक ने भ्रमपूर्ण धारणा बनाली और [illegible] खोल दिया। कुछ कालके लिये सरकारी प्रचार सफल हुआ।

उन्नति का मार्ग खुला। इसका श्रेय किसी एक व्यक्ति को नहीं है, पर समूह को है, जिसको आप पत्री सरकार कहते हैं। उनके पीछे मेरे सरीखे हजारों सतारा के लोग रहने वाले थे। इन में से प्रत्येक जन की स्वसामर्थ्य पर श्रद्धा ही पत्री सरकार थी।

इसमें हमने क्या बुराई की ? अच्छे या बुरे हमारे किसी काम में जो बाधक हुआ उसको कांटे की तरह निकाल फेंकने की शिक्षा हमने अपने साहबों से पाई थी। वह शिक्षा सब्याज हमने उनको लौटा दी। इसको क्या आप चूक कहेंगे ?

अब संग्राम थम गया है। बम्बई मे कॉग्रेस सरकार स्थापित हो गई है। जंगल-वन मे फिरने वाले हमारे तरुण नेता गण अपने घरो मे वापस आगए है। जेलोमे बैठे नेता कौंसिलों मे गए हैं। इस समय वास्तविक कानून अपने हाथ मे लेने की जरूरत नहीं। मगर ऊपरली सरकार बदली है, नीचेके अधिकारी अभी तक वैसे ही बने हुए हैं। इनमे कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। शॉततः, सुव्यवस्था और कानून की जवाबदारी पुनः पुलिस और न्याय विभाग के पास चली गई है। अपराध पुनः बढ़ने लगे है। जनता की सरकार, कांग्रेस की सरकार इनका क्या बन्दोबस्त करती है यह देखना है ?

वापू का वर्धा

वम्बई में समस्त नेताओं की गिरफ्तारी से वर्धा में विद्रोह फैल गया था। ११ अगस्त की शाम को गांधी चौक मे एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया, जिसमें श्री दीनदयाल चूड़ीवाले, जो बम्बई से लौटे थे, अपने नेताओं के 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव का महत्त्वपूर्ण सन्देश जनता को देने वाले थे। अपने नेताओं का प्राणदायी सन्देश सुनने के लिए जनता चोक की ओर उमड़ी चली आरही थी। सभा की खबर सुनकर पुलिस भी चौकन्नी होगई थी और वह भी हथियारों से लैस होकर गांधी चौक मे आगई थी। श्री दीनदयाल चूड़ीवाले भाषण देने खड़े ही हुए थे कि उन्हें पुलिस अधिकारियों ने भाषण देने से रोक दिया। जनता इसे बर्दास्त न कर सकी और उसने इसका घोर विरोध किया।

पुलिस अधिकारी इसे कब सहन करते, उन्होंने आव देखा, न ताव और गोलियां दागनी आरम्भ कर दीं। जनता में खलबली मच गई। उस भीड़ मे एक युवक के गोली लगी, गोली मस्तक को चीर कर आर पार हो गई थी। वह युवक अपने वाप का इकलौता वेटा था, दिनभर मजदूरी करता था और रात को उसी दिन की कमाई से पेट भरता था। उस युवक का नाम था जंगलू। जंगलू ने अपने देश की आजादी के लिए अपने प्राणों की अमर वली देदी।

दूसरे दिन उस वीर शहीद के शव का जलूस निकला. दुर्गे वकील ने जलूस का नेतृत्व किया। जंगलू केवल ३८ वर्ष का नवयुवक था, उसके तीन बच्चे और वृद्धा पिता था। उनके

आष्टी और चिमूर

अष्टी और चिमूर मध्यप्रान्त के दो गांव हैं। अगस्त आन्दोलन के इतिहास में इसका नाम महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इन दोनों गांवो की जनता पर बृटिश नौकरशाही ने जो अत्याचार किये वे बड़े ही दर्दनाक एवं अमानुषिक थे। इन गांवो मे निरीह अबलाओं पर किए गए अत्याचारों का विस्तृत विवरण डाक्टर मुंजे की रिपोर्ट से मिलता है। इसके अतिरिक्त श्रीमती रमाबाई ताम्बे ने भी एक रिपोर्ट इस सम्बन्ध मे तैयार की थी। इस सम्बन्ध मे उन्होने यह रिपोर्ट पूना के गवर्नर की सेवा मे भेजकर उनसे इन अत्याचारों की निष्पक्ष जांच कराने की प्रार्थना की थी, किन्तु यह रिपोर्ट निराधार और झूठी कहकर दबा दी गई।

देश की आंखे खुल गई थी, वह इन अत्याचारों की निष्पक्ष जांच चाहता था। फलस्वरूप इसके लिये आन्दोलन हुआ जिससे नौकरशाही का दिल दहल उठा। अत्याचार और अनाचार इस हद तक पहुंचा कि समाचार-पत्रो पर इन अत्याचार और अमानुषिकता का भण्डाफोड़ करने वाले समाचारों को छापने पर भी प्रतिबन्ध लगा दिया गया। इसके विरोध मे समस्त भारत के अखबारों ने हडताल की। प्रोफेसर भन्साली के अनशन ने तो देश में तहलका मचा दिया और अन्त मे सरकार को झुकना पड़ा। वाइसराय की कौंसिल के तत्कालीन सदस्य माननीय अणे स्वयं चिमूर गये और वहां की अबलाओं की दर्दभरी कहानी अपने कानो से सुनी और अन्त मे उन्हें

कहना पड़ा—'जो नहीं होना चाहिये था वह वहां हुआ। ईश्वर में विश्वास रक्खो वह अवश्य इसका न्याय करेगा।"

भीषण आन्दोलन

चिमूर और आष्टी में ११ अगस्त के बाद से कांग्रेस सभायें होनी प्रारम्भ हुईं, जिनमें जनता को संघर्ष करने के लिये तैयार किया गया। फलस्वरूप जनता विद्रोह कर उठी और भीषण आन्दोलन शुरू होगया। आष्टी की घटना है, १२ अगस्त को जब वहां नेताओं की गिरफ्तारी का समाचार पहुंचा तो जनता ने एक विराट जलूस निकाला। सारी जनता तिरंगे झंडे की छाया मे सीधी थाने की ओर चल पड़ी। थाने के समीप पहुंचकर जनता ने थाने पर झंडा लगाने का प्रयत्न किया। जलूस मे महिलाओं का जोश देखने ही योग्य था, वे जलूस के आगे आगे दुर्गा और भवानी का रूप धारण किये हुए बढ़ी चली जारही थीं। जब जनता थाने के पास पहुंची तो पुलिस सतर्क हो गई।

गोली और लाठियों की वर्षा

जब भीड़ बढ़ने ही लगी और थाने पर झंडा लगाने के लिए वह उतावली हो उठी तो पुलिस ने गोली चला दी। पुलिस वालों ने महिलाओ को गन्दी-गन्दी गालियां दी और लाठियों की वर्षा प्रारम्भ कर दी। जनता फिर भी लाठियों और गोलियों की वर्षा के बीच थाने की इमारत की ओर बढ़ी ही जारही थी। किन्तु कब तक ऐसा होता।

छटपटाते घायल भाइयों के आर्तनाद ने युवकों के हृदय में प्रतिहिंसा की ज्वाला जगादी। उनका धैर्य जाता रहा और वे

भूखे शेर की तरह उन पुलिस से टुकड़खोर व्यक्तियों पर टूट पड़े। फलस्वरूप ६ ग्रामीण और ३ पुलिस वाले तुरन्त घटनास्थल पर मारे गए और सैकड़ों घायल हुए। पुलिस भाग निकली और 'महात्मा गान्धी की जय' बोल कर सब इन्सपैक्टर ने अपनी टोपी फेंक दी। फिर क्या था, तिरंगा झंडा शान से थाने की इमारत पर लहराने लगा।

गोरी फौज के अत्याचार

उसी रात गोरी फौज उस गॉव मे आ धमकी और उसने मनमाने अत्याचार प्रारम्भ कर दिए। लोगों को बुरी तरह से पीटा गया। दूसरे दिन उन्हें विना भोजन पानी के धूप मे खड़ा रखा गया और फिर रात को पशुओं की भांति उन्हें एक छोटी-सी कोठरी मे भर दिया गया। इसी सम्बन्ध मे एक मास तक वहां जो नारकीय यन्त्रणाये जनता को भुगतनी पड़ीं, उन्हें ध्यान कर अब भी आंखों में खून उतर आता है। इस भीषण कांड मे अनेक निरपराध व्यक्ति गिरफ्तार किए गए, जिनमे अधिकांश बच्चे ही थे। ५२ व्यक्तियों को फांसी की सजा हुई, जो बाद में श्रीमती अनसूया बाई काले के प्रयत्न से आजीवन कारावास के रूप मे बदल गई।

चिमूर का जुलूस

चिमूर मध्यप्रान्त का एक छोटा सा कस्बा है। जिसकी आबादी लगभग ६००० है। यह स्थान चांदा जिले के वरोरा नामक स्थान से लगभग ३० मील दूर है। वरोरा से चिमूर तक सड़क जाती है। १६ अगस्त नागपंचमी के दिन वहां की जनता

ने प्रभात फेरियां निकालीं. और जूलूस भी निकाला। जुलूस में लगभग ४०० स्त्रियां और लगभग १०० बच्चे थे, सभी व्यक्ति पूर्णतः अनुशासन में थे। गांव के सभी प्रमुख मार्गों पर पुलिस मोर्चा लगाये बैठी थी। जुलूस रोक दिया गया और फिर गोलियों की वर्षा हुई। लोग जहां के तहां बैठ गए। सारी जनता पूर्णतः अहिंसक थी; किन्तु फिर भी गोलियां चलाई गईं जिसमें कई स्त्रियां और बच्चे घायल हुए।

उपद्रव का प्रारम्भ

गोली कांड से जनता का धैर्य जाता रहा। फिर उसने खुलकर उपद्रव प्रारम्भ किए और वीरता पूर्वक पुलिस का मुकाबला किया। अन्त में अत्याचारियों को मैदान छोड़कर भागना पड़ा। जनता क्रोध से पागल हो रही थी: दो पुलिस वाले भी इसकी चपेट में आगये और उन्हें अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। इसके बाद सड़कें काट डाली गईं, पेड़ गिराकर सभी रास्ते रोक दिए गए। बाद में वहां फौज पहुंची और उसने निहत्थी भीड़ पर ऐसे-ऐसे अत्याचार किए, जिन्हें सुनकर दिल कांप उठता है। फौज के वहां पहुंचने पर अधिकांश गांव खाली होगया था। गांव में केवल वृद्ध, बच्चे और स्त्रियां ही रह गई थीं। तीसरे दिन उन सभी लोगों को कड़कती धूप में कई घंटे खड़ा रखा गया। जरा सा भी इधर-उधर होने पर या पानी इत्यादि मांगने पर उन्हें फौजी बूटों की मार भी सहनी पड़ी।

ब्लैक हाल की घटना

कलकत्ते के ब्लैक हाल के विषय में तो पाठकों ने सुना होगा; किन्तु उससे भी भयंकर यातनायें अब की बार निदूर और

आष्टी मे दी गई। प्रायः कई दिन तक आन्दोलन के दिनों में भीड़ को पकड़ कर पुलिस ने लगभग १५ फुट चौड़े और २५ फुट लम्बे एक कोठे में ठूंस दिया, जिन्हे कई दिनों तक बाहर नहीं निकाला और 'पानी-पानी' चिल्लाने पर पानी भी नही दिया, जिससे अनेक व्यक्ति बेहोश होगए थे।

स्त्रियों पर बलात्कार

नौकरशाही को इतने से ही सन्तुष्टि नहीं मिली। उसने महिलाओ पर भी अनेक अत्याचार किये। गोरी फौज के सिपाही और पुलिस के कर्मचारी ग्राम के निवासियो के घरों के ताले तोड़-तोड़ कर उनके घरों मे घुस गए और अबला महिलाओं पर ऐसे-ऐसे घोर अत्याचार किए, जिनसे रोमांच हो आता है। १२ वर्ष की बालिकाओं से लेकर ५५ वर्ष की महिलाओं तक के साथ उन्होने कुकृत्य करके अपनी वासना की तृप्ति की। अनेक छोटे छोटे बच्चो को उल्टा पेड़ों से लटका दिया गया। पुलिस और फौज का यह भीषण दमन महीनों तक आष्टी और चिमूर मे चलता रहा। वहां पर कितने ही लोग गोलियो के शिकार हुए, कितनी ही स्त्रियो ने लज्जावश आत्म-हत्या करली। इस सबके बावजूद भी न्याय का दम भरने वाली सरकार ने वहाँ की जनता पर मुकदमा चलाकर ५० से भी अधिक व्यक्तियो को फासी की सजा दी, जो बाद मे जनता के प्रयत्न से आजीवन-कारावास के रूप मे बदल गई।

लियेजाते हुए बेगुनाह पैदल तथा साइकिल पर सवार व्यक्तियों के भी उसका शिकार बनाया। इसने छोटे छोटे बच्चों को खदेड़ खदेड़ कर उनका पीछा किया और उन्हे लाठी से घायल किया यह स्मरणीय घटना कि है इसी उपद्रव मे एक स्कूल के बच्चे को जिसकी आयु कठिनाई से १२ वर्ष होगी, गिरफ्तार करके उसे फांसी पर लटका दिया। उसका नाम हेमू कलानी था। हेमू कलानी पर पुलिस अफसर की हत्या करने का अभियोग लगाया गया था। इसके अतिरिक्त पुलिस द्वारा व्यभिचार तथा बेंत लगाने की अनेक घटनाये है। एक पुलिस वाला तो एक व्यक्ति की छाती पर बैठ गया।

करांची मे नौकरशाही के इन नमक हलालो का नग्न नृत्य यह दिखाने को पर्याप्त था कि गुलाम देश की पुलिस कितनी नीच प्रवृति की होती है। गुलामी की भावना मनुष्य को कहां तक पतित कर सकती है ?"

भारत की राजधानी में

पोस्टरों और दूसरे साधनों से दिल्ली के लोगों को गान्धी जी तथा कांग्रेस नेताओं की गिरफ्तारियो की सूचना दी गई। १० बजे प्रात:काल तक समस्त शहर मे पूर्ण हड़ताल होगई। तीसरे पहर घंटाघर से एक विराट जुलूस रवाना हुआ और गली-गली कूंचे-कूंचे में घूमता हुआ शाम को ६ बजे के लगभग गान्धी मैदान मे पहुचा। जुलूस और जलसे मे लगभग ५० हज़ार जनता के सम्मिलित होने का अनुमान किया जाता है।

विद्रोह का रूप

१० अगस्त को सवेरे से ही लोग घंटाघर पर एकत्रित होने शुरू हुए। यह जन समूह नई दिल्ली को कूच करने की तैयारी मे था कि इतने मे पुलिस और फौज के दस्ते अजमेरी गेट पर तैनात किये गए और सड़क को फौजी लारियों से रोक लिया गया। परन्तु लोग जैसे तैसे अजमेरी गेट से निकल गए और नई दिल्ली की ओर बढ़ने लगे। पुलिस ने सड़क के साथ साथ कटीले तारो की बाढ़ लगा दी. जलूस नीचे बैठ गया। जलूस का एक भाग इन कटीले तारो की बाढ़ में से निकलकर इम्पीरियल सेक्रेटरियेट की ओर बढ़ता गया। एक पुलिस इन्सपैक्टर ने इसे रोकना चाहा. परन्तु इसका कोई परिणाम न हुआ। नई दिल्ली की अधिकांश दुकानें बन्द [illegible] थी. जो थोड़ी बहुत खुली थी वे भी बन्द करदी गईं। [illegible]

एक विराट सभा हुई, जिसमें एक लाख से अधिक जनता एकत्रित हुई थी।

गोली और लाठी की वर्षा

११ अगस्त को जनता की भीड़ ८ बजे से ही जमा होनी शुरू होगई। इस बार पुलिस ने कई बार भीड़ पर लाठी प्रहार किया। इन लाठी-प्रहारों के बावजूद भी जुलूस कोतवाली की तरफ बढ़ता गया। जुलूस के नेता हकीम खलीलुलरहमान को, जो कि दिल्ली प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य थे, गिरफ्तार कर लिया गया। भीड़ में से एक आदमी ने डिप्टी कमिश्नर मि० ली० बेली पर एक बोतल फेंक कर मारी, जिससे उसकी नाक पर चोट आई, इससे पुलिस को तत्काल गोली चलाने का बहाना मिला तथा फौज ने भी इसमें पूर्ण सहयोग दिया। एक व्यक्ति घटनास्थल पर मारा गया और बहुत से जख्मी हुए। जुलूस भंग कर दिया गया; परन्तु लोगों के उत्साह का दमन नहीं हुआ। जब एक आदमी को टेलीफोन का तार काटते हुए गिरफ्तार किया गया तो लोगों की भीड़ ने उसे छुड़ा लिया। लोग कानून तथा व्यवस्था को भंग करते हुए सब तरफ फैल गए और खुले आम बिजली और फोन के तार काटने लगे। म्युनिसिपल कमेटी ने अपना दफ्तर बन्द करने से इन्कार कर दिया था। एक फौजी लारी को भी जला दिया गया। पुलिस ने एक बार फिर गोली चलाई। लोगों ने इसके जवाब में आग बुझाने का इंजन जला दिया। एक और आग बुझाने के इंजन तथा मोटर लारियों में आग लगा दी गई। नई तथा पुरानी

दिल्ली के टेलीफोन का सम्बन्ध कट गया। गोरी फौज में फतहपुरी की मस्जिद के सामने एक भीड़ पर गोली चलाई, जिससे २ व्यक्ति मारे गए तथा कई घायल हुए।

पीली कोठी जली

उपद्रव तेजी के साथ अन्य इलाकों मे और विशेषतः पीली कोठी तथा क्वीन्स रोड की ओर फैल गया। पैट्रोल के पम्प जला दिये गए और शहर की सबसे बड़ी इमारत रेलवे क्लीयरिंग अकाउन्टस आफिस (पीली कोठी) को जला कर राख कर दिया गया। एक पुलिस इन्सपैक्टर ने एक व्यक्ति को गोली से उड़ा दिया। लोगों ने जवाब में उस इंस्पैक्टर को ही खत्म कर दिया। इन्कमटैक्स आफिस का भी यही हाल हुआ। पहाड़गंज के निकट की बृटिश बैरको पर हमला करके फौजियो का सामान बाहर फेंक दिया गया. फौजियो ने जान बचाकर भाग जाने मे ही अपना कल्याण समझा। वे पास ही एक हिन्दुस्तानी के बंगले में घुस गये। शाम को ५ और ७ बजे के बीच लगभग १ दरजन स्थानो पर आग लगा दी गई। लोगो का दमन करने के लिए फौज को कई बार गोली चलानी पड़ी। बिजली के सब तार कट जाने के कारण शहर मे अन्धेरा ही अन्धेरा था। अगले दिन सवेरे लोगो ने उठते ही शहर को एक सशस्त्र रण-भूमि के रूप मे बदला हुआ पाया। हर जगह सशस्त्र पुलिस तथा फौज तैनात थी। तीसरे पहर पहाड़गंज के डाकखाने पर लोगो ने हमला किया और उसे जला दिया। पहाड़गंज के इलाके मे गोरो ने भीड़ पर कई बार गोलियां चलाईं तथा बहुत से व्यक्ति हताहत हुए।

१३ अगस्त तक कुल १५० व्यक्ति प्राण गंवा चुके थे
सरकारी संख्या केवल ४४ थी जो जान बूझकर कम प्रकट की
गई थी। इरविन हास्पिटल के अधिकारियों ने गुप्त रूप से
अधिकांश लाशें खत्म करदीं। यहां इस बात का उल्लेख कर
देना भी उचित होगा कि इरविन हस्पताल के अधिकारियों का
इलाज के लिए दाखिल किये गए घायलों के प्रति बहुत बुरा
सलूक था। उदाहरण के रूप में एक घायल व्यक्ति को खून का
इंजैक्शन देने से इस कारण इन्कार किया गया कि विद्रोही इस
इलाज के योग्य नहीं समझे जाते। अब हम उन रिपोर्टों का
सारांश देते हैं जो हमें प्राप्त हुई हैं।

क्लर्कों की हड़ताल

ए० जी० सी० आर० के १२५ क्लर्कों ने त्याग-पत्र दिया
सप्लाई डिपार्टमेंट, अकाउन्टस आफिसर (जो कौंसिल हाउस
में है) के चैक सैक्शन को आंशिक रूप में २८ अगस्त को बन्द कर
दिया गया। दिल्ली क्लाथ मिल के चीफ कैमिस्ट श्री एम० एल०
शाह ने त्याग पत्र दे दिया; उन्हीं के साथ मिल के कई अन्य
प्रमुख कार्य कर्त्ताओं ने भी काम छोड़ दिया। दिल्ली क्लाथ
मिल तथा बिरला मिल में काम नहीं हुआ। दिल्ली के छात्र तथा
छात्राओं ने इस संघर्ष में अत्यन्त उत्साह से भाग लिया
बुलेटिन भी नियमित रूप से जारी किये गए तथा बांटे गए
लड़कियों ने असेम्बली के सदस्यों के मकानों पर धरना दिया
उन्होंने उनके द्वारा आयोजित एक बड़ी पार्टी का मजा किरकिरा
कर दिया. उनके सभी अतिथि चोर दरवाजे से निकल गए

१४ सितम्बर से स्कूलों एवं कालिज के लड़कियों ने
[illegible] ने असेम्बली के दरवाजों पर पिकेटिंग किया

प्रदर्शन कारियों पर पुलिस ने निर्दयता पूर्वक लाठी चार्ज किया; परन्तु वे अपने अपने स्थानो पर डटे रहे। २० पुरुष सत्याग्रही गिरफ्तार कर लिये गए और उनको जबरदस्ती पुलिसलारी में बिठा दिया गया। लड़कियां और महिलाये फर्श पर लेट गईं तथा उन्होंने पुलिस की लारी में बैठने से इन्कार कर दिया।

गधों का जलूस व जेल में लाठी चार्ज

पुरानी दिल्ली मे ११ गधो का एक जुलूस निकाला गया, जो कि वायसराय की कौंसिल के ११ भारतीय सदस्यों के प्रतिनिधि थे, जिनका नेतृत्व 'मैक्सवले' कर रहा था। इस जुलूस में सम्मलित होने वाले कुछ लोग तथा यह ११ गधे पुलिस द्वारा गिरफ्तार करलिये गए। आन्दोलन के पहले पखवाड़े मे अंग्रेजी, हिन्दी तथा उर्दू के बुलेटिन धड़ाधड़ छापे गये और साइक्लो-स्टाइल प्रेस, ने पुलिस तथा सी० आई० डी० को खूब नचा दिया। १५ सितम्बर से ३० सितम्बर तक २०० व्यक्ति बुलेटिन छापने, बांटने एवं पिकेटिंग करने और धारा १४४ तोड़ने के अभियोग मे गिरफ्तार गिये गये। ३० सितम्बर को दिल्ली जेल मे राजनैतिक कैदियो पर लाठी प्रहार किया गया।

फरार घोषित व सम्पत्ति जब्त

दिल्ली स्थानीय कांग्रेस कमेटी के प्रधान मन्त्री श्री जुगल-किशोर खन्ना, श्रीमती अरुणा आसफअली और श्रीकृष्ण नन्दन

स्पेशल आर्डिनेन्स के अन्तर्गत फरार घोषित कर दिए गए और उनकी सब सम्पत्ति जब्त करली गई।

स्टेशन जलाये गये

दिल्ली के निकट बिजवासन और गुड़गांवां स्टेशन के बीच बी० बी० एण्ड सी० आई० रेलवे की मालगाड़ी को पटरी से उतार दिया गया। एन० डब्ल्यू० आर० की दिल्ली करनाल लाइन पर दिल्ली से लगाकर १० मील के फासले पर लोगों ने आधी रात के बाद बादली स्टेशन पर धावा बोल दिया और वहां के सब रिकार्ड जला दिए गए।

११ नवम्बर को चांदनी चौक के रेलवे बुकिंग आफिस के पास बम फटा और एक व्यक्ति गिरफ्तार किया गया। १२ नवम्बर को एन० डब्ल्यू० आर० की रोहतक लाइन पर दिल्ली से १२ मील दूर बेवड़ा स्टेशन पर हमला हुआ और वहां के सब रिकार्ड जला दिए गए। इसी दिन बिरला मिल में भी एक भारी विस्फोट हुआ।

स्वतन्त्र बलिया

ऊपर का शीर्षक सचमुच बलिया की वीरता का द्योतक है। देशपूज्य महात्मा गान्धी के अन्तिम आदेश 'करो या मरो' का अक्षरशः पालन सचमुच बलिया ने ही किया। बलिया वास्तव में 'स्वतन्त्र' शब्द का अधिकारी है; क्योंकि उसने अपनी जनप्रिय सरकार की स्थापना की और शासन-कार्य वीरता पूर्वक संभाला। महात्मा जी व अन्य नेताओं की गिरफ्तारी से बलिया के वीरों का रक्त खौल गया और वे इस चोट को सहन न कर सके।

१० अगस्त को समस्त शहर में व्यापक हड़ताल की गई और ११ को विद्यार्थियों के विराट जुलूस ने वहाँ की कचहरी की इमारत पर धावा बोल दिया। सशस्त्र पुलिस ने वीर तरुणों की इस भीड़ को रोका; परन्तु भीड़ रुकने में न आती थी, वह आगे को बढ़ती चली गई; परिणाम स्वरूप पुलिस ने लाठियां बरसाकर भीड़ को तितर-बितर किया। उसी रात की निस्तब्धता में, जब सभी लोग मीठी नींद ले रहे थे, लगभग ४० लड़के गिरफ्तार कर लिए गए। फिर क्या था, सवेरा होते ही पुन: सारे शहर में व्यापक हड़ताल हुई और हड़ताल को असफल बनाने का सतत प्रयत्न नौकरशाही की ओर से किया गया। आन्दोलन ने क्रान्ति का रूप धारण कर लिया; प्रदर्शन और हड़ताल की जगह जनता कचहरियो, थानो और सरकारी दफ्तरों पर कब्जा करने के लिए प्रयत्नशील हुई। गाँव-गाँव कस्बे-कस्बे में जन समूह ने

पीटा गया; किन्तु वह साहसी वीर अपनी प्रतिज्ञा पर हिमालय की भांति अटल रहा और इन्कलाब का नारा ही लगाता रहा। खेती कस्बे के मुखिया का घर भी देखते-देखते अग्नि में भस्म होगया। कांग्रेस के साथ सहानुभूति रखने वाले व्यक्ति बुरी तरह लूटे गए। महापतित कुल को कलंक लगाने वाले वहां के मुखियाने फौजके लिए ६०००० रु० खेती-निवासियोंसे बल पूर्वक वसूल किया था। अनेक व्यक्तियों ने चन्दा न देने पर उसके जूतोंकी ठोकरें खाई अनेक धनी निर्धन और निर्धन धनी होगए।

हाजीपुर को बर्बरता

जन-क्रान्ति की जो भीषण लहर सारे देश में दौड़ गई थी, उससे बलिया का एक छोटा-सा गांव हाजीपुर भी बचा न रह सका और देश के आह्वान पर इस गाव के नवयुवको ने अपने प्राणों की बाजी लगा दी। फलस्वरूप हाजीपुर सरकारी दमन का शिकार हुआ। जब फौज की टुकड़ियां जिले के विभिन्न स्थानो में अपनी बर्बरता से जन-आन्दोलन को कुचल रही थी, उसी समय एक फौज की टुकड़ी २८ अगस्त को इस गांव में भी आ गई। इस फौज ने गॉव को बुरी तरह से लूटा, फूंका और बहुत सा सामान तोड़ भी डाला। इसके एक सप्ताह बाद ७ सितम्बर को प्रात ४ बजे और १०० या १५० पुलिस के सिपाहियों ने छापा मारा और २५ व्यक्तियो को गिरफ्तार किया इसी प्रकार सामूहिक जुर्माने भी किए गए। इस गांव पर २२००) जुरमाना किया गया जो जबरदस्ती वसूल किया गया। हाजीपुर में सरकारी दमन की बर्बरता का बहुत दिनो तक आतंक रहा।

त्रिवेणी तट पर खून की होली

नेताओं की गिरफ्तारी का समाचार पाकर प्रयाग के विद्यार्थियों ने बड़े-बड़े लम्बे जुलूस निकाले और पुरुषोत्तमदास पार्क व मुहम्मदअली पार्क में विराट सभाये की, ११ अगस्त को फिर यूनिवर्सिटी से एक विराट जुलूस चला और वह भी निश्चित ध्येय तक निर्विघ्न पहुच गया। इसके उपरान्त १२ अगस्त को प्रयाग में जो घटनाये घटी वे अवर्णनीय हैं। यूनियन हाल में टैगोर के 'जय हे, जय हे, भारत भाग्य विधाता' का मधुर गान गाया गया। हाल ठसाठस भरा था, फिर सहस्रों कण्ठों ने एक स्वर में मिलकर झंडे का गीत गाया। जुलूस कचहरी की ओर चला और वह निर्विघ्न वहां पहुच भी गया। लगभग १२ बजे का समय था, पुलिस सामने निशाना साधे खड़ी थी, जुलूस थोड़ा बढ़ा ही था कि पुलिस ने ईंटे बरसाई, अचानक लाठियां बरसीं और फिर लाठी के बाद गोलियों की वर्षा प्रारम्भ होगई। भीड़ भड़क गई और फिर त्रिवेणी के तट पर खून की होली मची। उसी गोलीकाण्ड में कालिज का युवक पद्मधर शहीद हुआ।

यौवन मचल उठा

इधर गोली का चलना था कि विद्यार्थियो का यौवन मचल उठा। खूब ही दिल खोल कर कार्य किया छात्रों ने।

पुलिस ने नादिरशाही मचा दी थी। निहत्थी जनता पर बच्चों और अबलाओं पर खूब लाठी तथा गोलियां बरसाई गईं। १३ तथा १४ अगस्त को समस्त शहर में करफ्यू आर्डर लग गया और सशस्त्र सैनिकों से भरी हुई लारियां सड़कों पर गश्त लगाने लगीं। इतने नियन्त्रण पर भी जनता ने अपना कार्य जारी रखा। पुलिस ने आन्दोलन के उत्साह को दबाने के लिए अनेक नृशंसता पूर्ण हत्यायें कीं। पुलिस ने पुल पर से आते जाते कई निर्दोष व्यक्तियों को गोली का निशाना बनाया। गान्धी टोपी की रक्षा के लिए एक नवयुवक दशरथलाल जायसवाल को गोली से उड़ा दिया गया।

गोरखपुर और आजमगढ़

अगस्त-क्रान्ति मे गोरखपुर और आजमगढ़ की भी प्रमुख देन है। गोरखपुरके सारे कांग्रेस-कार्यकर्त्ता ९,१० तथा ११ अगस्त को गिरफ्तार कर लिये गए थे। गोरखपुर जिले की बांसगांव तहसील में इस समाचार के पहुचते ही प्रलयंकर तूफान उमड़ आया। जनता ने अपनी नाराजगी का इजहार किया। एक विराट जुलूस ने थाने और पोस्ट-आफिस पर तिरंगा झंडा फहराया। फलस्वरूप फौज की टुकड़ी, तथा पुलिस ने मनमाने अत्याचार किए और परसा गांव तथा अन्य गांवों मे आग लगा दी। साथ ही कई गांवों में पुलिस के दल ने लूट-मार भी मचाई। मरची, बथुवा, खोयापार आदि गांवों में यही अवस्था हुई। खोयापार गांव के हिन्दी साहित्य विद्यालय की इमारत पर पुलिस ने हमला बोलकर उसमे आग लगा दी। श्री रामलखन पाडेय व केदारनाथ पांडेय का घर लूट लिया गया। कोहड़ी के लाल श्री नारायणचंद के घर मे से पुलिस वाले ३५०००) की सम्पत्ति ले गए। इसके अतिरिक्त गोला, गोमापुर, ककरही और पंडोली नामक स्थानों पर भी हमला किया गया।

यहीं तक अन्त नहीं

नौकरशाही के अत्याचारों का अन्त यहीं तक नहीं था। मकान जलाने के बाद उसके मालिक को जेल मे भेज दिया गया मदरिया के श्री राम अलखसिंह के घर को पुलिस ने जलाकर

ास्म कर दिया। इसके अतिरिक्त १०००) का सामूहिक जुर्माना ादरियाके समीपवर्ती गांवों पर किया श्रीराम अलखसिंहको ५०) जुर्माना और १०-१० बेंतकी सजा भी दी गई। इसके अतिरिक्त उरुवा के बाजार के समीपवर्ती ग्रामों में थानेदार ने जो अमानवी कृत्य किए वे उल्लेखनीय हैं। वहांके प्रतिष्ठित लोगोको पकड़-पकड़ कर जबरदस्ती जुर्माने वसूल किये गए। न देने की अवस्था मे उन्हें बुरी तरह पीटा गया। साथ ही ४२०२ रु० कमदवाल के गांव से वसूल किये गए। खोयापार, सिसई व भाटपार माला-वारी नामक स्थानों से भी क्रमशः ११५०, ५००० जुरमाने मे वसूल किए और लाखों रुपयों की क्षति पहुचाई। जनता इस व्यवहार के बावजूद भी पूर्ण अहिंसक रही।

आजमगढ़

आजमगढ़ में भी अन्य जिलों की भांति कांग्रेस कमेटी के दफ्तर पर पुलिस ने अधिकार कर लिया और प्रमुख कांग्रेस कार्यकर्त्ताओं को गिरफ्तार करके उन्हे अनेक यातनाये दी गई। जनता अपने नेताओं की गिरफ्तारी से उत्तेजित होगई और उसने दोहरीघाट से लेकर मऊ और मऊ से शाहगंज तक रेलवे लाइने बिल्कुल बेकार कर दी। बीसो डाकखानो को जनता ने लूट लिया। वहां की एक उल्लेखनीय घटना 'रानपुर की कोठी' पर कब्जा करने की है।

थानों पर आक्रमण

मधुवन थाने पर कब्जा करने को [illegible] भीड़ की संख्या लगभग ६०-६५ हजार थी। थाने पर [illegible]

जनता पहुंची तो उसकी खबर अधिकारियों को मिल गई। भीड़ के बढ़ते ही गोली चलने लगी। जनता ने गोली की कोई परवाह न की और बढ़ती ही गई। ३४ व्यक्ति तुरन्त वीरगति को प्राप्त होगये और अनेक घायल होगये। गोली से इतने व्यक्ति जख्मी हुए थे कि ४२ व्यक्ति एक सप्ताह के भीतर-भीतर मर गए। इसके अतिरिक्त मह तरवा, महाराजगंज व कासा थानों में भी यही स्थिती हुई जब पुलिस से जनता का जोश न दब सका तो गोरा फौज बुलाई गई और उसने वहां लंकाकाण्ड मचा दिया।

जनता दमन से भी न दबी

पुलिस और फौज ने जब जनता को आतंकित कर दिया तो पुलिस ने समझा कि जनता का जोश ठंडा होगया किन्तु वह कब मानने वाली थी। नवम्बर ४२ में एकाएक जनता ने रात को खुरहट स्टेशन पर हमला बोल दिया और पूर्ण अधिकार कर लिया।

स्मरणीय घटना

आमगढ़ के अमिला नामक स्थान में श्री अलारराम शाह की भावज ने जो वीरता दिखाई वह, अभूतपूर्व घटना है जब सेना उनके मकान को फूंकने के लिये पहुची तो वे मकान से जलाने के लिये निकाले गये सामान पर बैठ गई और उन्होंने दृढ़ता पूर्वक कहा—"पहले मुझे फूंको, पीछे सामान फूंकना उनकी इस निर्भीकता से गोरों की सामान फूंकने की हिम्मत नहीं हुई और वे बिना सामान जलाये ही वापिस चले गए।

अपार क्षति

आजमगढ़ जिले की इस संग्राम में अपार क्षति हुई। २०५ मकान फूंके गये, ३ लाख ५२ हजार रुपये की लूटने और फूकने से हानि हुई, १ लाख ६० हजार रुपये जुरमाना हुआ। २०७ व्यक्ति मरे, घायलों की संख्या असंख्य है। ३८० व्यक्तियों पर मुकद्दमा चला, जिनमे से २३१ को ६ मास से लेकर काले पानी तक की सजायें दी गई।

विश्वनाथ पुरी में

९ अगस्त को विश्वनाथपुरी काशी में नेताओं की गिरफ्तारी का समाचार पहुचते ही, सारा नगर विक्षुब्ध हो उठा, समस्त शहर में हड़ताल होगई। शाम को काशी विश्वविद्यालय के छात्रों का जुलूस वहां से चलकर दशाश्वमेघ घाट आया और वहां से कांग्रेस के अन्य कार्यकर्त्ताओं के साथ नारे लगाता हुआ टाउनहाल पहुचा। वहां पर विश्व विद्यालय के प्रोफेसर डा० के० एन० गैरोला की अध्यक्षता में एक सार्वजनिक सभा हुई। सभा में ८ अगस्त वाला प्रस्ताव दुहराया गया और उसी के अनुकूल भावी आन्दोलन का कार्य-क्रम तैयार किया गया।

लाठी-चार्ज

फौजदारी अदालत के अहाते मे १० अगस्त को जब जुलूस पहुचा तो पुलिस ने उसे लौटने का कहा। किन्तु पूर्ण अहिंसावादी वीरों ने लौटने से इन्कार कर दिया। फलस्वरूप लाठी चार्ज किया गया। इससे जनता उत्तेजित हो उठी और उसने इस लाठी चार्ज को चुनौती के रूप मे स्वीकार किया। परिणाम स्वरूप दूसरे दिन विश्वविद्यालय के छात्रो ने फिर जुलूस निकाला व अदालत की ओर चल दिया। जुलूस में लगभग दस हजार जन समूह इकट्ठा चल रहा था। जुलूस ने निर्भीक रूप से जाकर दीवानी और फौजदारी अदालत की दोनों इमारतो पर तिरंगा झंडा फहराया। १२ अगस्त को फिर

पुलिस ने लाठी और गोली चलाई, जिससे अनेकों घायल व धराशायी हुए।

दशाश्वमेध कांड

१३ अगस्त को पहले दिन के गोलीकांड में घायल व मृत वीरों को बधाई देने के लिए टाउनहाल में एक सार्वजनिक सभा करने का निश्चय किया गया और दशाश्वमेध घाट से एक विराट जुलूस चला। जुलूस बढ़ा ही था कि पुलिस आ धमकी। पहले तो लाठी-चार्ज हुआ और बाद मे गोलियां चली। २६ राउंड गोलियों के चलने से धड़ाधड़ लाशे बिछने लगी। पुलिस की निर्दयता से कार्यकर्त्ताओं का उत्साह और भी बढ़ गया तथा वे शहर से गांव की ओर चल पड़े जनता ने जिले के प्रायः सभी स्टेशन लूटे, जलाये और बर्बाद किए। इसके बाद गावों मे भी नौकरशाही का दमन-चक्र चला। चोलापुर, धानापुर आदि स्थानों मे केवल झंडा लगानेके अपराध मे ही दमन किया गया। ऐसा दमन कि जिसे देखकर पशुता भी कांप उठे।

बच्चे की निर्दय हत्या

बनारस जिले के एक गांव पर पुलिस को विद्रोह तथा तोड़-फोड़ में भाग लेने का सन्देह हुआ, उस गांव पर सामूहिक जुरमाना किया गया। एक दरिद्र किसान के घर पर फौज जुर्माना वसूल करने गई। उस किसान ने जुर्माना अदा करने मे असमर्थता प्रकट की, पुलिस ने इसके उत्तर में उसके छोटे बच्चे को उठाकर उसके मां-बाप की आंखो के सामने उसकी

आग में उलटा लटका दिया। इसके अतिरिक्त पुलिस का
अत्याचार यहां तक बढ़ा कि गांव के गांव अग्नि की भेंट कर
दिये गये, बाजार लूट लिये गये, इससे जनता भी बिगड़ उठी
और उसने खुलकर तोड़-फोड़ की।

२३ स्थानों पर २००२ गोलियां

नौकरशाही के इन अत्याचारों की जांच करने के लिये
जिला कांग्रेस कमेटी ने एक 'अगस्त जांच कमेटी' बनाई थी
इस कमेटी ने पूरे २०० पन्नों की एक रिपोर्ट ५ महीने की जांच
पड़ताल के बाद तैयार की रिपोर्ट के अनुसार २३ जगहों पर
२००२ बार गोली चली जिसमे १८ व्यक्ति मरे और ८५ व्यक्ति
घायल हुये, ७ व्यक्तियों को कोड़े लगाने की सजा दी गई
११७ विद्यार्थियों को जिले से बाहर निकाल दिया गया
४ व्यक्तियों को अपने ही निवास-स्थान पर नजरबन्द रखा
गया। ५६३ व्यक्तियों को ३ महीने की कैद से लगाकर मौत तक
की सजाये दी गईं। २०३ व्यक्ति पुलिस की हिरासत मे रखे
गए और बाद में छोड़ दिये गए। स्त्रियो पर अमानुषिक
अत्याचार किये गए। रिपोर्ट के अनुसार बनारस शहर और
जिले पर २५६८७७) सामूहिक जुर्माना किया गया।

चन्द्रगुप्त का पाटलीपुत्र

आज़ादी के लिए किये गए प्रयत्नों में चन्द्रगुप्त का पाटलीपुत्र सदा से आगे रहा है। ४२ की क्रान्ति मे विहार की महत्त्वपूर्ण देन है। नेताओं की गिरफ्तारी का समाचार पाते ही समस्त प्रान्त मे विद्रोह होगया और जनता क्षुब्ध हो उठी। इस क्रान्ति में लगभग २५० रेलवे स्टेशन बर्बाद किए गए थे. इनमें से १८० सिर्फ बिहार के ही है। विहार प्रान्त मे नौकरशाही ने जिस क्रूरता से मानवता की हत्या की वह अवर्णनीय है। वहां की निरीह जनता के पेटों मे किस प्रकार भाले की नोक घुसेड़ी गई, जिसके परिणाम स्वरूप अंतड़िया वाहर निकल आई। फरारों का पता निकालने के लिए किस प्रकार अनेक यातनायें दी गई, यह सुनकर रोमाच हो आता है। एक कांग्रेस कार्यकर्ता के मुंह में तो एक मेहतर द्वारा पेशाब तक कराया गया।

सेक्रेटरियेट की ओर

११ अगस्त को प्रातःकाल एक विराट जुलूस, जिसमें टना के सभी स्कूलो तथा कालिजो के छात्र थे, गोलघर होता आ सेक्रेटरियेट पर झंडा गाड़ने के लिए चला। पुलिस वहां हले से ही पहुंच चुकी थी। जुलूस के आने की प्रतीक्षा [illegible] धीरता पूर्वक कर रही थी। एक ओर सशस्त्र पुलिस [illegible] ौज की टुकड़ियां राइफल और बन्दूक के निशाने लगाये खड़ी ीं और दूसरी ओर आजादी का मतवाला [illegible]

सेक्रेटरियेट के गुम्बद को निहार रहा था। पुलिस अफसर ने प्रश्न किया कि तुम क्या चाहते हो? प्रश्न को सुनते ही जुलूस से ११ छात्र निकलकर आगे आगए और छाती फुलाकर कहा— "हम लोग सेक्रेटरियेट पर झंडा फहराकर लौटेंगे!" इस पर पुलिस अफसर ने बिगड़ कर कहा—"झंडा फहराने से पहले सीना खोल लो।" तत्क्षण एक छात्र आगे बढ़ आया और पुलिस अफसर के सामने खड़ा होगया।

गोली निहत्थों पर चली

तुरन्त ही पुलिस अफसर ने उस निहत्थे युवक समुदाय पर गोली चलाने की आज्ञा दे दी। गोलियों और छर्रों की बौछार के बीच भी वे तरुण डटे रहे। इतने में गुम्बद पर एक दुबला पतला नौजवान छात्र 'वन्देमातरम्' और 'भारत छोड़ो' के नारे लगाता दिखाई दिया। सबने आश्चर्य से देखा—तिरंगा झंडा इमारत पर फहरा रहा था। पुलिस की गोली से ११ युवक शहीद हुए; जिनके यश का विस्तार वह झंडा हवा में फहराकर कर रहा था। ११ अगस्त की यह घटना सदा के लिए अमर होगई। इस गोली कांड से सारी जनता में हलचल मच गई।

ज्वाला सारे बिहार में

१२ अगस्त को इन शहीदों को श्रद्धांजली समर्पित करने के लिये एक सार्वजनिक सभा होरही थी। तभी भारत मंत्री श्री एमरी का विषैला भाषण ब्राडकास्ट हुआ था। उनके भाषण में रेल की पटरी उखाड़ना, तार काटना आदि कांग्रेस का कार्य-क्रम बताया गया था। लोगों ने इसे सच माना और शहीदों को श्रद्धांजलि देकर इसी कार्य-क्रम को सर्वथा अपना लिया। शहीदों की चिताओं से उठी यह ज्वाला सारे बिहार में फैल गई।

पटना सिटी स्टेशन का गोदाम जल उठा, पटना भर के लेटरबक्स भड़क उठे और सारे पोस्ट आफिस लूट लिए गए। बिहार के सारे ई० आई० आर० के स्टेशन खाक में मिला दिये गये, फिर तो प्रान्त भर मे दौर दौरा शुरू होगया।

करफ्यू आर्डर

१४ अगस्त को १० हजार टामी नगर मे घुस आये और शहर में करफ्यू आर्डर लगा दिया गया। घोर अनाचार फैला, जो भी शहर में घूमता मिला, इन टोमियों ने उसे ही खूब पीटा। सारा शहर सैनिकों के हवाले था।

पटना के अतिरिक्त बख्तियारपुर, बाढ़, बिक्रम, हिलसा, फुलवारी में पुलिस ने गोली चलाई; जिसमे १७ मरे इनमे अकेले हिलसा में मरने वाले व्यक्तियो की संख्या १२ है। बख्तियारपुर मे एक जुलूस का नेतृत्व करते हुये नाथू गोर को गोली से उड़ा दिया गया। बाढ़ मे ८ व्यक्ति घायल हुए। और एक की मृत्यु हुई। हिलसामे घायल व्यक्तियो की संख्या ३० बताई जाती है। बिक्रम मे दो मरे और ४० घायल हुए। कई स्थानों पर पुलिस की बर्बरता का नंगा नाच देखने को हमें मिला।

विश्वस्त रूप से जो आंकड़े प्राप्त हुए है, उसके अनुसार तीन लाख रुपया सामूहिक जुर्माना वसूल किया गया। लौहनपुर गोली कांड में ३० व्यक्ति तत्काल मृत्यु के मुंह में चले गए और १८१ बुरी तरह घायल हुये। पटना के विभिन्न स्थानों में ४७५ व्यक्ति नजरबन्द किये गए, १३३५ व्यक्तियो को कठिन कारावास भोगना पड़ा और कुल मिला कर १३,३०० व्यक्ति गिरफ्तार किये गए।

शाहाबाद का दमन

१० अगस्त १९४२ को सवेरे से ही आरा में जनता की भीड़ जमा होती जारही थी। कांग्रेस कार्य-कर्ताओं ने छात्रों के सहयोग से एक विराट प्रदर्शन किया। शाम को रमना मैदान में सभा हुई। सभा शुरू होने से पूर्व ही श्री बुद्धनराम वर्मा एम० एल० ए० वहां कैद कर लिये गए। सभा हो ही रही थी कि पुलिस भीड़ को चीरती हुई वहां आ पहुची। एस० डी० ओ० ने भीड़ पर लाठी चलाने की आज्ञा दी, परन्तु पुलिस ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया। शहर से सरकारी रौब उठ गया था। सभी सरकारी इमारतों पर तिरंगे झंडे लहरा रहे थे। गोरा पुलिस ने आकर गोली चलाई और फलस्वरूप १५ व्यक्ति मारे गये और कई घायल हुये।

देहातों में दमन

घनडीहा, कसाय, जितौरा संझौला आदि अनेक गांवों के लोगों को पुलिस ने बुरी तरह पीटा। बलीगांव और लासाडी के ग्रामीणों पर किये गये अत्याचार से तो शायद दानवता भी लज्जित हो जाती। बलीगांव मे बीसों किसानों को मारते-मारते जमीन पर सुला दिया गया। वहां के नौजवान छात्र श्री नन्दगोपालसिंह को इस तरह पीटा गया कि अब भी उसके बदन पर चोट के चिन्ह विद्यमान है। लासाड़ी के किसानों पर गोलियों की वर्षा की गई, जिससे १२ व्यक्ति मरे और अनेक

घायल हुये। मृत व्यक्तियों में एक स्त्री भी थी। नवाडेरा के निवासियों को तबाह और बर्बाद कर दिया गया। इसके अतिरिक्त अनेक गांवों में घोर दमन किया गया।

१७ थानों पर कब्जा

इन सरकारी अत्याचारों के कारण आन्दोलन जोर पकड़ गया था। फलस्वरूप १७ थानों से पुलिस और थानेदार भाग गये और जनता ने उनपर कब्जा कर लिया। पुलिस के हट जाने के बाद कही भी चोरी या डकैती नही हुई। एक के बाद एक एक थाने पर जनता का कब्जा होते देख कर असिस्टेंट पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट का दिल दहल उठा। वह खुद ही आतंकित हो गया। डुमरांव थाने में वहां की इमारत पर कब्जा करते हुए कपिलमुनि तथा रामदास लुहार और गोपालराम नामक युवक पुलिस की गोली के शिकार हुए।

७५ व्यक्ति शहीद हुए

शाहाबाद ज़िले में कुल मिलाकर ७५ व्यक्तियो की मृत्यु हुई; हजारों व्यक्ति घायल हुए, लगभग २००० व्यक्ति गिरफ्तार हुए, ५ को फांसी की सजा हुई और दर्जनो नवयुवकों को बेतों की सजा भुगतनी पड़ी। सारे जिले से लगभग ८०००० जुर्माने में वसूल किये गए।

शाहाबाद मे गोलियों का शिकार केवल पुरुषों को ही नहीं प्रत्युत स्त्रियों को भी होना पड़ा। कोचनटामे एक बूढ़ी औरत को रास्ते में लूट लिया गया। सहसराम मे मशीनगन से एक स्त्री की मृत्यु हुई तथा फकराबाद में एक बालक को पुलिस की गोली का शिकार होना पड़ा।

सारे बिहार में क्रान्ति की लहर

मुंगेर में आन्दोलन ने कितना उग्र रूप धारण कर लिया था, इसका अनुमान इसी से हो सकता है कि वहां सरकार ने हवाई जहाज से गोलियां बरसवाई। फलस्वरूप ४६ व्यक्ति मारे गए और ३५ व्यक्ति बुरी तरह जख्मी हुए। साधारण रूप से घायल होजाने वालों की संख्या तो असंख्य थी। इसके सिवाय इस जिले मे १६ जगहो पर गोलियां चलीं, जिनमें ४० व्यक्ति मरे और प्रायः दुगुने घायल हुए। कोचाही के पुल पर एक राह चलते व्यक्ति को गोली मार दी गई। इस जिले में ५४ आदमी नजरबन्द आर ६२७ व्यक्ति गिरफ्तार किये गए; जिनमे ३८८ को सजा हुई। सारे जिले पर १६७७००) सामूहिक जुर्माना किया गया। बटियारपुर मे समूह के एक-एक व्यक्ति को गोली का निशाना बनाया गया। ६० गैर सैनिकों ने जनता को पीट-पीट कर घायल किया।

गया में

प्राप्त आँकड़ों के अनुसार आन्दोलन के सिलसिले में ५६ व्यक्ति नजरबन्द किये गए। ७८६ व्यक्तियों को विभिन्न मियादो की कड़ी सजायें दी गई। इस जिले के भिन्न-भिन्न स्थानो में कुल मिलाकर १०३५ व्यक्ति गिरफ्तार किये गए। पुलिस आर जनता मे जो मुठभेड़ हुई, उसमे तीन आदमी गोली से मारे गए। सरकारी दमन से ग्यारह आदमी हताहत

हुए। जिले के विभिन्न स्थानों से ३ लाख ५३ हजार ३ सौ रुपया सामूहिक जुर्माने के रूप में वसूल किया गया।

हज़ारी बाग

हज़ारी बाग जिले ने सर्वांश में यह प्रमाणित कर दिया कि समय आने पर देश के कोने कोने से, आज़ादी की आकांक्षा रखने वाली असंख्य जनता, मातृभूमि के उद्धार के लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर देने के लिए तैयार है। हजारी बाग जिले मे जो भीषण दमन हुआ उसका स्वतन्त्र भारत के इतिहास में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान होगा। वहां के विभिन्न स्थानों मे ३२८ व्यक्ति नजरबन्द किये गए। कुल मिलाकर ७००१ व्यक्तियो को कारावास की सजा हुई। सारे जिले मे १३३१०० व्यक्तियो की गिरफ्तारी हुई। जिले के जिन स्थानो में गोलियां चलाई गई, उनमें डोमचांच तथा कोडरमा आदि विशेष उल्लेखनीय है। सारे जिले में कुल मिलाकर १७७२०००) जुर्माना किया गया। पुलिस और जनता की भिड़न्त मे ८८ व्यक्ति गोली के शिकार हुए। संघर्ष और पुलिस के दमन के फलस्वरूप ६६६ व्यक्ति शहीद हुए।

पलामू

पलामू जिले में इस संघर्ष के सिलसिले में ८ व्यक्ति नजरबन्द किये गए, लगभग ३०० व्यक्तियो को विभिन्न सजाएं दी गई और कुल मिलाकर १२८६ व्यक्तियो को [illegible] [illegible] पहुंचा। इस जिले से ३४००) सामूहिक जुर्माना वसूल किया गया। इनके

अतिरिक्त रांची में भी भारी दमन हुआ, यहां पर १२ व्यक्तियों को नजरबन्द किया गया ३१३ व्यक्तियों को सजा हुई और ३६४ व्यक्ति गिरफ्तार किये गए। मानभूमि और सिंह भूमि जिलों में क्रमशः ३४३४०) और २१३४) जुर्माना वसूल किया गया।

भागलपुर का सियाराम दल

भागलपुर में आन्दोलन अत्यन्त भीषण रूप में रहा, वहां पर २१८ व्यक्ति गोलियां खाकर शहीद हुए, २८० बुरी तरह घायल हुए। वहाँ के पीरपैंती नामक स्थान में गोली चलने से ३७ व्यक्ति मरे और ३२ घायल हुए। सुलतानगंज में मृतकों की संख्या ३७ और घायलों की १५० थी। वहां की जेल में भी भीषण दमन हुआ। फल स्वरूप गोलियों की वर्षा से १२५ कैदी शहीद हुए। दमन के सिलसिले में लगभग एक हजार घर जलाकर खाक कर दिये गए; १०४ व्यक्ति नजरबन्द किये गए। ५००० के लगभग गिरफ्तारियाँ हुई, जिनमें १००० व्यक्तियो को सजा हुई। जिले पर २१८४८०) सामूहिक जुर्माना हुआ।

यहाँ की उल्लेखनीय घटना 'सियाराम दल' है। यह एक क्रान्तिकारी दल था, जिसके कारण आन्दोलन सफल हुआ। सरकार लाख प्रयत्न करने पर भी इस दल का सुराग न खोज सकी। इस सम्बन्ध में सरकार ने अनेक अत्याचार किए। ७० वर्ष और ६० वर्ष के बूढ़े तक गिरफ्तार किये गए। राह चलते मुसाफिरो पर मार पड़ी।

सिवान गोली कांड

सारन जिले मे पुलिस ने सिवान, महाराजगंज, सोनपुर कड़राड़ा, अमनौर, नरेश्वर, छपरा दिघवारा और मैरवां में खूब खुलकर गोली चलाई, जिसके परिणाम स्वरूप ५१७ व्यक्ति मरे। घायलो की संख्या अभी तक मालूम नही होसकी। बिहार के मंत्री श्री जगलाल चौधरी के २ वर्ष के बालक की नृशंसतापूर्ण हत्या भी इसी भूमि मे हुई थी। सिवान गोली-काण्ड के सिलसिले मे अमर शहीद फुलेनाप्रसाद श्री वास्तव का नाम नही भुलाया जासकता। वह और पुलिस का सामना करता हुआ पूर्ण अहिंसक योद्धा की तरह शहीद हुआ। इस जिले मे ५५ व्यक्ति नजरबन्द किये गये। लगभग २००० व्यक्ति गिरफ्तार किये गये थे, जिनमें ७१२ को सजा हुई, जिले पर (२५०००) जुर्माना हुआ। सिवान सबडिवीजन के तेवाहा नामक एक गांव को बिल्कुल ही तहस-नहस कर दिया गया।

मुजफ्फरपुर, दरभंगा और चम्पारन मे भी अनेक अमानुषिक अत्याचार पुलिस द्वारा किए गये। ताण्डव ना नृत्य वहा हुआ। मुजफ्फरपुर मे १२ स्थानो मे पुलिस ने गोलिया चलाई, जिसके परिणाम स्वरूप ५० व्यक्ति मरे और लगभग ०० घायल हुए, ६० व्यक्ति नजरबन्द किए गए और १००० के लगभग गिरफ्तार किए गये, जिनमे से ३०० को सजा हुई २१२१॥)॥ रु० जुर्माना हुआ। दरभंगा जिले पर ५२२३०० सामूहिक जुर्माना किया गया तथा, १८ व्यक्ति नजरबन्द किए गए। २०० व्यक्ति गिरफ्तार हुये, जिनमे से २०० को सजा हुई

बापू का चम्पारन भी

बापू का प्रथम सत्याग्रह स्थान होने से चम्पारन का स्थान अगस्त क्रान्ति में भी प्रमुख रहा। यहां पर पुलिस के दमन स्वरूप २२ व्यक्ति मरे और ५५ घायल हुये। इसमे १०० गांवों में पुलिस ने खूब लूट मचाई थी। १०३३५०) सामूहिक जुर्माना किया गया, १७ व्यक्ति नजरबन्द और २००८ व्यक्ति गिरफ्तार किये गए, जिनमें ७०० को सजा दी गई।

पटना कैम्प जेल की हृदय-विदारक घटनायें

बिहार की पटना कैंप जेल ने इस आन्दोलन में अनेक हँसती हुई जवानियों को अपनी गाल में दबोच लिया। उस जेल के अधिकारियों के अत्याचार व वातावरण का मार्मिक वर्णन बिहार के प्रसिद्ध राष्ट्रकर्मी श्री रामकृष्णसिंह 'सारथी' ने उक्त शीर्षक से निम्न प्रकार किया है:—

पटना कैम्प जेल मे जितने भी वार्ड है, उन सबों मे—हवा के लिये कहीं भी खिड़कियाँ नहीं है, जंगली जानवर भी अकसर 'हवादार' पिंजड़े मे ही बन्द कर रखे जाते है. लेकिन यहा तो एक छोटे से वार्ड मे एक सौ तक बन्दी लाठी के बल पर बन्द कर दिये जाते थे। लाख विरोध करने पर भी कहीं उनकी सुनवाई नहीं होती थी। जिस वार्ड में मुश्किल से 'बी' और 'ए' श्रेणी के वन्दी बीस की संख्या में रह सकते हैं, उसमे एक सौ अभागे को बन्द कर देना एक अनोखी घटना है। लोगों को 'लाठी' के बल पर ही बन्द किया जाता था और सब डर के मारे—बन्द भी हो जाते थे। लाठियों के सामने उन अभागे बंदियों की आत्मा मर गई थी। स्वाभिमान विनष्ट हो चुका था। 'सज्जन' तो थे ही नहीं कि उनके लिये यथेष्ट वार्ड का प्रबन्ध किया जाता। जेठ की चिलचिलाती लू मे उस टीन के बने वार्ड मे लोग बेचैन बने रहते थे। टीन की गर्मी भी अजीब होती है। लोग—इस गर्मी से मुक्ति पाने के लिये 'पीपल' के समीप पड़े रहते थे।

पटना कैम्प जेल में सैकड़ों पीपल के वृक्ष १६३० में इन्हीं अभागे वंदियों के द्वारा लगाये गये हैं। भोजन और जलपान के सम्बन्ध में कुछ लिखना ही अपराध है। वहां की खिचड़ी में तो रोज़-रोज कीड़े दिखलाई पड़ना एक साधारण सी घटना थी। मांसाहारी वंदियों के लिये तो उसे खाने में उतनी कठिनाई नहीं होती होगी; लेकिन, निरामिष भोजन करने वालो के लिये तो एक पहाड़ ही उसे निगलने में मालूम होता होगा। भोजन में कीड़े के अलावे कंकड़ भी भरे रहते थे। वालू के छोटे-छोटे कण तो इस प्रकार मिले होते थे जैसे दाल मे नमक मिल जाता है। मन मसोस कर उसी भोजन को खाना ही पड़ता था। एकाध दिन की बात होती तो लोग किसी प्रकार इसे सहन भी कर सकते थे। यहां तो उसी भोजन पर जेल जीवन निर्भर करता था और अपने स्वास्थ्य को भी बनाये रखना पड़ता था, जल मे पंकज की तरह कोई उससे विलग कैसे हो सकता! भोजन करने के वाद एक समस्या और भी उत्पन्न हो जाती। भोजन करने के पश्चात जब लोग 'होज' पर अपनी-अपनी थाली और जूठे मुंह धोने के लिये जाते तो, वहां प्रतिदिन थालियां वजानी होती। क्योंकि अक्सर लोगों को वारह वजे के वाद ही भोजन करने को दिया जाता और उस काल तक 'हौज' पर नल वन्द हो जाते। इस प्रकार जूठी थालियां और जूठे मुंह एक साथ एक हौज पर सैकड़ों की संख्या में जमा होकर नारे लगाते और जोर-जोर से थालियो को वजाते जिससे जेल कर्मचारी द्रवीभूत होकर पानी दे सके। कभी-कभी इस काण्ड से क्रोधित होकर पगली भी हो जाती और लोगों को वेहतरह लाठियों की मार सहनी पड़ती। कपड़े की सफाई, स्नान और शौच के लिये भी यथेष्ट पानी नहीं

दिया जाता। पानी के अभाव में लोग एक दूसरे पर इस तरह टूट पड़ते जैसे फासिस्टों पर समाजवादियों का आक्रमण हो जाता है। उस समय बीच-बचाव करने की भी किसी को हिम्मत नहीं हो सकती थी। कपड़े धोने के लिये साबुन तो मिलते परन्तु शरीर में फोड़े, खुजली, दाद इत्यादि चर्म रोग होने पर उसकी सफाई के लिये साबुन किसी को नहीं मिलता। वस्त्र भी काफी नहीं मिल पाते, एक तो 'सी' श्रेणी के बंदियों को योंही बहुत कम कपड़े मिलते हैं और छः महीने के बाद हरेक बन्दी को न्यायतः नये कपड़े प्राप्त करने का कानूनन अधिकार है; फिर भी जेल के प्रधान सुपरिटेंडेंट फूलर साहब और उनके सहायक पोखर साहब लोगों को एक वर्ष तक कपड़े नहीं देते थे। सिर्फ दो पैन्ट, एक फुल पैंट और एक अंगोछी, तथा दो कुर्तों से काम चलाना पड़ता था। जाड़े में और गर्मी में भी वही कपड़े होते थे। कुछ लोगों को कपड़ों की दिक्कत इस तरह की हो गई थी कि उन्हें लाचार होकर नंगे, गूमटी पर प्रदर्शन भी करना पड़ा। इस पर उस व्यक्ति को पीटा गया और तनहाई में डाल दिया गया। तीन महीने पर एक कार्ड वे लिख सकते और एक कार्ड अपने सम्बन्धियों तथा मित्रों के पा सकते और एक बार अपने मुलाकातियों से मिल सकते थे। इसी तरह जो लोग छपरा, चम्पारन, मुजफ्फरपुर, पूर्णिया, भागलपुर, हजारीबाग, रांची, सिंहभूमि और मानभूम से कष्ट से मार्ग-व्यय लेकर अपने-अपने भाइयों से, पुत्रों से और मित्रों से मिलने आते थे, उन्हें भी बहुत तकलीफ होती। कभी-कभी छः महीने के लिये कार्ड और मुलाकात स्थगित कर दिया गया है, जिसके परिणाम में दूर-दूर के जिलों से आये हुए गरीबों को मुक्त की [illegible]

उठानी पड़ी है। इस तरह 'सी' श्रेणी के राजनैतिक बंदियों को कंटकाकीर्ण परिस्थिति से संघर्ष करना पड़ता।

लाठी चार्ज

लाठी चार्ज की गाथा भी बहुत ही कारुणिक और दयनीय है। एक तो अहिंसक बंदियों को जङ्गली और बनैले पशुओं की तरह पीटना मानवता के साथ विद्रोह करना है। कोई भी सरकार इस तरह की अमानवीय कार्य आज भी अपने देश के राजबंदियों के साथ नहीं कर सकती और न कर पाती है। फिर पवित्र त्यौहार के अवसर पर तो ऐसा करना और भी घातक एवं पाप है। पटना कैम्प जेल में रविवार को 'लाठी चार्ज' होना नियम सा हो गया था। रविवार को लोग उपवास करते और एक समय जरा स्वाद और स्वास्थ्य को ठीक करने के लिये बिना नमक के भोजन करते और उस दिन का 'हलुवा' कैम्प जेल भर में विख्यात हो चुका है। वार्डरों की गृद्ध दृष्टि उस हलुवे पर जा बैठती थी। 'लाठी-चार्ज' करने से बंदियों को तो भूखा रहना पड़ता और वार्डरों का उसे 'स्वाहा' करने में सरलता और सुगमता हो जाती! इधर 'लाठी' और उधर 'लूट' दोनों एक ही साथ। फिर तीन चार बार तो इतनी निर्दयता के साथ लाठियाँ चली हैं जिसके समकक्ष मानवता बेचारी सिसक-सिसक कर सिर्फ रो भर सकती है। हमारे तो शरीर के रोंगे आज भी खड़े हो उठते हैं। उफ! इतनी निर्दयता के साथ कहीं मानव पर लाठियों की वर्षा हो सकती है! एक बार ननकूसिंह नामक एक बंदी को पटना कैम्प जेल से दूसरी जेल में भेजना

था। बहुत दिनों तक पटना कैम्प जेल में रहने के कारण उन्होंने पटना कैम्प जेल को छोड़ना उचित नहीं समझा। इसलिये उन्हें वल-पूर्वक अतिरिक्त सशस्त्र पुलिस बुलाकर पटना कैम्प जेल छोड़ने को बाध्य किया गया और उस दिन इतनी लाठी चली कि लोग उस अमानुषिक बर्ताव से खीजकर गोलियों से मरना अधिक श्रेयस्कर समझने लगे। हजारों की संख्या में दौड़े दौड़े लोग फाटक की ओर चल पड़े, और अपनी-अपनी छाती खोल दी। उस दिन उस अत्याचार के प्रतिरोध मे लोगों ने भोजन करना भी पाप समझा। दोबारा २६ जनवरी १९४३ को लाठियों की वर्षा हुई, जिसमें हिन्दी विद्यापीठ के सम्मानित अध्यापक पं० पंचाननजी मिश्र बुरी तरह पीटे गये। रात्रि मे वार्ड में घुसकर बंदियों पर लाठियाँ चली है, होली के अवसर भी इसी तरह की लाठियाँ चली है जिनका शिकार इन पंक्तियों के लेखक को भी होना पड़ा। अगर उस दिन 'दैनिक' आज के सहकारी सम्पादक के पास नही आगये होते तो हमारे तो प्राण ही निकल जाते। करीब-करीब उस रात्रि मे दो सौ व्यक्ति पीटे गये और एक बार, जब खाने में लोगो को चावल चार छटांक दिया जाने लगा तो लोगों ने उसका एक स्वर से विरोध किया और कहा कि इतने कम चावल मे हम लोगो का पूरा भोजन नहीं हो सकेगा। इसके लिये भी लाठी चली। उस दिन भी लोगो को इतना पीटा गया कि कसाई भी किसी पशु को इस बेरहमी के साथ नहीं पीट सकता।

बेंत और जूतों का प्रहार

ऐसी भी घटनाएं हुई है जिनमें [illegible] [illegible] को और उनके अंग रक्षक को बेतों और जूतो का प्रहार [illegible] [illegible] है।

पटना कैम्प जेल में जब जेल के अधिकारी से कुछ कहना होता था तब उसके लिये 'सप्ताह' में एक बार 'फांइल' लगाया जाता था जिसमें बंदियों को जेल अधिकारी की प्रतिष्ठा के उद्देश्य से उठकर खड़ा हो जाना पड़ता था। नई दुनिया के दूसरे और चौथे वार्ड में जब फुलर साहब पहुचे तो दो नम्बर के बच्चो ने खड़े होकर उनका सम्मान नहीं किया। फलत: फुलर साहब का पारा गर्म हो उठा और स्वयं उन्होने मासूम और सुकुमार बच्चों को बुरी तरह से बेतों से पीटा। चार नम्बर मे तो हमारा ही वार्ड था जिसमे श्री अवध बिहारीसिंह को इतना पीटा गया कि उनका शरीर छलनी हो गया जिससे खून की अजस्र धारा प्रवाहित होने लगी और फुलर साहब के अङ्ग रक्षकों ने चन्देश्वर नामक युवक को जूतों से पीटा। वह युवक हँसता रहा और वार्डर उसे पीटते रहे! हमारी इच्छा हुई कि.....! किन्तु, फुलर साहब की बेत पीठ पर! रमण बाबू को भी बेंत या लाठी से बहुत पीटा गया। लातों और तमाचो का प्रयोग तो एक साधारण सी घटना थी। आज अगर उन रोमांचकारी और हृदय विदारक घटनाओं की जॉच की जाय तो इसकी सत्यता आंकी जा सकती है। अगर इसमे थोड़ा भी असत्य का अंश मालूम पड़े तो मुझ पर मुकदमा चलाया जा सकता है और मुझे उचित सजा दी जा सकती है। हमारा दावा है कि इस तरह के पैशाचिक कुकर्म सिर्फ सी श्रेणी के वन्दियो के साथ किया जाता है। क्यों नहीं आज कॉंग्रेसी सरकार ए० बी० और सी० श्रेणी का भेद उठा देती।

हाथ पांव बांधना

कुछ वन्दियों को मैंने यह भी देखा जिनके पांवो को

पशु की तरह लोहे के छड़ों से बांध दिया गया था जिस से चलने में, कपड़ा बदलने में, सोने के समय करवटें बदलने में असीम पीड़ा होती थी। बहुत कष्ट होता था। एक मोटे सन्यासी को जेल कर्मचारियों की निन्दा करने के कारण दो सप्ताह तक तनहाई में पांव को लोहे के छड़ से बाँधकर छोड़ दिया गया था। पचासों बन्दियों के साथ ऐसा कुकर्म किया गया है।

काम करने पर ही किसी को अधिक भोजन मिलता था। जिन्हें पूरा भोजन करने को नहीं मिलता था, उन सबों ने पेट भरने के लिये "मड़कंका घाट" का निर्माण कर लिया था, जहाँ जाकर लोग सिर्फ माड पीते थे। गजाधर नामक किसान नेता ने प्रतिदिन अपने वार्ड के लिये दो बाल्टी मांड सुरक्षित रखना धर्म मान लिया था।

आज उन हृदय-विदारक घटनाओं की याद आती है। और अपनी सरकार की भी याद आ रही है। १९३७ के [illegible] अपनी सरकार नहीं थी सरलता के साथ रात्रि में [illegible] बीमार पड़े भाईयों की सेवा शुश्रूषा कर पाते थे। दिन [illegible] कहे, रात्रि में भी वार्ड खुले रहते थे। हर [illegible] बन्दी [illegible] जेल के चारों ओर चल-फिर सकता था। परन्तु १९४२ की [illegible] तो निराली थी। एक सेकशन से दूसरे सेकशन में जाने के लिये 'पासपोर्ट' की आवश्यकता थी—१९३० के [illegible] शिवशंकर सहाय जी (अरधामा, थाना पटना) [illegible] से एक कार्ड मांगने पर वेत से पीटे गये। [illegible] लाठी चार्ज मे वेतरह घायल हुए [illegible] दिनो तक अस्पताल मे पडे रहे।

विहार प्रान्त की पटना कैंप जेल में जैसी हृदय-विदारक घटनाएं गोरी सरकार के संकेत मात्र से घटी है, उनके स्मरण मात्र से प्रतिस्पर्द्धा की भावना से स्वतन्त्रता के मदमाते सैनिकों का खून खौल उठता है। कितने 'यतीन्द्र दास' गोरी सरकार के पाशविक अत्याचार के कारण वनते जा रहे हैं; परन्तु जब कभी हमारी शक्ति कुछ कांग्रेसी सरकार बनने से मजबूत होती है तब हम उस ओर ध्यान नही देते। हम कभी नही सोचते कि हमारे सैनिकों को 'कल' फिर उसी कारागार में रहना है। वार्डरों के साहचर्य में रह कर छोटी सी छोटी वस्तु के लिये चरण चुम्बन करना है। कितने बन्दी तो सरकार के निर्मम अत्याचारो के परिणाम-स्वरूप विगड़ जाते है, जिन्हें हम जेल की भाषा मे 'जुगाड़ी' कहते हैं। 'जुगाड़ी' बन्दी तो सिर्फ 'सी' श्रेणी मे ही पाये जाते हैं, जिन्हे अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिये घृणित से घृणित कर्म करने पड़ते हैं। इन 'जुगाड़ियो' की राम कहानी श्रवण करने से ऐसा ही आभास मालूम पड़ता है कि 'सी' श्रेणी के वन्दियो को सांस्कृतिक जीवन, नैतिक आचार और सौहार्द की हत्या करके ही जुगाड़ी बनना पड़ता है। जहां आज सभ्यता का विकास हो रहा है, मानवता की पूजा हो रही है, सांस्कृतिक जीवन को उठाया जा रहा है, वहाँ जेल मे ऐसी हृदय-विदारक घटनाएँ क्यों घटती है? मानव को पशु बनाना ही क्या यहां की जेलो का उद्देश्य है?

—

सियारामशरन का वर्णन

विहार की जन-जागृति के कर्मठ सूत्रधार तरुण कार्यकर्त्ता श्री सियारामशरण ने अपने फरार जीवन के सम्बन्ध मे पूछे जाने पर बहुत संकोच के साथ जो कुछ बतलाया, वह अत्यन्त महत्त्व पूर्ण हैं। जिस समय श्री सियारामसिंह ने चार वर्षा की कठिनाइयों का वर्णन किया, सभी लोगों की आंखो मे अश्रु विन्दु दिखलाई पड़े। आपने बतलायाः—

"एक ऐसा मौका भी आया था जब हम लोग किसी जगह पुलिस के घेरे में पड़कर ७ दिनो तक पकड़े गये की अवस्था में रहे। एक मौके पर छः छटांक चावल के भात मे १३ साथियों ने गुजर किया। चन्द दिनों तक कद्दू के कोमल पत्तों और डण्टलों को उबाल कर खाना पड़ा। शीत, घाम और हवा वर्षा मे भी हम लोगों ने यात्रा जारी रखी।

ऐसा भी मौका आया कि जब हमे ४७ मील तक पैदल चलना पड़ा। वह भी एक दिन था जब २१ दिनो तक हमे अन्न नहीं दिया गया था, मगर हमारे शरकस साथी ने हमारी हिफाजत की।

मेरी सहधर्मिणी सुश्री सरस्वती ने जिस प्रकार जंगल और पहाड़-पहाड़ भटक कर मेरा साथ दिया वह भी सीताराम की तरह सियाराम की भी एक उदाहरण रखने योग्य कहानी है। एक दिन भी ऐसा नहीं था जबकि सरस्वती ने दुःख वेग से आंख गीली की होगी। अपने लायक पति का सम्मान देख कर हर्षातिरेक मे भी उसके नयन गीले हैं।"

नीलगीरि और तालचर में भी

क्रान्ति की चिनगारी वहाँ के नीलगीरि, धनकानल और तालचर नामक राज्यों में पहुंची और वहाँ पर खूब ही रक्तपात हुआ। इन सभी राज्यों में इतने अत्याचार हुए कि नीलगीरि राज्य की कुछ जनता मयूरभंज नामक रियासत में जाकर रही। नीलगीरि में ७५६०४); धनकानल मे ५००००); नयागढ़ में ८०००) और तालचर मे ६५०००) तक जुरमाना हुआ। जो जबरदस्ती वसूल किया गया। सम्पत्ति की लूट और जब्ती के कारण अनेकों परिवार निराधार होगए थे।

क्रान्तदर्शी बंगाल

मिदनापुर दक्षिण-पूर्वी बंगाल का एक ऐसा जिला है, जिसका भारत के क्रान्तिकारी आन्दोलन के इतिहास मे एक विशिष्ट स्थान है। बंगाल के सभी देश-भक्तों ने समय-समय पर अपने देश की स्वतन्त्रता के लिए दमन के कठोर अग्नि-पथ पर चलकर अपनी देशभक्ति का अनुपम परिचय दिया है। बंगाल सरकार 'अणुबम' से भी अधिक इस जिले से घबराती है। सन् १९४२ की अगस्त-क्रान्ति मे भी यह जिला सबसे आगे रहा। क्रान्ति की लपटों से सारा जिला झुलस गया। बंगाल सरकार का निरंकुश शासन डोल उठा, वह कांप उठी। परिणाम स्वरूप इस जिले मे खूंखारो का राज्य स्थापित होगया। न्याय और व्यवस्था के नाम पर लूट, बलात्कार, खूंरेजी और अन्य पैशाचिक काण्डो का बोल बाला होगया। इस जिले के तामलुक, कोन्ताई आदि सब डिवीजनो मे ऐसे जुल्म अत्याचार हुए जो किसी भी सभ्य कहलाने वाली सरकार को लज्जित करने वाले हैं।

पिछले दिनों देशपूज्य महात्मा गांधी ने बंगाल में एक महीने से भी अधिक तक रहकर सारे प्रान्त का दौरा किया और जनता के दुख दर्द की कहानियाँ सुनी। महात्मा जी मेदिनीपुर जिले मे भी गए और वहाँ के लोगो के दुख दर्द को सुना। '४२ की क्रान्ति के समय मेदिनीपुर जिले के कोन्ताई डिवीजन मे क्या-क्या पैशाचिक कार्य हुए, उन्हें यह सब [illegible]।

कोन्ताई सब डिवीजन मिदनापुर से कोई ५ मील दूर है। सन् १६४२ के अगस्त में जब बम्बई में सब नेता गिरफ्तार कर लिये गए तो कुछ काल तक विद्रोह जैसी कोई चीज वहाँ नहीं हुई। यहाँ शान्ति थी, परन्तु यह शान्ति तूफान आने के पूर्व की शान्ति थी। २६ सितम्बर को सारे सब डिवीजन में एक सा विद्रोह की आग विविध कार्यो के रूप में भड़क उठी। पुलिस थानों, डाकघरों, स्कूलों, सरकारी भवनों मे आग लगाई ग; तार काटे गए और सरकारी यातायात के साधन नष्ट किये गए इस विद्रोह को देखकर सरकारी अधिकारी आपे से बाह होगए। उन्होंने गाँवों में आग लगाने, उन्हें लूटने, स्त्रियों क अपमानित करने, लोगो को तरह-तरह से सताने, उन प गोलियां चलाने की पूरी स्वतन्त्रता दे दी। इस घटना के बाद द वहाँ गोरों का तूफान और बाढ़ का प्रकोप हुआ। जनता को ए साथ सरकार और प्रभृति का कोप-भाजन बनना पड़ा।

८ अगस्त से पूर्व

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के बम्बई वाले अधि-वेशन से पूर्व ६ अगस्त, ४२ को कोन्ताई मे 'कोन्ताई सब डिवीजन' कांग्रेस कमेटी की एक बैठक हुई थी और ७ अगस्त को कांग्रेस-कार्यकर्त्ता विविध स्थानों में घूम-घामकर कांग्रेस-कार्य-समिति के प्रस्तावो के अन्दर व्यक्त किये गए विचारो का प्रचार करने लगे। महात्मा गांधी तथा देश के अन्य नेताओं की गिरफ्तारी का समाचार कार्य-कर्त्ताओ को ज्यों ही मालूम हुआ उसके प्रतिवाद स्वरूप १४ अगस्त को पतासपुर, भगवानपुर तथा खेजुरी थानो में आम हड़ताल मनाई गई।

सभायें तथा जलूस

स्वतन्त्रता की भावना को जाग्रत करने और जनता में उत्साह भरने के उद्देश्य से सब डिवीजन की सभी बस्तियो मे सैंकड़ों सभायें की गई और अनेको जलूस निकाले गए। लगभग ८ हजार व्यक्तियों ने आजादी की लड़ाई के लिए स्वयं सेवकों मे अपने नाम लिखाये और बहुत से थानो को संगठित करने के लिए संग्राम-शिविर खोले गए। कम से कम एक शिविर मे १०० व्यक्ति होते थे। दिन प्रति दिन यह सगठन इतना दृढ़ होता गया कि सब डिवीजन के सभी गाँवो में आन्दोलन की आग फैल गई और सभी उत्साह पूर्वक इसमें भाग लेने लगे। १४ सितम्बर को सब डिवीजन के सभी क्षेत्रो की जनता ने १० हजार की सख्या मे २७ जुलूसों के रूप मे वहां की ८ सड़कों पर नारे लगाते हुए कोन्ताई शहर मे प्रवेश किया। सम्पूर्ण सब डिवीजन मे उत्साह की एक लहर दौड़ गई। अफसरों के बायकाट, चौकीदारों के स्तीफा देने आदि का कार्य क्रम जोरों से चला। स्थान-स्थान पर पिकेटिंग व हड़तालें हुई। जिसके परिणाम स्वरूप २० सितम्बर को पिछवनी मे ११ स्वयं सेवकों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया।

भीषण गोली काण्ड और दमन

इस घटना के उपरान्त संग्राम-शिविर को पुलिस की बर्बरता से बचाने के लिए कोन्ताई शहर से [illegible] [illegible] की सड़क को काट डाला गया। इससे [illegible] [illegible] ओ० और डी० एस-पी० ने हथियार बन्द पुलिस के [illegible]

समस्त समीपवर्ती ग्रामों को घेर लिया और लोगों को जबरदस्ती सड़क ठीक करने को विवश किया। पुलिस की नृशंसता से बचने के लिए कुछ महिलाओं ने अपने-अपने घरों के दरवाजे बन्द कर लिए। पुलिस उनके दरवाजों को भी जबरदस्ती तोड़कर उनके घरों मे घुस गई।

इसी बीच सब-डिवीजन के प्रधान कार्यालय से फौज आई, उससे पूर्व पुलिस थी ही। अपने साथ हथियार बन पुलिस और फौज को देखकर एस०डी०ओ० जनता की ओर बढ़े और लाठी चार्ज शुरु हुआ। निरीह जनता ने भी विवश होकर ईंटें और रोड़े बरसाये। इस पर पुलिस ने ३५ राउन्ड गोलियां चलाईं। पुलिस ने कांग्रेस-भवन को जला दिया और स्वयं सेवक - शिविर पर धावा बोलकर उसे नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। भगवानपुर, एगरा और भापतगढ़ आदि स्थानों में गोलियों से निरीह जनता को खूब भूना गया और सरकार ने ऐसा भीषण दमन-चक्र चलाया, कि वह अभूतपूर्व था। समस्त सब डिवीजन पर सैनिक-शासन होगया और समस्त डिवीजन मे करफ्यू आर्डर लगाकर एक स्थान पर ४ आदमियों के एकत्र होने, लाठी अथवा लोहे का सामान लेकर चलने और धार्मिक कृत्यों के अवसर को छोड़कर शंख बजाने पर भी सर्वथा प्रतिबन्ध लगा दिया।

गिरफ्तारी और नजरबन्दी

इस आन्दोलन के सिलसिले में वहां से लगभग १२६०० व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया और उन्हें नाना प्रकार की

यातनायें दी गई। अनेक प्रभावशाली कार्यकर्त्ता गिरफ्तार कर नजरबन्द कर लिये गए। बहुतों को तरह-तरह के अपराधों मे मुकदमा चलाकर जेलों में ठूंस दिया गया।

घृणित और जघन्य कार्य

जनता के मस्तिष्क में क्रान्ति की जो ज्वाला सुलग रही थी, उसको बुझाने के लिए सरकार ने अपने प्रयत्न जारी रखे। आन्दोलन के समय और उसके बाद भी जनता को अनेक प्रकार से अपमानित किया। ऐसे एक नही अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं, किन्तु एक ही उदाहरण पर्याप्त होगा। खजुरी थाने मे ध्वंसात्मक कार्य समाप्त होजाने के बाद स्पेशल अफसर ने उस इलाके के प्रतिष्ठित व्यक्तियों को बुलाकर चौकीदारी टैक्स देने के लिए कहा और जब वे सब थाने की चारदीवारी मे आगए तो उन्हे सशस्त्र पुलिस ने घेर लिया और उन्हे [illegible] के बल जमीन पर नाक रगड़ते हुए चलने के लिए विवश किया। घूसे तथा कोड़े से पीटने तथा तरह-तरह से चोट पहुँचाने की तो धूम मची थी। स्त्रियों के साथ बलात्कार किया गया। इस जघन्यता की पराकाष्ठा यहाँ तक पहुँच गई थी कि [illegible] दिन के बच्चे की माँ के साथ भी वे बलात्कार करने से न चूके। कई स्त्रियों के इन्कार करने पर उनकी पीठ में छुरा तक घोंप दिया गया।

स्वतन्त्र सत्ता

बहुत दिन तक दमन और आन्दोलन चलने के [illegible] जनता की एक स्वतन्त्र सत्ता स्थापित होगई। [illegible] के योग्य व्यक्ति बहुत दिन तक आन्दोलन चलाते रहे [illegible]

मुँह बोलते आंकड़े

१—गोलियों से मृत्यु	३६
२—गोलियों से घायल	१७५
३—औरतों के साथ बलात्कार या बलात्कार करने की चेष्टा	२२८
४—घर जलाये गये	६६५
५—जलाये हुये घरों की अनुमानतः क्षति	५४१४३४ रु०
६—कैद किये गये	१२६८१
७—सजा दी गई	६७२
८—घर लूटे गये	२०५६
९—लूट से क्षति	३५५२४६ रु०
१०—लाठियों के शिकार	६६८५
११—सामूहिक जुर्माने किये गये	३0000 रु०
१२—स्पेशल कांस्टेबल नियुक्त किये गये	४३८
१३—हिन्दू महिलायें, जिन्हें गुण्डों के हवाले कर दिया गया	१०

आसाम भी क्रान्ति की लपटों में

नेताओं की गिरफ्तारी की खबर पाते ही आसाम के घर-घर में विद्रोह की तैयारी होनी प्रारम्भ होगई। सबसे पूर्व थानों और सरकारी इमारतों की ओर जनता का ध्यान गया। समानान्तर सरकार स्थापित करने की भावना ने इसमे घी का काम किया और थानों तथा सरकारी इमारतों पर धावा बोल दिया गया। किन्तु सभी कार्यकर्त्ता इन आक्रमणों मे पूर्ण अहिंसक रहे, और नौकरशाही ने इसका जवाब किर्चो और गोलियों से दिया। फलस्वरूप कितनी ही अमूल्य जाने नष्ट हुई। एक दम निहत्थी और शान्तपूर्ण जनता द्वारा दराग जिले के ढेकियाजुली, वेहाली, गोहपुर आदि के थानो पर किये गए आक्रमण इतिहास मे अमर रहेगे। प्रायः ऐसा होता था कि मर्द-औरत, लड़के और लड़किया कई-कई मीलो से जुलूस बना कर आते—उनके हाथो मे राष्ट्रीय झंडा रहता और नारे लगाते हुए वे थानो मे घुसने की चेष्टा करते।

पुलिस राज्य

आसाम की पुलिस को इस बार खुलकर खेलने का मौका मिला। जनता को नाना प्रकार की यातनाएं दी गई। [illegible] कांग्रेसी नेताओ के जेल मे चले जाने के कारण पुलिस [illegible] की बन आई और सर मुहम्मद सादुल्ला की [illegible] के अधिकार प्राप्त करने का उन्हे [illegible] मिल गया। [illegible] स्वरूप २४ अगस्त १९४२ को [illegible] मे पुलिस [illegible]

सरकार हो गई और उसने ऐसे-ऐसे अत्याचार किए जो भारतीय इतिहास में काले अक्षरों में लिखे जायेंगे। कनकलता और तुलेश्वरी जैसी नौजवान लड़कियां उसकी स्वेच्छाचारिता के कारण बलिदान हुई। २४ फरवरी सन् १६४३ को जोरहार जेल में भयंकर लाठी चार्ज किया गया, जिसमें लगभग १८० राजबन्दी बुरी तरह घायल हुए।

वीर कन्या कनकलता

२० सितम्बर सन् ४२ की घटना है। जनता गोहपुर नामक थाने की इमारत पर अपना झण्डा फहराना चाहती थी। पुलिस ने भीड़ पर गोली चलाई। एक १३ वर्ष की लड़की तुरन्त वीरता पूर्वक आगे आई और उसने पुलिस को ललकार कर कहा कि 'मै अपना कर्त्तव्य अवश्य पूरा करूंगी। तुम अपना करो।' और कनकलता झण्डा लेकर आगे गई। पुलिस ने निर्दयता पूर्वक गोली चलाई और गोली कनकलता की छाती को वेधती हुई पार हो गई। वह वीरबाला फिर भी न रुकी और बढ़ती ही चली गई। पलक मारते ही दूसरी गोली आई और वह सदा के लिए सो गई। थाने की इमारत पर एक दूसरे नवयुवक ने चढ़कर झण्डा फहरा दिया। पुलिस उस समय भयानक नरमेध करने में लगी हुई थी। ऐसी ही घटनाएं ढेकिया जुली थाने मे भी हुई। कामरूप मे २५ सितम्बर को हुई एक सार्वजनिक सभा में पुलिस ने निहत्थी जनता पर ढट-कर गोली चलाई। मासूम बच्चों और निर्दोष जनता के खून से निरंकुश नौकरशाही ने फाग खेला।

हवाई अड्डों पर हमला

जनता प्रतिशोध की भावना से पागल हो उठी थी। फलस्वरूप उसने मित्रों के हवाई अड्डों पर भी हमले किए। २६ अगस्त १९४२ को कामरूप जिले के सोरभग नामक हवाई अड्डे में हुई दुर्घटना इसी का उदाहरण है। यह आक्रमण जनता ने खुले आम किए। और मिलिटरी के ठेकेदारों के इकट्ठे किये गए सभी सामान जला दिये गए। उस समय यह हवाई अड्डा बन ही रहा था।

वीर तिलक डेका

पुलिस और फौज ने अपनी बर्बरता के कारनामे खूब ही दिखलाए। नवगाव जिले के बरापुजिया गाँव का रहने वाला शान्ति सेना का नायक वीर तिलक डेका अपने गाँव में रात को पहरा देते हुए अन्यायपूर्वक गोली से उड़ा दिया गया। गाँव वालों ने, अपनी रक्षा के लिए जो फौज बना रखी थी उसी का नाम शान्ति सेना था। पहरा देते हुए जब तिलक डेका ने मिलिटरी पुलिस को देखा तो खतरा समझ कर उसने तुरही बजा दी। तुरही का बजाना था कि गोली उनकी खोपड़ी को चूर-चूर करती हुई दूसरी ओर निकल गई। तुरही और गोली की आवाजो ने गाँव वालों को चौकन्ना कर दिया और सब अपने-अपने शस्त्र संभाल कर सामना करने के लिये तैयार हो गए। औरतों ने पुरुषो से आगे आना ठीक समझा। कानून के ठेकेदारो ने फिर गोलियाँ चलाईं और पाँच-छः आदमियों को घायल कर दिया। रोहा और बरहमपुर में भी ऐसी ही घटनाएँ हुईं।

ऊपरी आसाम

आन्दोलन तीव्र होने के पहले ही ऊपरी आसाम के सभी नेता पकड़कर जेलों में ठूस दिये गए थे। जोरहार और शिवसागर सब डिवीजनों में कोर्ट की इमारतों और सरकारी आफिसों के सामने बड़े-बड़े प्रदर्शन हुए, इन जिलों में आन्दोलनों ने नया रूप पकड़ा। और जनता का ध्यान रचनात्मक कार्यों एवं ग्राम पंचायत स्थापित करने की ओर गया। चरीगाँव, हठीगढ़ और टेर्भार नामक स्थानो में स्वाधीन राष्ट्र स्थापित कर लिये गए। इससे नौकरशाही आतंकित हो उठी और लाठी चार्ज और गिरफ्तारियाँ एक आम बात हो गई।

विद्रोही कौशल कुंवर

विद्रोही कौशल कुंवर के उल्लेख के बिना आसाम के आन्दोलन की कथा अधूरी ही रह जायगी। स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर न्योछावर होने के लिये उसने हँसते-हँसते फाँसी का फन्दा चूम लिया। और अन्त में उसके मुख से यही स्वर निकला, "पार करो दीनानाथ संसार-सागर"।

कमला मीरी

मीरी जाति के कमला मीरी का नाम भी आसाम की क्रान्ति में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। भारत की आजादी और अपने सिद्धान्त के लिए उसने अपने प्राण तिल-तिल कर घुला दिये। वह गोलाघाट जिला कांग्रेस कमेटी का एक मेम्बर था। उससे पुलिस ने यह आश्वासन लेना चाहा कि वह ग्राम में

में काम न करेगा। जिस पुण्य प्रदेश में कौशल कुंवर जैसा बलिदानी पुत्र पैदा हो सकता है, उसके नाम पर कमला मीरी भला कलंक कैसे लगाता। उसने सिंह की तरह हुंकार भरते हुये जेल की दीवारों को हिला देने वाली वाणी में कहा "मै यह यंत्रणा अपने किसी स्वार्थ के लिये नही, बल्कि तुम्हारे और अपने सब के लिये सह रहा हूँ। फिर तुम मुझ पर आश्वासन देने के लिये क्यों जोर दे रहे हो।" इस तरह कमला मीरी जेल ही मे घुल-घुल कर मर गया।

सामूहिक जुर्माने

आसाम की जनता पर सरकार ने बड़ी निर्दयतापूर्वक जो जुर्माने किये थे, उनकी तालिका निम्न प्रकार है:—

जिला	जुर्माना
सिलहट	५००० रुपया
लखीमपुर	१०००० रुपया
शिवसागर	१४३२०० रुपया
नौगॉव	८३५०० रुपया
दरॉग	८[illegible]२०० रुपया
कामरूप	७०४८०० रुपया
ग्वालपाड़ा	१५००० रुपया

सरकार ने यह आंकडे बहुत ही कम करके प्रकाशित किए है। इनका जोड़ १ लाख [illegible]९ हजार रुपये और अधिक होना चाहिए। सरकार ने खजाने को भरने के लिए यह जुर्माने बड़ी क्रूरता पूर्वक वसूल किये।

बैसवाड़े का शौर्य

अगस्त की क्रान्ति में यू० पी० के पूर्वी जिलों ने जो महत्त्वपूर्ण भाग लिया, वह इतिहास के पृष्ठों मे सदा अमर रहेगा। वैसवाड़े ने भी इसमें पर्याप्त योग दिया। इसका ओजस्वी वर्णन वहीं के एक सार्वजनिक कार्य-कर्त्ता श्री देवीराम अवस्थी ने निम्न पंक्तियों मे किया है:—

"८ अगस्त १६४२ की रात को राष्ट्रपति और उनकी कार्यकारिणी के सारे सदस्य तथा पूज्य बापू की गिरफ्तारी के परिणाम स्वरूप सारे देश मे एक उग्र जन-क्रान्ति मच गई। ६ अगस्त १६४२ के तड़के उपा सुन्दरी ने रायबरेली के अपने अनेक वीर भाइयों का शृंगार किया। हमारे सब के सब प्रमुख नेता जेलों मे डाल दिये गये। ऐसे समय में जब कि उनके सारे वीर बन्धु जेलों में डाल दिये गये थे, जिले मे कुछ लोग फकीरी का अलख जगा रहे थे। इन अलख जगाने वालों के शिरोमणि थे, हमारे आदरणीय बन्धु श्री महावीर प्रसाद पाण्डेय। पाण्डेय जी ने घर-घर गाव जाकर स्वतन्त्रता का सन्देश सुनाया और क्रान्ति को अनुप्राणित किया। वे इतने सर्व-प्रिय थे कि पुलिस दो वर्षों के प्रयत्न के बाद भी उन्हें गिरफ्तार न कर सकी। अन्त में पूज्य बापू के आदेशानुसार हमारे उस आदरणीय तपस्वी ने आत्म समर्पण किया था। रायबरेली जिला कॉंग्रेस कमेटी के सभापति श्री गुप्तार सिंह इस आन्दोलन के प्रमुख प्रवर्तक थे। उनके योग्य साथी भाई रामावतार सिंह भी इसमें

अग्रगण्य थे। श्री गुप्तारसिंह की योजनायें बड़ी सूझ-बूझ की और विलक्षण थीं। एक ही दिन सारे थानो पर अधिकार करना, एक ही दिन सारे चौकीदारों को नौकरी छोड़ कर राष्ट्रीय चौकीदारी में सम्मिलित होजाना, डाकघरो और कचहरियों पर एक ही दिन और एक ही साथ अधिकार कर लेना इत्यादि बातों की उन्होंने सारी योजनायें बना लीं थीं, और दिन निश्चित कर लिया था, पर दुर्भाग्य वश कुछ ऐसी घटनायें घटी जिनके कारण ये योजनायें काम में न लाई जा सकीं।

९ अगस्त १९४२ से लेकर १७ अगस्त १९४२ के ९ दिन बड़े महत्व के थे। इन नौ दिनों तक सारे जिले ने अपूर्व उत्साह और साहस के साथ विदेशी सत्ता को उखाड़ फेकने का प्रयत्न किया। तार काट दिये गये। रेलें उखाड़ दी गईं, जिनके परिणामस्वरूप रायबरेली से कानपुर जाने वाली गाड़ी [illegible] बन्द रही। श्री गजेन्द्रसिंह, श्री गयाप्रसाद शुक्ल, श्री [illegible] लाल त्रिवेदी और श्री रमाकान्त मिश्र इस आन्दोलन के [illegible]। श्री गयाप्रसाद शुक्ल अब तक लम्बी कारावास यातना [illegible] रहे हैं। रायबरेली, लालगंज और गौरा में [illegible] का निकलना एक दैनिक कृत्य था। हिन्दु हाई [illegible] और मिडिल स्कूल गौरा के छात्रों का [illegible] सम्बन्ध में हमें बार बार दो बहादुर छात्रों के [illegible] हैं। एक श्री श्रीकान्तसिंह और दूसरे श्री [illegible]। रायबरेली का छात्र आन्दोलन इन्हीं दो [illegible] का परिणाम था। श्री श्रीकान्तसिंह [illegible] वे मंत्री हैं। जिला किसान संघ का [illegible] हैं श्री जयचन्द्र पाण्डेय।

पाण्डेय ने सरेनी शहीद स्मारक कोष की स्थापना की है। इस कोष के धन संग्रह के लिये एक समिति बनी है जिसने दस हजार रुपयों की एक अपील प्रकाशित की है। क्या बैसवारे के सारे भारत में मिले हुये वीर पूजक लोग अपने भाइयों के रक्तदान का उचित प्रतिशोध न करेंगे ?

तीसरा भाग

विदेश में भी चिनगारी पहुँची

टैंगेनिका का सन् ४२

अगस्त-क्रान्ति की चिनगारी भारत से बिखरकर विदेश में भी गई और वहां पर भी कार्य हुआ। टैंगेनिका में अगस्त ४२ में सामूहिक आन्दोलन न होकर व्यक्तिगत आन्दोलन ही हुआ परन्तु इससे वहां बहुत जागृति हुई। नीचे की पंक्तियां वहां के एक व्यक्ति ने लिखी है, जिन्होंने स्वयं उस आन्दोलन में भाग कार्य किया था। पाठकों की जानकारी के लिए उसका [illegible] अंश दे रहे हैं:-

"मै इस वक्तव्य से सहमत हूं कि अगस्त [illegible] टैंगेनिका निवासी भारतीय नेताओं को [illegible] और वहा के भारतीय अपनी मातृभूमि की [illegible] किस तरह विमुख रहते है इसे भी स्पष्ट कर दिया [illegible] भारतीय क्रियात्मक रूप से भारत के साथ [illegible] प्रदर्शन कर सकते थे—ऐसी बात नहीं। [illegible] था. पर यह अवश्य आशा की जा सकती थी कि [illegible] गए कांग्रेस को आर्थिक सहायता देंगे. [illegible]

आन्दोलन के पक्ष में सभायें करते, सही सही साहित्य का वितरण करते और इससे भी अधिक वे भारतवर्ष में स्वयंसेवकों का जत्था भेजते। पर उन्होंने यह नहीं किया। इस काम में थोड़ा बहुत सहयोग भी दिया तो केवल उन नवयुवक क्लर्कों ने जो देश-प्रेम के मतवाले थे। फलतः एक ओर उन्हें सरकार का और दूसरी ओर अपने नेताओं का कोपभाजन बनना पड़ा। इनमें से अधिकतर प्रायः सरकारी नौकर थे या वाणिज्य-व्यवसाय के कारखानो में लगे हुए व्यक्ति।

उस समय 'इण्डियन एसोसिएशन' (टँगेनिकाके भारतीयों की सबसे बड़ी संस्था) का रवैया था युद्ध में सक्रिय मदद करना तथा भारतीय प्रश्नों से दूर रहना। जिस समय उन्हें ब्रिटिश सरकार की भारत विरोधी नीति के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए थी- सरकार को चेतावनी देनी चाहिए थी, उस समय उन्होंने सरकार के समर्थन की नीति का अनुसरण किया, वहां की सरकार अफ्रिका के समाचार-पत्रों द्वारा भारतीयो के विरुद्ध गन्दा प्रचार करती गई, पर उन नेताओं ने इस बात से डरकर कि कहीं कौंसिलों और कमेटियों में उनकी जगहें न छिन जायें, इसका मामूली विरोध तक नहीं प्रदर्शित किया। जब 'टँगेनिका ओपीनियन' के सम्पादक ने इसका विरोध किया और सरकार के भद्दे प्रचारो की पोल खोली तो भारतीय बहुत प्रसन्न हुये, और उन्होंने उसे अपना प्रतिनिधि माना। उस सम्पादक के भारत के लिये विदा हो जाने के पश्चात वहां कोई ऐसा व्यक्ति न रह गया जो सरकार की नीति का विरोध कर सके। अगस्त आन्दोलन के समय से हमारा कर्त्तव्य होगया था कि

हम अपने कार्यों से साबित कर दें कि हम जहाँ भी रहते हैं देश प्रेम हमारे साथ रहता है तथा हम अपने देश को नहीं भुलते है।

क्रिप्स-मिशन के असफल होते ही यह स्पष्ट हो गया था कि भारतवर्ष में गड़बड़ी अवश्यम्भावी है। अतः एक 'भारतीय युवक संघ' की स्थापना करने की बातचीत शुरू हो गई थी ताकि हम जनता की मनोवृति को अपने पक्ष मे तैयार करें और उन्हें अपने संघ का सदस्य बनावे, जो भारतवर्ष में जाकर पीड़ितों की सहायता के लिये पैसे इकट्ठा कर सके। अभी तैयारियां समाप्त भी नहीं हुई थी कि मैंने एक दिन सुबह जापानी रेडियो स्टेशन को यह घोषणा करते सुना कि भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के गण्य-मान्य नेताओ को गिरफ्तार करके किसी गुप्त स्थान को लेजाया जा रहा है। यह समाचार सुनकर मैं हक्का बक्का रह गया। मुझे ऐसी आशा नहीं थी कि यह सब इतनी जल्दी होगा। मै उसी समय 'हिन्दू स्वयं सेवक दल' के सभापति से जाकर मिला। यह दल सामाजिक बातो के लिये तो हिन्दू था पर राष्ट्रीय और राजनीतिक बातो मे पक्का हिन्दुस्तानी था और उसे दूसरी हिंदू और मुस्लिम संस्थाओ का सहयोग प्राप्त था। यह नवयुवकों की एक बलिष्ठ संस्था थी। इसने [illegible] कि गांधी-जयंती जैसा दिन मना सकती थी, पर [illegible] एसोसिएशन यह सब करने से डरती थी। इसके [illegible] की कार्यकारिणी की बैठक बुलाई गई। मैंने इसमें [illegible] सरकार के कार्य का विरोध करते हुए एक [illegible] और इण्डियन एसोसिएशन से प्रार्थना की [illegible] सभा मे, जो उसी दिन [illegible]

के श्री जे० वी० पाण्डया के निधन पर होने वाली थी. पास करके भारत सरकार के पास भेज दे। सभापति ने उस प्रस्ताव में बहुत अदल बदल कर दिया और लोगों से कहा कि आप भारतवर्ष में जो कुछ हो रहा है उसकी लहर में मत आइये। आप यहां टैंगेनिकन होकर रहिये, भारतीय होकर नहीं।

यह सब देख कर मुझे बड़ा क्रोध आया और मैंने स्वयं वह प्रस्ताव भेजा। जर्मन और जापानी स्टेशनों से अंगरेजों के जुल्मों की खबरें बड़े जोरों से आने लगीं। इधर सेन्सर का भी जोर लागू हो गया और भारतवर्ष से आनेवाले समाचार-पत्रों की टैंगेनिका पहुचने से पहले ही, जाच-पड़ताल होने लग गई। फिर भी मैंने कुछ पत्र नवयुवकों तक पहुचाने की चेष्टा की और यह भी निश्चय किया कि किसी न किसी तरह स्वयंसेवक भी भेजे जायें। जन-शक्ति के एक भारतीय असिस्टेण्ट डाईरेक्टर को इसका पता चल गया और उसने किसी भी नवयुवक भारतीय को बाहर जाने का पास देना ही बन्द कर दिया। पर हमने दो युवकों को स्वास्थ्य के बहाने बाहर भेज ही दिया। इतने में कॉंग्रेस बुलेटिन और 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव की प्रतियां हमारे पास अन्य सामानो के साथ गट्ठर के गट्ठर आने लगीं। इन्हें साईक्लोस्टाइल कर के हम बांटने लगे। कुछ संख्या इस प्रकार से जब हम बट चुके तो लेजिस्लेटिव कौन्सिल के एक भारतीय सदस्य ने सरकार को इसका पता दे दिया। अब सी० आई० डी० के लिए 'दोषियों' का पता लगाना एक आसान काम

हो गया। वे यह भी पता लगा सके कि बुलेटिन का वितरण सरकारी विभाग द्वारा होता था।

इसी बीच हम साहूकारों से मिले और चन्दे की मांग की पर हमें निराश होना पड़ा और हमने निश्चय किया कि प्रति मास हम जितना इकट्ठा कर सकेंगे, भेज दिया करेंगे। 'एशिया और अमेरिका' तथा ब्लिटज में एक दो लेख भी भेजे थे पर सेंसर ने सी० आई० डी० के हाथों सौंप दिये।

हमारे नेता कहते थे कि गांधी-जयन्ती मनाना कोई बुद्धिमानी नहीं है, पर हम फिर भी मनाते थे।

१६४२ और ४३ में हमने भारतीय युवक संघ की नूब तैयारी की। महात्माजी का उपवास, जिससे सारा संसार हिल गया था—फिर भी हमारे टैंगेनिका के भारतीय अपनी पुरानी नीति पर ही चल रहे थे। कमिटियों से जगह छिन जाने के भय से अथवा इस भय से कि लोग उन्हें राष्ट्रवादी न कहें, इण्डियन एसोशियेसन ने एक प्रार्थना-सभा तक नहीं की। केनिया तथा यूगांडा ही नहीं प्रत्युत समग्र संसार में गांधी जी के लिये प्रार्थना की गई थी। इण्डियन एसोशियेसन वाले, मैंने देखा कि, दारेसलम इण्डियन एसोशियेसन के तार की प्रतीक्षा कर रहे थे। अन्त में एक सौदागर तथा मैंने अपने नाम से एक सभा के लिए नोटिस निकाला।

इतने में सरकार ने यह पता लगाने की [illegible] कि इस गड़बड़ के पीछे कौन है और सी० आई० डी० [illegible] के लिए तैनात कर दिया। सभी [illegible] सेन्सर वाले सी० आई० डी० के [illegible] लगते ही हमने इस काम को [illegible]

फूजीवारा ने सिंगापुर के भारतीयों और भारतीय फौजों के युद्धवन्दी प्रतिनिधियों को 'इण्डियन इंडिपेंडेंस लीग' के विषय में वाद-विवाद करने के लिए बुलाया। प्रतिनिधियों के मिलने पर मेजर फूजीवारा ने वायदा किया कि भारतीयों को दुश्मन की तरह नहीं माना जायगा।

निरन्तर कई महीनों तक कार्य-रत रहने के बाद भारतीय स्वाधीनता-लीग के प्रथम सभापति श्री रासविहारी बोस के नेतृत्व में तीन महत्त्वपूर्ण निर्णय किए गए।

१—भारत एक और अविभाज्य है।

२—इंडियन इंडिपेंडेंस लीग के कार्य राष्ट्रीय आधार पर हों, साम्प्रदायिक या जातीय आधार पर नहीं।

३—इंडियन इंडिपेंडेंस लीग के कार्य भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के घोषित उद्देश्यों के अनुरूप हों।

इन उद्देश्यों को सामने रखते हुए लीग ने निम्नांकित विभिन्न उपसमितियां बनाई।

१—कौंसिल ऑफ ऐक्शन [कार्य कारिणी समिति।

२—प्रतिनिधि सभा।

३—प्रादेशिक कमेटियां।

४—स्थानीय शाखायें।

कार्यकारिणी मे सभापति श्री रासविहारी बोस तथा श्री के० पी० मेनन, एच० राघवन, कैप्टन मोहन सिंह, ले० कर्नल जी० क्यू० गिलानी मेम्बर थे। अन्तु; कैप्टन मोहनसिंह ने

अनुशासन में सर्व प्रथम ७०० भारतीयों की एक संगठित सेना बनी, जो आज़ाद फौज के नाम से पुकारी गई और भारत की आजादी के लिए लड़ना ही उसका लक्ष्य निर्धारित किया गया।

सुभाष सिपहसालार बने

२ जुलाई ४३ को नेता जी सुभाष बोस यूरोप के देशों के युद्ध-रंगमंच का सिंहावलोकन करने के उपरान्त जापान होते हुए सिंगापुर पहुचे। ४ जुलाई को एक विशाल जन समूह के सामने सर्व समिति से नेता जी सुभाष को लीग का सारा भार सौंप गया और ५ जुलाई को सिंगापुर के टाउनहाल के सामने आजाद हिन्द फौज ने पहली बार परेड की और उनके सिपहसालार सुभाष बोस ने सैनिको के बीच ओजस्वी भाषण दिया। सबने आजादी की पवित्र प्रतिज्ञा की और उस दिन से ही क्रमशः आज़ाद हिन्द फौज की भर्ती और लडाई की जोरदार [illegible] होने लगी। सुभाष बाबू ने अपनी एक अपील में ३० लाख सिपाही और ३ करोड़ रुपयो की माग जनता से की।

तुला दान

चौथा भाग

अगस्त-क्रांन्ति के सेनानी

अगस्त ४२ के हमारे राजनैतिक संघर्ष को आगे बढ़ाने वाले महानुभावों में श्री अच्युत पटवर्धन, जयप्रकाश नारायण, राममनोहर लोहिया, श्रीमती अरुणा आसफअली और श्रीकुमारी उषा मेहता प्रमुख रहे हैं। वैसे तो देश के सभी भागों के कार्यकर्त्ताओं और छात्रो ने इस आन्दोलन मे पर्याप्त योग दिया था, किन्तु उक्त पाचो महानुभाव हमारे इस स्वातन्त्र्य संघर्ष को आगे बढ़ाने में सहायक रहे हैं। इनमे से श्रीमती अरुणा आसफअली और श्री अच्युत पटवर्धन तो अन्त तक छिपकर ही कार्य करते रहे और सरकार लाख कोशिशें करने पर भी उनका पता न लगा सकी।

श्री अच्युत पटवर्धन

बम्बई की लोकप्रिय सरकार ने सबसे पहला कार्य १९४२ के राजनीतिक फरारो के वारन्ट रद्द किये। वारन्ट के रद्द होते ही अ० भा० कांग्रेस कार्य-समिति क भूतपूर्व सदस्य श्री अच्युत पटवर्धन जो आन्दोलन के प्रारम्भ से अप्रैल १९४६ तक फरार थे पूरे ४४ महीने बाद प्रकट होगए। आप कांग्रेस के वाम पक्षी

अर्थात् कांग्रेस समाजवादी दल के प्रमुख सदस्य रहे हैं। अपने फरार-जीवन में देश को स्वतन्त्र करने के लिए उन्होंने ऐसे-ऐसे वीरोचित कार्य किए हैं, जिनके प्रकाश में आने पर वे भारतीय-संघर्ष के इतिहास के सुनहरे अध्याय होंगे।

श्री अच्युत पटवर्धन के महत्त्वपूर्ण कार्य का ही परिणाम सितारा की क्रान्ति थी। वहां के ७०७ गांवों में पटरी [समानान्तर पर स्वतन्त्र] सरकार की स्थापना होगई थी। वर्षों तक इस सरकार ने सुयोग्यता पूर्वक शासन किया और अंग्रेजी सरकार का वहां चिन्ह तक नहीं रहा। अब उस पटरी सरकार ने टूट कर कांग्रेस से सहयोग कर लिया है। साथ ही उस सरकार के चलाये हुए ३०० 'न्यायदान मंडल' भंग कर दिये गए हैं। उक्त मंडलों के स्थान पर अब पंचायतें बनेंगी।

सन् ४२ से ४६ तक

अगस्त सन् १६४२ में एकाएक छिप जाने के बाद [illegible] अच्युत पटवर्धन ने 'भारत छोड़ो' बुलेटिन [illegible] बृटिश सरकार को आतंकित कर दिया था। [illegible] लोहिया के साथ मिलकर कांग्रेस रेडियो [illegible] आपने राजनैतिक कार्य को बहुत आगे बढ़ाया। [illegible] श्री अच्युत के लिए बहुत ही संकट का रहा। [illegible] राममनोहर लोहिया, श्री जयप्रकाश [illegible] जोशी कुमारी उषा मेहता आदि सब [illegible] कर लिये गए। सारे देश में उनकी [illegible] आई० डी० का जाल बिछा था। [illegible] करना पड़ा। उन दिनों उनके बड़े भाई [illegible]

ही में थे। उनके साथियों में केवल श्रीमती अरुणा आसफअली ही अभी तक सी० आई० डी० की दृष्टि से बची हुई थीं। सितारा ही उनके कार्य का केन्द्र था, जैसा कि उन्होंने अब प्रकट होने पर बतलाया है। अपने गुप्त जीवन में वे दक्षिण भारत के किसानों की सभा में भाषण देते थे और उन्हें याद दिलाते थे कि वे छत्रपति शिवाजी के वंशज हैं। सितारा में उन्होने पूर्ण प्रजातन्त्र सरकार की स्थापना करली थी। गवर्नर कालाविले उनसे बहुत ही परेशान थे। उन्होंने इस संगठन को तहस-नहस करने के लिए वहा पर पुलिस और सैनिक-शासन की स्थापना कर दी थी और संगठन को बदनाम करने के लिए तरह-तरह के आरोप लगाये थे। सरकार ने इस संगठन को नष्ट करने के लिए जो-जो अत्याचार वहां किए, वह हृदय को दहला देने वाले हैं। उनके उस संगठन के समस्त नेता गिरफ्तार कर लिये गए थे। सितारा की पटरी सरकार भले ही समाप्त होगई हो; परन्तु जो वीरता का उदाहरण उसने प्रस्तुत किया है, वह विस्मरणीय नहीं कहा जा सकता।

फिर हमारे बीच में

मई सन १६४४ में गान्धी जी रिहा किये गए और उनके बाद कांग्रेस-कार्य-समिति के सर्व सदस्य भी रिहा कर दिये गए। शिमला सम्मेलन का आयोजन हुआ। शिमला सम्मेलन के समय श्री अच्युत ने सितारा में एक भाषण दिया था। बम्बई में कांग्रेस कार्य समिति की जो बैठक हुई थी, उसमें वे मौजूद थे। वे छिपे थे सरकार के लिए, जनता के लिए नहीं। आपने और श्रीमती अरुणा ने छिपकर कार्य करने वालो की सहायता के

सम्बन्ध में राष्ट्रपति को जो पत्र लिखा था वह ऐतिहासिक है। अब श्री अच्युत पटवर्धन हमारे बीच खुल कर आगए हैं, परन्तु छिपे जीवन में आपको जो भीषण कष्ट उठाने पड़े उनका आपके स्वास्थ्य पर बहुत ही भयंकर प्रभाव पड़ा है। तरुण होते हुए भी असमय में ही आपके बाल सफेद हो गए हैं; परन्तु आपकी भावना एवं कार्य-क्षमता अदम्य है।

अच्युत का फरार जीवन

अगस्त-क्रांति को चलाने मे श्री अच्युत पटवर्धन का महत्वपूर्ण भाग था। आप अन्दोलन के प्रारम्भ से ही फरार हो गए थे। पुलिस अनेक प्रयत्न करने पर भी आपका पता न पा सकी। नीचे उनके फरार-जीवन के मनोरंजक संस्मरण [illegible] जा रहे हैं:—

"क्या अच्युतराव ! तुम कभी साड़ी पहन कर [illegible] १९४२ के विद्रोह के क्रांतिकारी श्री अच्युतराव [illegible] बन्धनमुक्त होकर पूना आने पर एक पत्र-प्रतिनिधि ने [illegible] प्रश्न पूछा। अच्युतराव ने पत्र-प्रतिनिधियों [illegible] पिछले साढ़े तीन वर्षों में वैयक्तिक रूप से [illegible] कहाँ-कहाँ रहे आदि बातें बताने से साफ [illegible] मगर समाचार पत्रों के संवाददाता भी [illegible] थे। उक्त प्रश्न एक अंग्रेजी पत्र के संवाददाता ने उनसे [illegible]

इस पत्र प्रतिनिधि ने यह भी कहा—आप जब साड़ी पहन कर घूम रहे थे तब आप पर निगरानी रखते हुये पुलिस विभाग से इस आशय का गुप्त सक्युलर निकाला गया था कि आप स्त्री वेश में भी मिल सकते हैं, इसलिये यह प्रश्न मै आप से पूछ रहा हूँ।

मैं साड़ी पहन कर फिरा या नहीं, यह मैं कहता नहीं, मगर १९४२ के आन्दोलन के आरम्भ में यदि इस प्रकार का सक्युलर निकाला गया था तो मुझे उसका बहुत लाभ मिला इतना ही मुझे कहना है।

इससे क्या यह स्पष्ट नहीं होता कि अच्युतराव साड़ी पहन कर कभी नही घूमे ?

अरुणा आसफअली और अच्युतराव पटवर्धन ये दोनों क्रान्ति नता केवल अन्त तक 'भूमिगत' रह सके और जय-प्रकाश, राममनोहर लोहिया प्रभृत्ति क्रांतिवीर और महाराष्ट्र के अन्य नेता पकड़े गये। अरुणा आसफअली और अच्युतराव पटवर्धन साढ़े तीन वर्ष भूमिगत रह सके. इसका कारण यह माना जाय कि इसमें दैवयोग का विशेष हाथ है, या यह माना जाय कि श्री अच्युतराव अन्यों की अपेक्षा ज्यादा होशियार निकले और पुलिस के फन्दे में नहीं फंसे।

दो दिन से अधिक नहीं

प्रत्येक भूमिगत व्यक्ति के सुरक्षितता के साथ रहने के लिए भाग्य का आधार तो रहता ही है, पर अच्युतराव साढ़े तीन साल भूमिगत रह सके, इसमे उनका विशेष सावधानी से रहने का स्वभाव भी एक विशेष कारण हुआ।

ज़रा भी संशय होने पर वे अपना निवास स्थान झटपट बदल लेते, पर किसी भी एक जगह दो दिन से अधिक न रहने का उनका निश्चय था। १९४२ के विद्रोह के प्रारम्भ में बम्बई के कारखानेदार और धनिक वर्ग के घरो में उनको सहस्र रीति से आश्रय मिल जाता था। मगर फरवरी १९४३ मे महात्मा गांधी ने उपवास किया, तब से स्थिति बदलने लगी। एक धनी ने जो महात्मा जी को उपवास के समय इस आशय का आश्वासन दिया था कि राष्ट्रीय हित की दृष्टि से यदि उनको इन भूमिगत लोगों की अड़चन मालूम हो तो आठ दिनों के अन्दर ये सब भूमिगत नेता जेलों में चले जावेंगे, ऐसी व्यवस्था की जायगी। भूमिगतों ने इस धनिक का आश्रय लिया था, उस आधार पर उस धनिक ने महात्मा जी से इस तरह की बात कही थी।

भारत भर में भ्रमण

अच्युतराव ने यद्यपि अपने मुंह से अपने [illegible] की कहानी नहीं कही है, फिर भी मद्रास से [illegible] समस्त दक्षिण भारत और उत्तर भारत में प्रवास किया है और महाराष्ट्र के अन्दर पूना, नगर, शोलापुर आदि स्थानों पर अनेक बार गए, यह एक प्रगट रहस्य है। अच्युतराव पटवर्धन ने कुछ काल काश्मीर मे भी बिताया।

अच्युतराव ने भारत के प्रायः सब प्रान्तों की यात्रा की। मगर उनका मुख्य स्थान पूना-बम्बई रहा और बम्बई रहते हुए १९४२ मे अनेक बार ऐसे प्रसंग आए जब वे पुलिस के हाथ पकड़े जाने से दैवयोग से ही बचे।

बैरिस्टर पुरुषोत्तम त्रिविक्रमराम वैο चित्रे के बंगले में गिरफ्तार किये गए। उस समय अच्युतराव भी पकड़े जाते। मगर "ठहरो, बारीक पने से देखो, सुनो और फिर अगला पांव रखो [स्टाप, लुक एण्ड लिसन] इस विषय के ऊपर चलने के कारण उस समय वे पकड़े नहीं गए।

भूमिगतों की बेफिकरी

१८ अप्रैल १९४३ को सायंकाल शिवभाऊ लिमये, वा० ग० गौरे, सानेगुरु जी प्रभृति १८ व्यक्तियों की मण्डली वी० सी० आई० के बाम्बे सेण्ट्रल स्टेशन के सामने की इमारत में पकड़ी गई। यह महाराष्ट्र के अन्दर भूमिगत आन्दोलन पर भारी आक्रमण था। पर इस आक्रमण का कारण भूमिगतों की बेफिकरी और निश्चिन्तता थी। उस इमारत के चारों ओर १८ अप्रैल के प्रातःकाल से पूना मे प्रसिद्ध गुप्त पुलिस का सादी पोशाक में पहरा था। बम्बई के कार्यकर्त्ताओ और भूमिगतों में से अनेकों ने कईयों को इस बात की चेतावनी भी दी थी कि यह इमारत धोखे की है, पर इस भ्रमपूर्ण धारणा के अन्दर कि रात्रि होने तक इमारत पर छापा नहीं मारा जायगा, शिवभाऊ लिमिये प्रभृति मण्डली नहीं हटी। इस बीच जुहू तट पर तैरने का प्रोग्राम कुछ भूमिगतों ने बनाया था और उसमें शिवभाऊ लिमिये ने भी सम्मिलित होने की इच्छा प्रगट की थी मगर "जुहू अत्यधिक खुली जगह पर पड़ता है, अतः तुम वहां न आओ, मगर वहां भी न रहो" इस आशय का सन्देश भेज कर भूमिगत मण्डली जुहू रवाना हो गई।

उनको गए हुए अभी पन्द्रह मिनट भी नहीं हुए होगे कि पूना के ऊंधारकर प्रभृति पुलिस मण्डली वहां आ पहुची। उसके

भी इस बात की कल्पना नहीं थी और न अपेक्षा थी कि वहां इतनी बड़ी संख्या में भूमिगत लोग मिलेंगे। उस समय से रात्रि के दो बजे तक गुरु जी प्रभृति मण्डली एक एक करके पुलिस के हाथ चली गई।

१८ भूमिगत जनों के गिरफ्तार होने से भी अधिक घातक हमला इस समय और एक हुआ। वह यह कि पूना, शोलापुर आदि विविध गांवो के भूमिगत आश्रय स्थानो और व्यक्तियों के ४७० नामो की एक सूचि पुलिस के हाथ लगी और इस कारण भूमिगत आन्दोलन लगभग ठण्डा हो गया।

इस छापे मे भी अच्युतराव पकड़े नहीं गए। इसका कारण उनकी सावधानवृत्ति और सतर्कता ही है। अच्युतराव ने इस हमले के कारण भूमिगत आन्दोलन को पहुंचे नुकसान की भरवाई करके पुनः एक बार भूमिगत आन्दोलन को व्यवस्थित-रूप से चालू किया।

इमाम साहब

पर अच्युतराव भाग्य से ही बन्दी-होना भी [illegible] प्रसंग आया। भाई एस० एम० जोशी [illegible] इमाम साहब का नाम धारण करके रहते थे। [illegible] पुलिस को मिल गया। पुलिस को किसी ने यह [illegible] वहां पार्टी की बैठक होने वाली है और अच्युतराव [illegible] उसमे सम्मिलित होंगे। इस जानकारी के आधार पर पुलिस ने 'इमाम साहब' को घेर लिया। और वह अच्युतराव के [illegible] प्रतीक्षा करने लगी। अच्युतराव [illegible]

के साथ उस चाल में आए और उन्होंने इमाम साहब के बारे में निश्चित कमरे में पूछताछ की।

'यहां इमाम-विमाम कोई नहीं; चले जाओ।' वहां के सब रहने वाले मनुष्य ने खांस कर कहा।

अच्युतराव चमके, परन्तु फिर भी उन्होंने एक बार पूछा 'क्या इमाम साहब हैं।' इस पर वह आदमी बोला 'हजार दफे कहा भी तुमको, कि यहां इमाम नहीं है, हम पहचानता नहीं इमाम को, जाता है या नहीं यहाँ से ?'

यह अनपेक्षित घटना देख कर और वहाँ कुछ धोखा है, यह सन्देह होने पर अच्युतराव और मधुपेठे दोनों झटपट नीचे उतर आए और जे०जे० हास्पिटल के अहाते मे घुस गए। वहाँ पहुचने पर अच्युतराव नें मधुपेठे को आस-पास पूछ-ताछ करने के लिए भेजा। इस चौकसी मं उनको पता लगा कि एम० एम० चले गए। आसथा न के सब रास्तों पर पूने की पुलिस को गश्त लगाते हुए उन्होंने देखा। तब भी धीरज नहीं छोड़ा और एक विक्टोरिया करके मंडी बाजार की ओर निकल गए।

अगले चौक में पहुचने पर उन्होंने मधुपेठे को एक और रास्ते से जाने के लिए कहा। उनको यह आभास मिल गया था कि उनकी विक्टोरिया का पीछा किया जा रहा है। इसलिए मधुपेठे को वहां विक्टोरिया से उतार दिया और उसकी राह से सर्वथा विरुद्ध राह स्वतः चले गये। पीछा किया जा रहा है, उनका यह मत सच निकला, क्योंकि मधुपेठे दस कदम ही आगे गये होंगे कि उनको पकड़ लिया गया। पुलिस ने यदि विक्टोरिया

का पीछा चौक में न छोड़ा होता और विक्टोरिया के पीछे-पीछे वह चलती जाती, तब ?

भूमिगत

१६४३ के बाद भारत में आन्दोलन ठण्डा पड़ गया और पुलिस की नजर भी भूमिगतों पर पहले के समान कठोर नहीं रही। आगे आकर कुछ पुलिस भी भूमिगतों की दोस्त बन गई और उसके बाद अच्युतराव पर पकड़े जाने का वैसा विकट प्रसंग नहीं आया। वे कभी फौजी पोशाक पहन कर, कभी दाढ़ी रखकर, कभी केवल मूछें रख कर बम्बई के अनेक प्रसिद्ध क्लबों में घूमते हुए, अनेक लोगो से मिले। १६४४ मे गांधी-जिन्ना वार्ता के समय वे प्रति दिन गांधीजी से भेंट करते थे। १६४५ मे तो अ०भा० कांग्रेस कमेटी की बम्बई मे हुई बैठक मे उपस्थित थे। यहीं नहीं आचार्य नरेन्द्रदेव के साथ अच्युतराव ने सौ-सवासो विद्यार्थियों के सामने भाषण भी बम्बई मे दिया। यह सब हलचल पुलिस विभाग को पता नहीं थी, यह नहीं कहा जा सकता। परन्तु पुलिस विभाग मे सिपाही से लेकर इन्सपेक्टर तक अनेक लोग अच्युतराव के पीछे हो गए थे इसलिये उनको पकड़े जाने का अधिक भय नही रहा था।

१६४२ के आन्दोलन मे भूमिगत रहने वाले क्रान्तिवीरों का अज्ञात वास क्या जनता की दृष्टि से वस्तुतः अज्ञातवास था ? क्रान्ति की विरोधी पुलिस को भले ही वह अज्ञातवास प्रतीत हो, मगर पुलिस, फौजी अधिकारियों, सरकारी नौकरों और इधर सर्व सामान्य जनता को ये क्रान्ति-वीर भूमिगत नहीं मालूम होते थे, यह परिणाम निकालना गलत न होगा।

—जयप्रकाश—

झंझा सोई, तूफान रुका, प्लावन जा रहा कगारों में।
जीवित है सबका तेज किन्तु अब भी तेरे हुंकारों में॥
दो दिन पर्वत का मूल हिला फिर उतर सिन्धु का ज्वार गया।
पर, सौंप देश के हाथों में यह एक नई तलवार गया॥

जय हो भारत के नये खड्ग! जय तरुण देश के सेनानी।
जय नई आग! जय नई ज्योति! जय नये लक्ष्य के अभिमानी॥
स्वागत है, आओ काल-सर्प के फण पर चढ़ चलने वाले।
स्वागत है, आओ हवनकुण्ड में कूद स्वयं मरने वाले॥

मुट्ठी में लिये भविष्य देश का, वाणी में हुंकार लिये।
मन से उतार कर हाथों में निज स्वप्नों का संसार लिये॥
सेनानी! करो प्रयाण, भावी इतिहास तुम्हारा है।
ये नखत अमा के डूब रहे, सारा आकाश तुम्हारा है॥

जो कुछ था निर्गुण निराकार तुम उस द्युत के आकार हुए।
पाकर जो आग पचा डाली तुम स्वयं एक अंगार हुए॥
साँसों का पाकर वेग देश की हवा तवी-सी जाती है।
गंगा के पानी में देखो परछाईं आग लगाती है॥

विप्लव ने उगला तुम्हें, महामणि उगले ज्यों नागिन कोई।
माता ने पाया तुम्हें यथा मणि पाये बड़भागिन कोई॥
लौटे तुम रूपक बन स्वदेश की आग भरी कुर्बानी का।
अब जयप्रकाश है नाम देश की आतुर हठी जवानी का॥

कहते हैं उसको जयप्रकाश जो नहीं मरण से डरता है।
ज्वाला को बुझते देख कुण्ड मे स्वयं कूद जो पड़ता है॥
है जयप्रकाश वह, जो न कभी सीमित रह सकता घेरे में।
अपनी मशाल जो जला बांटता फिरता ज्योति अँधेरे मे॥

है जयप्रकाश वह, जो कि पंगु का चरण, मूक की भाषा है।
है जयप्रकाश वह, टिकी हुई जिस पर स्वदेश की आशा है॥
हाँ, जयप्रकाश है नाम समय की करवट का, अंगड़ाई का।
भूचाल, बवंडर ख्वाबों से भरी हुई तरुणाई का।

है जयप्रकाश वह नाम, जिसे इतिहास समादर देता है।
बढ़ कर जिसके पद चिन्हो को उर पर अंकित कर लेता है॥
ज्ञानी करते जिसको प्रणाम, वलिदानी प्राण चढ़ाते हैं।
वाणी की आग बढ़ाने को गायक जिसका गुण गाते हैं॥

आते ही जिसका ध्यान दीप्त हो प्रतिभा पंख लगाती है।
कल्पना ज्वार से उद्वेलित मानस तट पर थर्राती है॥
वह सुनो, भविष्य पुकार रहा, यह दलित देश का त्राता है।
स्वप्नो का द्रष्टा जयप्रकाश भारत का भाग्य विधाता है॥

—दिनकर

श्री जयप्रकाश नारायण

श्री पटवर्धन के प्रकट होने के बाद ही श्री जयप्रकाश नारायण और डा० लोहिया जेल से छूटकर हमारे बीच आगए हैं। श्री जयप्रकाश नारायण से सारा देश परिचित है। वे कांग्रेस समाजवादी दल के प्रमुख स्तम्भ हैं। ७ वर्ष पूर्व वे राज-द्रोह के अपराध में गिरफ्तार किये गए थे। आप अपने अन्य ५ साथियों के साथ हज़ारी बाग सैन्ट्रल जेल से भाग गए थे।

जेल से कैसे भागे ?

जिस दिन जयप्रकाश बाबू जेल से भागे थे, उस दिन दीवाली थी और उसका महोत्सव मनाने में सभी राजनैतिक बन्दी संलग्न थे। अवसर पाकर श्री जयप्रकाश बाबू अपनी पूर्व आयोजित योजनानुसार अपने ५ अन्य साथी सर्वश्री रामनन्दन मिश्र, योगेन्द्र शुक्ल, सूर्यनारायणसिंह, गुलाबचन्द गुप्त और शालिग्रामसिंह जी आदि के साथ एक मज़बूत रस्सी के सहारे जेल की दीवार को फांदकर भाग निकले। दीवार लांघते समय जयप्रकाश बाबू को चोट भी आई। परन्तु उनका एक साथी उन्हें कन्धे पर बिठाकर ले उड़ा। योगेन्द्र शुक्ल ने सीढ़ी का कार्य किया। वे दीवाली की रात को जेल की चारदीवारी पार करने के बाद तीन दिन तक छोटा नागपुर के जंगलों मे चलते रहे। उनके पैर नंगे थे। इस कारण जंगलके पथरीले भागमें चलनेसे वे लहू लुहान होगए थे। फिर भी उन्होंने अपनी एक धोती फाड़-कर उसके बारह टुकड़े करके और उन्हें अपने पैरों मे लपेटकर अपनी यात्रा जारी रखी। जंगल में चीते और दूसरे जानवरों

का खतरा भी था। लेकिन इन्होंने इसकी परवाह नहीं की। ५६ मील की यात्रा करने के बाद उन्हें कुछ चेवड़ा और गुड़ खाने को मिला। हजारीबाग से वे गया को गए और वहाँ से सभी अलग-अलग टुकड़ियों में बंट गए। श्री जयप्रकाश नारायण अपने एक साथी के साथ रामनगर से नाव में बैठकर बनारस आ गए।

जेल से भागने से पूर्व उन्होंने कई दिन पहले से जेल की दीवार पर धोतियों के सहारे चढ़ने का अभ्यास किया था। दिवाली की रात को वे ८ बजे एक दूसरे के कन्धे पर पैर रखकर और अपनी धोतियों के रस्से बनाकर, उनके सहारे दीवार लांघ गए और चलने से पूर्व उन्होंने कुछ पैसे, जूते तथा खाने पीने की कई एक जरूरी वस्तुयें एक गठरी में बांधली थीं। लेकिन वह उनसे वहां ही छूट गई। जूतों के बिना तो उन्हें बहुत ही कष्ट उठाना पड़ा।

दाढ़ी बढ़ा ली थी

अपने गुप्त काल मे जयप्रकाश बाबू ने दाढ़ी बढ़ा ली थी। उनका शरीर बहुत दुर्बल होगया था; इसलिए उनकी आकृति भी पहचानी नहीं जा सकती थी। बनारस मे श्री जयप्रकाश यूरोपियन ड्रेस मे रहते थे और बंगाल मे धोती कुर्ता पहनकर उन्होंने काम किया। उन्होने अपना मुसलमानी नाम रख लिया था। वे खतरे से खाली होगए। जेल से कुछ ही दूर पर दो [illegible] के साथ एक कार उनकी प्रतीक्षा कर रही थी। रांची तक वे इसी मोटर से गए। आगे उसका निभना कठिन था, इसलिए मोटर

भी जलाकर खाक कर दी गई। अब वे पैदल ही यात्रा करते हुए गया को चल पड़े।

फरार-जीवन कैसे बीता ?

बाहर निकलते ही कार्य करने की समस्या आई। देश की ज्वाला, आज़ादी की देवी ने उन्हें जेल से बाहर निकलने को विवश किया था, इसीलिए उन्हें यह संकट उठाना पड़ा। कार्य करने की आयोजना मन में लेकर वे गया से काशी आये। यहां नगवा मे उन्हें काफी छात्र मिले, कुछ सहायक भी तैयार हुए। उत्तरी भारत के आन्दोलन का विवरण लेकर और तत्कालीन कार्य-कर्त्ताओ को कुछ उचित आदेश देकर उन्होंने रीवा के मार्ग से दक्षिण भारत की यात्रा प्रारम्भ की। इसी बीच मे कार्य-समिति के स्थान पर काम करने वाली निर्देशक मंडली के कुछ व्यक्तियों से भी आपका परिचय हुआ। कुछ समय तक उन्होंने उसी के अन्तर्गत रहकर कार्य किया; किन्तु बाद मे मतभेद होजाने के कारण उन्हे वह छोड़ देना पड़ा और अपना नया ही कार्य क्रम देश में घूम-घूम कर प्रारम्भ किया।

पटवर्धन से भेंट

बम्बई में उनकी श्री पटवर्धन से भेंट हुई। श्री पटवर्ध उस समय पश्चिमी भारत को एक नये ही सांचे में ढालने व प्रयत्न कर रहे थे। श्रीमती अरुणा आसफअली और डा लोहिया उस समय कलकत्ते मे थे। फिर क्या था, सबने ह मिलकर कार्य प्रारम्भ कर दिया। किन्तु इस कार्य के लिए कार्य कर्त्ताओ को ट्रेनिंग देना आवश्यक था। इसके लिए बृटिश भार

की भूमि उपयुक्त न जंचती थी; कारण कि सर्वत्र सी० आई० डी० के गुप्तचरों का साम्राज्य था। अतएव इसके लिए नैपाल की सीमा पर जगह खोजी गई और अप्रैल सन् १६४३ को नैपाल के एक जंगल मे कार्यकर्त्ताओं का पहला सम्मेलन हुआ और उसी समय आज़ाद हिन्द दस्ते का निर्माण हुआ।

स्वतन्त्रता के सैनिकों से

अपने फरारी के दिनोंमें आपने 'स्वतन्त्रता के सैनिको से' शीर्षक से एक विज्ञप्ति प्रकाशित करनी प्रारम्भ की थी जिसमे देश के नवयुवकों को इस आन्दोलन मे सक्रिय भाग लेने के लिए पुकार होती थी। आपने जितनी भी विज्ञप्तियां उन दिनो प्रकाशित की, वे सब आपकी राजनीति-कुशलता और कार्य पटुता की परिचायक है। आपके फरार जीवन मे खुफिया पुलिस ने सारे भारत मे आपका पीछा किया, परन्तु वह आपको न पा सकी। उनकी गिरफ्तारी के लिए हजारो रुपये के इनाम की घोषणा की गई थी। डा० राममनोहर लोहिया के साथ आपने सारे भारत का दौरा किया।

आज़ाद दस्ते ने छुड़ाया

श्री जयप्रकाश नारायण ने हजारीबाग जेल से भागकर भारत मे सर्वत्र दौरा किया और किस प्रकार नैपाल में जाकर 'आजाद दस्ता' नाम से राष्ट्रीय गुरिल्लो को ट्रेनिंग दी, और किस प्रकार बाद मे इन गुरिल्लो ने उन्हे नैपाल की जेल से छुड़ाया इसका विवरण बड़ा मनोरंजक है।

भी जलाकर खाक कर दी गई। अब वे पैदल ही यात्रा करते हुए गया को चल पड़े।

फरार-जीवन कैसे बीता ?

बाहर निकलते ही कार्य करने की समस्या आई। देश की ज्वाला, आज़ादी की देवी ने उन्हें जेल से बाहर निकलने को विवश किया था, इसीलिए उन्हें यह संकट उठाना पड़ा। कार्य करने की आयोजना मन में लेकर वे गया से काशी आये। यहां नगर में उन्हें काफी छात्र मिले, कुछ सहायक भी तैयार हुए। उत्तरी भारत के आन्दोलन का विवरण लेकर और तत्कालीन कार्यकर्त्ताओं को कुछ उचित आदेश देकर उन्होंने रीवा के मार्ग से दक्षिण भारत की यात्रा प्रारम्भ की। इसी बीच मे कार्य-समिति के स्थान पर काम करने वाली निर्देशक मंडली के कुछ व्यक्तियों से भी आपका परिचय हुआ। कुछ समय तक उन्होंने उसी के अन्तर्गत रहकर कार्य किया; किन्तु बाद मे मतभेद होजाने के कारण उन्हे वह छोड़ देना पड़ा और अपना नया ही कार्य क्रम देश में घूम-घूम कर प्रारम्भ किया।

पटवर्धन से भेंट

बम्बई में उनकी श्री पटवर्धन से भेंट हुई। श्री पटवर्धन उस समय पश्चिमी भारत को एक नये ही सांचे में ढालने का प्रयत्न कर रहे थे। श्रीमती अरुणा आसफअली और डा० लोहिया उस समय कलकत्ते मे थे। फिर क्या था, सबने ही मिलकर कार्य प्रारम्भ कर दिया। किन्तु इस कार्य के लिए कार्यकर्त्ताओ को ट्रेनिंग देना आवश्यक था। इसके लिए बृटिश भारत

की भूमि उपयुक्त न जंचती थी; कारण कि सर्वत्र सी० आई० डी० के गुप्तचरों का साम्राज्य था। अतएव इसके लिए नैपाल की सीमा पर जगह खोजी गई और अप्रैल सन् १९४३ को नैपाल के एक जंगल में कार्यकर्त्ताओं का पहला सम्मेलन हुआ और उसी समय आजाद हिन्द दस्ते का निर्माण हुआ।

स्वतन्त्रता के सैनिकों से

अपने फरारी के दिनोंमें आपने 'स्वतन्त्रता के सैनिको से' शीर्षक से एक विज्ञप्ति प्रकाशित करनी प्रारम्भ की थी जिसमे देश के नवयुवकों को इस आन्दोलन मे सक्रिय भाग लेने के लिए पुकार होती थी। आपने जितनी भी विज्ञप्तियां इन दिनो प्रकाशित कीं, वे सब आपकी राजनीति-कुशलता और कार्य पटुता की परिचायक है। आपके फरार जीवन मे खुफिया पुलिस ने सारे भारत मे आपका पीछा किया, परन्तु वह आपको न पा सकी। उनकी गिरफ्तारी के लिए हजारों रुपये के इनाम की घोषणा की गई थी। डा० राममनोहर लोहिया के साथ आपने सारे भारत का दौरा किया।

आज़ाद दस्ते ने छुड़ाया

श्री जयप्रकाश नारायण ने हजारीबाग [illegible] भारत मे सर्वत्र दौरा किया और जिस प्रकार नैपाल मे [illegible] 'आजाद दस्ता' नाम से राष्ट्रीय गुरिल्लो को ट्रेनिंग दी, [illegible] प्रकार बाद मे इन गुरिल्लो ने उन्हे नैपाल की [illegible] इसका विवरण बड़ा मनोरंजक है।

हजारीबाग जेल से भाग निकलने के बाद श्री जयप्रकाश-नारायण ने भारत के कार्यकर्त्ताओं को संगठित करने और उनको ट्रेनिंग देने के लिए 'नैपाल' को ही चुना था। जब उन्होंने वहाँ गुरिल्ला ट्रेनिंग देनी प्रारम्भ की, तो राज्य की पुलिस को सन्देह हुआ। फलस्वरूप उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। जेल से उन्होंने किसी प्रकार खबर भेजी कि उन्हें उस समय छापा मार कर छुड़ा लिया जाय, जबकि वहां की पुलिस अंग्रेजों की पुलिस को मुझे सौंपने जा रही हो। 'आजाद दस्ते' के अफसरों ने एक मीटिंग मे यह निश्चित किया कि क्योंकि अंग्रेजी पुलिस की ताकत और उसको सौंपने की तिथि अनिश्चित है, इसलिए जेल पर अचानक रात को छापा मार कर, जयप्रकाश बाबू को छुड़ाना ठीक होगा। तत्काल ही इस निर्णय को कार्यान्वित किया गया और उन्हें छुड़ाने के प्रयत्न मे राज्य के दो पुलिस वाले मारे भी गए, परन्तु जयप्रकाश नारायण बाबू सफलता पूर्वक उस फन्दे से छूट गए।

इसके बाद वे पुनः भारत आये और देश में पुलिस की आंखों से बच-बच कर कार्य करते रहे। वे कई बार पंजाब आये और गए और उन्हे आश्रय देने के अभियोग मे सन्देहवश बहुत से व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया। ऐसे व्यक्तियों मे इन पंक्तियों का लेखक भी एक था।

गिरफ्तारी और नजरबन्दी

जब आप पंजाब की यात्रा कर रहे थे तो श्री जयप्रकाश बाबू को फ्रन्टियर मेल से यात्रा करते समय अमृतसर और

लाहौर स्टेशनों के बीच पिस्तौल दिखाकर गिरफ्तार किया गया। वह दिन १८ सितम्बर सन् १९४३ का मनहूस प्रातःकाल था। वे उस समय पूर्व से उत्तर-पश्चिम के किसी पहाड़ी स्थान पर जा रहे थे। ऐसा मालूम होता है कि जयप्रकाश बाबू के पंजाब में जाने की सूचना दिल्ली पुलिस ने पंजाब की पुलिस को दे दी थी। गाड़ी के अमृतसर पहुचने तक उनकी यात्रा काफी सुविधाजनक रही।

जब गाड़ी अमृतसर स्टेशन पर आकर रुकी तो काफी सवेरा होगया था। उन्होंने वहाँ चाय पी, और अभी वे चाय पीकर समाप्त भी न कर पाये थे, कि एक अंग्रेज और दो सिख अफसर डिब्बे में घुसे। वे सी० आई० डी० के थे, किन्तु वेश साधारण वस्त्र पहने हुए थे। उनकी इस वेश-भूषा से जयप्रकाश बाबू को किंचित भी यह सन्देह नही हुआ कि ये ही लोग उन्हें गिरफ्तार करने आए है। अमृतसर से गाड़ी चलने तक उन्होंने कुछ नहीं कहा। परन्तु जब गाड़ी लाहौर की ओर जारही थी तो अंग्रेज अफसर ने उठकर पिस्तौल दिखाकर श्री जयप्रकाश बाबू को पकड़ लिया। दोनों सिख अफसरो ने भी उनकी सहायता की।

शाही किले में

फलस्वरूप उन्हें लाहौर के समीपवर्ती मुगलपुरा स्टेशन पर उतार लिया गया और फिर उन्हे लाहौर के शाही किले में ले जाकर अनिश्चित काल के लिए बन्द कर दिया गया। पंजाब सरकार ने उन्हें नोटिस देकर १९४३ मे नजरबन्दी घोषित कर दिया। नजरबन्दी के दिनो मे उनसे पंजाब सरकार का एक

उच्च अंग्रेज अफसर और एक मुस्लिम नवयुवक प्रति सप्ताह बाते करने आते थे। वहाँ पर जयप्रकाश बाबू को जो विषम यन्त्रणाये दी गई, वे समाचार-पत्रों के पाठकों को भली प्रकार विदित हैं।

रिहाई

लाहौर के शाही किले से जयप्रकाश बाबू को जनता के बहुत आन्दोलन करने पर आगरा सैन्ट्रल जेल भेज दिया गया और वे वहाँ पर लगभग एक वर्ष रहे। बाद में सब नेताओं के बाहर आजाने पर जनता में जागृति हो गई थी। समय बदला। जनता के मंत्रिमंडल बने। जनमत के आगे सरकार झुकी और जयप्रकाश बाबू रिहा कर दिये गए।

जन्म और शिक्षा

आपका जन्म सारन जिले [बिहार] में हुआ था। सन १६२२ से ८ वर्ष तक अमेरिका में रहकर स्वावलम्बी जीवन व्यतीत करते हुए आपने शिक्षा प्राप्त की। सन् १६२६ मे आप भारत लौटे। पं० जवाहरलाल नेहरू को आपकी योग्यता पहचानते देर न लगी। उन्होने आपको कांग्रेस का मजदूर अनुसन्धान विभाग सौंप दिया। थोड़े ही दिनो में अपनी कार्य-कुशलता से आप अ० भ० कांग्रेस कमेटी के कार्यकर्त्ता मंत्री नियुक्त कर दिये गए। इसके बाद नासिक जेल मे कांग्रेस समाजवादी दल का जन्म हुआ। पटना में इस दल का जो प्रथम अधिवेशन हुआ था, उसके अध्यक्ष श्री आचार्य नरेन्द्रदेव और मंत्री आप बनाये गए। आपका सारा जीवन संघर्षमय रहा है।

लाहौर किले में व्यवहार

श्री जयप्रकाश नारायण ने लाहौर किले मे अपने साथ किये गए व्यवहार के सम्बन्ध में बताया है कि वह किला भारत सरकार का अत्याचार भवन था। उन्होंने आगे कहा—"मुझे लगातार १६ महीने तक तन्हाई में रखा गया। मुझे किसी से मिलने व बाते करने की छूट न थी। करीब ५० दिन तक विभिन्न प्रान्तो की खुफिया पुलिस के आदमी दिन मे १२-१४ घंटे तक मेरे से सवाल-ज़वाब करते रहे। उन्होने मुझे और कांग्रेस-नेताओ को बुरी से बुरी गालिया दीं। सवाल-जवाब के अन्तिम १० दिनों मे मुझे रात दिन जागते रखा गया। सिवाय शौच करने के मुझे उस स्थान से कहीं और नही जाने दिया जाता था। तन्हाई मे एक बार मैंने शिकायत की. कि मुझे खुली हवा में कसरत करने दी जाय। बडी मुश्किल से मुझे कसरत करने की छूट मिली। किन्तु कसरत करते समय भी मेरे हाथों में हथकड़ियां लगी रहती थी। मैंने इसके विरुद्ध नाराजगी प्रकट की और यह धमकी दी कि यदि कसरत के समय मेरे हाथों से हथकड़ी उतारी न गई तो मै अनशन कर दूंगा। यह बात गलत है कि मुझे पीटा गया या मुझे बर्फ की सिल्लियों पर लिटाया गया।"

श्री जयप्रकाश की सिंह गर्जना

जेल से छूटने पर जयप्रकाश बाबू ने भारत के कोने-कोने में उनके सम्मान में आयोजित अनेक सभाओं में जो भाषण दिये, वे सभी गौरव की वस्तु हैं। पटना की एक सार्वजनिक सभा में भाषण करते हुए आपने कहाः—

मै दावे के साथ कहता हूँ कि अहिंसा में मेरा भी उतना ही विश्वास है जितना कि राष्ट्रपति आज़ाद का, और हिंसा में राष्ट्रपति आजाद का उतना ही विश्वास है जितना कि मेरा। महात्मा जी की अहिंसा के आगे मैं नत मस्तक हूँ, किन्तु उनके समान आत्मबल और शक्ति न होने के कारण मैं बन्दूक लेकर दुश्मन से लड़ना आसान समझता हूँ। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि कोई भी संस्था तभी तक जीवित रह सकती है, जब तक उसमें नये रक्त का संचार होता रहे। क्योंकि इसके बन्द हो जाने से उसकी मृत्यु निश्चित है। मैं जिस संस्था का सदस्य हूँ उसका विश्वास है कि जब तक पूर्ण स्वराज्य की प्राप्ति नहीं हो जाती तब तक कांग्रेस के अन्दर एकता बनी रहे, हम इसे कभी नही भूल सकते। हम इस बात का विश्वास दिलाते हैं कि चाहे हमारे साथ कैसा भी बर्ताव हो हमारी यही नीति बनी रहेगी। १९४२ के ९ अगस्त को कांग्रेस ने "भारत छोड़ो" का प्रस्ताव पास किया था, किन्तु अंग्रेज आज भी यहां मौजूद हैं, आज भी यूनियन जैक फहरा रहा है। इसलिये हमे यह सोचना है कि हम किस तरह उन्हें यहां से निकाल भगायें। यूनियन जैक को फाड़ फेंकें, आग मे जलादें और उसकी धज्जियां उड़ादें! इन्हीं बातों को

को ध्यान में रख कर आगे के लिए अपना संगठन करना चाहिये। जेलखाने से बाहर आने पर हमने जो कार्य आरम्भ किया, उस पर हमें स्वयम् कभी-कभी सन्देह होता था कि हम ठीक कर रहे हैं या गलत। किन्तु आज जब मै आप मे यह उत्साह पाता हूँ तो कुछ और ही समझ रहा हूँ। आज मेरा भ्रम अच्छी तरह दूर हो गया है और हमारा विश्वास है कि आपकी हमदर्दी एवम् सहायता से हम निरन्तर आगे बढ़ते जायगे।

आज मै एक नया रहस्योद्घाटन करना चाहता हूँ, और वह जमशेदपुर के पुलिस वालों का विद्रोह के सम्बन्ध मे है। यह एक नई बात हुई जो शायद और कहीं नही हुई। वहां के करीब ७०० पुलिसके सिपाहियोंने बगावत करदी थी, और देशवासियो पर लाठी चलाने से इन्कार कर दिया था। उन्हे दबाने के लिये दस-पन्द्रह हजार गोरे भेजे गये, ३२ सिपाही गिरफ्तार किये गये, फिर भी उन सिपाहियों ने हिम्मत नही हारी। आज हमे उन सिपाहियो की भी याद आ रही है, और मैं उम्मीद करता हूँ कि उनके और पुलिस भाई भी इस बात से सबक लेंगे तथा जब समय आयेगा तब उस पर अमल करेंगे। आगे चल कर आपने कहा कि कांग्रेस हाई कमाण्ड की ओर से [illegible] कहा जाता है कि उन्हे कब लड़ना है, या कब नही लड़ना है— इसकी पूरी जानकारी वे रखते हैं। किन्तु मुझे इस बात से बहुत दुःख हुआ कि जब हमारे नेतागण जेलो से बाहर निकले तो उन्होने हमारी गलतियो को ही सामने रखा। [illegible] कि स्वयं उन्होने भी एक गलती की थी और बहुत बड़ी [illegible] की थी। हम यहां इस बात का जिक्र किये बिना नहीं रह सकते कि उस समय कांग्रेस हाई कमाण्ड ने बड़ी [illegible]

काम लिया। १६४२ में जो स्थिति थी, वह किसी भी देश में बार-बार नहीं आती। अंग्रेजों को निकालने का वह सुन्दर मौका था जो कि हाथ से निकल गया।

आश्चर्य तो यह है कि गुमराह देश-वासियो को राह दिखाने के लिये जिन्होंने उस घोर अन्धकार मे प्रकाश की धुन्धली ज्योति जगाई, हमारे नेतागण उन्हें ही गलतियां सुझाते हैं और यह भूल जाते हैं कि दरअसल उस समय उनको ही मशाल लेकर आगे चलना था। हम लोगों पर देश के साथ गद्दारी करने का भी दोषारोपण किया जाता है।

भावी कार्य-क्रम

अपने भावी कार्यक्रम की चर्चा करते हुए आपने कहा कि '१६४२ में' 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' का प्रस्ताव पास किया गया था किन्तु अंग्रेज आज तक भी भारत छोड़कर नहीं गये हैं और यहीं मौजूद हैं। नेतागण कहते हैं कि स्वराज्य आरहा है। मुझे शक है कि वह स्वराज्य कैसा होगा। मैं यह भी जानता हूँ कि गोलमेज सम्मेलनों से स्वराज्य नहीं मिला करता। फिर भी मेरा ख्याल है कि दिल्ली मे जो इन दिनो वार्त्ता चल रही है, वह गोलमेज सम्मेलन ही जैसी नहीं है बल्कि सन् १८५७ के बाद भी १६४२ की सबसे बड़ी क्रांति तथा नेता जी सुभाषचन्द्र बोस द्वारा की गयी आजाद हिन्द फौज की स्थापना का ही नतीजा है। उक्त फौज की स्थापना का भारत की स्थल, जल, एवं वायु सेना विभाग के लोगो पर क्या असर है यह बिल्कुल प्रत्यक्ष है। हम देख रहे हैं कि आज देश मे सर्वत्र राष्ट्रीय

भावना, आजादी की लहर तथा विद्रोह की आग फैली हुई है। और इन्हीं सब परिस्थितियों से बाध्य होकर विलायत से तीन मन्त्री आये हैं और कांग्रेस से समझौते की वार्त्ता कर रहे हैं।

मन्त्रि मिशन वार्त्ता के सम्बन्ध मे जयप्रकाश बाबू ने कहा कि अगर किसी प्रकार वार्त्ता सफल भी हो जाय फिर भी यह निश्चित है कि इससे सोलह आना स्वराज्य नहीं मिल सकता। कारण यह है कि हम दरअसल अभी तक सोलह आने स्वराज्य लेने के योग्य नही हो सके हैं। पिछले चुनाव का उदाहरण हमारे सामने है। अगर कुल ४० सीटों में से ३० पर ही हमारा कब्जा हो जाता, तब भी हम किसी कदर स्वराज्य पाने के योग्य हो सकते थे। किन्तु ऐसा नही हुआ। इसलिये मुमकिन है कि हमें जो स्वराज्य मिलेगा वह खण्डित स्वराज्य ही होगा। अन्त मे आपने कहा कि मैं अपने प्रति प्रदर्शित किये गये सम्मान के लिये आप सबों को पुनः धन्यवाद देता हूँ और निवेदन करना चाहता हूँ कि आप उस दिन का इन्तजार करें जब कि मैं क्रान्ति के कार्यक्रम को आप के सामने रखने मे समर्थ हो सकूं।

क्रान्तिपूर्ण अभिवादन

हजारी बाग जेल से निकलकर बा० जयप्रकाश ने देश में सर्वत्र घूम घूम कर आन्दोलन का सक्रिय अध्ययन किया। वास्तव में उनके बाहर आने पर ही देश में सर्वत्र जागृति के चिन्ह दिखाई देने लगे थे। उन्होंने स्वतन्त्रता के समस्त सैनिकों के नाम जो 'क्रान्तिपूर्ण अभिवादन' नाम से विज्ञप्ति छपवाई थी, वह निम्न प्रकार है:—

साथियो,

सब से पहले मैं आपको तथा उन साथियों को जो युद्ध वन्दी हो गये हैं, शत्रु से भारी मोर्चा लेने के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ। हमारे इस चिर-पीड़ित तथा दलित देश में ऐसी कोई लड़ाई पहले कभी नही हुई और न ही होने की आशा थी। वास्तव में यह वही "खुला विद्रोह" था जिसका आयोजन हमारे बेजोड़ नेता महात्मा गांधी ने किया था।

फिलहाल तो यह विद्रोह निस्सन्देह दबा दिया गया दिखाई देता है। मुझे आशा है कि आप मेरे इस विचार से सहमत होंगे कि यह केवल कुछ समय के लिए ही, दबाया गया है। इससे हमें कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए। सच तो यह है कि यदि पहला ही प्रहार सफल हो जाता और उससे साम्राज्यवाद पूर्णतः नष्ट हो जाता, तब वह आश्चर्य की बात होती। शत्रु ने स्वयं ही यह स्वीकार किया है कि इस विद्रोह से उसकी सत्ता नष्ट होते होते बच गयी। इसी से प्रगट होता है कि हमारी राष्ट्रीय क्रान्ति का प्रथम अध्याय कितना सफल रहा।

और प्रथम अध्याय को किस प्रकार दबाया गया ? क्या ये शत्रु की सैन्य शक्ति, गुंडाशाही का बढ़ता हुआ दौरदौरा, लूटपाट, अग्नि और हत्या के कांड थे, जिन्होंने यह कार्य किया ? नहीं। यह समझना गलत है कि "विद्रोह" को "दबा दिया" गया है। सब क्रान्तियों के इतिहास से पता चलता है कि क्रान्ति कोई घटना विशेष नही होती। यह तो एक अध्याय, एक सामाजिक क्रम का नाम है। और फिर क्रान्ति के विकास मे उतार-चढ़ाव स्वाभाविक ही हैं। इस समय हमारी क्रान्ति उन्नत होकर विजय पर विजय प्राप्त करने की बजाय जल्दी मे उतार [illegible] चलने लगी है, इस लिए नही कि साम्राज्यवादी आक्रान्ताओ ने अपने अधिक शक्तिशाली पार्थिव बल का प्रयोग किया है बल्कि इसके दो महत्त्वपूर्ण कारण है।

पहले तो राष्ट्रीय क्रांतिकारी शक्तियो का कोई कुशल संगठन नहीं था जो कार्य करता रहता और उन प्रभावपूर्ण शक्तियों का संचालन करता जिनका विकास हो गया था। यद्यपि कांग्रेस एक विशाल सङ्गठन है, फिर भी वह उस सीमा तक तैयार न था जिस तक कि इस क्रान्ति को पहुचना था। संगठन की इतनी भारी कमी थी कि महत्वपूर्ण कांग्रेसजन भी [illegible] प्रगति से अनभिज्ञ रहे और क्रांति की प्रारम्भिक अवस्था मे बहुत से कांग्रेसी क्षेत्रो मे काफी देर तक यह विवाद [illegible] विषय रहा कि जो कुछ जनता कर रही है क्या वास्तव में यह कांग्रेस के कार्यक्रम के अनुसार ही था। इस सम्बन्ध में [illegible] शोचनीय बात उल्लेख करने योग्य है कि पदाधिकारी [illegible] शाली कांग्रेसजन अपनी मनोवृत्ति को इस "[illegible]" [illegible] अंतिम लड़ाई" की भावना के धरातल तक न उठा सके।

महात्मा गांधी, डा० राजेन्द्रप्रसाद या सरदार पटेल जैसे नेताओं के दृष्टिकोण में जो तत्परता, आवश्यकता और दृढ़ निश्चय दिखाई देते थे उनका समस्त कांग्रेस-नेताओं के मस्तिष्क और हृदय पर प्रभाव नहीं पड़ा।

दूसरे, जब क्रांति का प्रथम अध्याय समाप्त हो गया तो जनता के सम्मुख कोई आगे का कार्यक्रम नहीं रखा गया। लोगों ने अपने क्षेत्रों में बृटिश राज को पूर्णतः छिन्न-भिन्न कर देने के बाद यह समझ लिया कि उनका कार्य समाप्त हो गया है और वे अपने घरों को यह सोचे बिना चले गये कि उन्हें और क्या करना है। यह उनका दोष नहीं था। गलती तो हमारी थी। दूसरे अध्याय के लिए उनके सम्मुख हमे कार्यक्रम प्रस्तुत करना चाहिए था। जब यह नहीं किया गया तो विद्रोह गतिहीन हो गया और उतार का रूप प्रारम्भ हो गया। विद्रोह की धीमी गति को और अधिक शिथिल बनाने के लिए जब पर्याप्त संख्या में अंग्रेज सैनिक आये तो इससे कितने ही दिन पहले यह स्थिति उत्पन्न हो गयी थी। दूसरे अध्याय में जनता के सम्मुख क्या कार्यक्रम उपस्थित करना चाहिए था ? इसका उत्तर इसी से दिया जा सकता है कि क्रांति किस प्रकार की होती है। क्रांति एक विनाशात्मक क्रिया ही नहीं, बल्कि साथ ही एक विशाल रचनात्मक शक्ति भी होती है। कोई भी क्रांति सफल नहीं हो सकती यदि वह केवल विनाशात्मक ही है। यदि इसे जीवित रहना है तो, नष्ट की गयी सत्ता के स्थान मे इसे नयी सत्ता को जन्म देना चाहिए। हमारी क्रांति को भी देश के विस्तृत क्षेत्रों में विनाशात्मक कार्य को पूरा करने के बाद रचनात्मक कार्यक्रम की आवश्यकता थी। जिन लोगो ने विदेशी सत्ता के उन साधन

और लक्ष्यों को नष्ट कर दिया, जिनके द्वारा वह शासन करती थी और उसके अधिकारियों को भगा दिया तो उनको चाहिए था कि अपने अपने क्षेत्रों में वे क्रान्तिकारी सरकार के दल स्थापित करते और अपनी पुलिस और सेना को जन्म देते। यदि ऐसा कर दिया जाता तो इससे अभूतपूर्व मात्रा में शक्ति उपलब्ध हो जाती और रचनात्मक कार्य के लिए इतना विस्तृत क्षेत्र प्राप्त हो जाता कि क्रान्ति की लहरें उत्तरोत्तर ऊपर उठती चली जातीं और—यदि यह क्रान्ति देशव्यापी होती—अन्त में साम्राज्यशाही सत्ता छिन्न-भिन्न हो जाती और समस्त देश की सर्वोच्च सत्ता जनता के हाथ आ जाती।

कुशल सङ्गठन तथा राष्ट्रीय क्रान्ति के पूर्व कार्यक्रम का अभाव, वर्त्तमान क्रान्ति के प्रथम अध्याय में शिथिलता आजाने के ये दो कारण थे।

अब प्रश्न यह है कि हमारे सम्मुख क्या कार्य है ? पहले तो हमें अपने और जनता के मन से खिन्नता को निकाल देना चाहिए और इसके स्थान पर प्राप्त सफलता की प्रसन्नता और भावी सफलता की आशा का एक वातावरण उत्पन्न करना चाहिए।

दूसरे, यह क्रान्ति किस प्रकार की है इस बात को हमें अपने और जनता के मस्तिष्क के सम्मुख [illegible] रखना चाहिए। स्वतन्त्रता के लिए यह हमारी [illegible] है। अतः हमारा उद्देश्य विजय प्राप्त करने से [illegible] कुछ नहीं हो सकता। इसमें समझौते की कोई [illegible] नहीं है राष्ट्रीय सरकार की स्थापना के लिए [illegible]

व्यक्ति जो प्रयत्न कर रहे हैं वे केवल निष्फल ही नहीं बल्कि उस अंश तक निश्चित रूप से हानिकर भी हैं जिस अंश तक वे जनता के ध्यान को वास्तविक समस्या से दूर ले जाते हैं। "भारत-छोड़ो" और "राष्ट्रीय सरकार" के नारों के बीच कोई समझौता नहीं हो सकता। जो लोग कांग्रेस और लीग की एकता के नारे पर जोर दे रहे हैं वे साम्राज्यशाही प्रचार में सहायता पहुचा रहे हैं। राष्ट्रीय सरकार को स्थापना में एकता का अभाव अड़चन नहीं डाल रहा है बल्कि साम्राज्य की सत्ता त्यागने की स्वाभाविक अनिच्छा अड़चन डाल रही है। श्री चर्चिल ने इस सम्बन्ध में कोई सन्देह नहीं रखा। जब उन्होंने हाल ही में कहा था कि साम्राज्य का दिवाला निकालने के लिये मैंने सम्राट के प्रधान मंत्री का पद ग्रहण नहीं किया है। वह समाज का मूर्ख विद्यार्थी है जो यह आशा करता है कि साम्राज्य अपने आप विलीन हो जाते हैं। वे भूतपूर्व 'क्रान्तिकारी" जो विनम्र स्मारक-पत्रो की प्रलयकारी शक्ति द्वारा भारत को साम्राज्यवाद से मुक्त करने का प्रयत्न कर रहे हैं, वे अपने आप को इतिहास के सबसे अधिक दयनीय मूर्ख बना रहे हैं'।

साम्राज्यशाही के शब्दजाल के अनुसार सामायिक आवश्यकता भारतीय जीवन के महत्वपूर्ण अंगों मे एकता की नहीं है, बल्कि राष्ट्र की समस्त क्रान्तिकारी शक्तियों के एकीकरण की है, और कांग्रेस के झंडे के नीचे इनका एकीकरण पहले ही हो चुका है। कांग्रेस और लीग की एकता से इन शक्तियों मे वृद्धि होने की संभावना नहीं है, किन्तु इनके और भी पिछड़ जाने की संभावना है, क्योंकि लीग संभवतः क्रान्ति और स्वतन्त्रता के मार्ग का अनुसरण नहीं कर सकती।

तब, साम्राज्यवाद को समूल नष्ट करना ही हमारा उद्देश्य है और इसको अविचल रूप से हमें अपने ध्यान मे रखना चाहिए। इस प्रश्न पर कोई समझौता नही हो सकता। या तो हम विजयी होंगे या पराजित हो जायेगें, और पराजित तो हम होंगे नही। केवल इसी लिए नही कि हमने विजय प्राप्ति के लिए निरन्तर कार्य करने का संकल्प कर लिया है बल्कि इस लिए भी कि संसार की प्रभावशाली शक्तियां साम्राज्यवाद और फासिस्ट-वाद के विनाश को दिनपर-दिन अधिक निकट ला रही है। यह विश्वास न करिये कि शान्ति सम्मेलन मे परिश्रम के साथ इस युद्ध के जो परिणाम निश्चित किये जायेंगे, वे युद्धोत्तर कालीन संसार के भाग्य का भी निपटारा कर देंगे। युद्ध एक विचित्र रसायनज्ञ है और इसके गुप्त कमरो मे ऐसी शक्तियां सूक्ष्म-रूप मे विद्यमान हैं जो विजयी तथा विजित दोनो की योजनाओं को समान रूप से धूल मे मिला देती है। गत महायुद्ध की समाप्ति के बाद किसी भी शांति सम्मेलन ने यह निश्चय नहीं किया था कि यूरोप और एशिया के चार विशाल साम्राज्य—रूसी, जर्मन, आस्ट्रियन तथा ओटोमन—धूल मे मिल जायेंगे। न ही रूसी जर्मन और तुर्क क्रांतियां लायड जार्ज, क्लिमेन्शू या विल्सन द्वारा निर्धारित की गयी थी।

समस्त संसार मे, जहां लोग लड रहे हैं, मर रहे हैं और संकट झेल रहे है, रसायनज्ञ अपना काम कर रहा है, जैसा कि वह भारत मे कर रहा है, जहां इसने पहले ही [illegible] सामा-जिक क्रांति फैला दी है। वर्तमान युद्ध की समाप्ति के बाद चर्चिल, रूजवेल्ट, हिटलर और तोजो, इनमें से कोई भी [illegible] के भाग्य का निर्णय न करेगा। ऐसी [illegible]

निधित्व करते हैं, इस ऐतिहासिक कार्य को पूरा करेगी। क्या इसमें हम सन्देह कर सकते हैं कि क्रांतिकारी शक्तियां सर्वत्र जागृत हो रही हैं ? क्या हम विश्वास कर सकते हैं कि भविष्य के सम्बन्ध में सोचे विचारे बिना लाखों आदमी अकथ कष्ट उठा रहे हैं ? क्या हम विश्वास कर सकते हैं कि लाखों व्यक्ति उन असत्य बातों से सन्तुष्ट हैं जो उनके शासक उनको नित्य बताते हैं ? नहीं ऐसा नहीं हो सकता।

इसलिए पूर्ण विजय के उद्देश्य पर निश्चित रूप से अपनी दृष्टि जमाकर, हमें आगे बढ़ना है। ठोस रूप से हमें क्या करना चाहिए ? जब एक जनरल लड़ाई मे हारता है या जीतता है, तो वह क्या करता है ? क्या वह शक्ति को संगठित करता है और दूसरी लड़ाई के लिए तैयारी करता है ? संगठन और तैयारी करने के लिए रोमेल, भारी विजय प्राप्त करने के बाद, अल-अलामीन पर ठहर गया। अलेकजेन्डर ने भी तैयारी की और उसने अपनी भारी पराजय को प्रशंसापूर्ण विजय में परिणत कर दिया। हमारी तो यह पराजय भी नहीं थी। वास्तव मे हमने लड़ाई के पहले दौर मे विजय प्राप्त की क्योंकि हमारे देश के विस्तृत क्षेत्र मे आक्रान्ता अंग्रेजो की शासन प्रणाली का पूर्णतः उन्मूलन कर दिया गया। जनता ने अब यह अनुभव से जान लिया है कि जब वह सामूहिक शक्ति से आक्रमण करती है तो पुलिस, मजिस्ट्रेटों, अदालतों और जेलों का बना हुआ भव्य-भवन—जो बृटिश राज के नाम से प्रसिद्ध है—कागजी घर के समान सिद्ध होता है। इस सबक के भूलने की संभावना नहीं है और दूसरे आक्रमण के लिए यह पहला मोर्चा होगा।

इसलिये इस समय हमारा तीसरा और सब से अधिक महत्वपूर्ण कार्य आगामी भारी आक्रमण के लिए तैयारी करना है। शायद संगठन और अपने को अनुशासन मे रखना—इस समय हमारे मूलमंत्र है।

अगला आक्रमण प्रारम्भ करने की हम कब आशा करें? कुछ लोगों का विचार है कि आगामी ५ या ६ साल तक जनता फिर विद्रोह करने के लिए तैयार न होगी। शान्ति-काल में यह अनुभव ठीक हो सकता है लेकिन तूफानी युद्ध-पीड़ित संसार पर, जिसमे घटना-चक्र तेजी से चल रहा है, यह लागू नहीं होता। अंग्रेज तानाशाहो—लिनलिथगोओं, हैलेटो, स्टुअर्टों तथा ऐसे ही अन्य हजारों लोगो और उनके नीचे भारतीय नौकरो—के पाशविक अत्याचार से जनता शायद इस समय भले ही दब गयी हो, लेकिन उसको अत्याचारियो का मित्र बनाने मे उन्हे कही भी सफलता नहीं मिली है। समस्त देहाती क्षेत्रों मे जहां अंगरेजो ने अपने ढंग से नाजियो जैसे पैशाचिक अत्याचार किये थे, अत्यधिक तीव्र असन्तोष, क्रोध, और प्रतिकार की पिपासा तीव्र रूप से फैली हुई है। जनता को स्मरण रखना है कि फिर आक्रमण करने तथा आगामी आक्रमण की योजनाओ को क्रियात्मक, सम्मिलित और अनुशासनपूर्ण ढंग से कार्यान्वित करने के लिए जोरदार तैयारी की जा रही है। आगामी आक्रमण के लिए यह पूर्णतः निश्चित होगा। अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओ से भी हमे सहायता मिल सकती है। इसके साथ गांधी जी का आमरण अनशन है, जो है [illegible] कर सकते हैं। यह हमें तथा लोगो को [illegible]

है कि हम और वे शिथिल न पड़े, विचलित न हों और विश्राम न करें।

आगामी आक्रमण का प्रश्न क्रान्ति के रचनात्मक कार्य के प्रश्न—अर्थात् क्रान्तिकारी सरकार की शाखाएं स्थापित करना—से सम्बद्ध है। पिछले प्रश्न से हिंसा और सशस्त्र सेनाएं रखने का प्रश्न सम्बन्धित है। इसलिए इस प्रश्न के सम्बन्ध में मैं अपना मत आपके सम्मुख प्रस्तुत करना चाहता हूँ, क्योंकि मेरे विचार मे हमारी क्रान्ति के भविष्य से इसका गहरा सम्बन्ध है।

सब से पहले, मैं अनुभव करता हूँ कि बृटेन की सरकार ने इस क्रान्ति के समय किये गये हिंसात्मक कार्यो के सम्बन्ध मे जो शोर मचाया है उसके बारे मे कुछ शब्द कहूँ। अत्यधिक उत्तेजना दिलाने पर कुछ हिंसात्मक कार्य अवश्य किये गये थे, लेकिन विद्रोह की विशालता और वैयक्तिक तथा सामूहिक अहिंसा के आश्चर्यजनक प्रयोग की तुलना मे यह नगण्य है। शायद यह अनुभव नहीं किया गया है कि विदेशी सत्ता के हजारों अंग्रेज और भारतीय कर्मचारियो का जीवन कुछ दिनों तक जनता की दया पर निर्भर था। जनता ने अपने शत्रुओ पर दया की और उनका जीवन तथा सम्पत्ति बख्श दी, और उन हजारों वृद्धों और नवयुवको के शान्त और दिव्य साहस के सम्बन्ध मे क्या कहना है जिन्होंने हाथ मे क्रांति का झंडा लिए और मुंह से "इन्कलाब जिन्दाबाद" का नारा लगाते हुए अपने सीने मे शत्रु की गोलियां खायीं। क्या इस दैवी उत्साह के लिए अंग्रेजो के पास कोई प्रशंसा का शब्द है?

किसी भी स्थिति में, क्या यह उल्लेखनीय नहीं है कि वृटिश सत्ता जो हिंसा से ओत-प्रोत है, जो हिंसा पर आधारित है, जो प्रतिदिन अत्यधिक क्रूरतापूर्ण हिंसात्मक कार्य करती है, जो लाखो व्यक्तियों को पीसती है और उनका खून चूसती है, दूसरों के हिंसात्मक कार्यों पर इतना शोर मचाये। इससे अंग्रेजों का क्या सम्बन्ध है कि उनसे लड़ने के लिए हम किन शस्त्रों का प्रयोग करते है? क्या उन्होंने यह प्रतिज्ञा करली है कि यदि विद्रोही अहिंसात्मक रहे तो वे भी अहिंसात्मक नीति का पालन करेंगे? हम चाहे किन्ही शस्त्रों का प्रयोग करे अंग्रेजों के पास तो हमारे लिए गोलियां, लूटमार, बलात्कार और अग्नि-कांड ही है। इसलिए इस सम्बन्ध में उनको मौन ही रहना चाहिए कि हम उनके विरुद्ध किस ढंग से लड़ते है। इसका निश्चय करना एकमात्र हमारा ही काम है।

इस प्रश्न पर विचार करते हुए कि इसका हम पर क्या प्रभाव पड़ता है, पहले मै आपको अहिंसा के सम्बन्ध में एक ओर गांधी जी और दूसरी ओर कार्यसमिति तथा अखिल भारतीय कांग्रेस महासमिति के विचारों में जो मतभेद है उसका स्मरण कराऊंगा। गांधी जी किसी भी स्थिति में अहिंसा से विचलित होने के लिए तैयार नहीं है। उनके लिए यह प्रश्न विश्वास और जीवन सिद्धान्त का है। लेकिन कांग्रेस के लिए ऐसा नहीं है। तभी कांग्रेस ने इस युद्ध के बीच बार बार यह कहा है कि यदि भारत स्वतन्त्र होगया या यदि राष्ट्रीय सरकार की स्थापना भी होगयी तो वह शस्त्रों से आक्रमण का विरोध करने के लिए तैयार हो जायगी। लेकिन, यदि हम शस्त्रों का

प्रयोग करके जापान और जर्मनी के विरुद्ध लड़ने को तैयार है तब हमें बृटेन के विरुद्ध लड़ने में इसी ढंग का प्रयोग करने में क्यों इन्कार करना चाहिए ? इसका केवल यही उत्तर हो सकता है कि सत्ता-युक्त कांग्रेस सेना रख सकती है, परन्तु सत्ताहीन कांग्रेस नहीं रख सकती। लेकिन यदि क्रांतिकारी सेना की स्थापना की गई या यदि वर्तमान भारतीय सेना या इसका एक भाग विद्रोह करदे तो क्या यह हमारे लिए असंगत नहीं होगा कि पहले तो हम सेना से विद्रोह करने के लिए अनुरोध करें और इसके बाद विद्रोहियों से यह कहें कि वे हथियार रखदें और नग्न सीने से अंग्रेजों की गोलियों का सामना करें ?

कांग्रेस की—गांधी जी की नहीं—स्थिति के सम्बन्ध में मेरी निजी व्याख्या स्पष्ट और निश्चित है। यदि देश स्वतन्त्र होगया तो कांग्रेस हिंसात्मक रूप से आक्रमण का सामना करने के लिए तैयार है। अच्छा, हमने अपने आपको स्वतन्त्र घोषित कर दिया है और बृटेन को आक्रान्ता राष्ट्र भी करार दे दिया। फलतः बम्बई प्रस्ताव के अन्तर्गत बृटेन से सशस्त्र लड़ना हमारे लिए उचित है। यदि यह गांधी जी के सिद्धान्तों के अनुरूप नहीं है तो इसमें मेरा कोई दोष नहीं। कार्यसमिति और अखिल भारतीय कांग्रेस महासमिति ने गांधी जी के मत से भिन्न मत प्रगट किया है और अहिंसा का युद्ध में प्रयोग करने के सम्बन्ध में जो उनकी धारणा है उसको अस्वीकार किया है। अंग्रेजी सत्ता ने इस प्रस्ताव को उचित रूप देने तथा नेतृत्व करने के लिए गांधी जी को अवसर नहीं दिया। इसलिए व्याख्या का अनुसरण करते हुए हमें गांधी जी के प्रति झूठा नहीं बनना चाहिए। जहां तक मेरा सम्बन्ध है, मैं अनुभव करता हूँ कि

एक खरे कांग्रेसी की हैसियत से—मेरे समाजवाद को इस प्रश्न से असम्बद्ध रखते हुए—यदि मै बृटिश आक्रमण का सशस्त्र विरोध करूं, तो यह मेरे लिए उचित ही होगा।

मुझे यह भी कहना चाहिये कि इस बात को स्वीकार करने में मुझे किसी प्रकार की हिचकिचाहट नही है कि एक वीर पुरुष की अहिंसा, यदि इसका व्यापक रूप से प्रयोग किया जाय तो हिंसा को अनावश्यक सिद्ध कर देगी। लेकिन ऐसी अहिंसा के अभाव में मुझे चाहिए कि इस क्रान्ति की प्रगति को रोकने तथा इसको असफल बनाने के लिए धर्म शास्त्र की सूक्ष्मताओ से ढकी हुई कायरता को स्थान न दूं।

क्रान्ति के अंतिम अध्याय की पेचीदगियो को स्पष्ट रूप में समझ कर, हमें अपनी सेनाओ को तैयार और संगठित करना है और उन्हे अनुशासन की शिक्षा तथा ट्रेनिंग देनी है। जो भी कुछ हम करे, निरन्तर हमे इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि हमारा यह कार्य केवल षडयंत्र रूप में ही नहीं होगा। यह जन-समूह का सर्वाङ्गीण विद्रोह होगा और यही [illegible] है। इसलिए हमारे विशाल टेक्निकल कार्य के [illegible] जन समूह में गांवो के कृषको और कारखानो, खानो, [illegible] अन्य स्थानों में काम करने वाले श्रमिको में—[illegible] करना चाहिए। हमे चाहिए कि हम उनमें निरन्तर प्रचार [illegible] उनकी वर्तमान कठिनाइयो मे सहायता [illegible] मांगो की लड़ाई के लिए उनका सङ्गठन [illegible] कार्यो के लिए इनमे से चुने हुए सैनिक भरती [illegible] नैतिक तथा टेक्नि[illegible] दृष्टि से इनको ट्रेनिंग [illegible]

द्वारा थोड़े लोग वह सफलता प्राप्त कर सकते हैं जिसे पहले हजारों लोग प्राप्त नहीं कर सके थे। प्रत्येक फिरके ताल्लुके, थाने, कारखाने और वर्कशाप में या अन्य औद्योगिक केन्द्रों में हमारे सैनिकों का एक ऐसा दल अवश्य होना चाहिए जो आगामी विद्रोह के लिये भावनाओं और सामग्री की दृष्टि से सुसज्जित हों।

भारतीय सेना तथा सरकारी व्यवस्था के सम्बन्ध में भी हमें कार्य करना है। हमें आन्दोलन और प्रदर्शन संबंधी कार्य करने है। स्कूलो, कालिजों और वाजारों में हमारे लिए कार्य हैं। रजवाड़ों में और भारत की सीमाओ पर भी कार्य करना है। यहां पर हमारी तैयारियों को अधिक साकार रूप मे वर्णन करना मेरे लिए सम्भव नहीं है। इतना ही कह देना पर्याप्त है कि हमें अत्यधिक कार्य करना है और प्रत्येक व्यक्ति के लिए कार्य है। बहुत सा कार्य तो इसी समय किया जा रहा है। लेकिन अभी और विशाल कार्य करना बाकी है।

युवकों के अतिरिक्त इस समस्त कार्य को कौन पूरा कर सकता है? क्या यह आशा करना अत्यधिक है कि हमारे विद्यार्थी जिन्होंने अभी ही बड़ा गौरवपूर्ण उदाहरण उपस्थित किया है, अपने वीरतापूर्ण कार्यों का अनुसरण करते रहेंगे और जो वचन उन्होंने दिए हैं उनका पालन करेंगे? स्वयं विद्यार्थी ही इसका उत्तर देंगे।

मुझे यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि तैयारी का यह अर्थ नहीं है कि लड़ाई कुछ समय के लिए बन्द हो जायगी। नहीं, "झड़प", "सीमा क्षेत्र की कार्रवाई", "छोटी-मोटी मुठभेड़",

"लुका-छिपी की लड़ाई", "गश्त"—यह सब जारी रहना चाहिए। यह तो आक्रमण की तैयारी ही है।

जनता मे पूर्ण विश्वास और अपने लक्ष्य मे श्रद्धा रखते हुये हमे आगे बढ़ना चाहिए। हमें दृढ़ता से कदम रखना चाहिए। हमारा हृदय दृढ़ निश्चय की भावना मे पूर्ण और और दृष्टिकोण स्पष्ट होना चाहिये। भारतीय स्वतन्त्रता का सूर्य क्षितिज से ऊपर निकल आया है। हमारे सन्देह और झगडे, निष्क्रियता और अविश्वास के बादल उस सूर्य पर आवरण डाल कर हमें कहीं अपने ही द्वारा उत्पन्न हुए अंधकार में न डाल दे।

अत मे, साथियों, मै यह कहना चाहूँगा कि एक बार फिर आपके सम्मुख अपनी सेवाएं प्रस्तुत करके मुझे अनिर्वचनीय सुख और गौरव का अनुभव हुआ है। आपकी सेवा करने मे, हमारे नेता के अन्तिम शब्द "करो या मरो" मेरा पथ प्रदर्शन करेंगे, आपका सहयोग मेरी शक्ति, और आपका आदेश मेरी प्रसन्नता होगी।

भारत के किसी स्थल से

—जय प्रकाश नारायण

डाक्टर राममनोहर लोहिया

डाक्टर लोहिया का पालन पोषण और शिक्षा बम्बई में हुई थी। आपने कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी० ए० की परीक्षा पास की। इसके उपरान्त आप उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए जर्मनी चले गए। वहां से लौटने पर आपको एक अच्छी सरकारी नौकरी मिल सकती थी; परन्तु आप प्रारम्भ से ही राष्ट्रवादी रहे हैं. इसी कारण आपकी मनोवृत्ति नौकरी करने की नहीं हुई। जर्मनी मे आपने डाक्टरेट की डिग्री हासिल की थी। श्री लोहिया शरीर से अभी बिल्कुल युवा मालूम पड़ते हैं। इनका जन्म १९१० में हुआ था। ये जन्म से ही आदर्शवादी हैं। जब ये गया काग्रेस अधिवेशन मे प्रतिनिधि के रूप में गये थे, इनकी उम्र कुल १४ (चौदह) की थी।

जिस काल मे जर्मनी में थे वह काल जर्मनी के लिए बड़ा महत्वपूर्ण था। उसका संसार पर बहुत दूरगामी प्रभाव पड़ा है। इन्होने हिटलर को शक्ति पकड़ते देखा। एक दार्शनिक तथा राजनीतिक होने के नाते वहां जो कुछ हो रहा था इन्होने उसकी गुत्थी को ठीक ठीक समझ लिया था।

श्रीयुत लोहिया १९३३ मे भारतवर्ष वापिस आए। जब वे मद्रास पहुचे तो इनके पास एक पैसा भी न था वे सीधे 'हिन्दू' पत्र के दफ्तर में गये। वहां के फारेन एडीटर से मिले कुछ ही समय मे इन्होने इसको मना लिया। उसने उनको इस पत्र के लिए कुछ लिखने का काम दे दिया। वहां से उन्हें कुछ पैसे मिल गये जिसे लेकर वे कलकत्ता के लिए विदा हुए।

जिस समय श्री लोहिया भारत पहुचे यहां की स्थिति भी बड़ी गम्भीर थी। १६३४ से ३५ तक उन्होंने कलकत्ता में कांग्रेस समाजवादी दल की ओर से उग्रवादी नवयुवकों को संगठित किया। इस समय इन्होंने एक उग्रवादी साप्ताहिक पत्र 'कांग्रेस सोशलिस्ट' की नीव डाली और उसके सम्पादक भी रहे। यहां यह उल्लेखनीय है कि श्रीयुत लोहिया के जोश, साधन एवं पूर्ण-प्रतिभा से प्रभावित होकर बिरला जी ने अपने दिल्ली के पत्र 'हिन्दुस्तान टाइम्स' का काम उन्हे सौपना चाहा, परन्तु इन्होंने इसे ठुकरा दिया।

सन् १६३५ में पंडित जवाहरलाल नेहरू के बहुत आग्रह करने पर वे इलाहाबाद मे आल इंडिया कांग्रेस कमेटी के वैदेशिक विभाग के अध्यक्ष नियुक्त किये गए। सन् १६३८ में कांग्रेस आफिस को छोड़कर आप यू० पी० के किसानों तथा मजदूरों के बीच स्वतन्त्र रूप से कार्य करने चले गए। जब युद्ध छिड़ा तो ये उन थोड़े से भारतीय राजनीतिज्ञों में से थे जो अपने सूक्ष्म तथा तर्कपूर्ण मस्तिष्क एवं दार्शनिक [illegible] से युद्ध जनित समस्याओं को ठीक तरह समझते थे। [illegible] धुंधले रूप में, परन्तु बाद में स्पष्ट रूप से उन्होंने [illegible] की कि वह उस युद्ध से अलग रहे और [illegible] का निर्माण करे। यही कारण था कि १६४० में ही [illegible] कर लिया गया और उन्हें दो वर्ष की सजा हुई। [illegible] आरम्भ में वे जेल से छूटकर वापिस आ गए और [illegible] नेतृत्व किया।

जब इस समय होते हुए [illegible]
पाशविक शक्ति के विरुद्ध किये गए [illegible]

इतिहास लिखा जायगा तो निःसन्देह डा० लोहिया का नाम आन्दोलन के नेताओं के बीच के अत्युच्च स्थान पर अधिष्ठित होगा। डाक्टर लोहिया के साहस, सचाई, ईमानदारी और सद्-गुणों की कहानियाँ आज देश के रग-रग में सना गई हैं। उनकी इन बातों के पीछे बड़े-बड़े महत्त्वपूर्ण कारनामे छिपे हैं।

डाक्टर लोहिया बड़े दार्शनिक और कार्यशील व्यक्ति हैं। उनके साथ वादविवाद करने में बड़ा आनन्द आता है। इनके व्याख्यान में रसिकता और प्रतिभा होती है। वे बातें बहुत संभालकर करते हैं. परन्तु उन्हें इस काम के लिए रुकना नहीं पड़ता। ये शरीर के दुबले-पतले और काले रंग के हैं। ऐनक लगाते हैं। अपनी फरारी के दिनों में आपने बड़ी लम्बी-लम्बी मूछें लगाली थीं। यही कारण था कि उनके घनिष्ठ मित्र भी उन्हें कठिनाई से ही पहचान पाते थे। साधारणतया बाहर आप बिना मूंछ-दाढ़ी के रहते थे। इनका स्वभाव इतना नम्र है कि उनका कट्टर से कट्टर दुश्मन भी उनसे मित्रता करने की इच्छा रखता है।

कांग्रेस रेडियो का आयोजन

आप तीन यूरोपीय भाषाओं के विद्वान हैं। अन्तराष्ट्रीय राजनीति का आपको पूर्ण ज्ञान है। कांग्रेस के वैदेशिक विभाग में एक प्रवासी भारतीय विभाग भी खुला था. जो डाक्टर लोहिया की ही अनुपम सूझ थी। सन् १६३८ से आप अधिकतर जेलों ही में रहे। अगस्त आन्दोलन के दिनों में आप १८ महीने तक छिपे रहे और सर्व श्री पटवर्धन, जयप्रकाश नारायण, श्रीमती अरुणा आसफअली तथा उषा मेहता के साथ मिल कर कार्य करते रहे। आन्दोलन के कार्य विस्तार देने के लिए ने

एक 'कांग्रेस-रेडियो' का भी आयोजन किया; जिससे आप अपने भाषण व सन्देश देकर भारतीय जनता को आन्दोलन के लिए तैयार करते थे। उन्ही दिनों आपने युक्त प्रान्त के तत्कालीन गवर्नर सर मारिस हैलेट तथा भारत के तत्कालीन वायसराय लार्ड लिनलिथगो को एक खुला पत्र भी लिखा था; जिससे सरकार आतंकित हो उठी थी।

गिरफ्तारी और रिहाई

आप आन्दोलन का कार्य चुपचाप ज्यों-त्यो आगे बढ़ा ही रहे थे कि अचानक सन् १९४४ मे आप पंजाव पुलिस द्वारा गिरफ्तार करके लाहौर के शाही किले मे नजरबन्द कर दिये गए। वहाँ पर आपको अनेक यातनाये दी गई जिनका आपके स्वास्थ्य पर बहुत ही घातक प्रभाव पड़ा। आपके जेल मे [illegible] समय ही आपके पिताजी का लम्बी बीमारी के कारण [illegible] मे स्वर्गवास होगया; किन्तु सरकार ने उस अवसर पर भी आपको जेल से रिहा करके अपनी शिष्टता का परिचय [illegible] दिया। बाद में जब यू० पी० आदि मे जनता के [illegible] तो आप बा० जयप्रकाश नारायण के साथ ही आगरा [illegible] कर दिये गए। आपको जयप्रकाश बाबू के साथ ही [illegible] आगरा सैन्ट्रल जेल मे बदल दिया गया था।

पुनः गिरफ्तारी और रिहाई

आप जेलसे रिहा होकर भी चुप न [illegible] जागरण करना प्रारम्भ कर दिया। इसी [illegible] गए और वहाँ के [illegible]

सभा में भाषण देते हुए इसी १६ जून को पोर्च्युगीज गवर्नमेंट द्वारा गिरफ्तार कर लिये गए। वहाँपर आपकी गिरफ्तारी पर पूर्ण हड़ताल रही। साथ ही जनता की ओर से यह भी घोषित किया गया कि यदि डाक्टर लोहिया को रिहा नहीं किया गया तो जनता बहुत ही शीघ्र एक आन्दोलन प्रारम्भ कर देगी। आपने १८ जून को गोआ से इस आशय का एक वक्तव्य दिया था कि यहाँ सभी प्रकार के सामाजिक, सांस्कृतिक और सुधार सम्बन्धी कार्यों पर प्रतिबन्ध क्यों है ? बाद में आप रिहा कर दिये गए।

फिर भी हमारे देश में कुछ ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने उनके व्यक्तित्व पर आक्षेप किए और अनावश्यक प्रचार भी किया। प्रान्त की पुलिस ने उन्हें काफी बदनाम किया। आन्दोलन में उन्हें कई बार उससे मुकाबला करना पड़ा। कई बार तो वे पुलिस के सामने से ही उसकी आंखों में धूल झोंककर बच गए। जब कभी उनकी मुठभेड़ पुलिस से हुई तो वे सशस्त्र, सुरक्षित रहते थे। इस कारण पुलिस भी आतंकित रहती थी। अन्त में जब श्री लोहिया पकड़े गए तो उनपर जो-जो अत्याचार किये गए वे अवर्णनीय हैं। परन्तु वह दिन दूर नहीं जबकि गिन-गिनकर इनका बदला चुकाया जायगा।

———

अगस्त-क्रान्ति और डा० लोहिया

अगस्त-क्रान्ति के प्रमुख सेनानी डा० राममनोहर लोहिया ने आन्दोलन में जो कार्य किया, वह सभी पाठको पर अवगत है। उनकी कार्य शैली, राजनीति-कुशलता की धाक सभी नेता मानते हैं। सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री वाई० के० मेनन ने अगस्त-आन्दोलन के दिनों श्री लोहिया से भेंट के जो संस्मरण लिखे हैं, उनसे इसका भली प्रकार परिचय मिलता है—संस्मरण निम्न प्रकार हैं:—

दो मंजिल सीढ़ियां चढ़ चुकने के पश्चात उस महिला ने हांफते हुए पूछा—"क्या और ऊपर जाना होगा ?"

मैंने ढ़ाढ़स देते हुए उत्तर दिया—"हां केवल दो [illegible] और।"

उसने मेरी ओर देखा और कहा—"बस," [illegible] 'बस' कहने मे एक माधुर्य था जिसे मैं भूल नहीं सकता।

सांस पर सांस लेते हुए शेष दो मंजिलों [illegible] एक अंधेरे मार्ग में पहुंची और बोली—"यहां तो [illegible] है कि कुछ दिखाई नही पड़ता।" मैंने दियासलाई [illegible] जलाई। स्थान बड़ा भयानक मालूम पड़ता था। मैंने [illegible] के लिये उसकी बांह पकड ली. कारण मैं [illegible] था। उसे सान्त्वना देने के लिए मैंने कहा—"मैं [illegible] एक बहुत बड़े प्रतिभाशाली क्रान्तिकारी से [illegible] जा रहा हूँ। आप स्वयं देखेंगी कि वे [illegible]"

[illegible] कांप रही थी—मानो उसे [illegible]

रहा हो। उसने मुझसे पूछा—क्या आपको निश्चय है कि मेरा मिलना उनके लिए हानिकर न होगा ?" फिर आगे बताया—"देखिए मुझे इसका तनिक भी भय नहीं कि मुझे क्या होगा, लेकिन मैं यह अवश्य आशा करती हूँ कि मेरे मिलने से उन्हें कोई आपत्ति न आयेगी।"

मैंने धीरज देते हुए उससे कहा—"आप बिल्कुल चिन्ता न करें, उन्होंने गत ६ मास से इस शक्तिशाली बृटिश साम्राज्य के खूंखार खुफियों को चकाचौंध कर रक्खा है। वे आज भी ऐसा कर लेंगे।

मैंने उसे दरवाजे पर खड़ा कर दिया और स्वयं दूसरे दरवाजे से अन्दर चला गया। थोड़ी ही देर में मैंने वह दरवाजा अन्दर से खोल दिया जहां वह महिला प्रतीक्षा कर रही थी और अन्दर जाने को कहा। उस कमरे में लाल बक्स से ढकी हुई बत्ती का धीमा प्रकाश हो रहा था। जब वह कमरे के अन्दर मेरे पीछे-पीछे आ रही थी, मैंने अपनी गाल पर उसके श... और जल्दी २ निकलते हुए श्वास को अनुभव किया। मैंने उस... कहा—यहां बैठ जाइए, वे अभी आते हैं।

वह एक टूटी फूटी बेंत की कुर्सी पर बैठ गई और भ... भीत होकर इधर-उधर देखा। उस कमरे में एक सुन्दर ल... का पलंग, दो और बेंत की कुर्सियां, एक राइटिंग टेबुल थ... उस टेबुल के ऊपर एक लाल बक्स वाली बत्ती थी। दीवार ... एक कोट-स्टैण्ड लटक रहा था, जिस पर बहुत से कपड़े लदे ...

इतने में ही वे जल्दी से एक दरवाजे से अन्दर आ... उनके प्रवेश होते ही इस कमरे के सम्पूर्ण वातावरण में सनन... फैल गई।

बिना किसी हिचकिचाहट उन्होंने कहा—"मेरा न...

लोहिया है। मि० ···ने मुझे बताया है आपका नाम मिस ·· · है और आप ····की प्रतिनिधि है। आप-जैसी व्यक्ति से जो संसार भ्रमण अभी कर आई हो मुझे मिलकर बड़ी प्रसन्नता है। मि० अ ·· ·आपके पेपर के सम्पादकों मे से है न? और मि० र·····? ये दोनों ही जर्मनी मे मेरे साथ थे।" वे विगत दिनो की स्मृति मे मानो विभोर हो रहे थे।

उन्होंने उस महिला को हाँ कहते हुए सुना और फिर आगे बढ़े—"हमने नाजियों को शक्ति पकड़ते देखा। हम कुछ उग्र-वादियों के लिए यह सौभाग्य की बात थी कि उन दिनो हम जर्मनी मे थे। हमे वहां अद्भुत शिक्षा मिली। हमने यह निश्चय किया कि अब हम उन कारणो को, जिनसे हिटलर शक्तिशाली बना, मिटाने के लिए ही जियेगे। भारतवर्ष मे हमने अपने ढंग से युद्ध छेड़ रक्खा है, लेकिन क्या आप बता सकती है कि मि० अ · तथा र क्या कर रहे है वे · ।"

बड़ी मुश्किल से उसने कुछ शब्द उत्तर में कहे [illegible]।—"लेकिन मेरी समझ मे नही आता कि जब आप [illegible] के उग्रवादी नेता फासिज्म को जोर जोर से [illegible] तो ऐसा मालूम पड़ता है मानो आप लोग [illegible] हिटलर के पंचम वर्ग के व्यक्ति हो।"

"आप नही समझती है, [illegible] है। हमारी स्थिति तो बिल्कुल स्पष्ट है। [illegible] के सामने समस्या बिल्कुल भिन्न है और [illegible] अपना ही हल सारे संसार भर पर [illegible] सकता है, दो ही मार्ग हो—[illegible]

आपको ज्ञातहोना चाहिए कि यह विश्व अविभाज्य है। जो हल एक भाग के लिए सही है, वही सम्पूर्ण के लिए सही नहीं हो सकता। क्या आप यह अनुभव करती हैं कि जो रास्ते आप हमारे सामने रखती हैं, दोनों के लिए ही फिफ्थ कालम का काम करते हैं? तो यह स्वाभाविक है कि हम परतन्त्र इन दोनों में से किसी को भी नही चाहते।"

इसके पश्चात उन्होंने अपना सहज और कटु तर्क देना आरम्भ किया। इस सिलसिले में उन्होंने अपना प्रसिद्ध थर्ड कंम्प थीसीस भी उसके सम्मुख रक्खा। महिला उनके मधुर, स्पष्ट, हृदयग्राही तथा धारा प्रवाह व्याख्यान पर चकित हो बैठी रही।

जव वे चुप हुए तो थोड़ी देर वहां विल्कुल शान्ति रही। फिर वह सम्हलकर बैठी और लगी प्रश्नों की बौछार करने। श्रीयुत लोहिया इस कमरे मे अपने हाथों को पीछे किए हुए एक तरफ से दूसरी तरफ लम्बे २ डग वढ़ा रहे थे। उन्होंने कुछ विना छिपाये मिदनापुर, वलिया, चिमूर तथा अन्य स्थानो की क्रान्ति की सारी वातें उसे कह सुनाई। जमशेदपुर और अहमदावाद के वारे मे भी वताया।

एक आदमी धीरे से अन्दर घुसा और चाय दी। जव वह महिला चाय-प्याला अपने होठो के पास ले जारही थी, उनके हाथ कांप रहे थे। पर निम्सन्देह वह श्री लोहिया के व्याख्यान से प्रभावित, आकर्षित और उत्तेजित हो गई थी।

चाय पीकर उसने एक सिगरेट जलाई और उठी। उसने उनके शरीर पर अपना हाथ रखते हुए पूछा—

क्या आप अमेरिका के लिए कुछ सन्देश देना चाहते हैं ?" और नम्रता पूर्वक उनसे हाथ मिलाकर विदा लेने लगी।

उन्होंने उत्तर दिया—"हां आप अपने देश से अवश्य कह दीजिए कि यदि वह लफायट को भूल गया तो वह अपनी स्वतन्त्रता को देर तक सुरक्षित नही रख सकता।"

उस महिला ने धीमे और गम्भीर स्वर में कहा—"हां, मै समझती हूँ।" इसके पश्चात--"आपका शुभ हो, आपका देश शीघ्र ही स्वतन्त्र हो।"--कहकर उसने फिर उस अंधकूप मे मेरा अनुसरण किया और उन सब सीढ़ियों को पार कर हम सड़क पर आगए।

वह पीछे घूमी और उस घर की ओर देखा। मैंने उसे पीछे देखने से रोका। उसने नम्रतापूर्वक कहा "मुझे इसका अफसोस है, पर मै अपने आपको पीछे देखने से रोक न सकी।" और फिर धीरे से कहा--'मै स्वेज के पूर्व मे सबसे अधिक आकर्षक व्यक्ति से मिली हूँ और प्रायः   ।"

उसने उस वाक्य को अपूर्ण ही छोड़ दिया। मैंने चेष्टा भी की पर वह आगे कुछ न कह सकी।

भारतवर्ष आने से पहिले वह अपने अमेरिका के [illegible] समाचार पत्र के लिए करीब १५ वर्षों तक युद्ध-संवाददाता के स्थान पर काम कर चुकी थी। वह यूरोप और रूस से संवाद भेजा करती थी।

और वे थे श्रीयुत डा० राममनोहर लोहिया। समय दिसम्बर १९४२ का था और स्थान [illegible], [illegible]।

जयप्रकाश और लोहिया वीर हैं !

श्री जयप्रकाश नारायण तथा श्री राममनोहर लोहिया की रिहाई का जिक्र करते हुए एक सार्वजनिक सभा में महात्मा गान्धी जी ने कहा--"यह एक शुभ लक्षण है और इसके लिए हमें बृटिश मन्त्रिमंडल-मिशन तथा वायसराय महोदय को धन्यवाद देना चाहिए। हिन्दुस्तान का यह अच्छा नसीब है कि भारत मंत्री यहां आये हुए हैं। वे यह निश्चय करके आए हैं कि वे हिन्दुस्तान के शासन का सारा बोझ अपने ऊपर से हटा देंगे। उनकी नीयत के बारे में हमें सन्देह नहीं होना चाहिए।

जलियान वाला बाग के सम्बन्ध में बताते हुए उन्होंने कहा कि किस प्रकार १३ अप्रैल सन् १६१६ को डायर की गोलियों से ५०० से अधिक व्यक्ति मारे गए और १५०० से अधिक घायल हुए। हम भूतकाल की याद नहीं दिलाना चाहते। ब्रिटेन के चार महान पुरुष जिनमें एक वायसराय महोदय भी शामिल हैं इस समय हिन्दुस्तान की समस्या को हल करने की बात सोच रहे हैं। इसलिए हम जलियान वाला बाग जैसे हत्याकांड और रक्तपात की पुरानी घटनाओं की याद करके उन्हें गालियां नहीं देना चाहते।

श्री जयप्रकाश नारायण और श्री राममनोहर लोहिया बहादुर और पढ़े लिखे व्यक्ति हैं। अतएव स्वाभाविक तौर पर हिन्दुस्तान की विदेशी हकूमत ने उनको अपने लिए खतरनाक समझा; परन्तु हिन्दुस्तान के ४० करोड़ लोग उनको देशभक्त मानते हैं, क्योंकि उन्होंने अपने देश की आजादी के लिये अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया है। उनके तरीके को चाहे

मैंने नापसन्द किया हो; परन्तु इसका उनकी रिहाई से कोई सम्बन्ध नहीं।

उनकी दिली तमन्ना यही थी कि हिन्दुस्तान किसी तरह से आज़ाद हो जाये। जब हम आज़ादी लेना चाहते हैं और अंग्रेज आज़ादी देना चाहते हैं, तो उनकी रिहाई किसी के लिए भी खतरनाक नही हो सकती।

———

वीरांगना अरुणा

अगस्त-क्रान्ति के सूत्रधारों में वीरांगना अरुणा आसफ-अली का नाम प्रमुख है। बम्बई में जब राष्ट्र के समस्त नेता बृटिश नौकरशाही द्वारा बन्दी बना लिये गए तब गवालिया मैदान में असंख्य भीड़ पर आपने ही नियन्त्रण रखा और बड़ी ही सावधानी से उचित मार्ग निर्देश किया। आपने वहां राष्ट्रीय झन्डे का अभिवादन करते हुए जो भाषण दिया था, वह ऐतिहासिक है। जब आप वहां भाषण दे रही थीं, पुलिस जनता पर 'अश्रु गैस' का प्रयोग कर रही थी।

बम्बई के अशांति के दिनों में आपने पुलिस फौज के आक्रमणों से बचकर जो काम किया वह अद्वितीय है। आपका उस दिन का भाषण जनता मे चिनगारी का कार्य कर गया। जो भावना का बारूद सरदार पटेल ने वहाँ की जनता मे भरा था, वह वीरांगना अरुणा के भाषण की चिनगारी से एक साथ भड़क उठा। जनता मे विद्रोह की भयंकर ज्वाला सुलग गई। आपने उस समय शक्ति की प्रचंड मूर्ति के रूप मे जनता का नेतृत्व किया था। बम्बई की उस दिन की घटना के बाद आप न जाने कहाँ तिरोहित हो गई; और पुलिस लाख प्रयत्न करने पर भी आपको न पा सकी।

फरार घोषित

इसी बीच सरकार ने उन्हे फरार घोषित करके उनकी गिरफ्तारी पर ५०००) का इनाम रख दिया। देश के कोने-कोने मे जाल डाले गये, भारत की भूमि का चप्पा-चप्पा छान डाला

गया; किन्तु अरुणा न मिल सकी। अपने फरार-जीवन मे आपने बा० जयप्रकाश नारायण, अच्युत पटवर्धन डा० राममनोहर लोहिया आदि के साथ मिलकर कार्य किया और प्रति क्षण संकट मोल लेकर भी कार्य में जुटी रही। कई जगहो पर कई बार आप गिरफ्तार होते-होते बची और पुलिस सिर पीटकर रह गई। पुलिस की आंखों में धूल झोंककर कई जगह अरुणा साफ निकल गई।

उनका व्यक्तित्व

एक बार की घटना है वे कि जिस अज्ञात स्थान मे रहकर अपना समय बिता रही थी. उसका रहस्य अधिकारी वर्ग को मिल चुका था। उन्हे क्षण, प्रतिक्षण पुलिस के आने की आशंका रहती थी। वे स्थान बदलना आवश्यक समझती थीं। संयोग से उस नगर के एक प्रमुख दैनिक पत्र मे छपे एक विज्ञापन पर उनकी निगाह पड़ी। उस विज्ञापन मे एक अंग्रेज परिवार ने किसी यूरोपियन अतिथि को अपने परिवार में किराये पर स्थान देने की बात प्रकट की थी। विज्ञापन पढ़ते ही आनन फानन मे वे तुरन्त कार लेकर उक्त अंग्रेज परिवार मे जा पहुंची। उस परिवार की अंग्रेज महिला श्रीमती अरुणा के व्यक्तित्व से इतनी प्रभावित हुईं कि उसने यूरोपियन के स्थान मे हिन्दुस्तानी अतिथि को अपने यहाँ ठहरा लिया। पुलिस अधिकारी सिर पीट कर रह गए। एक पुराने मकान मे छुपे होने की खबर मिली ही थी कि पुलिस उस मकान की तलाशी लेने के लिए अन्दर दाखिल हुई।

जीवित इतिहास

एक बार की घटना है कि [illegible]

बीमारी होगई। खून उनके बदन में इतना कम होगया था कि उससे उनको पहचानना तक कठिन था। उनकी चिकित्सा के लिए एक नगर के धनी मानी व्यक्ति के यहाँ प्रबन्ध किया गया और वे उस मकान मे रहने लगीं। एक दिन अकस्मात् पुलिस का एक उच्च अधिकारी जो उन सेठ महोदय का मित्र था, उनके घर पर आ टपका। अरुणा को वह सामने देखकर स्तब्ध रह गया; सेठ जी भी चुप थे। ऐसी स्थिति मे श्रीमती अरुणा ने ही स्तब्धता भंग की और मुसकराकर उन्होंने उस पुलिस अधिकारी से कुर्सी की ओर संकेत करके बैठने के लिए कहा और ठीक उसी प्रकार बातें करने लगीं, जैसे अपने ही घर मे बातें कर रही हों। अरुणा के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर पुलिस अधिकारी को पुलिस को सूचना देने के बजाय यह कहना पड़ा कि यह मेरा सौभाग्य था कि मैंने कुछ क्षणों तक 'जीवित इतिहास' के दर्शनो का लाभ किया।

ऐसी अनेक घटनाये घटीं, परन्तु फिर भी वे अन्त तक पुलिस की पकड़ मे न आ सकीं।

अरुणा और गान्धी

बम्बई मे हुई घटनाओं के सम्बन्ध मे गान्धी जी ने एक वक्तव्य दिया था, जिसका खण्डन श्रीमती अरुणा आसफअली ने किया था। उस खण्डन के सम्बन्ध मे गान्धी जी ने फिर एक वक्तव्य देते हुए कहा—"बम्बई की घटनाओं पर मैंने जो बयान दिया था, उसका हिम्मत के साथ खण्डन करने के लिए मैं श्रीमती अरुणा को बधाई देता हूँ। अगर श्रीमती अरुणा पोशीदा रहकर काम करने वालों की एक बड़ी तादाद की

नुमाइन्दगी न करतीं होती तो मैंने उनके खण्डन पर ध्यान न दिया होता। श्रीमती अरुणा मेरी लड़की है, क्या हुआ कि उन्होंने मेरे घर मे जन्म नहीं लिया या कि वह विद्रोही बन गई है। जब वह छिपकर रहती थीं तब भी मै कई बार उनसे मिला हूँ। मैने उनकी बहादुरी, नये-नये रास्ते खोजने की शक्ति और गहरे देश-प्रेम की सराहना की है। परन्तु मेरी सराहना इससे आगे नही बढ़ी। मैने उनके छिपकर काम करने को पसन्द नही किया। मै छिपकर किए जाने वाले किसी भी काम की सराहना नही करता। मै जानता हूँ कि देश के करोड़ो स्त्री-पुरुष छिपकर कार्य नहीं कर सकते कुछ मुट्ठी भर लोग यह सोच सकते है कि पोशीदा हलचलो के जरिये वे करोड़ो के लिए स्वराज्य ला सकेगे। लेकिन क्या यह बच्चों को चम्मच से दूध पिलाने जैसी बात न होगी ? आम जनता तो खुली चुनौती और खुले कामों का रास्ता ही अपना सकती है। असली स्वराज्य की [illegible] तो स्त्रियों, पुरुषों और बच्चो सभी को होनी चाहिए। [illegible] [illegible] के लिए मेहनत करना ही सबसे बड़ी क्रान्ति होगी। हिन्दुस्तान दुनिया की सभी शोषित जातियो के लिए एक नमूना बन गया है, क्योंकि हिन्दुस्तान की लड़ाई खुली और बिना हथियारों के लड़ी जा रही है। इस लड़ाई मे आजादी को [illegible] [illegible] हुओं को चोट पहुचाये बिना सभी से कुरबानी चाही जाती है। अगर यह लड़ाई खुली और निहत्थी नही होती। जब-जब इस सीधे रास्ते को छोड़ा गया तब-तब थोडी देर के लिए [illegible] क्रान्ति मे रुकावट पड़ी है।"

अगस्त क्रान्ति

"सन् १९४२ की घटनाओं की यह [illegible] [illegible] [illegible]

लगाती है, वह मैं नहीं लगाता। यह अच्छी बात थी कि लोग अपने आप उठ खड़े हुए। मगर यह बात बुरी हुई कि कुछ लोगों ने या बहुत लोगों ने हिंसा की। इसमें कुछ फर्क नहीं पड़ता कि श्री किशोरलाल मशरूवाला, काका साहब और दूसरे काम करने वालों ने उस समय के उतावली भरे उत्साह में अहिंसा की गलत व्याख्या की। उनके ऐसा करने से ही यह साबित होता है कि अहिंसा कितना नाजुक हथियार है। मै जो तुलना कर रहा हूँ; उसका मतलब किसी आदमी पर लांछन लगाना नही है। हर एक ने अपनी-अपनी समझ के मुताबिक ठीक ही किया। जबरदस्त संगठित हिंसा के मुकाबले मे हाथ पर हाथ धरकर बैठे रहना भी तो कायरता होती। अगर मैं सन् ४२ की घटनाओं के सम्बन्ध मे अपना ख्याल जाहिर न करूं, तो कमज़ोरी का सबूत दूंगा या ग़लती करूंगा।"

"श्रीमती अरुणा भले ही वैधानिक मोर्चे के बजाय लड़ाई के मोर्चे पर हिन्दू मुसलमानों को इकट्ठा करना पसन्द करें। मगर हिंसा के ख्याल से भी यह एक दम गलत विचार है। अगर लड़ाई के मोर्चे वाली एकता सच्ची हो तो यह वैधानि मोर्चे पर ही होनी चाहिए। लड़ने वाले हमेशा लड़ाई के मो पर डटे नही रहते। उनमे आत्मघात न करने जितनी अक ज़रूर होती है। लड़ाई के मोर्चे के बाद हमेशा वैधानिक मोच आता ही है। उसको हमेशा के लिए रद नहीं किया जा सकता।

हिंसा—अहिंसा का प्रश्न

"श्रीमती अरुणा का यह कहना सही है कि इस बार लड़ वालो ने जैसी मजबूती दिखाई, वैसी पहले कभी नहीं दिखा

थी। मगर जब मजबूती कुसमय की और आत्मघाती हो जैसी कि इस मौके पर थी, तो वह मूर्खता बन जाती है। श्रीमती अरुणा को यह कहने का हक है कि–"लोगो को हिंसा या अहिंसा के सिद्धान्तों मे कोई दिलचस्पी नहीं है।" मगर लोगो को यह जानने की जरूर दिलचस्पी है कि जनता को आजादी किस रास्ते से मिलेगी—हिंसा से या अहिंसा से ? लोग अब तक, अधूरे ही सही, अहिंसा के रास्ते पर चले है। श्रीमती अरुणा और उनके साथियों को हर बार अपने से यह सवाल पूछना चाहिए कि अहिंसक रास्ते ने हिन्दुस्तान को उसकी सदियो की नींद से जगाया है या हिंसक रास्ते ने और स्वराज्य के लिए, चाहे धुंधली ही क्यों न हो, इच्छा किसने पैदा की है ? मेरी राय मे इस सवाल का एक ही जवाब हो सकता है। श्रीमती अरुणा के बयान में दूसरे भी ऐसे फिकरे है, जो मेरे ख्याल मे विचारों की उलझन जाहिर करते है। लेकिन उन पर तो बाद मे भी गौर किया जा सकता है।

रेडियो बेन उषा मेहता

अगस्त-आन्दोलन में जिन भारत माता के सपूतों और लाडली बेटियों ने भाग लिया था, उनमें रेडियो बेन उषा मेहता का नाम भी प्रमुख है। अगस्त-क्रान्ति के दिन डा० राममनोहर लोहिया के प्रयत्न से जिस कांग्रेस-रेडियो का निर्माण हुआ था, उसकी प्रमुख संचालिका कुमारी उषा मेहता ही थी; इसीलिए डा० लोहिया ने उनका नाम 'रेडियो बेन' रख दिया था। अगस्त-क्रान्ति के सिलसिले में आयोजित 'कांग्रेस-रेडियो का जो विस्तृत हाल कुमारी उषा मेहता ने यूनाइटेड प्रेस के प्रतिनिधि से भेंट करने पर बतलाया है उसे हम अन्यत्र दे रहे हैं।

गिरफ्तारी

अपनी गिरफ्तारी की चर्चा करते हुए आपने कहा था कि "पहले हमारे पास एक ब्राडकास्टिंग मशीन थी। कुछ ही दिनों में एक दूसरी बड़ी मशीन भी हमारे हाथ में आगई, जो कि एक बड़े कांग्रेसवादी एडवोकेट के घर में रखी हुई थी। जिस समय पुलिस ने छापा मारा, उस समय कुछ महत्वपूर्ण सूचनाओं के साथ वह मशीन पुलिस के हाथ में चली गई।" आपको अपनी गिरफ्तारी और ब्राडकास्ट-केन्द्र पर पुलिस के आक्रमण करने की खबर पहले ही मिल चुकी थी, परन्तु फिर भी आपने अपना कार्य न छोड़ा और ब्राडकास्ट में लग गई और रेडियो भी पुलिस के कब्जे में चला गया।

डा० लोहिया का सन्देश

गिरफ्तारी से पूर्व कुमारी उषा मेहता ने डा० लोहिया के

जब यह आशंका प्रकट की तो उन्होंने यही कहा कि ब्राडकास्ट तो चालू रहना चाहिए, यदि गिरफ्तारी की सम्भावना हो तो तुम स्वयं विचार करो। दूसरे सहयोगियो ने रेडियो बेन से आग्रह किया कि आज के कार्य-क्रम मे भाग न लें; परन्तु वे न मानी और गिरफ्तार हो ही गईं। जेल मे डा० लोहिया का उन्हें यह सन्देश मिला—

"इतिहास किसी दिन यह निर्णय करेगा कि तुम्हारी गिरफ्तारी के दिन ब्राडकास्टिंग को भेजने के लिए मैंने उचित किया या अनुचित?"

पी० एच० डी० भी छोड़ी

जब अगस्त-आन्दोलन शुरू हुआ था, उस समय आप पी० एच० डी० की तैयारी में संलग्न थीं, परन्तु क्रान्ति-भैरव नाद उन्होंने भी सुना और कार्य क्षेत्र मे कूद पडी। उन्होंने जो कार्य किया वह प्रत्येक व्यक्ति के लिए गौरव का कारण है। आपको ५ वर्ष की सजा हुई थी। अब कांग्रेसी मंत्री मंडल होने पर आप रिहा की गई है।

— —

कांग्रेस रेडियो

अगस्त-क्रान्ति के दिनो मे अनेक व्यक्तियो के सहयोग से एक कांग्रेस-रेडियो का कार्य भी प्रारम्भ किया गया था। जिससे कांग्रेस का तत्कालीन प्रोग्राम ब्राडकास्ट किया जाता था। उसका मनोरंजक विवरण कुमारी उषा मेहता ने, जो ब्राडकास्ट मे प्रमुख भाग लेती थीं, निम्न प्रकार दिया है—

"जब ९ अगस्त १९४२ को देश के सभी प्रिय नेता जेलों के सींकचे में बन्द कर दिये गये, तब हमने हिन्दुस्तान के किसी भी हिस्से से 'आजादी की आवाज' के नाम से अपने रेडियो का प्रारम्भ करने की तैयारियां कीं; देश की आजादी हासिल करने में अपनी तुच्छ सेवायें समर्पित करने की हमारी हार्दिक इच्छा थी। इसलिये मैं और कुछ साथी यह सोचने में व्यस्त थे कि यदि आन्दोलन का प्रारम्भ हुआ तो हमें क्या करना चाहिये। प्रदर्शन अथवा सार्वजनिक सभाओं में हमारा पहले से ही कोई विश्वास न था। गत आन्दोलन के इतिहास का मनन करने पर हमने अनुभव किया कि इस आन्दोलन को सफल बनाने के लिये शायद एक ट्रान्समीटर अधिक उपयुक्त होगा। ऐसे समय में जब प्रेस और पत्रों पर जबर्दस्त प्रतिबन्ध थे तब जनता को समाचारों की सत्यता जाहिर करने के लिये रेडियो का साधन अति उत्तम था। अतः श्री बाबू भाई और मैंने महसूस किया कि रेडियो, प्रचार का अमूल्य साधन है। देश विदेश में खबरें प्रचारित करने के लिये उच्च कोटि के ट्रान्समिटर की हमने आवश्यकता समझी। लेकिन इसके लिये रुपये कहां से आवें। मेरी एक रिश्तेदार ने अपने सारे जेवर इस कार्य के लिये प्रदान किये। हम पशोपेश में थे कि उन जेवरों को लिया जाय या नहीं, बाद में श्री बाबू भाई ने किसी प्रकार एक होशियार कारीगर से एक सैट तैयार कराया। अन्त में वही कारीगर सरकारी गवाह बना।

अनेक सहकारी दल

श्री विट्ठल भाई जवेरी जो आज कल गांधीजी के जन्म दिवस के ग्रन्थ के सम्पादकों में से एक हैं और 'जयहिन्द' के भी

सम्पादक हैं, उनके आधीन एक दूसरा दल हमारे अलावा अपना रेडियो कार्यान्वित करने में प्रयत्नशील था। इन दो दलो के अलावा और कई दल इस दिशा मे कदम वढ़ा रहे थे। डा० राममनोहर लोहिया जो इन सब से परिचित थे, इन सभी का एकीकरण करना चाहते थे। दूसरे दलो ने कोई खास काम नही किया। लेकिन श्री बाबू भाई और विट्ठल भाई के दलो ने गिरफ्तारी तक एक साथ मिल कर कार्य किया। ये सभी दल एक साथ कांग्रेस रेडियो के नाम से कार्य कर रहे थे। उनके कार्यकाल मे अनेकों रोमाचक एवं रहस्यमयी घटनाये घटीं।

कांग्रेस रेडियो नाम मात्र के लिए नहीं था। इनके पास निज का ट्रांसमीटर, ट्रांसमिटिंग स्टेशन और रेकार्डिंग स्टेशन था। इन सबके अलावा इस रेडियो की वेवलेंग्थ (लहरों की लम्बाई) भी वहुत काफी और स्पष्ट थी। १४ अगस्त १९४२ को हमने अपना ब्राडकास्ट शुरू किया "यह कांग्रेस रेडियो हिन्दुस्तान के किसी भी हिस्से से ४२-३४ मीटर पर बोल रहा है।"

हमारी कठिनाइयां

ट्रांसमिटर के अलावा दूसरे यंत्रो का मिलना बेहद मुश्किल था। श्री बाबू भाई को इन वस्तुओ को प्राप्त करने के लिये अनेकों बार सोचना पड़ता था। किसी भी तरह से वे और श्री विट्ठल भाई ये चीजे ले आए। कभी ये जेब में और कभी टिफिन केरियर मे रखकर ले आया करते थे। पुलिस की निगाहो से और लगातार पीछा करने वाली इनकी खुफिया गाड़ियो से बचते हुए ये सब सामान लाना आसान नहीं था। हमारे रेडियो और उनकी खुफिया गाड़ियो में इस तरह से हुआ

छिपी का खेल हुआ करता था। कभी पुलिस समझती थी कि अब चन्द मिनटों में ट्रांसमिटर हाथ आया, पर कुछ समय के अन्दर हममें और इसमें मीलों का फर्क हो जाता। कभी हममें कोई चाचा बनकर बाहर से आता, तब तक कोई भतीजा दूसरी जगह ठीक करता। इसी तरह हमारा ट्रांसमिटिंग स्टेशन अपनी जगह से कभी रेल्वे स्टेशन पर आता और फिर कहीं किसी और जगह नया ट्रांसमिटिंग स्टेशन बनाता। एक बार मैंने और श्री बाबू भाई ने एक अत्यन्त उपयुक्त एवं सुरक्षित स्थान पाया। हम बेहद खुश हुये कि अब कम से कम महीने-दो महीने तक हमारा कार्य सुचारु रूप से होगा। हम मकान मालिक को किराया जमा करने गये। वहां हमने एक विचित्र मशीन देखी. कौतूहलवश हमने पूछा, 'सेठजी, यह क्या है?' उत्तर मिला 'गैरकानूनी रेडियो खोजने की (डिटेक्टिव) मशीन।' मैं क्षण भर के लिये आश्चर्य में पड़ गई किन्तु आंतरिक भावना चेहरे पर आने न पाई। इधर बाबूभाई बड़ी चालाकी के साथ साहब की हां में हां मिलाने लगे और रेडियो वालों को उन्होंने उसी दम दो—चार खरी खोटी सुना डाली। साहब को धन्यवाद देते हुये हम वहां से खिसके। वहां से निकलने के बाद बाबू भाई ने पहला वाक्य मुझ से कहा 'बहन, आज हम शेर के पंजों से बचे हैं। उन्होंने मुझे हिदायत दी कि मैं खादी की साड़ी न पहनूं और इस बात पर उन्होंने जोर भी दिया। मैंने भी बात मान ली ताकि खुफिया की नजरों में मैं जल्दी न आ सकूं।

हमारे रास्ते में दूसरा बड़ा कांटा था ए० आई० आर० (आल इण्डिया रेडियो) जो हमारे ब्राडकास्टों को हमेशा खराब करने का प्रयत्न करता था। वे अपनी शरारतों से हैरान

करने लगे तो हमने भी वही शरारतें उनके खिलाफ करनी शुरू कर दिया।

एक ही ट्रान्समिटिंग स्टेशन होना यह भी बड़ा खतरनाक था। अतः हमने हिन्दुस्तान भर मे ट्रान्समिटिंग स्टेशनों का जाल बिछाने का निश्चय किया। ताकि अगर एक पुलिस के हाथ लगे तो दूसरे कार्य करते रहें। कुछ काल तक हम दो ट्रान्स-मिटर इस्तेमाल करते रहे। जो कि बारी-बारी से प्रयुक्त किये जाते थे। इनमें से एक विट्ठल भाई का था। इन दोनों के ट्रान्स-मीटिंग स्टेशन अलग थे। विठ्ठल भाई के ट्रान्समिटर का बहुत कम प्रयोग हुआ।

हमने रेकार्डिंग क्यों शुरू की?

समाचार, भाषण, सुझाव अपीलें आदि विभिन्न वर्गों के लोगों के लिये हम प्रस्तुत करते थे। इनके लिये बोलने और लिखने वालों का एक दल था। उन सबको ब्राडकास्टिंग स्टेशन पर साथ ले जाना सुरक्षित न था। इसलिये हमने निश्चय किया कि भाषणों के रेकार्ड लिये जायें। और रेकार्डों के जरिये ब्राडकास्टिंग हो रेकार्ड लेने का स्थान ब्राडकास्ट स्टेशन से अलग था। इस तरह खतरा कम था। विट्ठलभाई इस विभाग का संचालन करते थे और बाबू भाई ब्राडकास्टिंग स्टेशन का।

हमारा कार्यक्रम

सत्य समाचार देना हमारे कार्य का मुख्य अंग था। अपने विशेष संवाददाताओं के जरिये सारे हिन्दुस्तान की खबरें हमें मिला करती थी। चटगांव का हवाई हमला, [illegible] की

हड़ताल और बलिया के दमन की खबर सब से पहिले हमने दी थी। आष्टी और चिमूर में किये गये नौकरशाही के काले कारनामों का सच्चा चित्र हमने खींचा था। जबकि अखबार सच्ची खबरें देने में डरते थे या सच्ची खबरों पर झूठ की कालिख लगाकर उनके पास भेजी जाती थी, उस वक्त हिन्दुस्तान में सिर्फ कांग्रेस रेडियो था जो जनता को जुल्मों की सच्ची खबरें दिया करता था। हमारे श्रोता भी हमें सच्ची खबरें देने में सहायता पहुचाया करते थे।

अपने भाषणों में जनता को कांग्रेस की नीति और उद्देश्य, राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय दोनों ही दृष्टिकोण में से बताया करते थे। विश्व शान्ति के सम्बन्ध में हमारे ब्रोडकास्टों में से एक का उद्धरण इस प्रकार है—

"दुनियां के सभी लोगों के लिये कॉंग्रेस शुभकामनायें और शान्ति का सन्देश भेजती है। सन्देश उन समस्त रंगीन चेहरे वाली जातियों के लिये है जो गुलामी की जंजीरों में जकड़े हुए हैं और जिन की अपनी सरकारों ने ही उनको धोखा दिया है। हिन्दुस्तान अभी तक उन तकलीफों को झेल रहा है। दुनिया के मनुष्य मात्र को हिन्दुस्तान आशा, शुभकामना और शांति का सन्देश देता है। दुनिया को शान्तिमय और सुन्दर बनाने के लिये हमें हर एक देश की दोस्ती, दया, हर आत्मा की स्वतन्त्र कार्य शक्ति की जरूरत है। हमें जर्मनी की कारीगरी, उसकी वैज्ञानिक कुशलता, उसके संगीत की जरूरत है। हमें इंगलैंड की स्वतन्त्रता की भावना, उसके साहस और साहित्य की जरूरत है। हमें चीन के चातुर्य और नवीन आशा की जरूरत है।

हमें अमेरिका की स्फूर्ति की तथा स्वातन्त्र्य ज्योति की जरूरत है। हमें रूसकी अपूर्व सफलता और नूतन विजय की जरूरत है। हमें पुरातन पुरुष के ज्ञान, बच्चों की सी सादगी की जरूरत है और हमें जरूरत है समस्त मनुष्य जाति की शांति और अपने गौरव की। हिन्दुस्तान का कोई दुशमन नहीं है। हम उस विधान के खिलाफ लड़ रहे हैं जो मनुष्य को उसके जन्म सिद्ध अधिकारों से वंचित रखता है। हम अपने उद्देश्य की पूर्ति अपने दुशमन को मारकर नहीं करना चाहते हैं" आखिरी वाक्य होता था–"आपको हम आने वाली ताज़गी की आशाएं भेजते हैं"

बिहार, युक्त प्रान्त, कर्नाटक और सतारा में आन्दोलन पूरे जोर पर था। १४ अक्टूबर १९४२ को या उसके करीब, गोरे सिपाहियों ने तीन पुलिसों को जान से मार डाला क्योंकि गोली चलाने से उन लोगों ने इन्कार किया था। करीब सारे हिन्दुस्तान की पुलिस आन्दोलन के प्रति सहानुभूति रखती थी। इन कांग्रेस रेडियो ने पुलिस से निम्नलिखित अपील कीः—

"क्या आप हिन्दुस्तान के अच्छे नागरिक बनना चाहते हैं ? वह मौका जल्द आ रहा है। क्या आप हमेशा के लिये हिन्दुस्तान के दुशमन बनना चाहते हैं ? आपके कितने भाइयों ने आन्दोलन में भाग लेने का निश्चय किया है लेकिन आप में से कितने ही ऐसे हैं जो अपने भाइयों की हत्या में आनन्द पाते हैं। आपको उनका बहिष्कार करना चाहिये और अपना दुशमन समझना चाहिये।"

मज़दूर और किसानों से कांग्रेस रेडियो ने अखिल भारतवर्षीय कांग्रेस कमेटी की ओर से प्रार्थना की कि [illegible]

हिन्दुस्तान मजदूर और किसानों का होगा जो कि किसान मजदूर राज्य होगा।

अक्सर हम कुछ, प्रश्नों के जवाब दिया करते थे। यह बड़ा मजेदार कार्यक्रम होता था। जब आष्टी और चिमूर के हत्याकाण्ड और नादिरशाही से लोगों की आंखें शर्म से नीचे झुक गयी और जब भारतीय नारी की लज्जा परदेशियों के पैरों तले रौंदी जाने लगी, तब सवाल उठा कि इनसे बचने का उपाय क्या था ? उत्तर था 'बिना हिचकिचाहट के हम जवाब देते है, जो कुछ भी आप कर सके कीजिये। मारकर या मरकर आप ऐसी हरकतें हर हालत मे रोके।'

'हिन्दुस्तान छोड़ो' आन्दोलन को समझाते हुये हमने कहा था 'अभी हम आन्दोलन करते थे किंतु अब हम क्रांति कर रहे है। क्रांति मे हार या जीत दो ही बातें होती है। यह क्रांति एक दल या जाति की नही है बल्कि सारे हिन्दुस्तान की है। हम आशा करते हैं कि जब तक अंग्रेजी साम्राज्य जलकर खाक नहीं हो जाता तब तक आप सन्तुष्ट होकर बैठे न रहेंगे।'

जब जापानियो के हमले निकट थे और चटगॉव पर बम वर्षा हुई तब हमने ब्राडकास्ट किया था "जापानियो के हवाई हमले का मतलब है जमीन की लड़ाई। ऐसी लड़ाई के वक्त शहरों को छोड़ देना बेहतर है! जब ऐसी लड़ाई होगी तो अंग्रेज जल्द हट जायेंगे जैसा कि और जगहों मे उन्होंने किया है, लेकिन उनके हटने से पहले हमें उनको आखिरी धक्का देना होगा। जापानी हमलो के वक्त चुपचाप बैठना अपने प्रति विश्वासघात होगा। अंग्रेजी हुकूमत से अपने सम्बन्ध तोड़िये। आंखो मे आजादी का नशा और दिमाग मे स्वतन्त्रता का ज्वर आने दीजिए।

भाषण बहुधा डा० लोहिया देते थे अथवा प्रमुख पत्रकार अध्यापक या अन्य कांग्रेस के कार्यकर्त्ता दिया करते थे। पहले हम एक ही बार ब्राडकास्ट करते थे लेकिन बाद में सुबह शाम दो बार ब्राडकास्ट करने लगे। ब्राडकास्टिंग अंग्रेजी और हिन्दुस्तानी मे होती थी। शुरूआत इकबाल के गीत 'हिंदुस्तान हमारा' से होता और अन्त 'वन्देमातरम्' से।

पहला छापा

१२ नवम्बर १९४२, गिरफ्तारी के दिन हमारे कार्यकर्त्ताओं की एक बैठक हुई जिसका विषय था, यदि गिरफ्तारी हुई तो हर एक को क्या कहना होगा।' निश्चय हुआ कि कोई किसी दूसरे का नाम न बताये और सब कुछ गुप्त ही रखा जाय।

गिरफ्तारी के एक हफ्ता पहले नगर के अनेकों रेडियो के व्यापारी गिरफ्तार किये गये थे जिनसे पुलिस को मालूम हुआ कि कांग्रेस रेडियो की आड़ मे बाबू भाई और विट्ठल भाई का प्रमुख हाथ था। १२ नवम्बर को दोपहर को पुलिस ने हमारा उस कमरे का दरवाजा खटखटाया जिसमे से ब्राडकास्ट किया करती थी। उस समय 'वन्देमातरम' गान हो रहा था। मैं रिकार्ड बजाने में व्यस्त थी कि पुलिस कमरे का दरवाजा तोड़-कर अन्दर धड़धड़ाकर घुस आई। मुझ से रिकार्ड बन्द कर देने के लिए कहा गया। मेरे एक साथी ने लपक कर रेडियो बन्द कर दिया। बाद मे यह मालूम हुआ कि हमारा वह साथी सी० आई० डी० का व्यक्ति था। इतने मे कमरे मे सहसा विद्युत अन्धकार छा गया। बिजली की लाइन 'फ्यूज' कर दी गई और मैं गिरफ्तार करली गई।

क्रांति संगठन हमारा नैतिक कर्तव्य था

अगस्त क्रान्ति के सूत्रधार श्रीमती अरुणा आसफअली तथा श्री अच्युत पटवर्धन ने कांग्रेस के राष्ट्रपति मौलाना आजाद को पत्र लिखकर यह सिद्ध किया है कि उन्होंने अगस्त के अन्धकारपूर्ण दिनो मे क्रान्ति का शंखनाद करके जनता को नेतृत्व क्यों प्रदान किया ? उन्होंने इस पत्र मे यह भी सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि कांग्रेस ने अपनी अहिंसा-नीति को समय के अनुसार कहां छोड़ा है ? हमने भी अगस्त-आन्दोलन मे कांग्रेस की प्रतिष्ठा को कायम रखते हुए और जनता की आवाज को सुनकर ही यह कदम उठाया था। उसकी आवाज पर यह संगठन करना हमारा नैतिक कर्तव्य था। वह पत्र इस प्रकार है:—

प्रिय मौलाना साहब,

कांग्रेस वर्किंग कमेटी द्वारा ११ दिसम्बर सन् १९३५ को अहिंसा के सिद्धान्त पर पास होने वाले प्रस्ताव का हमने ध्यान-पूर्वक अध्ययन कर लिया है। विगत तीन वर्षों में होने वाली घटनाओं पर लागू होने वाले उसके रूप पर भी विचार हमने कर लिया है। इसके वर्तमान प्रयोग और भविष्य मे होने वाले किसी भी आन्दोलन में जो वास्तव मे जनता का आन्दोलन होगा उसके प्रभाव का भी हमने विश्लेषण कर लिया है। आपने व्यक्तिगत रूप से इस प्रस्ताव की जो व्याख्या की है उससे यह भली प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि यह नीति किस उद्देश्य को लेकर निर्धारित की गई है।

क्योंकि इस प्रस्ताव में विगत तीन वर्षो में घटित होने वाली घटनाओं पर कांग्रेस कार्य समिति के सुचिन्तित विचार समाहित हैं इसलिये इस विषय में हमारा और उन सब साथियो का जो कि इन घटनाओ से निकट रूप से सम्बन्धित है—यह कर्तव्य हो जाता है कि हम आपके कारावास काल मे घटित और व्यवहृत इन घटनाओ और नीतियो के सम्बन्ध मे अपनी स्थिति और जिम्मेदारी के विषय में खुलासा कर दे।

प्रस्ताव के प्रथम वाक्य में ही वर्णित है कि प्रमुख कॉंग्रेसजनों की गिरफ्तारी के बाद ' 'नेतृत्वविहीन जनता ने खुदबखुद काम किया। यह घटनाओ का सही लेखा नही है। आप की गिरफ्तारी के बाद भी विभिन्न प्रान्तो के एक दर्जन से भी अधिक प्रमुख कांग्रेस कार्यकर्त्ता जो कि कांग्रेस में जिम्मेदार स्थान रखते है, बम्बई मे रह गये थे। हम मे से भी कुछ ऐसे सहयोगी थे जिनका गाधी जी के सत्य और अहिंसा के सिद्धान्त मे अटूट विश्वास है। हमने तथा हमारे दूसरे साथियों ने अपना यह कर्तव्य समझ कर कि ८ अगस्त सन् १९४२ के प्रस्ताव को उसके क्रियान्वित करने के इच्छुक सहस्रो कांग्रेस-जनों तक पहुचाना हमारा कर्तव्य है—एक संगठन किया। हमने इस आवश्यकता को अनुभव किया कि गुलामी के पड़े [illegible] हुई जनता को नेतृत्व की आवश्यकता है। समय समय पर हिदायतें, अपील और घोषणाये (जो कि [illegible] से घोषित होती थीं) तथा व्याख्याएँ अखिल भारतीय कांग्रेस कार्य समिति के नाम पर आपकी गिरफ्तारी के बाद ही निकलनी आरम्भ हो गई थी। यदि हम अपने कारनामों के लिए [illegible] रहे है तो इसका कारण यही है कि जो [illegible] और [illegible]

हमने कांग्रेस कार्य समिति के नाम पर इस तमाम समय में किए उनका उत्तरदायित्व स्वयं अपने ऊपर ले ले। इस प्रकार के उत्तरदायित्व को ग्रहण करने के हमारे अधिकार का कभ विरोध नहीं किया गया और जनता ने हमें हार्दिक सहयोग दिया। स्वतंत्र होकर कार्य करने की कांग्रेस की पुकार से प्रेरित होकर लोगों ने जो कार्य किया वह निकट अतीत के इतिहास में असाधारण घटना है। एक बार जब उन्होंने विद्रोही क़दम उठा लिया था तो उन्हें आवश्यकता हुई कि प्रभावशाली और निर्भीक नेतृत्व उन्हें मिले। इस भीषण कार्य में जिस हद तक संगठित कार्य करने की गुञ्जायश थी, उन्होंने संगठन किया। एक बार तो उनकी प्रतिभा ने गोरे राज के संगठन और शक्ति पर विजय प्राप्त कर ही ली। तोड़-फोड़, सामाजिक बाईकाट और शासकों पर आक्रमण को छोड़ कर बहुत सी हिदायतें दी जाती थीं।

सैद्धान्तिक व्यावहारिकता

जहां तक अहिंसा का सम्बन्ध है कांग्रेस ने केवल परिस्थितियों से मजबूर होकर इसे अपनाया है। समय समय पर व्यावहारिकता की सीमा में इसने अपने दायरे की व्याख्या की है। भूतकाल में कांग्रेस कार्यसमिति ने गांधीवादी कट्टर अहिंसा का अनुगमन करने से इन्कार कर दिया है। इस विचार को सिद्ध करने के लिए रेकार्ड में दर्ज प्रस्ताव मौजूद हैं। हम स्वयं भी गांधी जी की फिलासफी के सामाजिक मूल्य से पूरी तरह प्रभावित हैं किन्तु हम उसके व्यावहारिक और उदार रूप को ही स्वीकार करते हैं। यदि हम अपने ऊपर शासन करने वालों को

छोड़ उस विधान से लड़ते जो अन्यायपूर्ण हैं तो इसका यही अर्थ है कि हम अहिंसक हैं। जीवन और व्यक्तिगत सम्पत्ति का आदर करना तो अहिंसा भी सिखाती है। कांग्रेस की मुहर से हमने जो आदेश भेजे हैं उनमें इन मूल्यों पर जोर दिया गया है। यदि सेना और पुलिस अकारण ही दमन करती है तो आसानी से उस परिस्थिति का निराकरण नही किया जा सकता है। प्रतिरोधी के सामने केवल दो रास्ते रह जाते हैं या तो वह यथाशक्य अपनी पूरी शक्ति से उसका मुकाबला करे या उसके सामने आत्म समर्पण कर दे। अधिक से अधिक कठिन परिस्थितियों मे कांग्रेस के नाम पर लांछन लगाने योग्य समर्पण कभी नही किए गए। जुलाई सन् १९४२ के कांग्रेस कार्य समिति के प्रस्ताव से हमने अपना मार्ग निर्धारण किया था कि "प्रत्येक आक्रमण का सामना होना चाहिए क्योंकि झुकने का अर्थ होगा भारतीय जनता को कलंकित करना और गुलामी की बेड़ियों को मजबूत करना। कांग्रेस जापानी सरकार या किसी भी विदेशी आक्रमणकारी का डटकर प्रतिरोध करने का इरादा रखती है।"

पोलैंड निवासियो द्वारा किए जाने वाले आत्मरक्षात्मक प्रतिरोध के विषय मे गाधी जी के सुविदित विचारों का भी हमें ध्यान था। कुछ सीमाओ के अन्दर ब्रिटिश सरकार को सशस्त्र सहायता देने के प्रस्ताव का भी हमे भली भाँति स्मरण था। आपके कारामुक्त हो जाने के बाद एक्जीक्यूटिव कौंसिल में सम्मिलित हो सकने के सिद्धान्त से भी विदित होता था कि हमारा काम कांग्रेस की नीति के विरुद्ध नहीं है क्योंकि [illegible] भी वर्मा और इन्डोनेशिया को विजय करना [illegible] था [illegible]

तो हमें यह धारणा बनानी पड़ेगी कि कार्य यदि वह ब्रिटेन के साथ मिलकर किये जाते हैं तो सुग्राह्य हो जाते हैं और यदि उसी के विरुद्ध किए जाते हैं तो अक्षंतव्य हो जाते हैं। तथापि यह संभव है कि कुछ खास परिस्थितियों के अन्दर किए जाने वाले कार्यों पर भी निष्पक्ष और स्वस्थ मतभेद की हर समय गुंजायश है। जो कुछ हमने कहा वह उन्हीं घटनाओं से सम्बन्ध रखता है जो आप की बलात नजरबन्दी के अर्से में घटित हुईं।

जनता को आदेश

जितनी जिम्मेदारी प्रस्तुत प्रस्ताव के सिलसिले में आपकी धारणा से हमारे ऊपर आती है उसको स्वीकार करने से हमें पीछे नहीं हटना चाहिए। इससे इस सत्य में कोई कमी नहीं आती कि सर्वव्यापक तात्विक विद्रोह स्वप्रेरित नहीं था। हाँ हमने इस विशाल जन शक्ति को कुछ नेतृत्व अवश्य दिया क्योंकि उसके अभाव में यह आन्दोलन महीनों और हफ्तों तो क्या दिनों भी नहीं चलता। कांग्रेस ने अपने इस निश्चय की घोषणा करदी थी कि वह अहिंसात्मक रूप से एक व्यापक जन आन्दोलन चालू करने वाली है। "प्रत्येक भारतीय, जो स्वतन्त्रता की इच्छा रखता है और उसके लिए प्रयत्नशील है।" उसे "अपना नेता स्वयं ही बनना था और अपने को ऐसे पथ पर चालू करना था, जहाँ कोई विश्राम स्थान नहीं है।" किन्तु यह तो स्पष्ट है कि प्रेरणा और संगठन हर आदमी अपने हृदय की आवाज से प्राप्त नहीं कर सकता। कुछ कांग्रेस-जनों और महिलाओं ने इस अभाव की पूर्ति करने की कोशिश की।

हमने आपके इस सत्य की जाँच दूसरा [illegible] देखा भी है कि

आपकी अनुपस्थिति में हम लोगों में से कुछ ने इरादे के साथ निर्देश और नेतृत्व देने की कोशिश की है। आपने निश्चय से कहा है कि नेतृत्व देने का प्रकार कांग्रेस की नीति के प्रतिकूल था। तब हमारे सामने दो कमजोरियाँ आ जाती हैं। एक तो यह कि जो कुछ हुआ उसे हम जनता के स्वप्रेरित विद्रोह का प्रतिफल कहकर पुकारें और आपके न्याय को भविष्य में होने वाले किसी भी आन्दोलन के लिए नसीहत के रूप में स्वीकार करलें। यह भी हो सकता है कि हम अपने को जिम्मेदार न समझें और चुपचाप आपकी नसीहत मानकर बैठ जायें। किन्तु हमारी सचाई हमें इस सरल मार्ग को ग्रहण करने से रोकती है। हमें बार-बार यह चेतावनी दी गई थी कि हमारी कार्यवाही को ठुकराया जा सकता है और कांग्रेस उसे स्वीकार भी नहीं कर सकती, तथापि हम अपने पथ पर विश्वास के साथ चलते रहे और हमने वैध रीति से जनता की प्रतिरोध करने की शक्ति को प्रबल करने का भरसक प्रयत्न किया। हम अपनी अन्तःप्रेरणा से अपने विचारों को पुनः स्वीकार करते हैं और उसके परिणाम को भी भुगतने को तैयार हैं। हमने जनता पर कोई नयी व्यवस्था नहीं लादी थी; प्रत्युत हमने तो जगह जगह पर विद्रोह करने वाली जनता की मनोवृत्ति का भली प्रकार अध्ययन किया था और उसी अध्ययन के बल पर हमने यह निश्चय किया था। हम यथा शक्ति और यथा बुद्धि कुछ स्थानों पर आन्दोलनों में जनता को लाभान्वित करने का प्रयत्न करते थे। हमारे आदेशों को मानकर सहस्त्रों लोगो ने अपने जीवन को खतरे में डाला था। यदि हम ऐसे नेतृत्व का उत्तरदायित्व अपने ऊपर न लेते तो यह हमारी कायरता होती। हम आपके ही विरुद्ध हैं किन्तु कोई व्यक्तिगत युद्ध नहीं कर रहे थे।

गोरखपुर के गांधी

बाबा राघवदास

अगस्त ४२ की विद्रोह की घड़ियों में ही गोरखपुर की विक्षुब्ध जनता को जब बाबा राघवदास को अचानक लखनऊ स्टेशन पर वहाँ की सी० आई० डी० पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लेने की सूचना मिली तो वह और भी उग्र हो उठी; उसके परिणाम स्वरूप गोरखपुर में और भी अधिक कार्य हुआ। यद्यपि बाबा राघवदास बहुत दिन तक भूमिगत रहे थे, उन्होंने गोरखपुर ही नहीं प्रत्युत समस्त भारतवर्ष की जनता को गाँव-गाँव घूमकर जो विद्रोही सन्देश दिया, वह क्रान्ति की चिनगारी का काम कर गया।

वे लाख-लाख जनता के पथ प्रदर्शक और अभिनेता थे। उनकी तलाश में समस्त भारत की पुलिस पागल हो उठी थी। गरीबों के सहायक और त्रस्तो के उपचारक के रूप में वे गोरखपुर मे पुज रहे थे। अपनी कल्याणी वाणी का प्रसाद उन्होंने गोरखपुर की जनता को देकर उसे भावी समर के लिए तैयार कर दिया था। गुलाम देश में ऐसे वीतराग तपस्वी सन्यासी का विश्व-कल्याण का उपदेश देना भी अभिशाप के रूप में परिवर्तित हो गया और नौकरशाही उनसे सदा सशंक रहने लगी। फल स्वरूप उनको अगस्त-क्रान्ति के सेनानी के रूप वह न देख सकी।

बाबा राघवदास जी यों तो महाराष्ट्रीय है, मगर उनके जीवन का सारा महत्वपूर्ण भाग गोरखपुर में ही बीता है। बाबा जी सन् १९२० से ही इस जिले के राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में सक्रिय भाग ले रहे थे। जिले की बेहद गरीबी और भयानक दुर्दशा ने ही एक वीतराग सन्यासी को कर्म-क्षेत्र का मूक निमन्त्रण दिया और उन्होने वहाँ की जनता की वह सेवा की कि जिसके परिणाम स्वरूप आज उस प्रान्त का बच्चा-बच्चा उन्हे 'गोरखपुर के गान्धी' के रूप में जानता है। गोरखपुर जिले मे जो जागृति और बलिदान की भावना हमें इस आन्दोलन मे दृष्टिगत हुई, वह सब बाबा जी के ही अथक परिश्रम तथा त्याग का परिणाम है।

योग-साधन की ओर

कालिज की शिक्षा छोड़कर उनकी प्रवृत्ति योग साधन की ओर हुई और वे इसी अभिलाषा मे दर-दर की खाक छानते इधर से उधर भटकते रहे। आज के बाबा राघवदास उन समय के राघवेन्द्र थे। उनका पूर्व नाम यही था। घूमते-घूमते आप गोरखपुर के समीप बरहज नामक स्थान मे पहुंचे और वहां वे परमहंस श्री अनन्त महाप्रभु की सेवा मे ही लीन हो गए। बीच मे परिस्थितिवश बाबा जी को वह स्थान छोड़ना पड़ा तथा कहीं तक आप उत्तर भारत की प्रसिद्ध शिक्षा संस्था ज्वालापुर महा विद्यालय मे भी रहे। फिर महाप्रभु के देहावसान के बाद आप फिर गोरखपुर चले गए और बरहज के परमहंस आश्रम को ही अपनी विविध प्रवृत्तियो का केन्द्र बनाया। वहां पर [illegible] अपने गुरुदेव की गुफा मे पूरे एक वर्ष तक [illegible] रहे। इन दिनो आप केवल दूध ही पीते थे।

सन् १६२० में बापू का आह्वान हुआ। सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ हुआ और बाबाजी ने अपनी सब प्रवृत्तियां बापू के चरणों में अर्पित कर दीं। उसी समय से गान्धी जी के मार्ग पर आप निरन्तर उन्हीं के सिद्धान्तों के अनुसार कार्य करते रहे।

जन-सेवा

आपके द्वारा संस्थापित परमहंस अनन्त आश्रम बरहज सबसे बड़ी सस्था है। जिसमे संस्कृत कालिज, श्रीकृष्ण हाई स्कूल, ग्रामोद्योग विद्यालय, राष्ट्र भाषा विद्यालय, परशुराम चण्डिका वेद विद्यालय, श्री लाजपत अनाथालय मुख्य हैं। श्री लाजपत अनाथालय सन् ४२ के विद्रोह मे नौकरशाही की आज्ञा से नष्ट भ्रष्ट कर दिया गया।

इसके अतिरिक्त बाबा जी ने बीस मिडिल स्कूल, कसिया मे बुद्ध हाई स्कूल और बुद्ध धर्मशाला, बिरला जी के सहयोग से बनवाई। सन् १६३५-३६ की ऐतिहासिक बाढ़ में आपने गोरखपुर की बाढ़-पीड़ित जनता की अन्न तथा वस्त्रों द्वारा अकथनीय सेवा की। वहाँ के किसान बाबा जी को अपना प्राण-रक्षक समझते है।

गगहा, बॉस गॉव के बॉध का निर्माण करने में युक्त प्रान्तीय सरकार परेशान थी और वह उस पर हजारों रुपये व्यय करने की योजना बना रही थी। बाबा जी ने देखते-देखते स्वयं कुदाल अपने हाथ मे उठाकर, जनता के सहयोग से वह बांध बात की बात मे अविलम्ब तैयार करा दिया। बाबा जी की सक्रिय भावना ही इसमें काम कर रही थी।

४२ की क्रान्ति के सेनानी

४२ में फिर रण-भेरी बजी और बाबा जी उसे इधर-उधर प्रसारित करने में सबसे आगे रहे। उन्होंने अपने फरार जीवन में बड़ी-बड़ी विपत्तियों का सामना किया, परन्तु फिर भी आपका उत्साह मन्द नहीं पड़ा। एक दिन अचानक आप गिरफ्तार कर लिए गए और जेल के सींखचों में बन्द कर दिये गए। इस बार के जेल-जीवन में बाबा जी को अनेक यातनायें दी गईं। उनके गिरते हुए स्वास्थ्य के समाचार पाकर जनता में बराबर उनकी रिहाई के लिए आन्दोलन हुआ; परन्तु अन्यायी सरकार अडिग रही पत्थर की तरह। अन्त में जब कांग्रेसी सरकार बनी तो आपको १९४६ के अप्रैल मास में रिहा किया गया। आप जैसे कर्मठ सेनानियों पर किसी भी भारतीय को गर्व हो सकता है।

बाबा जी का फरार जीवन

अगस्त आन्दोलन के दिनों में बाबा राघवदास ने अपने फरार-जीवन का वर्णन इस प्रकार किया है—"कुछ लोगों का कहना है कि मैं शूट-बूट और हैट धारण करता था और रेल में ऊंचे दर्जे में यात्रा करता था; किन्तु ये दोनों बातें सर्वथा भ्रमपूर्ण हैं। मैं सदा से यह मानता आया हूँ कि हमें वही कार्य करना है, जिससे हमारे साथियों में भी दृढ़ता और नैतिकता बनी रहे जुलाई १९४२ में जब मैं जेल से मुक्त हुआ तो बाहर आने पर शारीरिक दुर्बलता से ही मुझे ऐसे काम करने पड़े। मैंने उचित नहीं समझा कि शारीरिक कमजोरी को सहन करते हुए अपनी नैतिक कमजोरी दिखा दूं। इसलिए मैं

स्वाभाविक वेश और नाम में आवश्यकतानुसार घूमा करता था। इतना ही नहीं, दिल्ली, मद्रास और बड़ौदा आदि बड़े-बड़े स्टेशनों पर, जहाँ यात्रियों को सामान रखने की व्यवस्था है, अपने हस्ताक्षर करके अपने दैनिक ढंग से ही कार्य किया करता था। ८ सितम्बर १९४२ को दिल्ली, २६ अक्टूबर १९४२ को मद्रास और २४ अगस्त को बम्बई के स्टेशनों पर मेरे हस्ताक्षर हैं।

मैं अपने स्वभावानुसार सदा तीसरे दर्जे में ही यात्रा किया करता था। ट्रेन खुलने से आध घंटे पूर्व ही मैं स्टेशनों पर पहुचकर कभी-कभी गाड़ी में बैठ जाया करता था। मैं प्रायः प्रयाग, कानपुर, बनारस और लखनऊ आदि स्टेशनों पर अपने इसी वेश में, कभी-कभी तो दिन में भी, गया हूँ। कहा जाता है कि पुलिस हर समय मेरी ताक में रहती थी, किन्तु मुझे तो ऐसा ज्ञात होता है कि मुझ पर उसकी कृपा थी।

मेरा तो निजी अनुभव यह है कि जहाँ कहीं भी फरारों की गिरफ्तारियाँ हुईं, वे तरह-तरह के नाम धारण करने वाले और पहले के कांग्रेस-कार्यकर्त्ताओं द्वारा ही हुईं। इसके बदले में उन्हें बड़ी-बड़ी रकमें हाथ लगीं। इस आन्दोलन में हमें वहाँ से सहानुभूति प्राप्त हुई जहाँ से कभी भी आशा नहीं थी। और ऐसे स्थानों पर हमें धोखा खाना पड़ा, जहाँ से स्वप्न में भी धोखा होने की कल्पना नहीं की जा सकती थी। अब की बार राष्ट्रीय-कार्यकर्त्ताओं को यह शिक्षा मिली कि उन्हें कहाँ विश्वास करना चाहिए और कहाँ नहीं? उन्हें यह भी अनुभव हुआ कि देहातों के साधारण लोगों और छात्रों में कितना असीम उत्साह और बल है। उनसे युक्तिपूर्वक लाभ उठाया जा सकता है।

नौकरशाही कहती थी कि हमने कांग्रेस को कुचल दिया है; परन्तु अहमदाबाद के मिल मजदूरों की सफल हड़ताल, चिमूर-काड की पीड़ित बहनों के प्रति सहानुभूति तथा न्याय प्राप्त करने के लिए प्रोफेसर भंसाली भाई के ७४ दिन के अनशन मे हजारों स्त्रियों और पुरुषों का उनके पास जाकर सहानुभूति दिखलाना; पूज्य बापू के अनशन के समय उनकी स्वास्थ्य-रक्षा और चिरायु के लिए देश के कोने-कोने मे की जाने वाली प्रार्थनाये आदि बाते काग्रेस के जीवित होने का प्रमाण देती है।

जून १९४३ मे कुछ मित्रों ने निश्चय किया कि पूना मे सत्याग्रह करने के लिए बाहर से अधिक से अधिक संख्या मे भाई-बहनों को भेजा जाय। उस समय सभी प्रकार की रुकावटों के होते हुए भी प्रायः सभी प्रान्तों मे छः सात सौ भाई बहने पूना और बम्बई पहुचे, जिनमें दो-तीन सौ की गिरफ्तारी मार्ग मे ही हो गई थी।

२६ जनवरी सन १९४४ को जब बड़े लाट की कोठी के सामने दिल्ली मे स्वाधीनता दिवस मनाया गया था, उस अवसर पर कुछ मित्रो को अन्देशा था कि वहाँ जो जायगा, गोली का शिकार बन जायगा। उस अवस्था मे भी श्री [illegible] शर्मा 'प्रेम' के नेतृत्व मे २५ स्वयंसेवक खादी की वर्दी मे तिरंगे झंडो के साथ तांगो मे बैठकर वहा जा पहुचे। वहां पर राष्ट्रीय नारो और झंडाभिवादन के बाद सैकड़ो दर्शको मे स्वाधीनता दिवस के छपे प्रतिज्ञा-पत्र बांटे गए। इन दर्शकों मे [illegible] वायसराय के दफ्तर मे काम करने वाले भारतीय कर्मचारी [illegible]

इसी प्रकार १२ अप्रैल १९४४ को लखनऊ के [illegible]

सामने राष्ट्रीय झंडों के साथ तेरह-चौदह स्वयं सेवकों ने श्री मर्यादा तिवारी के तत्वावधान में पहुंचकर झण्डाभिवादन किया, जबकि हैलेटशाही के आतंक से झण्डा लेकर चलना भी मृत्यु को आमन्त्रण देना था।

इन बातों से यह स्पष्ट है कि कांग्रेस को जीवित रखने के लिए भीतर ही भीतर स्वातन्त्र्य-भावना की आग सुलग रही थी और उसका सदुपयोग करना ही हमारा काम था। इससे यह भी सिद्ध होगया कि नौकरशाही का यह कहना कि उसने कांग्रेस को कुचल दिया था, निराभ्रम था।

——

हवलदार रामानन्द तिवारी

१८५७ के सिपाही विद्रोह के बाद यह पहला अवसर था जब सिपाहियों ने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध खुलकर बगावत की। इसलिए जमशेदपुर के सात सौ हथियार बन्द सिपाहियों का यह विद्रोह ४२ की क्रांति का एक अत्यन्त गौरवमय पृष्ठ है और इसका नेतृत्व किया शाहाबाद जिले के बहादुर सिपाही श्री रामानन्द तिवारी ने।

'हरिजन' का प्रभाव

रामानन्द तिवारी उस समय जमशेदपुर मे हवलदार थे। शुरू से ही उन्हें कांग्रेस से दिलचस्पी थी। इसलिये वे सदा खादी पहनते और गांधी जी का 'हरिजन' पढ़ते। 'हरिजन' पढ़ने मे १९४२ का जून आते आते उन्हें यह साफ दीखने लगा कि एक बार फिर गांधी जी बगावत का झण्डा तुरन्त खड़ा करेंगे। देर करना हानिकारक होता, इसलिए जून महीने में ही आपने 'इनकलाबी सिपाही दल' नामक एक गुप्त संस्था का संगठन किया। शुरू मे इसके तीन ही सदस्य थे। लेकिन ज्यों ज्यों क्रांति के बढ़ने के साथ ही इसके सदस्य भी बढ़ने लगे और उनकी संख्या सात सौ तक पहुंच गयी।

टाटानगर की हड़ताल

और इस क्रांति का आरम्भ—जहां तक जमशेदपुर के सिपाहियों का सम्बन्ध था—६ अगस्त के [illegible] से हुआ [illegible]

सभी सिपाहियों ने भाग लिया। १० तारीख को रामानन्द तिवारी ने सभी सिपाहियों को साथ लेकर टाटानगर की मि के हड़ताल को सफल बनाने मे पूरा सहयोग दिया।

उसी दिन रात को तिवारी जी ने सभी सिपाहियो व एक सभा की। वहां निश्चय किया गया कि कोई भी सिपाही आन्दोलन को कुचलने के लिए किये गये किसी भी काम मे सहयोग न करे। १५ अगस्त तक आपने १२००० पर्चे छपव लिए जिनमें सिपाहियो की बगावत का सन्देश दिया गया था इन पर्चों को बिहार के सभी हिस्सो मे भेजा गया। कुछ पर्चे बंगाल भी गये।

हथियारों, बैंकों पर कब्जा

पुलिस के अफसर हैरत मे थे। आखिर क्या किया जाय—उनकी समझ मे कुछ नहीं आ रहा था। सात नो वर्दी पहने हुए हथियारबन्द सिपाहियों का जुलूस हर रोज जनता मे एक नया उत्साह भर रहा था। पुलिस चौकियाँ, थाने, इम्पीरयल बैंक, डाकखाना, मैगजीन, खजाना सभी पर बागी सिपाहियो का कब्जा था।

चार सितम्बर को बिहार पुलिस के इन्सपेक्टर जेनरल क्रीड जमशेदपुर पहुचे। उन्होंने तिवारी जी से पांच घण्टे बातें कीं। तिवारी जी को सब तरह का लालच दिया गया। उनको हवलदार से इन्सपेक्टर बनाने का वादा किया गया। लेकिन तिवारी जी अपने पथ से नहीं हटे। सिपाहियो को भी फोड़ने की कोशिश की गयी। बिहार के सिपाहियो के वेतन में स्थायी और अस्थायी तौर पर वृद्धि भी की गयी और महंगी का भत्ता भी बढ़ाया गया। लेकिन वह सब भी बेकार हुआ।

जमशेदपुर का घेरा—गिरफ्तारी

अन्ततः ब्रिटिश संगीनें आयी। मशीनगनों से लैस १५००० गोरे और गोरखे जमशेदपुर पहुचे। समूचा शहर घेर लिया गया। रामानन्द तिवारी ३३ सिपाहियो के साथ गिरफ्तार कर लिये गये और हजारीबाग सेन्ट्रल जेल मे रखे गये। कचहरी मे उन्होने अपनी तरफ से बचाव की कोई सिफारिश नहीं की। एक लिखित बयान दिया। जिसे बयान न कहकर बागी के उद्गार ही कह सकते हैं।

उसमे आपने साफ कह दिया कि मै ब्रिटिश सरकार को एक दम नही मानता और कांग्रेस को ही हिन्दुस्तान के शासन की अधिकारिणी समझता हूँ। एक साल कैद की सजा इनाम मे मिली।

जयप्रकाश के साथ

६ जुलाई १६४३ मे जेल से छूटने के बाद आपने भी जयप्रकाश नारायण के मातहत उनके गुप्त संगठन मे [illegible] हिस्सा लिया। देश के एक कोने से दूसरे कोने तक जाना [illegible] सिपाहियो को लड़ाई के लिए तैयार करना—[illegible] काम था। इनकलाबी सिपाही दल की फिर से स्थापना [illegible]। इस तरह आपने डेढ़ वर्षों तक फरारी की हालत मे [illegible] २६ दिसम्बर १६४४ को आप फिर पकड लिये गये।

३१ जनवरी १६४६ को फिर आप [illegible] बक्सर सेण्ट्रल जेल के वार्डरों और [illegible] रिहाई के समय दावत दी थी। तब से आप [illegible] हिस्सो मे पुलिसमैन एसोसिएशन [illegible] वाले संग्राम के लिए सब सिपाहियो को [illegible]

पाँचवाँ भाग

अगस्त क्रान्ति पर नेताओं के उद्गार

सन् ४२ के वीरों को श्रद्धाञ्जलि

अलमोड़ा जेल से १५ जून ४५ को रिहा होने के उपरान्त पं० जवाहरलाल नेहरू ने वहाँ की एक सार्वजनिक सभा में जो भाषण दिया था, वह निम्न प्रकार है—

मैं १०४१ दिन के बाद जेल से रिहा हुआ हूँ। अब तक मैं जेल में रहते हुए संसार की घटनाओं के सम्पर्क में नहीं रहा और बाहर जो कुछ हुआ उसका मुख्यतः ज्ञान मुझे पत्रों से हुआ। जब मै स्वतन्त्र हुआ तो मुझे थोड़ा आश्चर्य हुआ। लार्ड वेवल ने अपनी योजना में क्या कहा है, इसके सम्बन्ध में मुझे पत्रों मे प्रकाशित योजना के अतिरिक्त कुछ मालूम नहीं है। कांग्रेस कार्य समिति के सदस्य भी जेलों से रिहा कर दिये गए है; किन्तु अभी सैकड़ो ही देशभक्त जेलों मे है।

सन ४२ का उल्लेख

विगत ३ वर्षों की घटनाओ का उल्लेख करते हुए आपने आगे कहा—"मुझे यह ज्ञात नहीं कि अगस्त ४२ में और उसके

बाद के दिनों में क्या हुआ ? मैंने कई बाते पढ़ी और सुनी हैं, जिनमें से मैं कुछ को ठीक मानता हूँ और कुछ को ठीक नही मानता; किन्तु मै इस सम्बन्ध में निर्णायक बनना नहीं चाहता।

अहमदनगर से तबादला

उन्होने अहमदनगर जेल से अपने तबादले के विषय में कहा—'अहमदनगर जेल में हम १२ व्यक्ति थे। उनमें से ३ अजीब ढंग से युक्त प्रान्त के लिए तबदील कर दिये गए। सरकारी व्यवस्था पेचीदी थी; लेकिन हमे यह व्यवस्था पसन्द थी। बरेली जेल मे अन्य राजबन्दी भी थे, कुछ को हम मिले और कुछ को हमने दूर से देखा। हमारे सैकड़ो साथी आज भी जेल में हैं, यह हमारे लिए कोई खुशी का विषय नहीं।

सरला देवी को सजा

नेहरू जी ने फरार लोगो व राजनैतिक कार्यकर्ताओं के परिवारों की सहायता करने वाले लोगो के साथ सरकार द्वारा किये गए व्यवहार की तीव्र निन्दा की। इस सिलसिले में महात्मा गान्धी की अंग्रेज शिष्या कुमारी कैथराइन हीलमैन उर्फ सरला देवी को एक वर्ष की सख्त कैद की सजा का आपने उल्लेख किया। आगे आपने कहा कि मैंने कई वर्षों से कानून का अध्ययन छोड़ रखा है, लेकिन मै पूछता हूँ कि क्या किसी अन्य सरकार के लिए विशुद्ध कानूनी दृष्टि से यह उचित है कि प्यासे को पानी से और भूखे को अन्न से वंचित किया जाय? यदि ऐसा ही हो, तो ऐसी सरकार की तीव्र निन्दा की जानी चाहिये।

अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति

तत्कालीन अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति पर प्रकाश डालते हुए

नेहरू जी ने आगे कहा कि युद्ध समाप्त हो चुका है; किन्तु अन्य अनेक कठिनाइयाँ पैदा हो रही हैं। भारत में क्या होगा, यह मैं नहीं जानता। आज के क्रान्तिकारी विश्व में हमें अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति का अध्ययन करना चाहिए और हमें समय आने पर कोई भी बलिदान करने के लिए तैयार रहना चाहिए। मैं आप लोगों से अपील करूंगा कि आप लोग अनावश्यक नारे न लगाया करें और विगत घटनाओं के अनुभवों से लाभ उठाकर काम करें।

श्रीमती अरुणा आसफअली

अन्त में नेहरू जी ने श्रीमती अरुणा आसफअली का भी जिक्र किया। आपने कहा कि जेल से रिहा होने के बाद मैं यह घोषित करना अपना कर्तव्य समझता हूँ कि उन सैकड़ों देश-भक्तों में से जिनकी जान चली जा चुकी है, जिन्हें फांसी दी जा चुकी है और जो अभी तक जेलों में सड़ रहे हैं, श्रीमती अरुणा आसफअली जहाँ कहीं भी हों उन तक मेरी यह आवाज जानी चाहिए कि उन्होंने देश के लिए जो कुछ किया है, उसे मैं न भूल सकूंगा।

कांग्रेस मरी नहीं

प्रयाग में आनन्द भवन में अपने स्वागत के लिए एकत्रित जनता के सामने भाषण देते हुए आपने कहा- "कुछ लोग कहते हैं कि कांग्रेस कुचल दी गई है या वह मर गई है। आप इस बात पर कभी विश्वास मत कीजिए। अब भी आपका उत्साह देखकर मुझे अगस्त १९४२ की याद आ जाती है। मुझे

उन दिनों का पूरा समाचार मालूम नही है परन्तु वे कुछ भी हो, मेरे देशवासियो ने चाहे उचित किया या अनुचित। मेरा मस्तक उन निर्भय बलिदानी वीरो के लिए झुक जाता है, जिन्होने देश की स्वतन्त्रता के लिए अपने प्राण दे दिये। मै अपना सिर अपने उन असंख्य नागरिको, प्रान्तवासियो और देशवासियो के लिए भी झुकाता हूँ जो उस ऊंचे ध्येय क लिए लड़े है और अब भी लड़ रहे हैं। मैने बलिया, आजमगढ़ और गोरखपुर जिले के लोगों के वीरतापूर्ण कार्यो और कष्ट सहन का हाल सुना है। मै उनको भी अपनी श्रद्धाजंलि समर्पित करता हूँ। उनके कष्ट सहन, उनके त्याग और उनकी वीरता हमारे युद्ध के इतिहास का एक अध्याय होगे।

— —

अहमदनगर के अनुभव

अहमदनगर जेल के अनुभव बताते हुए नेहरू जी ने कहा अब तक मै जितनी जेलो मे रह चुका हूँ, उन सब मे अहमद-नगर की जेल सबस अच्छी रही है। यह पहला अवसर था जब मुझे जेल मे बिजली मिली। कमरे काफी बड़े-बड़े थे। खाना अन्तिम समय तक खराब रहा। यही वजह है कि मै इतना दुबला होगया हूँ। खाना गन्दा होन का कारण यह था कि खाने की ठीक व्यवस्था न थी। बाहर के किसी भी रसोइये को जेल मे रखना कठिन था, क्योकि उसे भी राजबन्दियो की तरह बन्दी जीवन बिताना पड़ता। फलस्वरूप रसोई का काम [illegible] व्यक्ति को सौंपा गया था, जिसने पहले कभी खाना न बनाया था। कार्य समिति के सब सदस्य खाना [illegible]

खाते थे। वे जब चाहते थे आपस में मिल भी लेते थे। लेकिन मुलाकातियों से उन्हें मुलाकात नहीं करने दी जाती थी। अहमदनगर के ३ वर्ष के जीवन में मैं एक भी बच्चे व स्त्री को न देख सका। मैं नियमपूर्वक कसरत करता था। औरों की तरह मेरी भी एक बगीची थी।

हमारा भविष्य उज्जवल है

स्वतन्त्रता और प्रजातन्त्र के लिए जो भी सहर्ष बलिदान किया जाय, वह कभी बेकार नहीं जाता। विगत चार वर्षों में हमारे लोगों ने बहुत आश्चर्य जनक भावना प्रकट की है और उन्होंने संसार को यह बता दिया है कि वे स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए कटिबद्ध हैं। मेरा यह स्पष्ट मत है कि इस आन्दोलन के फलस्वरूप राष्ट्रीय शक्तियों का एक बहुत शक्तिशाली संगठन बना रहा है। मैं उन लोगों में से नहीं हूँ, जो उस महान संस्था को जिसने कि हिन्दुस्तान को स्वतन्त्र बनाने के लिए बहुत ऊंचा उठाया है, नीचा दिखाऊँ। मैं उन्हें बधाई देता हूँ, क्योंकि वही भारत के भावी नेता होंगे। यह एक शुभ लक्षण है और इससे मुझे यह आशा होती है कि हमारे देश का भविष्य बहुत उज्जवल है।

—आचार्य नरेन्द्रदेव

अगस्त ४२ का दमन

विगत चार वर्षों में जनता को जिन मुसीबतों का सामना करना पड़ा उन्हें, और खासकर कांग्रेस-कार्यकर्त्ताओं को जिन

वाली तकलीफों को हम नहीं भूल सकते। आज भी हम जलियाँ-वाला बाग को नहीं भूले। लेकिन ९ अगस्त ४२ के बाद जो दमन हुआ उसके सामने जलियाँ वाला बाग की घटनाये भी गौण हो गई हैं। अब हम अपने जख्मों को हरा न होने देंगे। स्वाधीनता संग्राम अभी तक समाप्त नही हुआ, वह अभी तक जारी है। जब तक हमें पूर्ण स्वाधीनता नही मिल जाती तब तक हमे अपना संग्राम जारी रखना होगा, फिर चाहे उसका स्वरूप समय के अनुसार कोई भी क्यो न हो ?

—आचार्य कृपलानी

अगस्त क्रान्ति

अगस्त-क्रान्ति के सम्बन्ध मे यू० पी० के प्रतिष्ठित नेता श्री शिब्बनलाल सक्सेना ने निम्न विचार प्रकट किए है—

"अगस्त-आन्दोलन के असली नेता महात्मा गान्धी, सरदार पटेल और राजेन्द्र बाबू ही थे। गान्धी जी ने इस विचार को जन्म दिया तथा पटेल और राजेन्द्र बाबू ने इसे कार्यान्वित किया।

प्राणों की आहुति चाहिए

आन्दोलन छिड़ने से पूर्व महात्मा गान्धी जी ने [illegible] कि इस बार हम आपको जेल भेजना नहीं चाहते [illegible] हमे प्राणो की आहुति चाहिए। इनकी [illegible] कि देश में [illegible] आम हड़ताल हो जिसमे देश के सभी [illegible] उनका विचार जेल मे जाकर चुपके से बैठने का नहीं [illegible] अनशन करके प्राण दे देने का था। इन्होंने [illegible]

प्रण कांग्रेस कार्य समिति के सामने रखा था। आपने देखा कि क्या हुआ ? सारे देश मे एक होड़ लग गई कि हम किस प्रकार अंग्रेजी हुकूमत को मिटायें। मैंने देखा कि बम्बई में एक स्थान पर घंटे भर गोली चलती रही पर जनता अपने स्थान पर अडिग, अडोल खड़ी रही। जब मैं गिरफ्तार किया गया तो मुझे फाँसी की कोठरी में रखा गया था। बाहर सशस्त्र पुलिस का पहरा था। इन पहरेदारों ने मुझे बताया कि आन्दोलन के प्रथम पखवारे मे अंग्रेजों का तख्ता उलट गया था और एक महीने तक हुकूमत बिल्कुल डांवाडोल अवस्था में रही थी। हम अन्त तक पूर्णतया अहिंसक बने रहे। यदि चाहते तो स्वयं गोरखपु जिले में एक भी सरकारी अफसर के प्राण नहीं बच सकते थे हम खामोश थे। हम अहिंसा के पथ से डिगे नहीं, यद्यपि हम पर बार-बार कायरता पूर्ण हमले किये गए।

समझौते का विरोधी हूँ

अगस्त आन्दोलन के इतिहास पर भली भाति विचार करने के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुचा हूँ कि आन्दोलन की असफलता का सबसे मुख्य कारण जनता की अनभिज्ञता ही है। उन्हें इसके लिए तैयार नही किया गया था। मैं दिल्ली मे होने वाले समझौते का विरोधी हूँ। सच्ची आजादी मिलने तक न तो मैं स्वयं चैन से बैठूँगा और न आपको बैठने दूँगा। प्रान्तों का संघ बनाने अथवा समानता का अधिकार देने से हमें आजादी न मिलेगी। यदि वार्ता के फलस्वरूप कार्य होता है तो हमें आगामी क्रान्ति की तैयारी अभी करनी चाहिए।

तोड़ फोड़ से लाभ कम

मेरा यह निश्चित मत है कि तोड़-फोड़ से लाभ है

स्थान में हानि ही अधिक हुई है। स्वयं मैंने भी तोड़-फोड़ में उस समय भाग लिया था; परन्तु मै उसके लिए लज्जित नहीं हूँ। परन्तु अब मै इस परिणाम पर पहुचा हूँ कि आम हड़ताल तोड़-फोड़ से अधिक सफल होती।

आजाद हिन्द फौज आदर्श

सुभाष बाबू की आजाद हिन्द फौज ने एक नवीन जीवन पैदा कर दिया है। उसने भारतीय सेना के सम्मुख एक आदर्श रखा है। फलस्वरूप वह सेना जो अगस्त-आन्दोलन को निर्दयता पूर्वक कुचल रही थी आज भिन्न मत की हो गई है। बम्बई और कराची का नाविक विद्रोह तथा जबलपुर की सैनिक हड़ताल इसके प्रबल प्रमाण हैं।

सफल क्रान्ति कैसे सम्भव ?

अगली क्रान्ति को सफल बनाने के लिए यह आवश्यक है कि रेलें बन्द हो जायें इसके लिए छात्रों, मजदूरों, कृषकों तथा सभी वर्गों का संगठित होना अत्यावश्यक है। बच्चों को अपने जीवन का एक क्षण भी बर्बाद न करना चाहिए। [illegible] पटना, लखनऊ आदि केन्द्र-स्थानो पर हमें विशेष कार्य करना है, क्योकि इन्हीं केन्द्र-स्थानों पर हमे सर्व प्रथम राष्ट्रीय झंडा फहराना होगा।

गान्धी जी ही एक मात्र नेता

गान्धी जी कहीं लेनिन से आगे [illegible]
शताब्दी आगे की बाते सोचते है। [illegible]

गलत है। वास्तविक कम्युनिष्ट तो गान्धी जी ही हैं। उन्होंने दुनिया के सामने एक नई चीज रखी है। सुभाष बोस ने कहा था—मेरे मार्क्स, मेरे गुरु गान्धी जी ही हैं। एटम बम का मुकाबला मार्क्सवाद नहीं, प्रत्युत गान्धीवाद ही कर सकता है।

सक्सेना योजना

श्री शिब्बनलाल सक्सेना ने कांग्रेस के अन्दर घुसी समझौता प्रवृत्ति को दूर करने के लिए उग्र गांधीवादी कांग्रेस संघटन करने की योजना बनाई है। आपने इस नवीन पार्टी के लिए निम्न कार्यक्रम बनाया है:—

(१) श्रमिकों का देशव्यापी संगठन इस प्रकार किया जाय कि आवश्यकता पड़ने पर सारे देश में ऐसी जबर्दस्त हड़ताल कराई जा सके जैसी ब्रिटेन में १६२६ में हुई थी। साम्राज्य को ध्वस्त करने के लिए छिटफुट कार्य करने के स्थान पर वह सर्वोत्तम तरीका होगा। (२) आजाद फौज के सैनिकों को कांग्रेस के अन्दर लाने का प्रयत्न किया जाय तथा उनको संगठित कर उन्हें साम्राज्यवाद विरोधी कार्यक्रम समझाया जाय। (३) पुलिस और फौज की स्वदेशाभिमान की आन्तरिक प्रवृत्ति को जागृत कर उनको अपने साथ कर लिया जाय जिससे भावी आन्दोलन में वे हमारे विरुद्ध न जा सकें। (४) राष्ट्रीय और कांग्रेसी मुसलमानों के अन्दर क्रान्ति के बीज बोये जायें और उनका अधिकाधिक सहयोग इस कार्य के लिए हो (५) छात्रों को भावी आन्दोलन का नेतृत्व करने की शिक्षा दी जाय। (६) किसानों के अन्दर गाँधी जी के रचनात्मक कार्यक्रम के अनुसार कार्य किया जाय और (७ गत २५ वर्षों से जो लोग

देश के लिए बलिदान करते आये हैं उनके अन्दर क्रान्तिकारी प्रवृत्तियों को अधिकाधिक तीव्र बनाया जाय जिसमें से किसी भी अवस्था में न रह सकें।"

४२ की लड़ाई को सफल बनाओ

जिस लड़ाई को उन्होने १६४२ मे शुरू किया है उसे वे सफल बनावें। आपने बलिया और नागपुर का उल्लेख करते हुए कहा कि वहाँ लोगों ने पूर्णतः सरकार को अपने कब्जे मे कर लिया था और काफी दिनो तक कब्जे मे रखा था। बलिया और नागपुर में जनता का शासन तो कम दिन इस लिए रहा कि लोगों ने कुछ गलतियां की जो सतारा मेदनीपुर मे नही की गयीं। यद्यपि अन्त में वे एक बड़ी शक्ति से दबा दिये गये। अब लोगों को देशव्यापी आधार पर वही करना है जो इन स्थानों पर किये गये थे।

—श्री राममनोहर लोहिया

अगस्त क्रान्ति के तीन दिन

बिहार के सुप्रसिद्ध नेता श्री जगतनारायणलाल एम० एल० ए० का नाम १९४२ की क्रान्ति के इतिहास में प्रमुख है। प्रयाग में हुई कांग्रेस कमेटी में स्वीकृत अखंड भारत प्रस्ताव के साथ भी आपका नाम जुड़ा हुआ है। बिहार की अगस्त-क्रान्ति इतिहास में अपना विशेष स्थान रखती है। उस क्रान्ति में श्री जगतनारायणलाल का बड़ा हाथ था आपने उक्त शीर्षक से उन्हीं दिनों की कहानी नीचे की पंक्तियों में लिखी है:—

"महात्मा जी के प्रेरणादायी अन्तिम भाषण के बाद बम्बई में ८ अगस्त १९४२ को अ० भा० महासमिति की बैठक रात में समाप्त हो गई। महात्मा जी ने उस समय के एकमात्र अधिनायक प्रत्येक प्रान्त से कुछ सदस्यों को मिलने के लिए अगले दिन सुबह बुलाया था जबकि गांधी जी सरकार के साथ की जाने वाली समझौते की बातचीत के टूट जाने की अवस्था में क्या करना होगा, इस बारे में हिदायतें और निर्देश देने वाले थे।

कांग्रेस कार्यसमिति और अ० भा० कांग्रेस कमेटी के सदस्यों की गिरफ्तारी की अफवाहें और उनका खण्डन पिछले दो दिनों से शहर की चर्चा का विषय बना हुआ था इसमें कोई विस्मय की बात नहीं थी, यदि ऐसा होता, क्योंकि हम सब इसके लिए वहाँ पहले से तैयार होकर गये थे। मगर यह किसी ने नहीं सोचा था कि सरकार इतनी अधिक मूर्ख होगी कि वह

सन्धि-चर्चा को न चलने देगी, जो कि काँग्रेस की ओर से प्रत्यक्ष आन्दोलन शुरू किए जाने से पहले की जाने वाली थी।

महात्मा जी पकड़े गये

विदेशी गवर्नमेंट से बुद्धिमानी और विवेक की आशा करना ही व्यर्थ है, जो ऐसे लोगों की सलाह से चलती है जोकि इस देश की जनता के मतामत विचारधारा से सर्वथा अछूते हैं। अगले दिन भोर में महात्मा गाँधी गिरफ्तार कर लिए गए। आपके साथ ही कांग्रेस कार्यसमिति के सब सदस्य भी गिरफ्तार कर लिये गए। शहर के विहित भाग के अन्दर फोन की सब लाइनें बन्द थीं। बिना पूर्व अनुमति के निजू ट्रंक काल भी नहीं हो सकता था।

अगले रोज सुबह जब हम महात्मा जी से मिलने गए, तो हमें बताया गया कि वे कार्यसमिति के सदस्यों के साथ पहले ही गिरफ्तार किये जा चुके है। इसके बाद हम [illegible] प्रान्त के मन्त्री से मिलने चले, जो कि मालावार [illegible] ही ठहरे हुए थे। पर वहां जाने पर मालूम हुआ कि वे [illegible]-भवन इस बात का पता लगाने गए है कि गांधी जी गिरफ्तार होने से पहले राष्ट्र के वास्ते क्या सन्देश छोड़ गये है। इसके बाद हम मृदुलाबेन के निवास स्थान पर गए और हमें [illegible] मालूम हुआ कि गाँधी जी राष्ट्र के नाम 'करो या मरो' का सन्देश दे गए हैं। इसके बाद मैं अपने आतिथेय के साथ [illegible] शहर की स्थिति देखने गया। [illegible] कांग्रेस कमेटी के सदस्यों से भी मिलना चाहता था [illegible] क्या हो रहा? ज्यों-ज्यों हम [illegible]

बढ़ते गए हमें हर सड़क और हर गली में लोगों की बड़ी भीड़ घूमती दिखाई दी। उत्तेजित भीड़ कारों को रोक रही थी और बसों और अन्य सवारियों का चलना उसने सर्वथा रोक दिया था। बड़ी कठिनाई से पर मेजमान के पिकेटरों को यह बताने पर कि मैं अ० भा० कॉंग्रेस कमेटी का सदस्य हूँ और काम से जा रहा हूँ हमारी कार जाने दी गई।

दावानल के समान

सरदार गृह पहुंचने पर मैं श्री रविशंकर शुक्ल और सी० पी० और यू० पी० के अन्य सदस्यों से मिला। उनसे मालूम हुआ कि उन्होंने अपने-अपने प्रान्तों की स्थिति जानने के लिए ट्रंक काल करना चाहा था, पर वे असफल रहे। इस समय तक सारे शहर में दावानल के समान महात्मा गांधी और कार्य समिति के सदस्यो की गिरफ्तारी का समाचार फैल गया था। बम्बई प्रान्त के कुछ प्रमुख कांग्रेसजन भी अब तक गिरफ्तार किये जा चुके थे। हमने सुना कि अ० भा० कांग्रेस कमेटी के अन्य प्रान्तों के सदस्य बम्बई मे गिरफ्तार न किये जावेंगे और वे अपने प्रान्त मे पहुचने के बाद पकड़े जावेंगे।

यह भी पता चला कि गांधी जी और उनके साथी किसी अज्ञात स्थान पर ले जाये गये है, वह रेलवे अधिकारियो तक को नहीं पता। हमने निश्चय किया कि अपने-अपने प्रान्तों को रवाना हुआ जाय और उसी रात हम गाड़ी पर सवार हो गए। मगर यह कोई नहीं जानता था कि कौन कहाँ गिरफ्तार हो जायगा। अफवाहें बराबर सब तरह की उड़ रही थीं। गाड़ी में बैठे शुभेच्छु लोगों ने हमें राय दी कि हम गिरफ्तार होने के

लिए तैयार रहें, क्योंकि हम गाड़ी में ही इस या उस स्टेशन पर गिरफ्तार कर लिए जावेंगे। गाड़ी सी० आई० डी० पुलिस से भरी मालूम देती थी। इस बात का कोई आभास नही था कि वे कब और क्या करने वाले हैं।

मगर हमारी रात शान्ति से गुजरी। अगले दिन प्रातः-काल जब हमारी गाड़ी सी० पी० प्रदेश में दाखिल हुई तो जबलपुर से कुछ स्टेशन इधर ही एक स्टेशन पर रोकी गई और पुलिस अधिकारी सदल-बल हमारे डब्बे मे घुस गए और उन्होने सारे डब्बों की जांच-पड़ताल की। प्रतीत होता था कि वे जिस व्यक्ति की खोज कर रहे थे, वह इस गाड़ी से सफर नही कर रहा था, क्योंकि उन्होंने किसी को गिरफ्तार नहीं किया। मगर जब गाड़ी स्टेशन को छोड़ कर आगे बढ़ने लगी तब मैंने देखा कि पुलिस के पास एक दरी बिछी पड़ी है। यह प्रगट था कि उन के द्वारा गिरफ्तार व्यक्ति के साथ चलने के लिए वे वहां जमा हुए थे।

मेल ट्रेन जबलपुर स्टेशन पर पहुंची। पुलिस अफसरों का एक बड़ा दस्ता जिसमे यूरोपियन और भारतीय दोनों थे, कानिस्टेबिलों की एक बड़ी सेना के साथ अपने से भी [illegible] बड़ी भीड़ के सहित गाड़ी के प्लेटफार्म पर आने की प्रतीक्षा मे खड़ा था। गाड़ी की एक सिरे से दूसरे सिरे तक तलाशी ली गई। अनेक कांग्रेस-जन वहाँ उतर गए। मगर मैं जहां तक देख सका पुलिस द्वारा चाहे व्यक्ति इनमें नहीं पाये गए और इसलिए वहां कोई गिरफ्तारी नहीं की गई।

रात मे हमारी गाडी इलाहाबाद पहुंची। [illegible] जाने के लिए हमे वहां गाड़ी बदलनी थी पर [illegible] [illegible]

कुछ घण्टे प्लेटफार्म पर बैठ कर इन्तजार करना पड़ा। इसी बीच एक पुलिस दस्ता आया और हमारे मे से एक को जो 'आज' दैनिक के सहायक सम्पादक थे, और हमारे साथ सफर कर रहे थे, गिरफ्तार कर ले गई। बाद में हमें मालूम हुआ कि उनको खुसरूबाग जेल ले जाया गया था।

सतर्क हो गए

अब हम और अधिक सतर्क और चौकन्ने होगए। हमने योजना बनाई कि पहले उन लोगों को पटना भेजा जाय, जो अधिक प्रसिद्ध नहीं हैं और वे बम्बई महात्मा गान्धी का दर्शन करने तथा अ० भा० कांग्रेस कमेटी का अधिवेशन देखने के लिए गए थे। उनको यह भी निर्देश दिया कि मार्ग के किसी स्टेशन पर वे कार या दूसरी सवारी लेकर आवें, जिससे हम असावधानी मे अनजाने और अपने प्रान्त के लोगों को कांग्रेस का सन्देश देने से पहले ही गिरफ्तार न कर लिए जायें।

मेरे अन्य साथी सीधे मुगलसराय चले गए और मैं बनारस उतर गया। निश्चय यह हुआ था कि मैं कुछ घंटे बनारस ठहर कर अपने साथियो को मुगलसराय मिल जाऊँगा और सब एक साथ दिन की गाड़ी से पटना के लिए रवाना होंगे। मेरे पास जो समय था, उसमे मैंने गंगा जी मे स्नान किया और श्री विश्वनाथ मन्दिर के दर्शन किए। मैंने आदरणीय महामना मालवीय जी के भी दर्शन किए और श्री शिवप्रसाद जी गुप्त तथा रमाकान्त मालवीय से भी मिला। उस समय मेरे मन में यह एक बार भी ध्यान मे नहीं आया कि मैं इनसे अन्तिम बार मिल रहा हूँ; क्योंकि इसके कुछ दिनो बाद दोनों महानुभावों का

स्वर्गवास होगया। महादेव और इस युग के ब्रह्मर्षि श्रद्धेय महामना मालवीय जी का आशीर्वाद लेकर, मै तीर्थ-धाम से क्रान्ति को अपने यौवन पर देखने और अपना तुच्छ भाग अदा करने के लिए अपने प्रान्त की ओर चल पड़ा।

मै बनारस से दोपहर की पैसञ्जर ट्रेन से चला जो सीधी पहुचती है। मेरे साथी, जो मुगलसराय मे मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे, मेरे साथ आ मिले और हम सब एक साथ एक ही डिब्बे मे बैठकर रवाना हुए। जब गाड़ी दिलदारनगर पहुची और वहाँ से छूटने वाली थी तो छात्रो की एक बड़ी भीड़ गाड़ी मे चढ़ गई और उसने जंजीर खीच दी। गाड़ी दूर सिगनल पर रुक गई। एक भारी भीड़ वही इकट्ठी हो गई।

इंजिन पर झन्डा

कुछ देर बाद गाड़ी रवाना हुई। हमने जब बाहर झांका तो देखा कि तेजी से दौड़ रहे इंजिन पर तिरंगा झंडा लगा हुआ गाड़ी के चलने के साथ हवा मे झोको के साथ इधर उधर फहरा रहा है। खेतों मे काम करने वाले किसान [illegible] और चकित नेत्रो से इस दृश्य को देख रहे थे। लाइन के साथ खडे लोग और चलने वाले लोग भी विस्मय से [illegible] [illegible] फाड़-फाड़कर वह दृश्य देख रहे थे। बात यह थी कि छात्रों ने गाड़ी पर पूर्ण अधिकार कर लिया था और उन्होंने क्रान्ति की पताका उस पर फहरा दी था। ड्राइवर पूर्णत. [illegible] [illegible] रूप से उनके नियन्त्रण और निर्देश से गाड़ी को [illegible]

बक्सर

गाड़ी बक्सर पहुची। वहाँ [illegible]

फार्म और स्टेशन के पुलों पर दिखाई दी। पुलिस अफसर और कांस्टेबल भी बड़ी संख्या मे वहां दिखाई दिए। वहाँ पहले से भी अधिक संख्या में छात्र गाड़ी मे सवार हुए और वे पहले, दूसरे तथा अन्य दर्जों के डिब्बों में फैलकर बैठ गए। पुलिस अफसर किसी की खोज कर रहे थे, ऐसा प्रतीत होता था। मगर उन्होंने किसी को रोका नहीं।

बक्सर से रवाना होकर हमारी गाड़ी डुमरॉव पहुची। वहाँ पर छात्रो की भीड़ उतर गई। वहाँ पर शाहाबाद जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री सूरजनाथ चौबे गाड़ी से उतरे, जो कि हमारे साथ बम्बई से चले आरहे थे। हमारी गाड़ी हर एक स्टेशन पर रोकी गई और सर्वत्र हमे बड़ी उत्तेजना और उत्साह का दृश्य दिखलाई दिया। बाहिया में हम एक पुराने उत्साही कार्यकर्त्ता से मिले और उससे बातें की। दुःख है कि अब वे इस संसार में नहीं रहे। जब हम आरा पहुंचे तब एक यूरोपियन अफसर, सम्भवतः वह एस० पी० था, एक पुलिस दस्ते के साथ आया और गाड़ी के हर एक डिब्बे की जांच पड़ताल करने लगा। उसने प्लेटफार्म के कई चक्कर लगाये। वे सब शाहाबाद काँग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री सूरजनाथ चौबे को ढूंढ रहे थे। मगर वे यहाँ कैसे मिल सकते थे? वे तो डुमराँव में पहले ही गाड़ी से उतर गए थे। आरा स्टेशन का प्लेटफार्म. स्टेशन पर आने के रास्ते तथा पुल जनता की भीड़ से खचाखच भरे हुए थे। सर्वत्र शोर गुल, उत्तेजना और जोश नजर आरहा था।

सेक्रेटेरियट में गोली चली

गाड़ी बहुत घण्टे लेट थी। वह आरा से रवाना हुई और

कोइलवर का रेलवे पुल इसने पार किया और विहटा स्टेशन के पास पहुची थी, जब गाड़ी में कुछ लोगों ने बताया कि आज ही प्रातःकाल छात्रों के जलूस पर सेक्रेटेरियट पर गोली चलाई गई है जो कि वहाँ जा रहा था और बहुत से छात्र मारे गए है। उनसे मुझे यह भी मालूम हुआ कि मेरा पुत्र श्री कृष्णचन्द्र ने जो कि पटना कालेज के चतुर्थ वर्ष का उस समय छात्र था, उसमें अन्य छात्रों के साथ जलूसों में प्रमुख भाग लिया है। मेरे दिल में ख्याल उत्पन्न हुआ कि गोली का वह भी शायद शिकार हुआ होगा, पर पहुचने पर मालूम हुआ कि गोली चलने से पहले ही वह गिरफ्तार कर लिया गया था।

जब गाड़ी नेऊरा स्टेशन पर पहुची जो कि 'दानापुर' से पहला स्टेशन है, तब हम उतर गए। अपना सामान हमने अपने साथियों के सिपुर्द किया। हमारे निर्देश के अनुसार सब काम किया गया था। नेऊरा स्टेशन के बाहर एक कार हमारी प्रतीक्षा कर रही थी। मै और श्री जगजीवनराम उस कार मे पटना आए और इस बात का पक्का पता लगाने के बाद कि पुलिस हमे वहाँ पहुचते ही पकड़ लेने की प्रतीक्षा मे नहीं है, हम अपने निवास स्थान पर गए।

पटना मे ११ ता० तक जो कुछ हुआ था वह [illegible] मे मैने मालूम किया और अपने आप को अगले काम के [illegible] तैयार किया। अगले दिन प्रातःकाल से मै अपने काम मे लग गया। प्रातः समाचार मिला कि पटना सिटी से [illegible] जलूस बना कर पटना जिला जेल तोड़ने और [illegible] रखे कैदियो को बचाने के लिए आ रहे है [illegible] मे उड़ रही थी।

इसलिए तीसरे पहर स्थानीय काँग्रेस के मैदान में सार्वजनिक सभा करने की घोषणा की गई। मैं जब सभा-स्थल की ओर रवाना हुआ, तो देखता हूँ कि एक बड़ी भीड़ नारे लगाते हुई सड़क पर चली जा रही है। एक वकील ने कहा कि भीड़ ने हाल ही मे एक डाकखाने पर हमला किया था और वहाँ से चली आ रही है। मैंने उनसे कहा कि वे हिंसा न करें, पर अहिंसात्मक रहते हुए शासनव्यवस्था को लुंज पुन्ज करदें। फोन काटने आरम्भ हो चुके थे और भीड़ का एक भाग रेलवे लाइन की ओर मुड़ चुका था।

कांग्रेस मैदान में

तीसरे पहर कॉंग्रेस मैदान मे की सभा मे हजारों की संख्या मे छात्र और जनता सम्मिलित हुई। वहाँ मैंने बम्बई मे हुई अ० भा० कांग्रेस कमेटी का सन्देश सुनाया और गांधी जी का 'करो या मरो' सन्देश भी बताया और जनता से कहा कि शासन को लुंज-पुंज करने के लिए वे जो कुछ कर सकते हैं, करे, मगर वे अहिंसा की सीमा के अन्दर ही रहें।

पर स्टेशन के दोनो दरवाजों पर, पुलिस अफसर सार्जेन्ट और सशस्त्र पुलिस इसी प्रकार तैनात थी। मगर मेरी गाड़ी नही रोकी गई।

मै वहाँ से फुलवारी, खगौल और दानापुर गया। स्थानीय कार्यकर्त्ताओं से मिला और उनको प्रोग्राम बताया। खगौल वापस लौटते हुए मैंने अपनी पत्नी और बच्चे को वापस भेज दिया और हम और दूर के देहातो के अन्दर एक गाँव से दूसरे गाँव जाकर क्रान्ति का संदेश सुनाने लगे। हम जब आगे बढ़े तो देखा कि रेले उखड़ी पड़ी हैं, रेलगाड़ियो का चलना एक दम रुका पड़ा है। भोर से लेकर रात तक रेलवे फिटरो और सैनिको से भरी सफेद रेलवे कार इन लाइनो की मरम्मत करती रहती और रेलवे लाइन के दोनो ओर नजदीक मे जहाँ कही लोगो की भीड़ दिखाई देती वहाँ तुरन्त गोली चला दी जाती थी।

नौबतपुर थाने पर हमला

हमने जनता मे अपार उत्साह पाया। [illegible] उत्साह का समुद्र लहराते हुए देखा हमने जनता मे [illegible] और न झुकने के लिए कहा. पर [illegible] रहे। नौबतपुर बाजार मे एक बड़ा जमाव जमा हुआ [illegible] मैने जनता के सामने भाषण दिया। [illegible] लोगो ने दानापुर-नौबतपुर रोड [illegible] के छात्र हड़ताल पर थे और थाने पर [illegible] कर रहे थे।

सभा मे बोल कर [illegible]

संख्या में थाने की ओर बढ़ी। उसका उद्देश्य थाने पर अधिकार करना और झण्डा फहराना था। मुझे यह ख्याल नहीं था कि लोग ऐसा करेंगे और मैंने कार्यकर्त्ताओं को सलाह दी थी कि वे संघर्ष को बचावें। मैंने सुना कि एस० आई० ने अपनी मदद के लिए थाने के सब चौकीदारों को बुला लिया था। इसके अतिरिक्त थानों की पुलिस और एक दो जमींदार राइफलों के साथ मदद के लिए पहुंचे हुए थे। बहरहाल मेरा भाषण समाप्त होते और मेरे रवाना होते ही एक कार्यकर्त्ता ने अकस्मात ही घोषणा कर दी कि लोग थाने पर कूच करें और थाने पर कब्जा कर लें।

तड़ातड़ गोली

मैं अभी बाजार से बाहर भी नहीं पहुंचा था कि मुझे तड़ातड़ गोली चलने की आवाज सुनाई देने लगी। मैंने लोगों से कहा जाओ और भीड़ को वापस बुला लो, मगर तब बहुत देर हो चुकी थी। मुझे भय था कि पुलिस की गोली से बहुत लोग मारे जावेंगे। घायल व्यक्ति हस्पताल लाये गए और मेरे साथी श्री रामकेवल शर्मा और अन्य लोग उनकी सेवा सुश्रूषा के लिये पीछे रह गये। पर सौभाग्य से वहाँ कोई मरा नहीं मगर कई लोगों के भयंकर और गहरे जख्म आये थे। उसी शाम को कनाल रोड से लौटते हुए मैंने तांगे को छोड़ दिया और खगोल से एक मील दूर एक गाँव में कार्यकर्त्ताओं के साथ रात बिताई।

फुलवारी कैम्पजेल की रोशनी से मेरे साथियों में से कुछ ने जागने पर देखा कि फौजी लारियां फुलवारी रोड से आ रही हैं, जो कि इससे पहले लोगों ने रोक दी थी। आधी रात के बाद

उन्होंने मुझे सड़क की ओर आगे चले जाने के लिए कहा और पास के एक दूसरे गाँव में ले गए और एक घर में सोने का इन्तजाम किया। यह गाँव सड़क के किनारे को था, पर बिल्कुल सामने नही था।

अगले रोज सुबह जब हम अभी नित्य कर्मों से निवृत्त हो रहे थे, तब टामियों और सैनिको से भरी कारें और लारियाँ उसी सड़क पर से गुजरी जिस पर कि वह मकान था, जहाँ कि हम उस समय ठहरे हुए थे। हमारे कार्यकर्त्ताओ ने अपने दफ्तर से हमे हटा कर यहां लाने मे उचित दिशा मे सहज बुद्धि का परिचय दिया था। क्योंकि सैनिक क्रुद्ध थे और बड़े रोप मे सड़क को रोकने के लिए लगाई बाधाओ को दूर कर रहे थे और दफ्तर मे जिन कार्यकर्त्ताओ को पाते उन्हीं पर वे अपना गुस्सा निकालते।

पैदल चले

शाम को हमने सुना कि सैनिको ने एक मील पहले ही अपनी लारी छोड़ दी और कैनाल-रोड से वे पैदल ही [illegible] गए और पुलिस अफसर ने जिस किसी की ओर [illegible] उसी को उन्होने गिरफ्तार कर लिया। [illegible] में थाने की ओर कूच करने के अभियोग में [illegible] गिरफ्तारियाँ हुईं। उन्होने बाजार और पास के [illegible] पर आतंक जमाया और वहां से वे [illegible]।

जोरदार दमन

गवर्मेंटकी सशस्त्र सेना के इस [illegible]

नौबतपुर की पुलिस ने आतंक और दमन का राज्य स्थापित कर दिया। बाजार और आसपास के गांवों के साधन सम्पन्न लोगों को पुलिस ने धमकाया कि यदि वे बड़ी-बड़ी रकमें बचने के लिए नहीं देंगे तो वे सब नौबतपुर थाना हमला केस में बांध लिए जावेंगे। घूस, दुष्टता, दमन और अत्याचार रोजमर्रा की बात हो गई।

हम और अन्दर के देहातों की ओर पैदल ही बढ़े। हम एक गांव से दूसरे गाव जाते और लोगों का हौसला बढ़ाते और कहते कि दमन और अत्याचार से भयभीत न हो और नग्न पाशविक शक्ति के प्रदर्शन से घबड़ावें नहीं। अहिंसात्मक रीति से वे अपना कार्य निडर और निर्भय होकर करते रहें।

जब मैं साथियों के साथ जा रहा था, तब मैंने देखा कि रेल की पटरी जहां-तहां टूटी पड़ी है। रेल के दो-तीन डिब्बे सैनिक और मिस्त्रियों से भरे हुए लाइन के साथ धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे और जगह-जगह की रेलवे लाइन की मरम्मत कर रहे थे और जब कभी लाइन के पास लोगो को देखते तो सैनिक गोली चला देते। दूसरी ओर जब दो-तीन रेलवे के डिब्बों में भरे हुए फौजियो और मिस्त्रियों की पार्टी को लोग देखते, तो वे लाइन से हट जाते और ज्यों ही यह पार्टी आगे बढ़ जाती, लोग गांवों से आ जाते और फिर लाइनों को तोड़ देते। लाइन की रक्षा में सैनिको ने जो गोली चलाई इससे अनेक लोग मारे गए। मगर इससे लोग डरे नहीं और न पीछे हटे, बल्कि उन्होंने जिस काम को उत्साह और जोश से उठाया था उसको अविचलित भाव से बराबर जारी रखा।

गॉव में पहुचे और रात हमने सारी स्थिति और गॉव वालों की टूटती हिम्मत को बढ़ाने के उपायों पर विचार किया।

विक्रम में गोली चली

प्रातः उस गांव को हमने छोड़ दिया और नौबतपुर थाने के एक और गाव से गुजरे। साथियों और कार्यकर्त्ताओ से मिले और उनको हिम्मत बंधाई और कहा कि दिव्य परीक्षा में साहस धैर्य और बहादुरी से काम लें। मै विक्रम जाने और उस थाने के कार्यकर्त्ताओं और जनता स मिलने के लिए बहुत उत्सुक था। मुझे समाचार मिला था कि एक या दो रोज पहले जब गांव वाले बड़ी संख्या मे कूच करते हुए थाने पर झण्डा फहराने जा रहे थे उन पर गाली चलाई गई है। गोली चलाने से तीन आदमी मर गए और बहुत से जख्मी हुए। पालीगंज थाने की भी यही हालत थी और वहा भी एक आदमी मर गया था। सेना पहुची हुई थी और सड़को पर गश्त लगा रही थी और गांव के लोगो को अनेक तरह से डरा-धमका कर आतंक फैला रही थी।

जमींदार शूट कर दिया गया

मुझे यह भी पता लगा कि बाबू टी[illegible]सिंह, एक [illegible] जमींदार, विहटा के पास, अपने घर से बाहर [illegible] मे [illegible] हुए शूट कर दिए गए। [illegible]क्रम थाने का एक [illegible] गांव [illegible] प्रसिद्ध होने के कारण सैनिको द्वारा घेर लिया गया और [illegible] कई और मशीनगनें लगाकर तमाम गांव को भून देने की धमकी दी गई। लोगो को खपरैल की छतें उतारने और [illegible] से

सत्यता जानने के लिए भेजा और उन्होंने कहा कि वह बिल्कुल ठीक है।

मार्मिक दृश्य

नर-नारी और बच्चे गांव को छोड़ कर पूर्व और दक्षिण की ओर के गाँवों में जाने लगे। बड़ी संख्या मे युवती और प्रौढ़ा स्त्रियों को गोद मे बच्चे लिए हुए नंगे पांव जाते हुए देखना सचमुच एक हृदय द्रावक दृश्य था। कॉंग्रेसजनो के परिवारो को मैंने सलाह दी कि वे गांव न छोड़ें बल्कि दृढ़तासे स्थितिका सामना करें। यह सलाह साहस पूर्ण थी मगर साथ ही जोखिम भरी थी। पर गिरती हिम्मत को रोकने के लिए मैंने यह सलाह दी। इसी समय लोग समाचार लाए कि सेना पास के गांव तक आ गई है। मै अपनी पार्टी के साथ गिरफ्तारी से बचने के लिए दूसरे गॉव की ओर चल पड़ा जो कि चारों ओर से पानी से घिरा हुआ था।

हम रेलवे लाइन को पार कर सदीसापुर बाजार में जा रहे थे कि हमें खबर मिली कि फौज गांव मे घुस आई है। मुझे यह भी पता चल गया था कि जो कोई भागता है, उस पर फौजी लोग गोली चला देते हैं। मै यह भी नहीं चाहता था कि लोग हिम्मत हार दें। पर हमको गिरफ्तारी से बचना भी जरूरी था, यदि हम बाहर रहना चाहते थे और बाहर रहकर और अधिक समय तक काम करना चाहते थे। इसलिए मैं अपनी पार्टी के साथ बाजार की राह चला गया और लोगों को कहता गया कि लूट का माल अपने पास न रखें और हिम्मत से काम लें। हमारी राह पानी में से होकर जाती थी। गहरा पानी पार कर हम एक

गॉव में पहुचे और रात हमने सारी स्थिति और गाँव वालों की टूटती हिम्मत को बढ़ाने के उपायों पर विचार किया।

विक्रम में गोली चली

प्रातः उस गांव को हमने छोड़ दिया और नौबतपुर थाने के एक और गांव से गुजरे। साथियों और कार्यकर्त्ताओं से मिले और उनको हिम्मत बंधाई और कहा कि दिव्य परीक्षा मे साहस धैर्य और बहादुरी से काम लें। मै विक्रम जाने और उस थाने के कार्यकर्त्ताओ और जनता स मिलने के लिए बहुत उत्सुक था। मुझे समाचार मिला था कि एक या दो रोज पहले जब गांव वाले बड़ी संख्या मे कूच करते हुए थाने पर झण्डा फहराने जा रहे थे उन पर गोली चलाई गई है। गोली चलाने से तीन आदमी मर गए और बहुत से जख्मी हुए। पालीगंज थाने की भी यही हालत थी और वहा भी एक आदमी मर गया था। सेना पहुची हुई थी और सड़को पर गश्त लगा [illegible] थी और गाव के लोगो को अनेक तरह मे डरा-धमका [illegible]

फैला रही थी।

जमींदार शूट कर दिया गया

मुझे यह भी पता लगा कि बाबू [illegible] जमींदार, चिहटा के पास, अपने घर से [illegible] हुए शूट कर दिए गए। [illegible] प्रसिद्ध होने के कारण सैनिकों [illegible] कई ओर मशीनगनें लगा [illegible] दी गई। लोगो को [illegible]

नष्ट करने के लिए बाध्य किया गया। गोरख टोली गांव में, जिसमें एक स्कूली छात्र गोली काण्ड में मर गया था, इससे भी बुरा और कठोर बर्त्ताव किया गया। पटोट डाटलाते और अन्य गांवो की ऐसी ही अवस्था थी।

मेरे साथियों ने मुझे सलाह दी थी कि यदि मैं बाहर रहकर और अधिक समय काम करना चाहता हूँ तो विक्रम थाने में से न जाऊं। मुझे इस बात से मार्मिक वेदना पहुची कि एक युवक जो हमारा आतिथ्य करना चाहता था अपने माता पिता द्वारा केवल कायरतावश वैसा करने से रोक दिया गया। इसके विपरीत यह देखकर हृदय उल्लास से भर गया कि एक वृद्धा विधवा ने मेरी और मेरे साथियों की खातिरदारी करने में कुछ उठा नहीं रखा। मैंने विक्रम और पाली गंज के किसान कार्य कर्त्ताओं से सम्पर्क जमाने की कोशिश की पर सफल न हुआ। पानी और कीचड़से भरे खेतों को पारकर एक गांव से दूसरे गांव घूमते हुए फुलवारी थाने के प्रसिद्ध कांग्रेस भक्त नेता श्री देवप्रसादसिंह के घर पहुचा। उनके पास एक या दो दिन रहा और उसी इलाके की दूसरी यात्रा करने के लिए निकल पड़ा जिससे अभी लौटा था। वे भी मेरे साथ हो लिए और जब तक उनकी जरूरत रही मेरे साथ रहे, फिर वे अपने घर नवादा लौट गए और मेरे वहां से जाने के कुछ दिनो बाद गिरफ्तार कर लिये गए।

परिवार के व्यक्ति गिरफ्तार

उनके घर पहुचने पर उनको न पाकर उनकी अनुपस्थिति मुझे अनुभव हुई। मगर उनके वृद्ध पिता और परिवार को

निराश और हताश होने के बजाय उत्साह, साहसपूर्ण देख कर चित्त को बड़ी प्रसन्नता हुई। यहाँ एक या अधिक दिन रहा। यहीं मुझे मालूम हुआ कि मेरी पत्नी और बच्चे और मेरे घर में और जो लोग पाये गए वे सब कुछ दिन पहले गिरफ्तार कर लिये गए है। मेरे केवल दो बच्चे मेरी बूढ़ी बहिन के पास पीछे रह गए है। एक भक्त कार्यकर्त्ता द्वारा वे दोनो बच्चे पहरे से घिरे शहर मे से किसी तरह मेरे पास भेट कराने के लिए लाये गए। मुझे मालूम हुआ कि पटना शहर जाने के सब प्रवेश मार्गों की नाकाबन्दी की हुई है और बड़ा पहरा है और पटना के पूर्व मे सेना पहरे पर तैनात खड़ी है और बिना पास के शहर मे जाना सम्भव नही है। दक्षिण का सारा इलाका पानी से भरा हुआ था। मेरे मन मे ख्याल आया कि मेरा काम पूरा हो गया है और अब मुझे अपने को छिपाकर रखने की जरूरत नहीं और मैंने तत्काल बिना पास के खुले तौर पर पटना शहर जाने और गिरफ्तार होने या जो कुछ भी हो उसको सहने का निश्चय कर लिया।

छठा भाग

अगस्त-क्रान्ति के शहीद

महादेव देसाई

महादेव भाई महात्मा गान्धी जी के प्राईवेट सेक्रेटरी थे। गान्धी जी के साथ ही उनका राजनैतिक जीवन प्रारम्भ हुआ था। वे एक उच्च कोटि के पत्रकार थे। उन्होंने वर्षों तक गांधी जी के 'हरिजन' का सम्पादन भी किया था। वे ९ अगस्त के प्रात: गिरफ्तार हुए थे और १५ अगस्त १९४२ को उनका शरीरान्त भी आगाखाँ महल में हुआ था। गिरफ्तारी से पूर्व ही गर्मी के मौसम में उनकी तबियत काफी बिगड़ गई थी। वे सन १९१८ के चम्पारन सत्याग्रह में महात्मा जी के सम्पर्क में आये थे। उस समय वे वकालत करते थे। महादेव भाई के निधन से गान्धी जी का दाहिना हाथ बिल्कुल निकम्मा होगया। उनकी कमी गान्धी जी को पग पग पर खटकती है। उनकी कार्य-कुशलता और अध्यवसायिता का वर्णन हम इन पंक्तियों में करने में सर्वथा असमर्थ हैं। इसके लिए तो स्वयं महात्मा गान्धी के हाथों द्वारा लिखी हुई पुस्तक ही उपयुक्त हो सकती है।

अगस्त-क्रान्ति के सिलसिले में आगाखाँ महल का यह प्रथम बलिदान इतिहास में सदा अमर रहेगा।

राष्ट्रमाता कस्तूरबा गान्धी

दिवंगता राष्ट्रमाता कस्तूरबा गांधी भारतीय नारीत्व की परम्परा मे वही स्थान रखती है, जो गौरवपूर्ण स्थान सीता, सावित्री, तारामती तथा दमयन्ती आदि को प्राप्त है। महात्मा गान्धी के साथ राष्ट्रीय जागरण में उन्होंने जो महत्त्वपूर्ण योग दिया वह उल्लेखनीय है। उन्होने देशपूज्य बापू के साथ अनेकों बार जेल यात्रायें की और निरन्तर अपने को दृढ़ से दृढ़तर ही बनाये रक्खा। अगस्त की क्रांति भारतके राजनैतिक गगनमे एक भयंकर झंझावात ले आई, जिस मे हमारे अनेक नेता तथा युवक हँसते-हँसते अपने प्राणो की बलि दे गए। माता कस्तूरबा गांधी भी उन्हीं मे एक है। ९ अगस्त को आप भी गान्धी जी के [illegible] ही सहर्ष गिरफ्तार हुई। आगाखाँ महल में आपका [illegible] प्रतिदिन बिगड़ता ही गया और अन्त मे उन्होंने [illegible] का आश्रय ले लिया। ऐसी स्थिति मे भी सरकार ने [illegible] जेल से रिहा नही किया और अन्त मे [illegible] शिवरात्रि के पुण्य पर्व के दिन २२ फरवरी ४४ [illegible] शाश्वत लोक मे प्रयाण किया। आप [illegible] और आदर्श देशभक्त थी।

अमर शहीद राजनारायण [illegible]

'हम देश के लिए मर रहे हैं, [illegible] मरेंगे'—ये वाक्य थे जो ९ [illegible] पत्नी से, जिगर के टु[illegible]

अमर शहीद राजनारायण मिश्र ने अपनी पत्नी से आखिरी मुलाकात में कहे।

पत्नी की आंखों से आंसू गिरते देखकर उस अद्वितीय वीर ने कहा—'रोती हो·······मेरे सामने से चली जाओ।' छोटे बच्चे ने चलते समय हाथ जोड़ कर अपने उस पिता को नमस्ते किया, जिसे दूसरे दिन फाँसी की रस्सी उससे हमेशा के लिए छीन लेने वाली थी। मिश्र जी ने पत्नी से कहा—"देखो इन बच्चों को भी ऐसी शिक्षा देना कि वे मेरी ही भाँति राष्ट्र पर अपने को निछावर कर दें।" आज यह बच्चा जिसे यह वीर पिता राष्ट्र को धरोहर बनाकर दे गया, मेडिकल कालेज लखनऊ अस्पताल में बीमार पड़ा है।

फांसी के तख्ते पर क्रांति का नारा

फाँसी के पहले श्री राजनारायण ने जेल अधिकारियों से अपने हाथ खोल देने को कहा। इच्छानुसार फंदा ढीला कर दिया गया और वे फाँसी के तख्ते पर उछल कर चढ़ गए और दृढ़ स्वर में राष्ट्रीय वंदना की। उनका अन्तिम शब्द था, 'इनक्लाब जिन्दाबाद।'

एक जेल अधिकारी का कहना था कि अन्तिम शब्द तक मुख मुद्रा प्रसन्न थी। आनेवाली भयानक मृत्यु की छाया उसे म्लान न कर सकी। मृत्यु के आसन्न क्षणों में भी उनका वजन ६ पौंड बढ़ गया। मरने पर भी शहीद के मुख पर कोई विकलता का चिन्ह नहीं था। उस पर वह शांति थी जो कर्त्तव्य की वेदी पर बलि हो जाने वाले साधु पुरुषों के प्रसन्न अन्तःकरण की चमक है प्यार

जो रोटी के टुकड़ों पर अपना ईमान और मातृभूमि की शान बेचने वाले पातकियों को स्वप्न मे भी नसीब नही। मिश्र जी के तीन भाई अगस्त आन्दोलन के सिलसिले मे ३२ वर्ष, २६ वर्ष, और २३ वर्ष की सजाएं भोगते हुए कारा में बन्द पड़े है। राजनारायण मिश्र १९४२ के आन्दोलन मे फोर्स के शिकार होने वाले पहले कांग्रेस जन थे। फाँसी की रस्सी उनके जीवन से बचपन ही से गुथ गयी थी। जब वे केवल दो साल के थे उनकी माता तुलसी देवी ने, जो अत्यन्त मनस्विनी महिला थीं, किसी असह्य अपमान से आहत होकर फासी लगा कर अपनी जान दे दी थी।

भगतसिंह की छाप

फॉसी की दूसरी छाप पड़ी बालक राजनारायण पर [illegible] सरदार भगतसिंह की फॉसी की कहानी गॉव मे [illegible]। [illegible] घटना बालक पर अमिट छाप छोड़ गयी और उनके [illegible] मे आत्मबलिदान के बीज बो गयी। भगतसिंह [illegible] राजनारायण ने उन्ही के पद चिन्हो के अनुसरण [illegible] और अपने को भगतसिंह कहने भी लगे।

मां की मृत्यु के बाद बहन रमादेवी ने राजनारायण [illegible] पालन किया। पिता श्री बलदेव मिश्र [illegible] सबसे छोटे होने के कारण इन्हे भाइयों [illegible] उन्होने इनको सब प्रकार से [illegible] ही नटखट, ऊधमी और मारपीट [illegible] सुलभ दुष्टता को दमन करने [illegible] थे. 'हमे इसे शेर बनाना है।'

१९३० का आन्दोलन

जब ये गाँव के स्कूल में थे, १९३० के सविनय अवज्ञा आन्दोलन की आँधी उठी। भीषणपुर गाँव में भी उसके झकोरे आये। बाहर के लोग झण्डा लेकर गांव में आये। गाँव के बहुत थोड़े लोग आगे बढ़े। पर बालक राजनारायण ने बेहिचक झण्डा उठा लिया। इस दुःसाहस के लिए मास्टरों ने बेतों की सजा दी। यह भी देशभक्ति का प्रथम पुरस्कार था। इस मौके पर बड़े भाइयों ने आपका पूरा साथ दिया और मास्टरों को उनकी बुजदिली पर फटकारते हुए बालक को शाबाशी दी। यह घटना इनके जीवन में निर्णायक सिद्ध हुई। जन्मजात निर्भीकता और देशप्रेम से और भी प्रबल हो उठे।

आन्दोलन समाप्त हो गया पर उसकी चेतना राजनारायण को सजीव कर गयी। गांव की पाठशाला से निकल कर वे सिकन्दराबाद मिडिल स्कूल के नायक हो गए और अपने स्वभावगत नेतृत्व से कांग्रेसी छात्रों की टोली कायम कर ली। यह वह समय था जब सब स्थानों में अमन सभा का जोर था। अध्यापक विद्यार्थियों को सरकारी प्रशंसा से भरे हुए गाने याद कराते और सभा में कहलवाते थे। इनके स्काउट मास्टर साहब ने भी इनसे गाना याद करने को कहा। इन्होंने साफ इन्कार कर दिया और कहा—'हम केवल भगतसिंह का गाना गा सकते हैं।' इसी समय इन्होंने पढ़ाई छोड़ दी। एक साल के बाद गोला गोकर्णनाथ के अंग्रेजी स्कूल में अंग्रेजी की छठी कक्षा में दाखिल हुए। यहीं से इनका राजनीतिक जीवन प्रारम्भ हुआ।

राजनैतिक जीवन

छठी कक्षा से ही इन्होंने खद्दर पहनने की प्रतिज्ञा की। यह होली का दिन था। अपने सारे कपड़े निर्धनों को बांट कर खद्दर पहना। इसके ठीक दो महीने बाद सीतापुर में श्री एम० एन० राय के सभापतित्व में युक्तप्रांतीय नवयुवक संघ की कान्फ्रेंस हुई। उसमें वालिंटियर की हैसियत से गए। यह पहला अवसर था जब ये सूबे के अधिकतर नवयुवक कार्यकर्त्ताओं के संपर्क में आए।

राजनारायण को एक वर्ष का कठिन कारागार दण्ड मिला। इनके जेल जाते ही पुलिस ने इनके गाँव पर धावा मारा। इनके तथा गाँव के अन्य मित्रों के घरों की तलाशी ली। पूछने पर मालूम हुआ कि राजनारायण जी पर उन्नाव के सब इन्सपेक्टर का रिवाल्वर उठाने का अभियोग चलने वाला है। जेल जाने के बाद पुलिस ने उन्हें फंसाने के लिए भरसक प्रयत्न किया परन्तु कोई परिणाम न निकला।

अगस्त आन्दोलन

एक वर्ष की सजा काट कर घर लौटे तो इन्हें पिता जी के शव का दर्शन हुआ। पिताजी की अन्तिम क्रिया से अवकाश पाये चार माह भी न हुए थे कि अगस्त १९४२ की आग बम्बई ने जला दी। राजनारायण जी के गांव में भी उसकी लपट आयी। राजनारायण जी के हाथ में नेतृत्व आया। गाँव के सारे युवकों को एकत्र कर धार्मिक व्याख्यान द्वारा उनमें वीरता का संचार किया और सबसे प्रतिज्ञा करवाई कि जब तक हम लोग अन्य जिलों की भाँति अपने जिले पर पूर्ण अधिकार न कर लेंगे, तब तक घर वापस न लौटेंगे। लगभग ३०० नवयुवकों ने प्रतिज्ञा करके गाँव के बाहर मार्च किया। युवकों के इस दल ने सर्वप्रथम निकटवर्ती जिमींदारों तथा सरकार के तरफदारों की बन्दूकें छीनने और उसके बाद तहसील तथा जिले पर कब्जा करने का निश्चय किया। इन लोगों ने चार घंटे के अन्दर अपने पड़ोस की सारी बन्दूकें छीनलीं और अन्तिम बन्दूक अपने गाँव की समीपवर्ती महमूदाबाद रियासत के जिलेदार से लेने के लिए आगे बढ़े। जिलेदार ने इन लोगों को देखते ही अपनी बन्दूक

ऊपर सीधी कर दी। इसी गड़बड़ी मे 'धाय-धांय' की दो आवाजे सुनाई दी और जिलेदार मारा गया।

पुलिस और फौज का धावा

इस घटना के पश्चात् तीन दिन तक वे लोग गाँव में ही रहे: परन्तु पुलिस के किसी भी कर्मचारी का साहस गाँव में घुसने का नही हुआ। चौथे दिन गोरी पलटन की सहायता से पुलिस गाँव मे घुसी; तब ये लोग निकटवर्ती जंगल मे चले गए गाँव के निवासियों को हर प्रकार से अपमानित किया गया। बहुत से मकान खुदवा डाले गए और उनमें नमक बुवाया गया। मकानों मे हल चलाये गए। उनके गाँव के भले आदमी बैलो की जगह हलों मे जोते गए और बैल हांकने वाले चाबुक से मारे भी गए। सारा गाँव का गाँव तबाह हो गया। जो लोग भागे हुए थे उनका परिवार तो तबाह हुआ ही, उनके साथ गांव के अन्य परिवार भी तबाह कर दिये गए। तीन दिन के बाद भागे हुए लोग एक-एक करके तितर-बितर हो गए।

फरार होने पर भी जेल

राजनारायण जी पहले तो तीन थे परन्तु बाद में अकेले ही रह गए। फरार की हालत मे भी वे चुप न बैठे। इन्होंने देश के प्रमुख स्थानो का भ्रमण भी किया। दो बार इन्हें जेलों मे सजा भी काटी। एक बार दो माह और दूसरी बार गान्धी जी के अनशन के समय हड़ताल कराने के अपराध में ६ माह की कड़ी सजा भोगी। फिरोजपुर जेल से १९४३ को [illegible] आप रिहा हुए। जेल से छूटते ही इन्होंने फिर [illegible]

अन्तिम विदा

मरे हुए शहीद से भी सरकार भयभीत थी और उसके सम्बन्धियों को उसका शव देने मे आनाकानी कर रही थी। परन्तु स्थानीय कांग्रेस-कार्यकर्त्ताओ की जमानत पर शव दिया गया। तिरंगे झण्डे और फूलों से लदा शव लारी द्वारा गंगा घाट कानपुर ले जाया गया और चिता को समर्पित किया गया।

संवत् १९७६ की वसन्त पंचमी को जब सारी धरती केसरिया बाना पहने थी, इस शहीद राजनारायण ने जन्म लिया और अपनी २४ वर्ष की मचलती जवानी देश की बलिवेदी पर न्योछावर कर दी। पर अपने छोटे से जीवन में राजनारायण ने युग-युग को जीत लिया। आज उनके पद-चिन्हों पर भारत की आकुल जवानी चल रही है।

श्रीदेव 'सुमन'

शहीद श्रीदेव 'सुमन' का जन्म २५ मई सन १९१६ ई० को टिहरी गढ़वाल राज्य की पट्टी बमुण्ड के जौल नामक ग्राम में हुआ था। उनके पिता अपने क्षेत्र के एक लोकप्रिय वैद्य थे। अपने त्यागी कमठ पिता के चरण-चिन्हों पर चलकर और श्रीदेव ने उनका तथा गढ़-देश का मस्तक उन्नत कर दिया। अपने जन्म काल से वे कुशल कर्मी थे। छात्र-जीवन में भी उनका यही क्रम रहा। शिक्षा-प्राप्ति के उपरान्त आपने पत्रकारिता की लाइन में प्रवेश किया और सफलता पूर्वक 'हिन्दू' नाम

राष्ट्रमत इत्यादि पत्रों में कार्य किया। दिल्ली मे उन्होंने अपने कतिपय मित्रों के सहयोग से । 'देवनागरी महाविद्यालय' की भी स्थापना सन् १६३५ में की थी आपके राजनैतिक जीवन का श्रीगणेश सन् ३८ से हुआ और थोड़े से समय मे ही आपने अपनी कार्य-कुशलता, अनुपम त्याग एवं साहस द्वारा वह कार्य कर दिखाया, जो बड़े-बड़े, साधन-सम्पन्न व्यक्ति अनेक वर्षों मे भी नही कर सके। आपने-गढ़वाल की जनता के राजनैतिक अधिकारों की रक्षा के लिए वहां प्रजामंडल की स्थापना की।

४२ के आन्दोलन मे आप नजरबन्द कर लिये गए और लगभग सवा वर्ष की नजरबन्दी के उपरान्त नवम्बर ४३ मे वे आगरा सैन्ट्रल जेल से रिहा हुए। जेलसे छूटते ही वे फिर गढवाल गए और उन्होने जन-जागरण का कार्य प्रारम्भ कर दिया। वे कार्य कर ही रहे थे कि फिर २८ दिसम्बर ४३ को स्टेट-पुलिस द्वारा गिरफ्तार करके नजरबन्द कर लिए गए, [illegible] से फिर उनका मृत शव ही बाहर निकला।

३० दिसम्बर ४३ से २५ जुलाई ४४ तक वे टिहरी की जेल में रहे। इन सात महीनो मे उन पर क्या बीती-यह कौन जानता है? जेल अधिकारी की नृशंसता पर [illegible] आकर अन्त मे उन्होंने ३ मई से आमरण अनशन किया, और इसी अनशन मे उन्होने अपने शरीर को हंसते हंसते [illegible] दिया।

वे एक उज्वल विभूति थे। [illegible] सेवा करना ही उनका एक मात्र लक्ष्य था। [illegible] सचमुच गढवाल का एक [illegible]

रमेशचन्द्र आर्य

शहीद रमेशचन्द्र आर्य का नाम सामने आते ही कलेजा मुंह को आता है। मेरा उनसे वर्षों से परिचय था। जब मिलते, हँसते हुए अल्हड़ता नस-नस में भर कर। मुस्कराहट प्रतिक्षण उनके मुख पर अठखेलियां करती रहती थी। गठीला बदन, छोटा कद, शरीर पर खद्दर का कुर्ता तथा धोती, सिर पर बड़े-बड़े पीछे को लटके हुए बाल और पैरों मे चप्पल; यही था उनका नकशा। मैने अपने परिचय के पांच वर्षों मे उन्हें इसी रूप में देखा था। अप्रैल सन् ३७ मे मेरा उन से परिचय हुआ था; जब वे 'वीर अर्जुन' में सहकारी सम्पादक थे। मै उन दिनो 'आर्य-मित्र' का सहकारी सम्पादक था। हैदराबाद सत्याग्रह के दिनों मे उन्होंने जी-तोड़कर कार्य किया था। उन्हीं के त्याग, अनवरत परिश्रम तथा अपूर्व कौशल से दिल्ली मे उस समय कार्य हो सका था।

वे राष्ट्रीयता में पले थे। विजयगढ़ के प्रसिद्ध आर्य एवं देशभक्त परिवार मे उनका जन्म हुआ था। जेल जाना और हंसते हँसते अभावों का सामना करना तो मानो उन्हें विरासत मे मिला था। बयालीस की आंधी आते ही उन्होंने अपना कार्य प्रारम्भ कर दिया और उसका उपहार हमें उनके बलिदान में मिला। नौकरशाही के कुत्तों ने उन्हें गिरफ्तार करके दिन के ११ बजे अलीगढ़ जेल मे पहुंचाया और रात को नौ बजे उनकी लाश जेल के कुए में पड़ी हुई मिली। उनकी इस रहस्यमयी शहादत का अभी तक भी ठीक ठीक पता नहीं चल सका। उनकी लाश के देखने से ऐसा मालूम हुआ था कि उनके शरीर

पर अनेक घाव थे और पैर सूजे हुए थे। वहाँ के एक जमादार ने उसी जेल के एक राजनैतिक बन्दी को उनकी मृत्यु का कारण पुलिस तथा जेल अधिकारियों द्वारा उन्हे बहुत अधिक शारीरिक यन्त्रणायें दिए जाना बतलाया है।

शहीद रमेश तो हमारे बीच से गए; किन्तु उनका त्याग, शौर्य और साहस अपनी अमर कहानी छोड़ गया है। उनकी इस रहस्यपूर्ण शहादत का बदला कभी न कभी तो अवश्य ही लिया जायगा। नौकरशाही इन बलिदानों क लिए पूर्ण उत्तरदायी है।

भाई रमेशचन्द्र आर्य केवल एक कट्टर देशभक्त ही नहीं, प्रत्युत सफल लेखक और उद्भट कार्यकर्त्ता थे। उनकी कई पुस्तकें हिन्दी साहित्य के लिए गौरव की वस्तु है। इनमे मौलाना आज़ाद तथा सुभाष की जीवनी और 'समाज के शिकार' विशेष उल्लेखनीय है।

देवशरणसिंह

बिहार के छपरा जिले के मिरौता [illegible] नामक गांव में इस शेरे दिल युवक का जन्म हुआ था। इसने [illegible] अपने जीवन के २६ वसन्त देखे थे। पटना सेक्रेटेरियट के [illegible] में इस अमर युवक ने अपनी [illegible]। [illegible] निहत्थी जनता पर गोली चलाने [illegible] को चेतावनी दे रहा था कि एक गोली उसके हाथ [illegible] गई। फिर भी वह आगे बढ़ा और दूसरी [illegible] लगी। वह एक कदम ही बढ़ [illegible] जांघ में लगी और वह [illegible]

अस्पताल में जाकर वह सदा के लिए हँसते-हँसते सोगया। उसने जीवन में हँसना और मुस्कराना ही सीखा था, रोना नहीं।

देवीपद चौधरी

देवीपद चौधरी का जन्म १६ अगस्त सन १६२८ को सिलहट जिले के एक कुलीन ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता श्री देवेन्द्रनाथ चौधरी पटना हाईस्कूल के बंगाली स्कूल में अध्यापक हैं। १६४२ की क्रांति धधकी और यह १४ वर्ष का बालक भी चल पड़ा हाथ में तिरंगा झंडा लेकर सेक्रेटरियेट की ओर। वह बंदूक और गोलियों से सुसज्जित सरकारी फौज से घिरे हुए सेक्रेटरियेट के भवन पर तिरंगा झंडा फहराना चाहता था। आजादी के दीवानों की टोली सिर पर कफन बांधकर बढ़ी चली आरही थी और उसमें वह भी था। निहत्थी जनता पर गोलियाँ चलाई गई और ७ व्यक्ति मारे गए। ११ अगस्त १६४२ की रात में ६ बजे देवीपद चौधरी की आत्मा सदा के लिए इस संसार से कूंच कर गई।

रामगोविन्द

बिहार का प्रथम शहीद ही कहना होगा इसे। पटना सेक्रेटरियेट की इमारत पर झंडा फहराने का प्रयत्न करते हुए ही यह तरुण शहीद हुआ था। इसका जन्म बिहार के पटना जिले के दशरथा नामक गाँव में हुआ था। वह पुनपुन के हाई स्कूल की दसवीं कक्षा में अभी पढ़ता था। वह अपने पिता की एक मात्र सन्तान था। उसने स्वाधीनता के प्रयत्न में अपने प्राणों की बलि देकर उनका नाम अमर कर दिया।

रामनन्दन

शहीद रामनन्दन का जन्म पटना जिले के फतुहा थाने के शहादतनगर नामक गाँव मे हुआ था। यह भी मैट्रिक का ही छात्र था। इसकी अवस्था केवल १८ वर्ष की थी। सब से बड़ी सन्ताप की बात तो यह थी कि वह विवाहित था। उसके शोक से उसकी नवविवाहिता पत्नी भी उसकी चरण-अनुगामिनी हुई।

राजेन्द्रप्रसाद

पटना जिले के धीराचक नामक गाँव में इनका जन्म हुआ था। इनकी अवस्था केवल १६ वर्ष की थी। इनका भी विवाह हो चुका था। ये गर्दनी बाग हाई स्कूल मे पढ़ते थे। इनके पिता का नाम श्री शिवनारायणसिंह है। इनके समस्त परिवार वालो की आशाये इसी पर केन्द्रित थीं।

सतीश झा

सतीश झा भागलपुर जिले के [illegible] रत्न थे। इनके पिता का नाम श्री [illegible] था। ये [illegible] कौलिजियेट के छात्र थे। आपने [illegible] शहीद होने से पूर्व [illegible] कहा था कि 'भारत मे किसी तरह भी अंग्रेजों का [illegible] है—स्वातंत्र्य प्रभात हो चुका है।'

उमाकान्तसिंह

उमाकान्तसिंह जन्म से ही [illegible]

अपने छात्र-जीवन के प्रारम्भ में ही उन्होंने ला० लाजपतराय, रूस की राज्य क्रांति फ्रांस की राज्य-क्रान्ति और सन् ५७ के विद्रोह की कहानियाँ पढ़ी थीं। उनकी अवस्था केवल १५ वर्ष की थी।

जगपति प्रसाद

आप पटना के प्रसिद्ध वकील श्री सतयुगशरण के भाई थे। बी० एन० कालिज के द्वितीय वर्ष में आप अध्ययन कर रहे थे। आपका दिल शेर का दिल था। विद्यार्थी आन्दोलन तथा पटना की हलचल के आप मूल स्रोत थे। राष्ट्र की पुकार पर आप कभी पीछे नहीं रहे। गोली लगने के समय भी आपके मुख पर मुसकराहट खेल रही थी।

विन्ध्येश्वरी प्रसाद

शहीद विन्ध्येश्वरी प्रसाद की आयु केवल १६ वर्ष की थी। चंडी थाने पर राष्ट्रीय झंडा फहराने से पूर्व उसने दारोगा से कहा था कि "हम बच्चे होकर मातृभूमि की सेवा करते हैं और आप तो हमसे बड़े हैं, अत्यधिक शिक्षित हैं, इसलिए मातृभूमि के नाम पर अपनी नौकरी का परित्याग ही कर दीजिए।" इसका उत्तर तो कुछ नहीं मिला दारोगा की ओर से। हां, एक गोली ने शहीद विन्ध्येश्वरी के उक्त कथन का उसकी छाती में धंसकर स्वागत किया; जो दारोगा की मनोभावना की प्रतीक थी। गोली लगते ही विन्ध्येश्वरी गिर पड़ा। उसके गिर जाने पर भी उन्हें सन्तोष न हुआ और एक चौकीदार ने गंडासा मारकर उसके शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिए।

महेन्द्र चौधरी

महेन्द्र का जन्म मुंगेर जिले के पिपरा नामक ग्राम मे हुआ था। उनके पिता का नाम रामकृष्ण चौधरी है। अगस्त-आन्दोलन प्रारम्भ होने तक आप काशी के गांधी आश्रम मे कार्य करते थे। इनका जीवन प्रारम्भ से ही राजनैतिक था। सन ३२ और ३३ में भी उन्हें जेल यात्रा करनी पड़ी थी। अगस्त-आन्दोलन के दिनों मे डाके डालने तथा खून करने के अपराध में विहार सरकार ने उन पर कई अभियोग चलाये। परिणाम स्वरूप अदालत द्वारा इन्हे फॉसी की सजा दी गई और नौकर-शाही ने इस युवक को फॉसी के तख्ते पर लटकाकर चैन ली। देशरत्न डा० राजेन्द्रप्रसाद की क्षमा की भीख ने भी नौकरशाही पर कोई प्रभाव न डाला।

प्रसाद श्रीवास्तव के प्रयाण पर संसार के किसी भी अहिंसक योद्धा को ईर्ष्या हो सकती है।

प्रभुनारायण

प्रभुनारायण का जन्म मुंगेर जिलेके माहर नामक गाँव के एक किसान-परिवारमें हुआ था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा खगड़िया राष्ट्रीय विद्यालय और उच्च शिक्षा काशी विद्यापीठ मे हुई थीं। १६४० में भी इन्हें २ वर्ष की सजा हुई थी। अगस्त-क्रान्ति के समय वे १३ अगस्त को खगड़िया आये। उन्होने शांतिमय तरीकों से एक विराट जुलूस निकाला। जुलूस को पुलिस अधिकारियो ने लौटाना चाहा। इस पर जब जुलूस वापिस न लौटा तो पुलिस वालों ने गोलियाँ चला दीं। फलस्वरूप प्रभुनारायण की छाती को गोली वेध गई। रेलवे की सड़क के किनारे एक पीपल के पेड़ के नीचे उस युवक की लाश पड़ी थी; जिसने खगड़िया के क्षेत्र को अपने बलिदान से जागरण का पाठ पढ़ाया।

पटना कैम्प जेल के शहीद

बिहार ने अगस्त-आन्दोलन को बढ़ाने मे अपने अनेक नवयुवकों के अमूल्य बलिदान दिये हैं। वहाँ की पटना कैम्प जेल इन अत्याचारों के लिए बदनाम है। अगस्त-आन्दोलन के सिलसिले में नजरबन्द व सजा पाये हुए अनेक नवयुवकों को यह आसानी से निगल गई। नीचे की पंक्तियों से पाठक इसका अनुमान लगा सकेंगे—

"अनुमानतः पांच हजार स्वतन्त्रता के दिवानों मे

समाकीर्ण पटना कैंप जेल में जिसे फुलवारी संज्ञा से संबोधित किया जाता है, मानवता पर जैसा नृशंस प्रहार हुआ है, उसे स्मरण कर आज भी कलेजा मुह को आ जाता है। स्वतन्त्रता के हिरावलों को उस तपोभूमिमें जीवित ही घुला घुलाकर मार डाला गया है। उनके जीवन को बरबाद कर डाला गया है। अधिकांश को मुर्दे से बदतर बनाकर छोड़ दिया गया है। उस तपोभूमि में बिहार के विभिन्न जिलों से स्वतन्त्रता के साधक कैद कर रख दिये जाते थे। १९३० में उसका निर्माण हुआ और १९३२ मे तो उस में मुझे एक साल तक प्रगतिशील साहित्य के क्रांतिकारी लेखक एवं विचारक श्री० बेनीपुरीजी के सम्पर्क में रहना पड़ा। किंतु दमन का चक्र १९४२ मे ही चला। जरा-जरासी बातपर 'पगली' हो जाती और सैकड़ों बहादुर लाठी के शिकार बन जाते। उन वीरो के सर से खून के फव्वारे छूटने लगते। अंग-प्रत्यंग चूर-चूर हो उठते। लोग पशु की तरह पीटे जाते। कम से कम [illegible] महीने में सैकड़ो बार 'पगली' होती और हजारों बहादुर [illegible] की लाठियो से आहत होकर बेहोश हो जाते। पटना कैंप जेल विश्व मे दानवों द्वारा स्थापित सबसे बड़ा [illegible] है। यही कारण है कि १९४२ मे बिहार प्रांत के विभिन्न [illegible] में [illegible] गोली चली है और जिसके परिणाम स्वरूप लगभग [illegible] सौ वीर शहादत को प्राप्त कर चुके है. इसमें [illegible] सिर्फ पटना कैंप जेल के शहीदों का है। १९३० और १९३२ के शहीदो की चर्चा इसमे नही की जा रही है। इसके [illegible] १९४२ के ही शहीद है। पटना कैंप जेल के [illegible] जैसा पाशविक अत्याचार हुआ है। [illegible] वीरों का अत्याचार भी फीका है। [illegible]

नाम	शहादत पाने की तिथि	जिला
श्रीयुत अनन्त अहीर	१७-१-४३	पटना
,, भवानी गोप	२२-१-४३	पटना
,, ठोगा भगत	२६-१-४३	रांची
,, कादन उरांव	१०-२-४३	,,
,, जीनू साव	१८-२-४३	पटना
,, चटक ठाकुर	१६-२-४३	दरभंगा
,, सोनी उरांव	२३-२-४३	पलामू
,, परमेश्वरी नारायण	४-३-४३	मुंगेर
,, परमासिंह	६-३-४३	पटना
,, सुखलाल	७-३-४३	मुजफ्फरपुर
,, पांचू भगत	१८-३-४३	रांची
,, परमेश्वरी महतो	१६-३-४३	पटना
,, सीताराम पंडित विशारद	२४-३-४३	शाहाबाद
,, राघोसिंह	२४-३-४३	पटना
,, रामजीसिंह	२५-३-४३	पलामू
,, मुरारीसिंह	३१-३-४३	,,
,, शिवदयाल	५-३-४३	हजारीबाग
,, जगदीश मिश्र	५-४-४३	गया
,, सिकूम संथाल	६-४-४३	संथाल परगना
,, खखूनसिंह	६-४-४३	पटना
,, साधुशरण मुण्डे	७-४-४३	सिंहभूमि
,, गोदुरा भगत	१०-४-४३	रांची
,, रामासिंह	१२-४-४३	,,
,, वचका लेधु	१६-४-४३	,,

नाम	शहादत पाने की तिथि	जिला
श्रीयुत मंगरू भगत	२०-४-४३	रांची
,, साधु महतो	२१-४:४३	पटना
,, उजागर गोप	२८-४-४३	,,
,, वधुत भगत	३-५-४३	रांची
,, मलवा मांझी	२६-५-४३	पटना
,, वेणी भगत	३०-५-४३	रांची
,, खेदन टाना	१६-६-४३	रांची
,, हरिशंकर मिश्री	१६-६-४३	दरभंगा
,, रमाकात मिश्र	२७-६-४३	,,
,, योगेश्वर गोप	२६-६-४३	पटना
,, जीवन वनिया	३०-६-४३	,,
,, तिलक भगत	२-७-४३	रांची
,, जग मंगल	२-७-४३	मुजफ्फरपुर
,, बुधिया टाना	२७-७-४३	रांची
,, वुद्दू भगत	,,	,,
,, खोहया भगत	,,	,,
,, पांचू भगत	,,	,,
,, मंगरा भगत	,,	,,
,, सीर का भगत	,,	,,
,, शिवशोरन	,,	,,

ऊपर जिन शहीदों के नाम दिए [illegible] कैंप जेल में शहादत प्राप्त करके वीर गति को प्राप्त हुए हैं। [illegible] के जनरल हस्पताल में भी बहुत से वीर [illegible] हुए हैं [illegible] पूरा विवरण प्राप्त नहीं हो सका।

दत्ता जोशी

२६ जनवरी सन् १९४३ को पूना के एक स्थानीय 'सिनेमा हाउस' मे एक बम फटा जिसमे ४ गोरे सिपाही तत्काल मर गए और १० घायल हुए।

अपराधियो की प्रान्त भर में खोज आरम्भ की गई। सैंकड़ों मकानो की तलाशियां ली गई और लगभग इतने ही व्यक्ति गिरफ्तार कर लिये गए। परन्तु पुलिस फिर भी किसी अन्तिम निर्णय पर नहीं पहुच सकी। इन सब व्यक्तियों के साथ अत्यन्त अमानुषिक व्यवहार किया गया। गिरफ्तार हुए व्यक्तियो मे हरिलिमे और दत्ता जोशी नामक दो नवयुवक विद्यार्थी भी थे। उनको उस मामले मे, जो अब 'कैपीटल बम केस' के नाम से प्रसिद्ध है, मुखबिर बनने के लिए विवश किया गया, परन्तु जब अदालत मे मुकदमे की कार्यवाही प्रारम्भ हुई: तो हरि तथा दत्ता ने विस्तार पूर्वक उन यातनाओं की कहानियां सुनाई जो कि उनको दी गई थीं और पुलिस को दिए गए अपने बयान वापिस ले लिए। अन्त मे जज को सब अभियुक्त बरी करने पड़े तो भी कई अन्य व्यक्तियों के साथ ये दोनो युवक नजरबन्द रखे गए और अन्त मे वीर युवक दत्ता जेल मे ही चल बसा. हरि को कांग्रेस मन्त्रिमंडल होने पर रिहा किया गया। जो यातनाये और कष्ट हरि को झेलने पड़े: उन्होने हरि को एक दृढ़ कांग्रेस-जन बना दिया। रिहाई के तुरन्त बाद हरि 'राष्ट्र सेवा दल' मे सम्मिलित होगया और 'शिविर शिक्षण' मे बहुत दिलचस्पी ले रहा है। इस शिक्षण को पूना के राष्ट्रीय 'सेवादल' ने अभी प्रारम्भ किया है। जेल की काल-कोठरी मे [illegible]

यात्रा बहुत लम्बी है; परन्तु उसने उसे बिना किसी दिक्कत के प्रसन्नता पूर्वक तय किया। वह केवल निम्न पंक्तियां ही अपने मुख से निकालता है 'मुझे दत्ता की मृत्यु का दुःख है।'

उदय चन्द

बिहार का पटना यू० पी० का बलिया तथा मध्यप्रान्त का आष्टी तथा चिमूर' अपने बलिदान के लिए प्रसिद्ध हो चुके है। अगस्त-विद्रोह मे मध्यप्रांत के मंडल जिले का बलिदान कम महत्व नही रखता। उसने रानी दुर्गावती के नाम को फिर से जीवित कर दिया है। एक सार्वजनिक सभा मे अमर-वीर उदय-चंद गोली का शिकार हुआ। उसने अपनी कमीज फाड़कर खुला सीना मजिस्ट्रेट के आगे कर दिया और सीना तानकर कहा— 'लो चलाओ गोली।' गोली उदयचन्द के पेट मे घुस गई. 'भारत माता की जय' की ध्वनि के साथ उदयचन्द धराशायी होगया और १६ अगस्त को वह चल बसा।

प्रजातंत्र स्थापित होकर रहता।

सितम्बर १९४२ के एक दिन प्रातःकाल महाड के सब डिवीजनल आफीसर को अपने दरवाजे के सामने लोगों की भारी भीड़ खड़ी देखकर भारी आश्चर्य हुआ। लोगो ने उनको बताया कि ब्रिटिश राज्य समाप्त हो चुका है, और आगे से उन्हें जनता के सच्चे सेवक के रूप मे कार्य करना होगा। वे इससे सहमत हो गए और शहर कोतवाली तक जुलूस का नेतृत्व करने के लिए भी राजी हो गए। परन्तु इस बीच मे पुलिस को इस सारी कार्यवाही का पता लग गया और उसने उच्च अधिकारियों को सूचित कर दिया। कुछ समय लेने के लिए उन्होंने मोर्चे वालों को उत्तेजित नहीं किया। अपनी प्रारम्भिक सफलता पर जनता इतना फूल गई कि उसे अपने पीछे के पुल का बिल्कुल भी ध्यान नहीं रहा। इस बात का पूरा विश्वास होने के बाद कि फौजे पुल पार करके महाड मे घुस सकती है; पुलिस ने गोली चलानी प्रारम्भ करदी। उस गोली काड के शहीदों मे पूना के एस० पी० कालिज के एक विद्यार्थी बसन्त दाते भी थे। नाना पुरोहित को इस योजना मे विशेष सहायता देने के उद्देश्य से ही वे वसन्त नागरकर के साथ महाड गए थे। ऐसा करते हुए उन्होंने अपने प्राणो का उत्सर्ग कर दिया। दाते कालिज के एक सुप्रसिद्ध खिलाड़ी युवकों मे थे। साधारणतया यह विश्वास है कि कालिज के खिलाड़ी लड़के उसमें ही लगे रहते है; परन्तु दाते ने यह धारणा निर्मूल कर दी। 'भारत छोड़ो' के आन्दोलन ने उनके हृदय-प्रदेश में एक प्रेरणा भरी, और उन्होंने उसी वीरता से उसको फलीभूत किया।

———

सातवाँ भाग

करो या मरो

महात्मा जी का मन्त्र-दान

जिस पावन प्रेरणा को लेकर अगस्त-क्रान्ति का सूत्रपात हुआ था, वह था महात्मा गान्धी जी का बम्बई की कांग्रेस कार्य-समिति के खुले अधिवेशन में ८ अगस्त सन ४२ को दिया हुआ भाषण। उस दिन गान्धी जी ने अपने अन्तर के उफनते हुए भावों को जनता के सामने इस रूप में रखा कि सारा वातावरण ही बदल गया। सबके मन में देश की पराधीनता के प्रति एक भारी क्षोभ, वेदना और अकुलाहट थी। बम्बई की जिस पावन भूमि पर कॉंग्रेस की नींव रखी गई थी उसी स्थान पर कांग्रेस के एकनिष्ठ सूत्रधार गांधी जी का जनता को 'करो या मरो' का मन्त्र-दान करना एक अविस्मरणीय घटना थी। उन्होंने मंत्रमुग्ध जनता के सामने लगभग [illegible] घंटे तक हिन्दुस्तानी तथा अंग्रेजी में भाषण दिया; प्रस्ताव [illegible] हो जाने के बाद भी महात्मा जी ने आन्दोलन को प्रारम्भ करने से पूर्व ब्रिटिश-सरकार को अपने निश्चय की सूचना देने का विचार अपने भाषण में प्रकट किया था, परन्तु सरकार ने

प्रयुक्त हुए भावों एवं शब्दों से सरकार आतंकित होगई और उसने महात्मा जी को उसी रात्रि को प्रातः ४ बजे बन्दी बना लिया। राष्ट्र के उस कर्णधार तपःपूत महात्मा का 'करो या मरो का मन्त्रदान' अविस्मरणीय है वह इस प्रकार है—

"एक जमाना था जब मुसलमान कहते थे कि हिन्दुस्तान हमारा मुल्क है। उस समय वे नाटक नहीं करते थे। वे हमारे साथ लड़े थे। खिलाफत में शरीक हुए थे। उनके साथ मैं बरसों रहा। लोग कहते है कि मैं भोला हूँ। पर इसके मानी यह थोड़े ही है कि मै यह मान लेता हूँ। पर मै सुन लेता हूँ। मुझे धोखेबाज बनने के बजाय भोला कहलाना अच्छा लगता है। मेरा तो यह स्वभाव है, कि जब तक कोई चीज सामने नहीं आती, मैं एतबार कर लेता हूँ। यह चीज प्रस्ताव मे भरी है। मुसलमान और हिन्दू भी कहते है कि हिन्दू-मुस्लिम एकता होनी चाहिए। दूसरी सभी कौमो का भी इत्तिहाद होना चाहिए। होता है, तो अच्छा ही है। कुछ लोग मुझसे आकर कहते है कि तू जब तक जिन्दा है, तभी तक यह बनेगा। लेकिन मेरा हृदय इसे कबूल नहीं करता। जिसे मेरा दिल कबूल नहीं करता उससे मुझे रस नहीं है। मैं तो जब छोटा बच्चा था, तब मैं इस चीज को जानता था। मदरसे मे हिन्दू, मुसलमान और पारसी सब थे। उनसे मैंने दोस्ती की थी। मैं जानता था कि यदि हम हिन्दुस्तान में अमन से रहना चाहते हैं, तो पड़ोसी के फर्ज का भली भांति पालन करना चाहिए। अफ्रीका भी गया तो मुसलमानों का काम लेकर गया और सबका दिल हरण कर लिया। जो मेरे उसूलों

के मुख़ालिफ थे, उन्होंने भी मुझ पर विश्वास किया। वे जानते थे कि यह जो बात कहेगा, वह न्याय की ही होगी। वहाँ से आया, सो भी हारकर नहीं आया। सबको रोते हुए छोड़कर आया। यहाँ भी वही चीज़ मेरे सामने पेश हो गई। बड़ा काम किया, तो मुसलमानों के लिए भी किया। उस समय मुझे कोई दुश्मन नहीं मानता था। खिलाफत में मैंने क्या स्वार्थीपन किया? मैं गाय की पूजा करता हूँ। हम एक हैं, तो सिर्फ इन्सान ही नहीं जीवमात्र एक है। सब खुदा के बन्दे हैं। इनकी फिलासफी

दे। वे तब याद करेंगे कि गाँधी ने कभी धोखा नहीं दिया, झूठी बात नहीं की। आज वे या मुसलमान नाराज हैं, तो मैं क्या करूँ। मारना चाहें तो मार भी सकते हैं। मेरे पास क्या है, मेरी गर्दन तो उनकी गोद में पड़ी है। और कोई मेरे गले में छुरी भी मार दे, तो बुरा भी नहीं लग सकता। मैं बुरा क्यों मानूँ। वह कोई सच्चे गाँधी को थोड़े ही मारना चाहते हैं, वह तो उस गाँधी को मारना चाहते हैं जिसे वह बुरा मानते हैं। तो मैं तो वही आदमी हूँ। इस बात को मुसलमान न भूलें। गालियाँ देना चाहें तो दें। इनसे मुझे ईज़ा नहीं पहुचती। इस्लाम को मैं जानता हूँ। वह तो कहता है दुश्मन को भी गालियाँ देना बुरा है। मुहम्मद साहब भी यही कहते थे। वे दुश्मन को अपनाते थे। उसके साथ नेकी करते थे। अगर मुसलमान इस्लाम के हैं तो जो आदमी खुदा को हाजिर नाजिर कहकर कोई बात कहता है, तो उस पर विश्वास करना चाहिए। जो गालिया देते हैं, वे तो गोलियाँ चलाते हैं। वे गोलियों से मेरा खातमा कर दें तो भी मुझ पर असर नहीं कर सकते। पर इस्लाम का क्या? वे बारह आदमी हैं। उन्हें मौलाना साहब ने कितना समझाया, पर उन पर कोई प्रभाव नहीं हुआ। पर इसकी कोई बात नहीं। जहाँ हमारी फिलासफी की बात हो, वहाँ दोस्ती इस्तेमाल न की जाय। आपको जो सही लगे, सो ही करें। कोई काम मेरे लिए नहीं, इस्लाम की भलाई के लिए करें।

अगर पाकिस्तान सही चीज है, तो वह जिन्ना साहब की जेब में पड़ा ही है। हर मुसलमान की जेब में पड़ा है। पर अगर

वह सही चीज नहीं है, तो उसे कौन हजम कर सकता है। तकब्बरी से तो खुदा भी भागता है। कोई क्या जाने कि जिन्ना क्या चाहते है। जिन्ना साहब बड़े नाराज होते है। एक बार उन्होंने लिखा, मेरे खत पढ़कर आपको बहुत दुःख होता होगा। आपको मेरी बात बहुत चुभती होगी। पर मै क्या करूँ? जो दिल में है, सो कहता हूँ।' मै उन्हें इसके लिए मुबारकबादी देता हूँ। लेकिन आप जो उस चीज को नही मानते, उनसे मै कहता हूँ, कि आपको जो बात सही मालूम हो, वही करे। सबकी राह न देखें। अरब में करोड़ो लोग पड़े थे। हालत खराब थी। उनमें अकेले पैगम्बर साहब की क्या बिसात थी? पर उन्होंने

कॉंग्रेस की तरफ से कहता हूँ। पंच भी बना सकते हैं। पर उनमें भी हमारा एतबार तो होना चाहिए। उसे भी नहीं मानेंगे, तो आपकी जबरदस्ती नहीं तो क्या है? उसे कोई कैसे मानेगा? एक जिन्दा चीज के टुकड़े करेंगे? जिन्दा चीज को मारकर क्या लेंगे? हां, हम यह कहते हैं कि कोई किसी को मजबूर नहीं कर सकता। लड़ाई करके ले सकते हैं। मुझे तो खुल्लमखुल्ला कहते हैं. ऐसा हिन्दू मैं नहीं हूँ। कांग्रेस ऐसे हिन्दुओं का प्रतिनिधित्व नहीं करती। अगर आप कॉंग्रेस का एतबार नहीं करते, तो आपके हिन्दुस्तान के नसीब में झगड़े ही झगड़े हैं। पर यह ठीक रास्ता नहीं है। अगर मुझ से खुदा ठीक बोल रहा है, तो आप इसमें मुझे जिन्दा नहीं पायेंगे। अगर चीज सही नहीं है तो तलवार के बल पर लेंगे यह कहना क्या ठीक है? मुहम्मद साहब ने यह तरीका नहीं बताया।

मैंने बहुत वक्त लिया। सारी रात भर सोचता रहा। पर तन्दुरुस्ती की भी फिक्र रखनी पड़ती है। डाक्टरों ने भी फरमाया कि सम्हलकर काम करो। पर जो चीज खुदा ने दे दी है, उसे तो उसके लिए खर्च करना ही है। और अभी तो जबान चल रही है। पहले तो मैं हिन्दू-मुसलमानों की बात करता हूँ। हम एक बन जायें, सही माने में मान लें, दिल में कोई फरक नहीं रखें और हिन्दुस्तान को विदेशी कब्जे से छुड़ाने के लिए यत्न करें। पाकिस्तान भी तो आखिर हिन्दुस्तान का एक हिस्सा है। इसलिए पहली बात यही है कि हिन्दुस्तान के लिए मरें। अगर ऐसा करेंगे तो बहुत जल्दी कामयाब होंगे। [illegible] तो

मुसलमानों को कांग्रेस के दफ्तर में कौन-सी रुकावट है। वह तो बड़ा डेमोक्रेटिक आरगेनाइजेशन है। इसलिए पहला सबक यह है कि आप जो लड़ते हैं, सिर्फ हिन्दुओं के लिए नहीं लड़ते। सब माइनोरिटीज् के लिए लड़ते हैं। मुसलमान भी लड़ें। सबके लिए लड़ें। आपस में जरा भी नहीं लड़ना चाहिए। किसी हिन्दू ने मुसलमान को मार डाला या किसी मुसलमान ने हिन्दू को मार डाला यह मैं नहीं सुनना चाहता। हिन्दू मुसलमान एक दूसरे के लिए अपनी जान दे दें। यह मसला सबका है। झगड़े के मौके हर वक्त आने वाले हैं। इसलिए कहता हूँ, सब सहें। कोई एक मारे तो आप दो न मारें। मुसलमान भी ऐसा ही करें। कोई तलवार चलाता है, तो अपनी गर्दन उसके हाथ में रख दें। मेरी हिदायत सबके लिए है। क्योंकि यह Mass Struggle कैसे चलेगा, सो बता रहा हूँ। यह छोटी-से-छोटी शर्त है।

एकल साहब का फर्मान पढ़ें। उसे छापकर मैंने सरकार की खिदमत की है। 'हरिजन' में दे नहीं सकता था। आपको पता चल जायगा कि सरकार कैसे चलती है। पर उसका रास्ता टेढ़ा है। आपका सीधा है। आप आँखें मूंदकर भी उस पर चल सकते हैं। यही सत्याग्रह का रास्ता है।

कोई कहते हैं, यह जल्दी होगी तैयारी की जरूरत है। जितनी मुसाफरी मैंने की, उतनी किसी ने नहीं की जो जिन्दा है। मैं लोगों को जानता हूँ, मेरा तो दिल उनके पास है। और तैयारी का क्या कहूँ ? मेरी तैयारी कभी, मैं कहाँ चोर था

लश्कर भी कच्चा। पर हमला आगया तो क्या करूँ ? अब तैयारी कर ले। खुदा क्या कहेगा ? वह तमाचा नहीं मारेगा ? क्या वह यह नहीं कहेगा कि तुझको मैंने जो खजाना दिया, उसे तो निकाल देता। बाकी तो पीछे मैं था ही। मैं सिर्फ हिन्दुस्तान के लिए नहीं लड़ता। यों तो मेरे पास बहुत-सी लड़ाइयां पड़ी थीं। पहले कहते थे, परेशान नहीं करेंगे। पर अब ऐसे कब तक बैठेंगे ? वे बारह भाई जूझते हैं, तब मैं क्यों नहीं जूझूँ ? आप मेरे दिल को समझ सकते हैं।

अब क्या करना है, वह सुना दूं। आपने रेजोल्यूशन तो पास कर लिया। पर हमारी सच्ची लड़ाई शुरू नहीं हुई। आप मेरे मातहत होगये। अभी तो वाइसराय से मिलना रहेगा। समय तो देना होगा, उस बीच आपको क्या करना है।

अब बीच में समझौता नहीं है। मैं नमक की सुविधायें या शराबबन्दी लेने को नहीं जा रहा हूँ। मैं तो एक ही चीज लेने जा रहा हूँ आजादी। नहीं देना है, तो कत्ल करें। मैं वह गाँधी नहीं, जो बीच में कुछ चीज लेकर आ जाय। आपको तो मैं एक मन्त्र देता हूँ, 'करेंगे या मरेंगे।' जेल को भूल जायँ। और सुबह शाम यही कहें, कि खाता हूँ, पीता हूँ, साँस लेता हूँ, तो गुलामी की जंजीर तोड़ने के लिए। जो मरना जानते हैं उन्हीं ने जीने की कला जानी है। आज मैं तय करें कि आजादी लेनी है। नहीं लेनी है तो मरेंगे आजादी डर-पोकों के लिए नहीं। जिनमें करने की ताकत है, वही जिन्दा रह सकते हैं। हम चींटियाँ नहीं। हम हाथी से भी बड़े हैं, हम शेर हैं।

पहले तो मेरे सामने अखबार हैं। वे या तो सरकार की आवाज हैं और अगर हमारी आवाज हैं, तो खबरें काम करते हैं। पर वह जंजीर से छूट जाय। आजादी के लिए सबेरा बुलाता हूँ। आप तो इस मैदान में आ जायें। अपनी कलम मुझे दे दें। अगर यह भय हो कि सरकार छापेखाने ले लेगी, तो मैं इतना ही कहता हूँ कि अखबार बन्द कर दें। सरकार को जमानत न दें। अगर देना चाहें तो दे दें। पर कलम रोके न रोकें। वह भी बहादुरी का काम है। मैंने क्या किया? इतना बड़ा कारखाना चलता था, सबेरा बन्द कर दिया। और फिर फिर नया प्रेस पैदा हो गया। फिर मैंने तो आपको [illegible] धर्म मार्ग बताया। अखीरी चीज आपके सामने रखी। किसान

कर दें कि अब स्टैन्डिग कमेटी को छोड़ देंगे। सिर्फ आजाद हिन्दुस्तान की सरकार को ही मानेंगे। अगर आप बहुत दूर नही जा सकते, तो कहे आपकी चीज भी देंगे और काँग्रेस की भी देंगे। अगर बरदाश्त नहीं कर सकते, तो नही करना है।

आजादी आ रही है, और इसके लिए राजा लोगो से तो मै वह भी नही माँगता। उनसे कहता हूँ कि मै आपका खैर-ख्वाह हूँ। काठियावाड़ का हूँ। मेरे पिता तीन जगह दीवान रहे। आपका नमक खाया। मै नमकहराम कभी नही हुआ। आपके सामने एक नमकहलाल मिन्नत करता है। अब तक आप सल्तनत के रहे। उससे सत्ता पाई। पैसे लिये। पैसे तो पिताजी ने भी पाये। पर उन्होने पोलिटिकल एजेन्ट से लड़ाई की। एक

तब राजाओं को किसी बात की कमी न रहेगी। प्रजा उन्हें दोनों हाथों से देगी। वह राजा रहेगा। वंश-परम्परा नहीं। वंश-परम्परा भी रहेगी अगर वे दुनिया की सेवा करते रहेंगे। इसलिए राजाओं से कहना चाहता हूँ कि आप गुलामी में न रहें। रहना है, तो हिन्दुस्तानियों की सल्तनत में रहें। पोलिटिकल डिपार्टमेंट को लिख दें कि खलकत उठ गई तो हम कहाँ रहें। चक्रवर्ती तो मातहत राजाओं को बचाता है। जिसको राजा उठाते हैं, वह चक्रवर्ती नहीं। इसलिए कह दीजिए कि हम तो रैयत के हो गये। वह बैठाएगी तो बैठेंगे। हम उसका साथ देंगे। इसमें कोई कानूनी कठिनाई नहीं। राजाओं के लिए कोई कानून नहीं। पोलिटिकल डिपार्टमेंट की जबानी बातों को ही मानें तो मैं क्या करूँ? यह तो आप दावा नहीं कर सकते कि हम अलग हैं। अगर आप रैयत के साथ रहेंगे, तो आप उसके सरदार रहेंगे।

राजाओं से इस तरह साफ-साफ कह दें। और इतने पर वे मारें तो मर जायें। तेरह हों तो तेरह। कोई बात छिपाकर नहीं करनी है। इस लड़ाई में गुप्तता तो है ही नहीं।

अब जज वगैरह हैं। वे भी अभी कुछ न करें। आज ही इस्तीफा न दें। रोक लें। पर अपनी आजादी कायम रखें। वे कह दें मैं तो काँग्रेस का आदमी हूँ। रानाडे ने यही किया था। लिख, एक मर्यादा का पालन करूँगा। न्यायासन पर न काँग्रेस का रहूँ न सरकार का। आजाद। कोई कानून नहीं जो मुझे यह करने से मना करे। रानाडे जब तक जिन्दा थे ऐसा ही करते थे। काँग्रेस में बराबर जाते थे, पर भाग नहीं लिया। समाज-सेवा-संघ

पैदा कर दिया। उस जमाने में यह कम नहीं था। आज भी जज ऐसा कर सकते हैं। गुप्त हिदायतें निकलें, उनको न मानें। कह दें कि हम तो कॉंग्रेस के आदमी हैं। यह सरकार को मंजूर हो, तो रहें नहीं तो निकल जायें।

अब सिपाही। वे इतना तो कह दें कि अब तक तो हमने अपने दिल की बात छिपा कर रखी, पर अब तो हम कहते हैं कि हम कॉंग्रेस के हैं।

कई सिपाही मेरे पास आये, जवाहरलाल के पास भी आये, मौलाना साहब के पास आये, और अलीभाइयों के पास भी आये थे। सिपाही नहीं बड़े-बड़े अफसर भी। पर हम उनको

बताने वाला शब्द तो मेरे पास है ही नहीं। वाशिंगटन आयर-लिंग ने इसकी ठीक परिभाषा लिखी है। सो वह मुझे इंग्लिश जेंटिलमैन बनाने के लिए वायोलिन सिखाती थी। जो फीस लेती थी उसका पूरा बदला देती थी। इसी तरह प्रोफेसर भी सिखाते हैं। उनसे हम कह दें, कि आप सल्तनत के हैं, या हमारे। हमारे हैं, तो अच्छा है। मकान खाली करने की आज जरूरत नहीं, इनमें से जिनको निकालना चाहूँगा, निकालूँगा। हवाई बात नहीं करता।

मेरे दिल में तो कहने को बहुत है। पर सब मैं बाहर कर सकूँ, इतना समय नहीं है। मुझे अभी थोड़ा अंग्रेजी में भी बोलना बाकी है। रात हो गई है, बहुत देर हो गई है, फिर भी इतनी शान्ति से, इतने ध्यान से आपने मुझे सुना इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। सच्चे सिपाही ऐसा ही करते हैं।

बाईस वर्ष तक बोलने-लिखने में मैंने संयम रखा है, ताकत इकट्ठी की है। जो अपनी ताकत हमेशा खर्च नहीं करता वह ब्रह्मचारी—वाकसंयम—कहा जाता है। वह हमेशा जीभ पर (काबू) संयम रखकर सच्ची जबान से बोलेगा। जिन्दगी भर मेरा प्रयत्न इस दिशा में रहा है, फिर भी आज इतने सारे लोगों को इतनी रात तक रोक रखकर—आपके ऊपर जबरदस्ती करके भी—मुझे आपको आज जो कहना चाहिए था, वह कह दिया। उसका मुझे पश्चात्ताप नहीं है। आखरी सन्देश मैंने हिन्दुस्तान को कह दिया।

इसके बाद अंग्रेज़ी भाषा में बोलते हुए गाँधी जी ने बताया कि जिनकी सेवा के लिए अभी आपने मुझे नियुक्त किया, उनके सामने मेरे अन्तर के मन्थन को बाहर उँडेलने में मैंने आपका बहुत समय ले लिया है। मुझे नेतागिरी बख्शी गई—फौजी परिभाषा में मुझे सेनापति पद दिया गया, पर मैं इस दृष्टि से नहीं देखता। मेरे पास अपना सेनापति पद चलाने के लिए प्रेम के अलावा दूसरा शस्त्र नहीं है। जिस लकड़ी के सहारे मैं चलता हूँ उसे तो आप आसानी से तोड़कर फेंक सकते हैं, ऐसी है। ऐसे अपढ़ आदमी को जब ऐसी लड़ाई का बोझा उठाने के लिए आमन्त्रित किया जाय तो इसमें उसके लिए पौरुष अनुभव करने जैसा क्या है? मेरा यह बोझा आप तभी हल्का कर सकते हैं जब कि मैं आपके सेनापति के रूप में नहीं बल्कि आपके नम्र सेवक की तरह खड़ा रहूँ। जो सेना में सबसे बढ़कर हो वह समान दर्जे के सेवकों में मुखिया सेवक है, इतना ही इसका अर्थ है।

भी आज मैं अपनी साख खो बैठा हूँ। मेरी समझदारी पर, बल्कि मेरी प्रामाणिकता पर भी इनके मन में शङ्का खड़ी हो गई है। मेरी समझदारी की कीमत कम आँकी जाय इसका मुझे दुःख नहीं है, पर मेरी नीयत के बारे में शङ्का उठाई जाय, यह तो मेरे लिए दारुण आघात है। लेकिन आज तो यही स्थिति है।

ऐसे प्रसंग आदमी की जिन्दगी में आते हैं, पर सत्य के शोधक के लिए जिसे डर या पाखण्ड के बिना मानव जाति अथवा देश की यथाशक्ति सेवा करनी है, उसे तो यह सब सहने ही पड़ते हैं। पचास वर्ष की अपनी शोध में शुद्ध सेवा का इससे दूसरा रास्ता मैंने नहीं जाना। मैंने मानव जाति की, साम्राज्य की एक से अधिक प्रसंगों पर यथाशक्ति सेवा बजाई है और मैं ऐसा कह सकता हूँ कि कहीं भी अपने किसी निजी स्वार्थ अथवा बदले की आशा से मैंने कोई काम नहीं किया। लार्ड लिनलिथगो के साथ मेरी मित्रता है जो उनके ओहदे की सीमा को भी लाँघ गई है। अपनी लड़की के साथ भी उन्होंने मेरा परिचय कराया। उनकी लड़की और जमाई दोनों मेरी तरफ आकर्षित हुए। उनके जामाता ए० डी० सी० हैं और वे महादेव के खास मित्र बन गए हैं। उनकी लड़की आज्ञाकारिणी और सबको प्रिय लगने वाली है। इन सब पवित्र व्यक्तिगत सम्बन्धों का उल्लेख मैं इसलिए कर रहा हूँ कि लार्ड लिनलिथगो और मेरे बीच जो व्यक्तिगत प्रेम सम्बन्ध है, उसका आपको पता चल जाय। और ऐसा होने पर भी नम्रता पूर्वक [illegible] करता हूँ कि [illegible] मैंने लार्ड लिनलिथगो के सामने, साम्राज्य के [illegible]

मरणान्त लड़ाई छेड़ना मेरे नसीब में लिखा होगा तो यह व्यक्तिगत प्रेम-सम्बन्ध रत्ती भर भी बीच में नहीं आएगा। मैं सल्तनत के पशुबल का सामना करोड़ों भारतीयों की मूक-शक्ति से करूँगा, जिन्होंने लड़ाई के लिए उपयुक्त अहिंसा के सिवाय और कोई मर्यादा नहीं रखी होगी। मेरे लिए अत्यन्त कठिन काम होगा कि जिनके साथ मेरा ऐसा घरोपा है, उन्हीं के सामने मैं लड़ाई छेड़ूँ। उन्होंने एक से अधिक अवसरों पर मेरे शब्दों पर विश्वास किया है मेरे लोगों पर भी विश्वास रखा है।

मन की चोरी (छिपाव) बिना वह मुझे सब बता देते थे। गुरुदेव के भी वे मित्र थे जरूर, पर गुरुदेव की आत्मा से वे चकाचौंध होते और उनका अदब करते थे। पर मेरे तो वे प्राण-प्रिय मित्र बन गये थे। बरसों पहले वे गोखले का परिचय पत्र लेकर मेरे पास आये। पीयर्सन और एंड्र्‌ज दोनों आदर्श अंग्रेज के नमूने थे। मैं जानता हूँ कि उनकी आत्माएँ अभी भी मेरी वेदना-वाणी सुन रही हैं।

कलकत्ता के मेट्रोपोलिटन (ईसाई धर्माचार्य) का भी हितैषिता से भरपूर मुबारकबादी का पत्र मिला है। उनको मैं पाकदिल खुदापरस्त पुरुष गिनता हूँ। मेरी कमनसीबी से वे भी आज मेरा यह क़दम पसन्द नहीं करते। फिर भी उनका दिल मेरे साथ है। उनके दिल की भाषा मैं पढ़ सकता हूँ।

यह सारी पार्श्वभूमि उपस्थित करके मैं दुनिया को बताना चाहता हूँ कि पश्चिम में रहने वाले अनेक मित्रों का विश्वास आज मैंने खो दिया है—और उसका मुझे दुःख है—तो भी उन सबकी मैत्री और प्रेम की खातिर भी मैं अपने अन्दर से उठने वाली आवाज़ को दबा नहीं सकता। आत्मा कहिये, मूलगत स्वभाव कहिये, वह, या मेरे भीतर रहने वाले मेरे दिल का दर्द, मेरी व्यथा पुकार-पुकारकर कह रही है आज मुझे प्रेरित कर रही है। मैं भूत क्या जानता हूँ। मनुष्य स्वभाव का भी मैंने थोड़ा-बहुत अभ्यास किया है। ऐसा आदमी अपने अन्तरात्मा को समझ सकता है। आप उसे जो चाहें नाम दें, पर मेरे अन्दर की आवाज़ मुझे कह रही है—तुझे अकेला [illegible]

खड़ा रहना पड़े तो भी आज तमाम दुनियाँ के सामने खड़ा होने से ही तेरा छुटकारा है। दुनियाँ लाल-पीली, रक्तपूर्ण आँखों से तेरे सामने घूरे तो भी तुझे उसकी नजर के सामने नजर मिला करके खड़े रहना है। डर मत। अपने अन्दर की आवाज को ही सुन। यह आवाज तुझे कहती है कि पुत्र, स्त्री, सम्पत्ति, शीश सब कुछ समर्पण कर देना, पर जिस चीज के लिए तू जिया करता है और जिसकी खातिर तुझे मरना है, उस सत्य की पुकार करते करते मरना।' मित्रो इस बात का विश्वास रखिये कि मुझे मरने की जल्दी नहीं है। मुझे अपने सौ वर्ष तक जीना है। बल्कि मैंने तो आयु की सीमा १२० वर्ष तक

चुना और साल्सबरी हारे। हिन्द खुशी से पागल होगया। पर हिन्द के लिए आज ये सारी बातें पुरानी हो गईं। पर इन सब पिछली भूमिकाओं को ध्यान में रखकर मैं अङ्गरेजों से, यूरोप से और मित्रराष्ट्रों से पूछता हूँ कि वे अपने हृदय पर हाथ रखकर कहें कि हिन्द जो आजादी मांगता है, इसमें कौन-सा गुनाह है? ऐसी कार्रवाइयों और पचास से अधिक वर्ष तक एसी सेवाओं के इतिहास वाली संस्था पर अविश्वास करना, उसकी बदनामी करना और अपने हाथ के विशाल साधनों का उपयोग करके दुनिया भर में उसकी शिकायत करना

भी इसके चरणों में अपना सवक ले रहे हैं। इन तरीकों से ये शायद चार दिन दुनियाँ के लोकमत को अपने पक्ष मे रख सकेंगे। किन्तु हिन्दुस्तान तमाम दुनिया के लोकमत के इस तरह के अघटित सङ्गठन के सामने खड़ा होकर भी आज अपनी पुकार बुलन्द करेगा। सारा हिन्दुस्तान मेरा त्याग करे तो भी मैं दुनियाँ को सुनाऊँगा—तुम ठोकर खा रहे हो, तुम भूल में हो। हिन्द की आज़ादी मज़बूती से पकड़ रखने वालों के पास से भी हिन्द अहिंसा के बल पर यह आज़ादी ले लेगा। यह आज़ादी आने के पहले भले ही मेरी आँखें बन्द हो जायें, मैं भले ही रुक जाऊँ, पर अहिंसा रुकेगी नहीं। बहुत ज्यादा देरी से लेना कबूल करने के लिए कदमबोसी करने, विनती करने वाले हिन्द की आज़ादी का विरोध करके चीन और रूस का भी तुम क्या भला कर सकने वाले हो। तुम उनको प्राणघातक धक्का ही लगाओगे। किसी महाजन को देनदार की आजिजी करते जाना है ? और उसके सामने ऐसे-ऐसे विरोध-बाधाएं उपस्थित करने पर भी कॉंग्रेस तो आज विरोधियों को कहती है कि "हम साफ शराफत की लड़ाई लड़ेंगे, पीठ में घाव नहीं करेंगे, हम अहिंसा को अङ्गीकार कर चुके हैं।" ब्रिटिश सरकार को दिक न करने की कांग्रेस की नीति का प्रचारक मैं खुद ही तो था ? तो भी आज यह सख्त भाषा इस्तेमाल कर रहा हूँ। मैं कहता हूँ हमारी शराफत के लायक ही यह बात है। इसमें अयुक्त-अनुचित ऐसा क्या है ? किसी आदमी ने मुझे गर्दन से पकड़ रखा हो और वह मुझे डुबाना चाहता हो तो क्या मैं उसकी पकड़ में से

प्राण निकाले नहीं थे, हिन्दुस्तानियों की ही शक्तियों का नाश किया। किस तरह से बिगड़ी बाजी सुधारी जा सकती है, इस पर विचार करलो। मैं कहाँ जाऊँ—चालीस करोड़ को कहाँ ले जाऊँ? आजादी के स्पर्श बिना करोड़ो की जनता को दुनियाँ की मुक्ति के यज्ञ में दिल से भाग लेने की और क्या कोई रीति हो सकती है? आज तो जनता के प्राण शोषित हो गये हैं—पीस दिये गये हैं, उनकी निस्तेज आंखों मे तेज लाना हो तो आजादी कल नहीं, आज ही आनी चाहिए। इसी से मैंने आज काँग्रेस से यह बाजी लगवाई है, या तो कॉंग्रेस देश को आजाद करेगी अथवा खुद फना हो जायगी। 'करो या मरो।'